ISSN 2229-547X VIDEHA

'विदेह' 240 म अंक 15 दिसम्बर 2017 (वर्ष 10 मास 120 अंक 240)

ऐ अंकमे अछि:-

१. संपादकीय संदेश

जगदीश प्रसाद मण्डलक ३ टा लघुकथा संग्रह

Go to the link below for download of old issues of VIDEHA Maithili e magazine in .pdf format and Maithili Audio/ Video/ Books/ paintings/ photo files. विदेहक पुरान अंक आ ऑडियो/ वीडियो/ पोथी/ चित्रकला/ फोटो सभक फाइल सभ डाउनलोड करबाक हेतु नीचाँक लिंक पर जाउ।

VIDEHA ARCHIVE विदेह आर्काइव

Join official Videha facebook group.

Google समूह Join Videha googlegroups

Follow Official Videha Twitter to view regular Videha Live Broadcasts through Periscope.

विदेह जालवृत्तक डिसकसन फोरमपर जाउ।

संपादकीय

विदेह "नेपालक वर्तमान मैथिली साहित्य" विषयक विशेषांक निकालबाक नेयार केलक अछि जकर संयोजक श्री दिनेश यादव जी रहता।

अइ विशेषांकमे नेपालक वर्तमान मैथिली साहित्य केर मूल्यांकन रहत। अइ विशेषांक लेल सभ विधाक आलोचना-समीक्षा-समालोचना आदि प्रस्तावित अछि। समय-सीमा किछु नै जहिया पूरा आलेख आबि जेतै तहिये, मुदा प्रयास रहत जे एही साल मइ-जून धरि ई विशेषांक आबि जाए। उम्मेद अछि विदेहक ई प्रयास दूनू पायापर एकटा पूल जरूर बनाएत।

विदेह द्वारा संचालित "आमंत्रित रचनापर आमंत्रित आलोचकक टिप्पणी" शृंखलाक दोसर भागक घोषणा कएल जा रहल अछि। दोसर भागमे अइ बेर नीलमाधव चौधरी जीक रचना आमंत्रित कएल जा रहल अछि आ नीलमाधवजीक रचना ओ रचनाधर्मितापर टिप्पणी करबा लेल कैलाश कुमार मिश्रजीकेँ आमंत्रित कएल जा रहल छनि। दूनू गोटाकेँ औपचारिक सूचना जल्दिये पठाओल जाएत। रचनाकारक रचना ओ आलोचकक आलोचना जखने आबि जाएत ओकर अगिला अंकमे ई प्रकाशित कएल जाएत।

अइ शृंखलाक पहिल भाग कामिनीजीक रचनापर छल आ टिप्पणीकर्ता मधुकांत झाजी छलाह।

जेना की सभ गोटा जनै छी जे विदेह २०१५ मे तीन टा विशेषांक तीन साहित्यकारपर प्रकाशित केलक जकर मापदंड छल सालमे दूटा विशेषांक जीवित साहित्यकारक उपर रहत जइमे एकटा ६०-७० वा ओइसँ बेसी सालक साहित्यकार रहता तँ दोसर ४०-५० सालक (मैथिली साहित्यकार मने भारत आ नेपाल दूनूक)। ऐ क्रममे अरविन्द ठाकुर ओ जगदीश चंद्र ठाकुर "अनिल"जीपर विशेषांक निकलि चुकल अछि। आगूक विशेषांक किनकापर हुअए तइ लेल एक मास पहिनेसँ पाठकक सुझाव माँगल गेल छल। पाठकक सुझाव आएल आ ओइ सुझाव अंतर्गत विदेहक किछु अगिला विशेषांक परमेश्वर कापड़ि, वीरेन्द्र मल्लिक आ कमला चौधरी पर रहत। हमर सबहक प्रयास रहत जे ई विशेषांक सभ 2018 मे प्रकाशित हुअए मुदा ई रचनाक उपलब्धतापर निर्भर करत। मने रचनाक उपलब्धताक हिसाबसँ समए ऊपर-निच्चा भऽ सकैए। सभ गोटासँ आग्रह जे ओ अपन-अपन रचना editorial.staff.videha@gmail.com पर पठा दी।

विदेह सम्मान

विदेह समानान्तर साहित्य अकादेमी सम्मान

१.विदेह समानान्तर साहित्य अकादेमी फेलो पुरस्कार २०१०-११

२०१० श्री गोविन्द झा (समग्र योगदान लेल)

२०११ श्री रमानन्द रेणु (समग्र योगदान लेल)

२.विदेह समानान्तर साहित्य अकादेमी पुरस्कार २०११-१२

२०११ मूल पुरस्कार- श्री जगदीश प्रसाद मण्डल (**गामक जिनगी**, कथा संग्रह)

२०११ बाल साहित्य पुरस्कार- ले.क. मायानाथ झा (जकर नारी चतुर होइ, कथा संग्रह)

२०११ युवा पुरस्कार- आनन्द कुमार झा (**कलह**, नाटक)

२०१२ अनुवाद पुरस्कार- श्री रामलोचन ठाकुर- (**पद्मानदीक माझी**, बांग्ला- मानिक बंद्योपाध्याय, उपन्यास बांग्लासँ मैथिली अनुवाद)

विदेह भाषा सम्मान २०१२-१३ (वैकल्पिक साहित्य अकादेमी पुरस्कारक रूपमे प्रसिद्ध)

1.विदेह समानान्तर साहित्य अकादेमी फेलो पुरस्कार 2012

2012 श्री राजनन्दन लाल दास (समग्र योगदान लेल)

2.विदेह भाषा सम्मान २०१२-१३ (वैकल्पिक साहित्य अकादेमी पुरस्कारक रूपमे प्रसिद्ध)

२०१२ बाल साहित्य पुरस्कार - श्री जगदीश प्रसाद मण्डल केँ ''**तरेगन**'' बाल प्रेरक विहनि कथा संग्रह

२०१२ मूल पुरस्कार - श्री राजदेव मण्डलकेँ "**अम्बरा**" (कविता संग्रह) लेल।

2012 युवा पुरस्कार- श्रीमती ज्योति सुनीत चौधरीक ''**अर्चिस**'' (कविता संग्रह)

2013 अनुवाद पुरस्कार- श्री नरेश कुमार विकल "ययाति" (मराठी उपन्यास श्री विष्णु सखाराम खाण्डेकर)

विदेह भाषा सम्मान २०१३-१४ (वैकल्पिक साहित्य अकादेमी पुरस्कारक रूपमे प्रसिद्ध)

२०१३ बाल साहित्य पुरस्कार श्रीमती ज्योति सुनीत चौधरी- ''**देवीजी**'' (बाल निबन्ध संग्रह) लेल।

२०१३ मूल पुरस्कार - श्री बेचन ठाकुरकेँ "**बेटीक अपमान आ छीनरदेवी**" (नाटक संग्रह) लेल।

२०१३ युवा पुरस्कार- श्री उमेश मण्डलकेँ ''**निश्तुकी**'' (कविता संग्रह)लेल।

२०१४ अनुवाद पुरस्कार- श्री विनीत उत्पलकेँ ''**मोहनदास**'' (हिन्दी उपन्यास श्री उदय प्रकाश)क मैथिली अनुवाद लेल।

विदेह भाषा सम्मान २०१४-२०१५ (समानान्तर साहित्य अकादेमी सम्मान)

२०१४ मूल पुरस्कार- श्री नन्द विलास राय (**सखारी पेटारी**- लघु कथा संग्रह)

२०१४ बाल पुरस्कार- श्री जगदीश प्रसाद मण्डल (**नै धारैए**- बाल उपन्यास)

२०१४ युवा पुरस्कार - श्री आशीष अनचिन्हार (**अनचिन्हार आखर**- गजल संग्रह)

२०१५ अनुवाद पुरस्कार - श्री शम्भु कुमार सिंह (**पाखलो** - तुकाराम रामा शेटक कोंकणी उपन्यासक मैथिली अनुवाद)

नाटक, गीत, संगीत, नृत्य, मूर्तिकला, शिल्प आ चित्रकला क्षेत्रमे विदेह सम्मान २०१२

अभिनय- मुख्य अभिनय ,

सुश्री शिल्पी कुमारी, उम्र- 17 पिता श्री लक्ष्मण झा

श्री शोभा कान्त महतो, उम्र- 15 पिता- श्री रामअवतार महतो,

हास्य-अभिनय

सुश्री प्रियंका कुमारी, उम्र- 16, पिता- श्री वैद्यनाथ साह

श्री दुर्गानंद ठाकुर, उम्र- 23, पिता- स्व. भरत ठाकुर

नृत्य

सुश्री सुलेखा कुमारी, उम्र- 16, पिता- श्री हरेराम यादव

श्री अमीत रंजन, उम्र- 18, पिता- नागेश्वर कामत

चित्रकला

श्री पनकलाल मण्डल, उमेर- ३५, पिता- स्व. सुन्दर मण्डल, गाम छजना

श्री रमेश कुमार भारती, उम्र- 23, पिता- श्री मोती मण्डल

संगीत (हारमोनियम)

श्री परमानन्द ठाकुर, उम्र- 30, पिता- श्री नथुनी ठाकुर

संगीत (ढोलक)

श्री बुलन राउत, उम्र- 45, पिता- स्व. चिल्टू राउत

संगीत (रसनचौकी)

श्री बहादुर राम, उम्र- 55, पिता- स्व. सरजुग राम

शिल्पी-वस्तुकला

श्री जगदीश मल्लिक,५० गाम- चनौरागंज

मूर्ति-मृत्तिका कला

श्री यदुनंदन पंडित, उम्र- 45, पिता- अशर्फी पंडित

काष्ठ-कला

श्री झमेली मुखिया,पिता स्व. मूंगालाल मुखिया, ५५, गाम- छजना

किसानी-आत्मनिर्भर संस्कृति

श्री लछमी दास, उमेर- ५०, पिता स्व. श्री फणी दास, गाम वेरमा

विदेह मैथिली पत्रकारिता सम्मान

-२०१२ श्री नवेन्दु कुमार झा

नाटक, गीत, संगीत, नृत्य, मूर्तिकला, शिल्प आ चित्रकला क्षेत्रमे विदेह सम्मान २०१३

मुख्य अभिनय-

(1) सुश्री आशा कुमारी सुपुत्री श्री रामावतार यादव, उमेर- १८, पता- गाम+पोस्ट- चनौरागंज, भाया- तमुरिया, जिला- मधुबनी (बिहार)

(2) मो. समसाद आलम सुपुत्र मो. ईशा आलम, पता- गाम+पोस्ट- चनौरागंज, भाया- तमुरिया, जिला- मधुबनी (बिहार)

(3) सुश्री अपर्णा कुमारी सुपुत्री श्री मनोज कुमार साहु, जन्म तिथि- १८-२-१९९८, पता- गाम- लक्ष्मिनियाँ, पोस्ट- छजना, भाया- नरहिया, थाना- लौकही,जिला- मधुबनी (बिहार)

हास्य अभिनय-

(1) **श्री ब्रह्मदवे पासवान उर्फ रामजानी पासवान** सुपुत्र- स्व. लक्ष्मी पासवान, पता- गाम+पोस्ट- औरहा, भाया- नरहिया, थाना- लौकही, जिला- मधुबनी (बिहार)

(2) टॉसिफ आलम सुपुत्र मो. मुस्ताक आलम, पता- गाम+पोस्ट- चनौरागंज, भाया- झंझारपुर, जिला- मधुबनी (बिहार)

नाटक, गीत, संगीत, नृत्य, मूर्तिकला, शिल्प आ चित्रकला क्षेत्रमे विदेह सम्मान (मांगनि खबास समग्र योगदान सम्मान)

शास्त्रीय संगीत सह तानपुरा :

श्री रामवृक्ष सिंह सुपुत्र श्री अनिरूद्ध सिंह, उमेर- ५६, गाम- फुलवरिया, पोस्ट- बाबूबरही, जिला- मधुबनी (बिहार)

मांगनि खबास सम्मान: मिथिला लोक संस्कृति संरक्षण:

श्री राम लखन साहु पे. स्व. खुशीलाल साहु, उमेर- ६५, पता, गाम- पकड़िया, पोस्ट- रतनसारा, अनुमंडल- फुलपरास (मधुबनी)

नाटक, गीत, संगीत, नृत्य, मूर्तिकला, शिल्प आ चित्रकला क्षेत्रमे विदेह सम्मान (समग्र योगदान सम्मान):

नृत्य -

(1) श्री हरि नारायण मण्डल सुपुत्र- स्व. नन्दी मण्डल, उमेर- ५८, पता- गाम+पोस्ट- छजना, भाया- नरहिया, जिला- मधुबनी (बिहार)

(2) **सुश्री संगीता कुमारी सुपुत्री श्री रामदेव पासवान, उमेर- १६,** पता- गाम+पोस्ट- चनौरागंज, भाया- झंझारपुर, जिला- मधुबनी (बिहार)

चित्रकला-

(1) जय प्रकाश मण्डल सुपुत्र- श्री कुशेश्वर मण्डल, उमेर- ३५, पता- गाम- सनपतहा, पोस्ट बौरहा, भाया- सरायगढ़, जिला- सुपौल (बिहार)

(2) श्री चन्दन कुमार मण्डल सुपुत्र श्री भोला मण्डल, पता- गाम- खड़गपुर, पोस्ट- बेलही, भाया- नरहिया, थाना- लौकही, जिला- मधुबनी (बिहार) संप्रति, छात्र स्नातक अंतिम वर्ष, कला एवं शिल्प महाविद्यालय- पटना।

हरिमुनियाँ / हारमोनियम

(1) **श्री महादेव साह सुपुत्र रामदेव साह, उमेर- ५८,** गाम- बेलहा, वार्ड- नं. ०९, पोस्ट- छजना, भाया- नरहिया, जिला- मधुबनी (बिहार)

(2) **श्री जागेश्वर प्रसाद राउत** सुपुत्र स्व. रामस्वरूप राउत, उमेर **६०,** पता- गाम+पोस्ट- बेरमा, भाया- तमुरिया, थाना- झंझारपुर (आर.एस. शिविर), जिला- मधुबनी पिन- ८४७४१० (बिहार)

ढोलक/ ठेकैता/ ढोलकिया

(1) **श्री अनुप सदाय** सुपुत्र स्व. , पता- गाम- तुलसियाही, पोस्ट- मनोहर पट्टी, थाना- मरौना, जिला- सुपौल (बिहार)

(2) **श्री कल्लर राम** सुपुत्र स्व. खट्टर राम, उमेर- ५०, गाम- लक्ष्मिनियाँ, पोस्ट- छजना, भाया- नरहिया, थाना- लौकही, जिला- मधुबनी (बिहार)

रसनचौकी वादक-

(1) वासुदेव राम सुपुत्र स्व. अनुप राम, गाम+पोस्ट- निर्मली, वार्ड न. ०७ , जिला- सुपौल (बिहार)

शिल्पी-वस्तुकला-

(1) श्री बौकू मल्लिक सुपुत्र दरबारी मल्लिक, उमेर- ७०, गाम- लक्ष्मिनियाँ, पोस्ट- छजना, भाया- नरहिया, जिला- मधुबनी (बिहार)

(2) श्री राम विलास धरिकार सुपुत्र स्व. ठोढ़ाइ धरिकार, उमेर- ४०, पता- गाम+पोस्ट- चनौरागंज, भाया- तमुरिया, जिला- मधुबनी (बिहार)

मूर्तिकला-मूर्तिकार कला-

(1) **घूरन पंडित सुपुत्र**- श्री मोलहू पंडित, पता- गाम+पोस्ट बेरमा, भाया- तमुरिया, थाना- झंझारपुर (आर.एस. शिविर), जिला- मधुबनी (बिहार)

(2) **श्री प्रभु पंडित सुपुत्र स्व.** , पता- गाम+पोस्ट- नरहिया, थाना- लौकही, जिला- मधुबनी (बिहार)

काष्ठ-कला-

(1) **श्री जगदेव साहु** सुपुत्र शनीचर साहु, उमेर- ३६, गाम- निर्मली-पुरर्वास, जिला- सुपौल (बिहार)

(2) **श्री योगेन्द्र ठाकुर सुपुत्र स्व. बुद्धू ठाकुर उमेर- ४५,** पता- गाम+पोस्ट- बेरमा, भाया- तमुरिया, थाना- झंझारपुर (आर.एस. शिविर), जिला- मधुबनी पिन- ८४७४१० (बिहार)

किसानी- आत्मनिर्भर संस्कृति-

(1) श्री राम अवतार राउत सुपुत्र स्व. सुबध राउत, उमेर- ६६, पता- गाम+पोस्ट- बेरमा, भाया- तमुरिया, थाना- झंझारपुर (आर.एस. शिविर), जिला- मधुबनी पिन- ८४७४१० (बिहार)

(2) श्री रौशन यादव सुपुत्र स्व. कपिलेश्वर यादव, उमेर- ३५, गाम+पोस्ट बनगामा, भाया- नरहिया, थाना- लौकही, जिला- मधुबनी (बिहार)

अल्हा/महराइ-

(1) **मो. जीबछ** सुपुत्र मो. बिलट मरहूम, उमेर- ६५, पता- गाम- बसहा, पोस्ट- बड़हारा, भाया- अन्धराठाढ़ी, जिला- मधुबनी, पिन- ८४७४०१

जोगिरा-

श्री बच्चन मण्डल सुपुत्र स्व. सीताराम मण्डल, उमेर- ६०, पता- गाम+पोस्ट- बेरमा, भाया- तमुरिया, थाना- झंझारपुर (आर.एस. शिविर), जिला- मधुबनी पिन- ८४७४१० (बिहार)

श्री रामदेव ठाकुर सुपुत्र स्व. जागेश्वर ठाकुर, उमेर- ५०, पता- गाम+पोस्ट- बेरमा, भाया- तमुरिया, थाना- झंझारपुर (आर.एस. शिविर), जिला- मधुबनी पिन- ८४७४१० (बिहार)

पराती (प्रभाती) गौनिहार आ खजरी/ खौजरी वादक-

(1) श्री सुकदेव साफी
सुपुत्र श्री ,
पता- गाम इटहरी, पोस्ट- बेलही, भाया- निर्मली, थाना- मरौना, जिला- सुपौल (बिहार)

पराती (प्रभाती) गौनिहार - (अगहनसँ माघ-फागुन तक गाओल जाइत)

(1) **सुकदेव साफी** सुपुत्र स्व. बाबूनाथ साफी, उमेर- ७५, पता- गाम इटहरी, पोस्ट- बेलही, भाया- निर्मली, थाना- मरौना, जिला- सुपौल (बिहार)

(2) **लेल्हु दास** सुपुत्र स्व. सनक मण्डल पता- गाम+पोस्ट- बेरमा, भाया- तमुरिया, थाना- झंझारपुर (आर.एस. शिविर), जिला- मधुबनी पिन- ८४७४१० (बिहार)

झरनी-

(1) **मो. गुल हसन** सुपुत्र अब्दुल रसीद मरहूम, पता- गाम+पोस्ट- बेरमा, भाया- तमुरिया, थाना- झंझारपुर (आर.एस. शिविर), जिला- मधुबनी पिन- ८४७४१० (बिहार)

(2) **मो. रहमान साहब** सुपुत्र...., उमेर- ५८, गाम- नरहिया, भाया- फुलपरास, जिला- मधुबनी (बिहार)

नाल वादक-

(1) **श्री जगत नारायण मण्डल** सुपुत्र स्व. खुशीलाल मण्डल, उमेर- ४०, गाम+पोस्ट- ककरडोभ, भाया- नरहिया, थाना- लौकही, जिला- मधुबनी (बिहार)

(2) श्री देव नारायण यादव सुपुत्र श्री कुशुमलाल यादव, पता- गाम- बनरझुला, पोस्ट- अमही, थाना- घोघड़डीहा, जिला- मधुबनी (बिहार)

गीतहारि/ लोक गीत-

(1) **श्रीमती फुदनी देवी** पत्नी श्री रामफल मण्डल, पता- गाम+पोस्ट- बेरमा, भाया- तमुरिया, थाना- झंझारपुर (आर.एस. शिविर), जिला- मधुबनी पिन- ८४७४१० (बिहार)

(2) **सुश्री सुविता कुमारी** सुपुत्री श्री गंगाराम मण्डल, उमेर- १८, पता- गाम- मछधी, पोस्ट- बलियारि, भाया- झंझारपुर, जिला- मधुबनी (बिहार)

खुरदक वादक-

(1) **श्री सीताराम राम** सुपुत्र स्व. जंगल राम, उमेर- ६२, पता- गाम- लक्ष्मिनियाँ, पोस्ट- छजना, भाया- नरहिया, थाना- लौकही, जिला- मधुबनी (बिहार)

(2) श्री लक्ष्मी राम सुपुत्र स्व. पंचू मोची, उमेर- ७०, पता- गाम+पोस्ट- बेरमा, भाया- तमुरिया, थाना- झंझारपुर (आर.एस. शिविर), जिला- मधुबनी पिन- ८४७४१० (बिहार)

काँरनेट-

(1) **श्री चन्दर राम** सुपुत्र- स्व. जीतन राम, उमेर- ५०, पता- गाम- लक्ष्मिनियाँ, पोस्ट- छजना, भाया- नरहिया, थाना- लौकही, जिला- मधुबनी (बिहार)

(2) **मो. सुभान**, उमेर- ५०, पता- गाम+पोस्ट- चनौरागंज, भाया- तमुरिया, जिला- मधुबनी (बिहार)

बेन्जू वादक-

(1) श्री राज कुमार महतो सुपुत्र स्व. लक्ष्मी महतो, उमेर- ४५, गाम- निर्मली वार्ड नं. ०४, जिला- सुपौल (बिहार)

(2) श्री घुरन राम, उमेर- ४३, गाम+पोस्ट- बनगामा, भाया- नरहिया, जिला- मधुबनी (बिहार)

भगैत गवैया-

(1) **श्री जीबछ यादव** सुपुत्र स्व. रूपालाल यादव, उमेर- ८०, पता- गाम इटहरी, पोस्ट- बेलही, भाया- निर्मली, थाना- मरौना, जिला- सुपौल (बिहार)

(2) **श्री शम्भु मण्डल** सुपुत्र स्व. लखन मण्डल, पता- गाम- बढियाघाट-रसुआर, पोस्ट मुंगराहा, भाया- निर्मली, जिला- सुपौल (बिहार)

खिस्सकर- (खिस्सा कहैबला)-

(1) श्री छुतहरू यादव उर्फ राजकुमार, सुपुत्र श्री राम खेलावन यादव, गाम- घोघरडिहा, पोस्ट- मनोहर पट्टी, थाना- मरौना, जिला- सुपौल, पिन- ८४७४५२

(2) बैजनाथ मुखिया उर्फ टहल मुखिया-

(2)सुपुत्र स्व. ढोंगाइ मुखिया,
पता- गाम+पोस्ट- औरहा, भाया- नरहिया, थाना- लौकही, जिला- मधुबनी (बिहार)

मिथिला चित्रकला-

(1) सुश्री मिथिलेश कुमारी सुपुत्री श्री रामदेव प्रसाद मण्डल 'झारूदार' पता- गाम- रसुआर, पोस्ट- मुंगराहा, भाया- निर्मली, जिला- सुपौल (बिहार)

(2) श्रीमती वीणा देवी पत्नी श्री दिलिप झा, उमेर- ३५, पता- गाम+पोस्ट- बेरमा, भाया- तमुरिया, थाना- झंझारपुर (आर.एस. शिविर), जिला- मधुबनी पिन- ८४७४१० (बिहार)

खजरी/ खौजरी वादक-

(2) श्री किशोरी दास सुपुत्र स्व. नेबैत मण्डल, पता- गाम- रसुआर, पोस्ट- मुंगराहा, भाया- निर्मली, जिला- सुपौल (बिहार)

तबला-

श्री उपेन्द्र चौधरी सुपुत्र स्व. महावीर दास, उमेर- ५५, पता- गाम+पोस्ट- बेरमा, भाया- तमुरिया, थाना- झंझारपुर (आर.एस. शिविर), जिला- मधुबनी पिन- ८४७४१० (बिहार)

श्री देवनाथ यादव सुपुत्र स्व. सर्वजीत यादव, उमेर- ५०, गाम- झाँझपट्टी, पोस्ट- पीपराही, भाया- लदनियाँ, जिला- मधुबनी (बिहार)

सारंगी- (घुना-मुना)

(1) श्री पंची ठाकुर, गाम- पिपराही।

झालि- (झलिबाह)

(1) **श्री कुन्दन कुमार कर्ण** सुपुत्र श्री इन्द्र कुमार कर्ण पता- गाम- रेबाड़ी, पोस्ट- चौरामहरैल, थाना- झंझारपुर, जिला- मधुबनी, पिन- ८४७४०४

(2) **श्री राम खेलावन राउत** सुपुत्र स्व. कैलू राउत, उमेर- ६०, पता- गाम+पोस्ट- बेरमा, भाया- तमुरिया, थाना- झंझारपुर (आर.एस. शिविर), जिला- मधुबनी पिन- ८४७४१० (बिहार)

बौसरी (बौसरी वादक)

श्री रामचन्द्र प्रसाद मण्डल सुपुत्र श्री झोटन मण्डल, उमेर- ३०, बौसरी/बौसली/बासुरी बजबै छथि।
पता- गाम- रसुआर, पोस्ट- मुंगराहा, भाया- निर्मली, जिला- सुपौल (बिहार)

श्री विभूति झा सुपुत्र स्व. कनटीर झा, उमेर- ५०, पता- गाम+पोस्ट- कछुबी, भाया- तमुरिया, जिला- मधुबनी (बिहार)

लोक गाथा गायक

श्री रविन्द्र यादव सुपुत्र सीताराम यादव, पता- गाम- तुलसियाही, पोस्ट- मनोहर पट्टी, थाना- मरौना, जिला- सुपौल (बिहार)

श्री पिचकुन सदाय सुपुत्र स्व. मेथर सदाय, उमेर- ५०, पता- गाम+पोस्ट- बेरमा, भाया- तमुरिया, थाना- झंझारपुर (आर.एस. शिविर), जिला- मधुबनी पिन- ८४७४१० (बिहार)

मजिरा वादक (छोकटा झालि...)

श्री रामपति मण्डल सुपुत्र स्व. अर्जुन मण्डल, पता- गाम- रसुआर, पोस्ट- मुंगराहा, भाया- निर्मली, जिला- सुपौल (बिहार)

मृदंग वादक-

(1) **श्री कपिलेश्वर दास सुपुत्र स्व. सुन्नर दास,** उमेर- ७०, गाम- लक्ष्मिनियाँ, पोस्ट- छजना, भाया- नरहिया, थाना- लौकही, जिला- मधुबनी (बिहार)
(2) **श्री खखर सदाय** सुपुत्र स्व. बंठा सदाय, उमेर- ६०, पता- गाम+पोस्ट- बेरमा, भाया- तमुरिया, थाना- झंझारपुर (आर.एस. शिविर), जिला- मधुबनी पिन- ८४७४१० (बिहार)
तान्पुरा सह भाव संगीत
(1) **श्री रामविलास यादव** सुपुत्र स्व. दुखरन यादव, उमेर- ४८, गाम- सिमरा, पोस्ट- सांगि, भाया- घोघड़डीहा, थाना- फुलपरास, जिला- मधुबनी (बिहार)
तरसा/ तासा-
श्री जोगेन्द्र राम सुपुत्र स्व. बिल्टू राम, उमेर- ५०, पता- गाम+पोस्ट- बेरमा, भाया- तमुरिया, थाना- झंझारपुर (आर.एस. शिविर), जिला- मधुबनी पिन- ८४७४१० (बिहार)
श्री राजेन्द्र राम सुपुत्र कालेश्वर राम, उमेर- ५८, गाम- मझौरा, पास्ट- छजना, भाया- नरहिया, जिला- मधुबनी (बिहार)
रमझालि/ कठझालि/ करताल वादक-
श्री सैनी राम सुपुत्र स्व. ललित राम, उमेर- ५०, पता- गाम+पोस्ट- बेरमा, भाया- तमुरिया, थाना- झंझारपुर (आर.एस. शिविर), जिला- मधुबनी पिन- ८४७४१० (बिहार)
श्री जनक मण्डल सुपुत्र स्व. उचित मण्डल, उमेर- ६०, रमझालि/ कठझालि/ करताल वादक, १९७५ ई.सँ रमझालि बजबै छथि। पता- गाम- बढियाघाट/रसुआर, पोस्ट- मुंगराहा, भाया- निर्मली, जिला- सुपौल (बिहार)
गुमगुमियाँ/ ग्रुम बाजा
श्री परमेश्वर मण्डल सुपुत्र स्व. बिहारी मण्डल उमेर- ४१, १९८० ई.सँ गुमगुमियाँ बजबै छथि।
श्री जुगाय साफी सुपुत्र स्व. श्री श्रीचन्द्र साफी, उमेर- ७५, पता- गाम+पोस्ट- बेरमा, भाया- तमुरिया, थाना- झंझारपुर (आर.एस. शिविर), जिला- मधुबनी पिन- ८४७४१० (बिहार)
डंका/ ढोल वादक
श्री बदरी राम, उमेर- ५५, पता- गाम इटहरी, पोस्ट- बेलही, भाया- निर्मली, थाना- मरौना, जिला- सुपौल (बिहार)
श्री योगेन्द्र राम सुपुत्र स्व. बिल्टू राम, उमेर- ५५, पता- गाम+पोस्ट- बेरमा, भाया- तमुरिया, थाना- झंझारपुर (आर.एस. शिविर), जिला- मधुबनी पिन- ८४७४१० (बिहार)
डंफा (होलीमे बजाओल जाइत...)
श्री जग्रनाथ चौधरी उर्फ धियानी दास सुपुत्र स्व. महावीर दास, उमेर- ६५, पता- गाम+पोस्ट- बेरमा, भाया- तमुरिया, थाना- झंझारपुर (आर.एस. शिविर),जिला- मधुबनी पिन- ८४७४१० (बिहार)
श्री महेन्द्र पोद्दार, उमेर- ६५, पता- गाम+पोस्ट- चनौरागंज, भाया- तमुरिया, जिला- मधुबनी (बिहार)
नडेरा/ डिगरी-
श्री राम प्रसाद राम सुपुत्र स्व. सरयुग मोची, उमेर- ५२, पता- गाम+पोस्ट- बेरमा, भाया- तमुरिया, थाना- झंझारपुर (आर.एस. शिविर), जिला- मधुबनी पिन- ८४७४१० (बिहार)

विदेहक किछु विशेषांक:-
१) हाइकू विशेषांक १२ म अंक, १५ जून २००८
Videha_15_06_2008.pdf Videha_15_06_2008_Tirhuta.pdf 12.pdf
२) गजल विशेषांक २१ म अंक, १ नवम्बर २००८
Videha_01_11_2008.pdf Videha_01_11_2008_Tirhuta.pdf 21.pdf
३) विहनि कथा विशेषांक ६७ म अंक, १ अक्टूबर २०१०
Videha_01_10_2010 Videha_01_10_2010_Tirhuta 67
४) बाल साहित्य विशेषांक ७० म अंक, १५ नवम्बर २०१०
Videha_15_11_2010 Videha_15_11_2010_Tirhuta 70
५) नाटक विशेषांक ७२ म अंक १५ दिसम्बर२०१०
Videha_15_12_2010 Videha_15_12_2010_Tirhuta 72
६) नारी विशेषांक ७७म अंक ०१ मार्च २०११
Videha_01_03_2011 Videha_01_03_2011_Tirhuta 77
७) बाल गजल विशेषांक विदेहक अंक १११ म अंक, १ अगस्त २०१२
Videha_01_08_2012 Videha_01_08_2012_Tirhuta 111
८) भक्ति गजल विशेषांक १२६ म अंक, १५ मार्च २०१३
Videha_15_03_2013 Videha_15_03_2013_Tirhuta 126
९) गजल आलोचना-समालोचना-समीक्षा विशेषांक १४२ म, अंक १५ नवम्बर २०१३
Videha_15_11_2013 Videha_15_11_2013_Tirhuta 142
१०) काशीकांत मिश्र मधुप विशेषांक १६९ म अंक १ जनवरी २०१५
Videha_01_01_2015
११) अरविन्द ठाकुर विशेषांक १८९ म अंक १ नवम्बर २०१५
Videha_01_11_2015
१२) जगदीश चन्द्र ठाकुर अनिल विशेषांक १९१ म अंक १ दिसम्बर २०१५
Videha_01_12_2015
१३) विदेह सम्मान विशेषाक- २००म अक १५ अप्रैल २०१६/ २०५ म अक १ जुलाई २०१६
Videha_15_04_2016

Videha_01_07_2016

१४) मैथिली सी.डी./ अल्बम गीत संगीत विशेषांक- २१७ म अंक ०१ जनवरी २०१७

Videha_01_01_2017

लेखकसं आमंत्रित रचनापर आमंत्रित आलोचकक टिप्पणीक शृंखला

१. कामिनीक पांच टा कविता आ ओइपर मधुकान्त झाक टिप्पणी

VIDEHA 209th issue विदेहक दू सए नौम अंक

Videha_01_09_2016

विदेह ई-पत्रिकाक बीछल रचनाक संग- मैथिलीक सर्वश्रेष्ठ रचनाक एकटा समानान्तर संकलन
विदेह:सदेह:२ (मैथिली प्रबन्ध-निबन्ध-समालोचना २००९-१०)
विदेह:सदेह:३ (मैथिली पद्य २००९-१०)
विदेह:सदेह:४ (मैथिली कथा २००९-१०)
विदेह मैथिली विहनि कथा [विदेह सदेह ५]
विदेह मैथिली लघुकथा [विदेह सदेह ६]
विदेह मैथिली पद्य [विदेह सदेह ७]
विदेह मैथिली नाट्य उत्सव [विदेह सदेह ८]
विदेह मैथिली शिशु उत्सव [विदेह सदेह ९]
विदेह मैथिली प्रबन्ध-निबन्ध-समालोचना [विदेह सदेह १०]
The readers of English translations of Maithili Novel "sahasrabadhani" and verse collection "sahasrabdik chaupar par" has intimated that the English translation has not been able to grasp the nuances of original Maithili. Therefore the Author has started translating his Maithili works in English himself. After these translations are complete these would be the official translations authorised by the Author of original work.-Editor
Maithili Books can be downloaded from:
https://sites.google.com/a/videha.com/videha-pothi/
Maithili Books can be purchased from:
http://www.amazon.in/
For the first time Maithili books can be read on kindle e-readers. Buy Maithili Books in Kindle format (courtesy Videha) from amazon kindle stores, these e books are delivered worldwide wirelessly:-
http://www.amazon.com/
अपन मंतव्य editorial.staff.videha@gmail.com **पर पठाउ।**

विदेह


मैथिली साहित्य आन्दोलन

विदेह- प्रथममैथिली पाक्षिक ई-पत्रिका ISSN 2229-547X VIDEHA
सम्पादक: गजेन्द्र ठाकुर। सह-सम्पादक: उमेश मंडल। सहायक सम्पादक: राम विलास साहु, नन्द विलास राय, सन्दीप कुमार साफी आ मुन्नाजी (मनोज कुमार कर्ण)। सम्पादक- नाटक-रंगमंच-चलचित्र- बेचन ठाकुर। सम्पादक- सूचना-सम्पर्क-समाद- पूनम मंडल। सम्पादक- अनुवाद विभाग- विनीत उत्पल।

रचनाकार अपन मौलिक आ अप्रकाशित रचना (जकर मौलिकताक संपूर्ण उत्तरदायित्व लेखक गणक मध्य छन्हि) editorial.staff.videha@gmail.com कैं मेल अटैचमेण्टक रूपमे .doc, .docx, .rtf वा .txt फॉर्मेटमे पठा सकै छथि। रचनाक संग रचनाकार अपन संक्षिप्त परिचयआ अपन स्कैन कएल गेल फोटो पठेता, से आशा करै छी। रचनाक अंतमे टाइप रहए, जे ई रचना मौलिक अछि, आ पहिल प्रकाशनक हेतु विदेह (पाक्षिक) ई पत्रिकाकेँ देल जा रहलअछि।

५ जुलाई २००४ कैंhttp://gajendrathakur.blogspot.com/2004/07/bhalsarik-gachh.html ''भालसरिक गाछ''- मैथिली जालवृत्तसँ प्रारम्भ इंटरनेटपर मैथिलीक प्रथम उपस्थितिक यात्रा '''विदेह'- प्रथम मैथिली पाक्षिक ई पत्रिका'' धरि पहुँचल अछि,जे http://www.videha.co.in/ पर ई प्रकाशित होइत अछि। आब ''भालसरिक गाछ''जालवृत्त 'विदेह' ई-पत्रिकाक प्रवक्ताक संग मैथिली भाषाक जालवृत्तक एग्रीगेटरक रूपमे प्रयुक्त भऽ रहल अछि। विदेह ई-पत्रिका ISSN 2229-547X VIDEHA

सिद्धिरस्तु

कथा-संग्रह

दोहरी हाक

जगदीश प्रसाद मण्डल

दोहरी हाक

जगदीश प्रसाद मण्डल



पल्लवी प्रकाशन
निर्मली

ISBN : 978-93-87675-62-9

दाम : ₹ 251/-

दोसर संस्करण : 2018

प्रकाशक : पल्लवी प्रकाशन
तुलसी भवन, जे.एल.नेहरू मार्ग, वार्ड नं. 06, निर्मली, जिला- सुपौल, बिहार : 847452

वेबसाइट : http://pallavipublication.blogspot.com
ई-मेल : pallavi.publication.nirmali@gmail.com
मोबाइल : 8539043668, 9931654742

प्रिन्ट : मानव आर्ट, निर्मली (सुपौल)
आवरण : दी साहु प्रिन्टिग प्रेस. निर्मली (सुपौल) पिन : 847452

DOHRI HAK
Collection of Short Stories by Sh. Jagdish Prasad Mandal.

समर्पण भाव

गत-मत मीत मनुज मन
मन-मन्दिर भव भवन भवै छइ।
तखने मन भवन भव
देव-दनुज मीलि तान तनै छइ।
देव-दनुज...।
भविते भव भवन खिल-खिल
बाइन वाणी बिचैड़ बिचड़ै छइ।
वाणी वणिक करैण पकैड़
करैण-धरैण धड़ि धड़ै छइ।
करणी-धरणी धीर धड़ै छइ।
विवेक विचार विचरण करै छइ।
विचैड़ विचार विवेक बनि
पाप-पुनक पुल बनै छइ।
पाप-पुनक...।

कथाक सत्तैर-

किछु ने फुरैए

अढ़ाइ मासपर गोपीलाल इलाज करा कऽ पटनासँ घुमल छल। पटनाक इलाज सुनि अचरजो लागल आ खुशियो भेल। अचरज ई जे पटना सन शहरमे अढ़ाइ मास तक रहि, गामक एकटा अदना आदमी अपन शरीरक इलाज करौलक। मुदा ई तँ गामक उपलब्धि भेबे कएल तँए खुशी भेल। जे गोपीलाल दू पीढ़ीसँ, अंग्रेजक जमानासँ लऽ कऽ आइ धरि गामक चौकीदारक रूपमे जिनगी बितौलक ओ आइ केतए अछि, तँए कनी बुझैक जिज्ञासा सेहो भेल। तैसंग ईहो भेल जे समाजक रूपमे अपनो किछु दायित्व बनैए। गोपीलालसँ भेँट करए, पटनासँ एलाक दोसर दिन गेलौं।

गोपीलालकेँ भीतघर। ओना, दरबज्जो भीतेक अछि, बड़ सुन्नर, बड़ बेस, दस गोरेक बैइसैबला। दरबज्जा खाली देख मन झुड़झुड़ा गेल। झुड़झुड़ा ई गेल जे भरिसक गोपीलाल बेमारी लइये कऽ घुमल अछि, जँ दऽ कऽ घुमल रहैत तँ दरबज्जापर रहितए। मुदा जखन भेँट करए एलौं, तखन बिनु भेँट केने घुमबो केहेन हएत। तहूमे जँ अढ़ाइ मासमे रोग आरो मोटा गेल होइ तखन तँ आरो जरूरी भेँट करब भइये जाइए। फेर भेल जे डॉक्टर लग रहि रोग मोटा जाएत, तँ ऐमे डॉक्टरक कोन दोख। ओना, अपनो दोख नहियेँ। जेते चीनी देबै तेते ने मीठ हेतइ। आ जँ नहियेँ देबै, आकि थोड़े-थाड़ चीनी देबै आकि नूनू मिला देबै ई तँ अपन भेल किने। दस रंगक दवाइ जहिना दस रंग काज करैए, तइमे कोनो जरूरी छइ जे मलेटरी जकाँ कतार बन्दी

चलए। तीर्थ स्थानक मेला छी, लोकक भीड़ रहबे करत, तइमे एँड़ी-दौड़ी लगबे करत किने। तहूमे डॉक्टर रोग छोड़बैबला दवाइ तँ नहि छी, तखन दोखे किए...। तैबीच जीबछ भायकेँ देखलयैन जे गोपीलालक भेँट करए ओहो आबि रहला अछि।

जीबछ भायकेँ देख मनमे आरो हूबा भेल। फरिक्केसँ बजलौं-

"गोर लगै छी जीबछ भाय।"

दरबज्जेपर ठाढ़ रही, पारखी जीबछ भाय बुझि गेला। कहलैन-

"ऐठाम किए ठाढ़ छह?"

कहलयैन-

"दरबज्जा देख धकमका गेलौं?"

रेहल-खेहल जीबछ भाय छथिये, धड़धड़ाइत आँगन दिस बढ़ैत बजला-

"अखन अँगने ने दरबज्जो बनि गेल अछि। तखन तँ एतबे परहेज करब जे चारि डेग पाछूए-सँ हिया कऽ देख लेब जे कोन गप केकरा मुहेँ केहेन चलि रहल अछि, तइ अनुकूल अपनाकेँ समाहित करब।"

जीबछ भाइक विचार नीक लागल। पाछू-पाछू विदा भेलौं। अँगनाक मुहसँ चारि डेग पाछुए रही कि पुबरिया घरक ओसारक एक भागक चौकीपर बैसल गोपीलालकेँ देखलयैन आ दोसर भागमे आठ-दसटा बैसल स्त्रीगण। बेसीकाल सँ बैसल स्त्रीगण सबहक दरबारमे गोपीलालक बेमारीक विचार तर पड़ि गेल छल आ अपन-अपन जिनगीक गप चलि रहल छल।

जीबछ भाय आगूमे ठमैक कऽ ठाढ़ होइत आँखिक इशारासँ हमरा सचेत केलैन। भोजपुरवाली आ सुपौलवालीक बीच अपन-

अपन मातृभूमिक बड़ाइ दुनू गोरे अपना-अपना ढंगे करैत छेली, जइ बीच भाषा आबि झगड़ा ठाढ़ केने छल। छुच्छे मुँहक गप झूठो भऽ सकैए मुदा जे लिखितमे अछि ओ केना झूठ हएत। दुनूकेँ अपन-अपन पढ़ल रहबे करैन। जखने भाषा औत तखने भोजन औत आ जखने भोजन औत तखने ओकर सुआद सेहो एबे करत। सुआद अबिते भोजपुरवाली बजली-

"मिरचाइक सुआदक जेवरात ओकर तीतपन छिऐ।"

सुपौलवालीकेँ अनसोहाँत लगलैन। अनसोहाँत ई लगलैन जे जँ मिरचाइक सुआदकेँ 'तीत' कहबै तँ करैलाक सुआदकेँ की कहबै? बजली-

"अपना मनक मौजी आ बौहकेँ कहलौं भौजी..! अहींटा केँ कहलासँ नइ ने हएत।"

ओना, कहा-कहीमे आठो-दसो स्त्रीगण दस दिस छिड़ियाल तँए अपना बेथे सभ बेथाएल। जइसँ चुपा-चुपी पसरले छल, मुदा ई दुनू[1] अपन राग-तान तँ पकड़नहि छेली...।

खखास करैत जीबछ भाय अँगना पहुँचला, आ बिनु खसासे जीबछ भाइक पीठपर अपनो पहुँचलौं।

आठो-दसो स्त्रीगणकेँ बैसल देख बजलौं-

"जीबछ भाय, लोकमे काफी जागरूकता आबि गेल। एना जँ बर-बेमारीमे जिगेसा-बात हुअए तँ तेलोसँ चिक्कन हएत किने?"

'तेल'क नाओं सुनि तिलियाइत जीबछ भाय बजला-

"कोन तेलसँ केते चिक्कन हएत से कहाँ कहलह, जे खाइबला तेलसँ चिक्कन हएत कि पीबैबलासँ, आकि मालिस करैबला तेलसँ

[1] भोजपुरवाली, सुपौलवाली

हएत कि देह-हाथमे सभदिन लइबलासँ। मुदा अखन एकरा छोड़ह।"

चामक मुँह छीहे बजबजा गेल। ओना, चामोक मुँह चान सन सेहो अछि मुदा से नहि, बजा गेल-

"जीबछ भाय, जँ सोझे महककेँ एना छोड़ैत जेबै, सेहो नीक नहियेँ।"

हमर बातसँ जीबछ भायकेँ कुवाथ नइ भेलैन। मुस्की दैत बजला-

"सभ दिन तोहू अनाड़ी-के-अनाड़ीए रहि गेलह..!"

जीबछ भाइक मुहेँ 'अनाड़ी' सुनि मनमे परपन शुरू भेल। मन हरियाए लगल, खुशियाए लगल। जइसँ जेहने खुशी मनमे खुशियाएल तेहने ठोरसँ निकलल-

"दुनियाँमे जेते ढोल अछि भाय, ओते तँ बजौनिहारो ने अछि।"

ओना, जहिना बहैत धारमे सड़लसँ पाकल धरि सभ-पानि एकेगतिये भँसियाइत चलैए तहिना सड़लसँ पाकल धरि सबहक रस्तो नमहर अछि किने। तँए, सभकेँ एक्के गुण-धरम मानल जाएत..?

बजैत-बजैत जीबछ भाय बिच्चे धारमे रुकि गेला। पाछूसँ धकियबैत बजलौं-

"भाय साहैब, बिच्चे पाँतरमे किए रुकि गेलौं, गाड़ीक पेट्रोल सठि गेल?"

जहिना हम धकियौने छेलिऐन तहिना ओहो धकियबैत बजला-

"अपन एकटा बात बीचमे आबि गेल से पहिने कहै छिअ। पैछला बातकेँ ताबे पराग्राफ बना थामह। एक दिन कानमे टनकी उठल। हहाइत-फुहाइत जा ओछाइपर पड़ि रहलौं। पड़ल देख पत्नी जोरसँ बजली- 'की भेल?' बगले घरक दोसर गोरे रस्तेपर ठाढ़ सुनली,

ओहो कनी जोर लगा बजली। सौंसे टोल समाचार पसैर गेल। काने टनक छल। एके-दुइये सतरहटा जनानी जिगेसा करए पहुँचली। पुरुख सुनला कि नहि, मुदा एको गोरे नइ पहुँचला। अपन जिगेसा छल तँए सबहक बातक संग विचारो सुनए पड़त। सतरहो गोरे सतरह रंगक दवाइ बता देलैन। तखन बुझि पड़ल जे दुनियाँमे कोनो साइंस बढ़ल तँ ओ मेडिकल साइंस बढ़ल। जेते मनुख तेते डॉक्टर..! बता तँ देलैन मुदा एकटा भेटत हिमालय पहाड़मे आ दोसर भेटत जगरनाथ लगहक समुद्रमे, मुदा आनत के? लंकासँ जे हनुमानजी आमक आँठी-सभ फेकलैन, से रोपने के केते अछि..!"

जीबछ भाइक बात सुनि जेना अपनो मनमे भेल जे दुनियाँक साए बेबकूफमे एकटा हमहूँ छी, जे एलौं हेन गोपीलालक बीमारीक जिगेसा करए आ सुनि रहल छी मौग-मेहरीक इलाज..!

ओना, सौंसे ओसार भरल लोक छल तँए किछु बजलौं नहि, तैबीच जीबछ भाय गोपीलालकेँ पुछलखिन-

"गोपी, रोगक की हाल?"

गोपीलालक मन रोगसँ रोगियाएल छल आकि लोक देख मन सोगियाएल छल से तँ गोपीलाल जानए। मुदा अनजानमे आकि जानि कऽ गोपीलाल बाजल-

"भाय साहैब, किछु ने फुरैए..!"

गोपीलालक बात सुनि जीबछ भाय चौंकला। मनमे फुटलैन- 'अरे बाप! ई तँ परती खेतक भाँजमे पड़ि गेलौं! ओ हमर अगुताइ मानत..?'

जीबछ भाय बजला-

"गोपी, अखन अपनो चैन नइ छी आ बहुत लोक बैसलो छैथ, तँए अखन छुट्टी दएह। काल्हि तँ कनी मधबनी जाएब, परसू

भिनसुरके पहर आबि सभ गप करब।"

जीबछ भाय तँ कनछी काटि कौल्हुका भाँज मेटा लेलैन मुदा असगरे जीबछ भाय नइ ने छैथ, अपनो छी किने। मनमे उठल- एक तँ जिगेसा करए एलौं, सेहो जँ नीक जकाँ नहि कऽ पेलौं तखन एबे किए केलौं। गोपीलालकेँ की कहबै? मुदा लगले फेर भेल जे जखन जिगेसा करए एलौं, तखन जँ जिज्ञासु मनमे बिनु धाराक धारक चहटी जकाँ प्रवाहे रूकि जाएत तखन धरियाएत केना? बजलौं-

"गोपीलाल, जीबछ भाइक परसुका भाँज भेलैन आ हमर कौल्हुका रहल।"

दुनू हाथ जोड़ने गोपीलाल ओसारपर ठाढ़े रहल दुनू गोरे विदा भेलौं।

आँगनसँ निकैलते जीबछ भाय बजला-

"श्याम, गोपीलालक वंशक खेरहा केते बुझल छह?"

जीबछ भाइक बात सुनि दलिदर भीखमंगा जहिना बजैए जे तीन दिनक भूखल छी, तोहूसँ टपैत बजलौं-

"भाय साहैब, गोपीलालकेँ सोझे बुझै छी जे गामक चौकीदारो छी आ घरो गामेमे अछि।"

गोपीलाल गामक चौकीदारक पीढ़ीमे दोसर नम्बरमे छैथ। पहिल नम्बरपर हुनकर पिता रहथिन जे अंग्रेजक हुकूमतक समए नियुक्त भेल छला। निम्न जातिक परिवार, कहैले पनरह रूपैया दरमाहा रहैन मुदा ओ रहै बेठेकान, एक तँ मासे-मास भेटै नहि, दोसर-सरकारी तंत्रसँ जुड़ल सेहो नहि रहै, सर्किलक हिसाबसँ असेसर होइत रहै जे ओइ क्षेत्रक जमीनदार सबहक परिवारसँ जुड़ल रहैत। चौकीदारी टैक्सक रूपमे गामक किसान सभसँ तसीलल जाइत आ चौकीदारकेँ दरमाहाक रूपमे भेटैत छल। पहचानक रूपमे एकटा

मुरेठाक कपड़ा सेहो देल जाइत रहइ।

पहिल पीढ़ीक अन्त भेल, देशो अजाद भेल। मुदा ओ ओहिना-के-ओहिना, माने जेहने जिनगी जीबै छल तेहने रहि गेल। ओही चौकीदारक दोसर नम्बरक माने दोसर पीढ़ीक चौकीदार गोपीलाल छी।

स्वतंत्र भेला पछाइत देशमे उथल-पुथल भेबे कएल। किछु ऊपर उठल, किछु निच्चाँ धँसल। मुदा जे भेल, जेतए भेल...।

गोपीलाल जेहने छोट खुट्टीक तेहने देहोक एकहारा तँए जुआनो होइमे देरी लगलै आ जुआन भेला पछाइत जुआनियोँ बेसी दिन टिकबे केलइ हेन। जँ जन्म-कुण्डली ठीक-ठाक रहितै तँ आठ बर्ख पहिनहि सेवा-निवृत्ति भऽ गेल रहितै, मुदा से नहि, अड़सैठ बर्खमे चलितो गोपीलालक अखन तीन साल नोकरी आरो बाँकी छइ।

दोसर दिन, भिनसुरका पहरक चाह-पान केला पछाइत जखन दिनक रूटिंग मिलेलौं तँ काजक सूचीमे पहिल नम्बर गोपीलालक बेमारीक जिगेसा करब छल। जे उचितो छल। जीवनमे जहिना भोजनकेँ प्रमुखता रहितो बेमारीकेँ प्रमुख मानल जाइए तहिना, बेमार गोपीलालक जिगेसा करबकेँ प्रमुख मानि विदा भेलौं।

संजोग नीक बैसल। महिला जगतकेँ भानस-भात, नोकरी-चाकरी करैक पहर रहने गोपीलालक ऐठाम मेला-ठेला जकाँ भीड़-भार नहियेँ छेलइ। अनुकूल मौसम पेब मन खुशी भेल जे भरि पोख गप-सप्प करैक सुसमय भेटल।

जइ चौकीपर गोपीलाल बैसल छल तहीपर जा बैसलौं। ओना, गोपीलालक नातिन कुरसी अनलक, भाय! बेमारीक अवस्थामे जँ डॉक्टर-ओकील जकाँ बैसैक कुरसी तकता तखन तँ भेल रोगक इलाज! ओना, अपना ऐठाम एहनो तँ धारणा बनल ऐछे जे पैघसँ पैघ

रोगकेँ छुतहा रोग[2] बुझि लोक रोगी लग जाइसँ परहेज करए चाहैए। चौकीपर बैसिते गोपीलाल बाजल-

"भाय साहैब, किछु ने फुरैए..!"

गोपीलालक बात सुनि मन पड़ल जे काल्हियो यएह बात गोपीलाल बाजल छल आ आइयो यएह बात बाजल। जरूर किछु तेहेन विचार रोगक जड़िमे अछि जे बेर-बेर गोपीलालक मनमे अँकुर रहल छइ। ओना, अँकुरो-अँकुरोमे अन्तर अछि। तँए केकरो डिम्ही, केकरो अँकुर, केकरो अँखुआ आ केकरो गाछ कहले जाइए, तँए केकरो केलहा मन पड़ै छै तँ केकरो करैक इच्छा मन पड़ै छै आ केकरो संकल्पित काज पछुआइत देख मन पड़ै छइ। खाएर जे छै, जेतए छइ से तेतए छइ, ऐठाम गोपीलालक बात अछि।

बजलौं-

"गोपी, अपने तँ अनुभव करैत हेबह ने जे एना किए पछड़लौं?"

हमरा पुछैसँ पहिनहि गोपीलालक मन बेसी बेथित रहै आकि पुछला पछाइत भेलै, ई गोपीलाले जानत, मुदा तैयो हुब-हुबाइत बाजल-

"भाय साहैब, जखन पुछलौं तँ सभ बात कहिये दइ छी।"

बजैत-बजैत बिच्चेमे पत्नीपर गरैज उठल-

"भाय साहैबकेँ एक घन्टासँ बेसी एना भऽ गेलैन आ हिनका चुल्हिकेँ लोहारक लोहा छुबि देने छैन!"

हमरा रोचे आकि घरबलाक रोचे बेचारी नातिनक हाथे लगले दू कप चाह पठा देली।

एक घोंट चाह पीब गोपीलाल अपन दहीना हाथ देखबैत

[2] छुतहा रोगक माने संक्रामक रोग।

बाजल-

"भाय साहैब, ऐ हाथसँ बहुत काज जिनगीमे केलौं।"

काजक चर्च होइते बजा गेल-

"वाह, वाह बहादुर।"

पहड़िया बहादुर बुझि आकि अपन बहादुरी बुझि गोपीलाल बाजल-

"जहिना बाबू पनरह रूपैआक नोकरीक संग परिवारो देलैन तहिना हमहूँ आइ धरि निमाहैत एलौं। छोट भाय सभ छँटगर होइत गेल, परिवार अलग करैत गेल। पाँचटा अपनो बेटा-बेटीकेँ पोसि-पालि, बिआह-दान करा देलिऐ।"

बजलौं-

"यएह सभ ने परिवारकेँ जीवित रखैक जीवन देब भेल। अही जीवनसँ ने परिवारक संग समाजो जीबैए, जैपर समाजक नींव सेहो ठाढ़ होइए।"

गोपीलाल पाशा पलैट बाजल-

"भाय साहैब, जहियासँ नोकरी शुरू केलौं, तहियासँ कि कोनो एक्केटा हुज्जैत भेल, बुझि पड़ैए जेना गाममे सभसँ बेसी हुजतिया हमहीं छी। जेना हम सभ आन देशक लोक होइ तहिना ने अपनो देशमे गुलामीक गनजन होइते अछि।"

गोपीलालक विचारधारा देख मनमे भेल जे भरिसक गोपीलालक सभ रोग छुटि गेल अछि। बजलौं-

"से की?"

गोपीलाल बाजल-

"पनरह रूपैआक नोकरी आइ पनरह हजार भेल, से कि अहिना

भेल। नीक जकाँ ते मन नइ अछि मुदा सात-आठ बेर जहल जरूर गेल हएब। ओना जहलोमे कम दुर्गैत भेल सेहो नहि। जहिना नरकोमे ठेलम-ठेल होइए तहिना जहलोमे भेल। चिन्हरबा चोर सभकेँ जखैन सोझा पड़ियै आ कि चारिटा गारि ओहो पढ़ए आ चारिटा हमहूँ पढ़ियै।"

बजलौं-

"एक्के घरमे सभ रहै छेलहक?"

गोपीलाल बाजल-

"सरकारक ने जहल छी, सभकेँ ने एक्के रंग अधिकार अछि।"

गोपियेलालक बातकेँ उनटबैत बजलौं-

"गोपी, ई नहि बुझि पेलौं जे किए कहलह जे किछु ने फुरैए?"

जेना गोपीलालो अपन बात कहैले तैयारे रहए तहिना बाजल-

"भाय साहैब, ऐ बातक जवाब पछाइत देब, पहिने दोसर सुनि लिअ।"

हुँहकारी भरैत बजलौं-

"बड़बढ़ियाँ बाजह।"

एकाएक जेना गोपीलालक चेहराक रंग उतरए लगल। जेना ट्यूवेल वा बोरिंगक पाइप धरतीमे गाड़ैकाल तर मुहेँ सरसराइतो आ केतौ-केतौ ठमैकतो बढ़ैए तहिना गोपीलालक मन सेहो अपन बेमारी दिस बढ़ए लगल। बाजल-

"भाय साहैब, तीन सालसँ जहिना दरमाहा बेसी भेल तहिना दुनू परानी तेना रोगा गेलौं जे खरचे बेसिया गेल। मुदा संतोख अछि जे कर्जा-बर्जा नइ होइए, कहुना काज ससारैत चलै छी।"

बजलौं-

"यएह ने भेल तोरा सन काबिल लोकक काज।"

'काबिल' सुनि जेना गोपीलालक कबिलैती घोंसरए लगलै तहिना बाजल-

"भाय साहैब, दरमाहा लोभे नोकरी नइ छोड़ै छी, तीन सालसँ दवाइयो चलैए आ ड्यूटियो करै छी। मघारिमे केहेन शीतलहरी भेल से ते देखले अछि। सात दिनक ड्यूटी एनएचपर भऽ गेल। तेहेन ठंढी लागल जे जान बँचब कठिन भऽ गेल। तखन पटना गेलौं, ओतुके इलाजसँ अखनो जीबै छी।"

बजलौं-

"बेटाकेँ किए ने नोकरी दऽ दइ छहक?"

गोपीलाल बाजल-

"तीनटा बेटा अछि। अपना भैयारीमे हम जेठ छेलिऐ तँए बाबू हमरे नोकरी देलैन आ हमहूँ भाय सभकेँ परिवार ठाढ़ कऽ देलिऐ।"

बजलौं-

"ई की कोनो चोरौल बात अछि।"

'चोरौल बात' सुनि जेना गोपीलाल हिया हारि देलक तहिना बाजल-

"बाबूक अमलदारीमे चारू भाँइ एकठाम छेलौं, तँए बँटवारामे कोनो राहु-केतु नइ लागल। मुदा अपन तीनू बेटा भीन अछि! अखन काजुल छी तखन तँ कियो देखते ने अछि आ काज छुटलापर के देखत।"

वजनदार विचार गोपीलालक बुझि पड़ल। मुदा जँ कहीं नोकरीक बिच्चेमे मरि गेल तखन तीनू बेटाक बीच की हएत? बजलौं-

"नीक हेतह जे अपना जीविते तय-तसफिया कऽ लेबह।"

गोपीलाल बाजल-

"तही ओझरीमे तेना ओझरा गेल छी जे किछु फुरबे ने करैए।"

❍

शब्द संख्या : 2095, तिथि : 12 नवम्बर 2017

महिरम

विदेशसँ एफ.आर.सी.एस.क डिग्री पेब डॉक्टर नैनाराम अपन पढ़ाइक चरम सीमा छुबि सोझे गाम पहुँचल। लछमनपुर गाममे सभ रंगक लोकक बास अछिए, अही गामक डॉ. नौनाराम। चरिचकिया गाड़ीसँ गाम पहुँचल, गामक सिमान टपलाक पछातियो गामकेँ नीक जकाँ नहि देख पौलक। तेकर कारण भेल जे डॉ. नैनारामक मनकेँ ओ विचार घेरि कऽ पकैड़ नेने छल जे जइ आशा-बिसवाससँ पुनियानन बाबा हमरा पाछू पड़ल छला, तीन बर्ख धरि विदेशमे अध्ययन केला पछाइत तेकरा पूर्ति केलौं। वएह ने अपनो जिनगीक नव सीमा आ हुनको पहिल भेँट छी, तँए पहिने हुनकासँ भेँट करैत आगूक आज्ञा पबैत जिनगीमे पएर रोपब...।

ओना, पुनियानन बाबाकेँ सेहो जानकारीमे छेलैन्हे जे नैनाराम डॉक्टरीक उच्च डिग्री प्राप्त केला पछाइत आइ पहिल पहिल डेग गाममे राखत। नव लोकसँ भेँट हेबे करत...। पुनियानन बाबाक मनक जेतेक आन-आन किरियाकलाप छेलैन सभकेँ मनेमे उसाइर डॉक्टर पोतापर नजैर अँटका नेने छला।

भरि गाड़ी चीज-बौसक संग डॉ. नैनाराम आएल अछि। दरबज्जापर गाड़ी लगिते पुनियानन बाबा गाड़ीक समानक संग डॉ. नैनारामकेँ गाड़ीसँ उतारैक पाछू लगि गेला आ नैनाराम अपना संग अपन समान उतारैक पाछू लागल, तँए ने पुनियानन बाबा पोता-रूपमे नैनारामपर नजैर देलैन आ ने नैनाराम बाबाक रूपमे पुनियानन बाबा

दिस तकलक। अपन चीज-वौस उतारैक पाछू लगल रहल, तँए प्रणामो करब पछुआएले छेलइ। गाड़ीक भाड़ा दैत नैनाराम गाड़ीकेँ विदा केलक। दरबज्जाक आगूमे नव-नव रंग-ढंगक चीज-बौस छेलैहे। दरबज्जापर सँ गाड़ी निकलला पछाइत पुनियानन बाबाकेँ होश एलैन जे जइ नैनाकेँ ज्ञानार्जन-ले विदेश पठेलौं ओ ज्ञानक अर्जन केला पछाइत गाम पहुँचल अछि। मुदा केहेन बनि आएल अछि? ओना, विदेशी पानि जँ किछु दबो अछि तँ किछु पानि तेज नहि अछि सेहो नहियेँ कहल जा सकैए। ओही पाइनिक पनियाएल ने डॉ. नैनाराम सेहो छीहे। तैबीच डॉ. नैनाराम अपन आँखिक नजैरसँ बैग-एटैचीक गिनती पुरबैत पुनियानन बाबाक पैरपर झूकि, दुनू हाथे छुबि माथ ऊपर उठौलक। ने पुनियानन बाबा किछु बजला आ ने डॉ. नैनाराम। किछुकाल धरि दुनूक अपन-अपन मन अपन-अपन विचारक बोनमे बोनियाएल रहल। ओना पुनियानन बाबा मने-मने पोताकेँ गोर लगैक असिरवाद दइले नइ सोचै छला से बात नइ छल, मुदा कखनो एहेन भऽ जानि जे जहिना चालू रस्ताकेँ चालू धार तोड़ि अवरूद्ध कऽ दइए आ बीचमे फँसल यात्रीक जे दशा होइए तेहने भऽ जाइन। मुदा लगले एहनो हुअ लगैन जे जहिना एके छड़पानमे हनुमानजी समुद्र फानि लंका पहुँच गेल छला तहिना ने हमरो छड़पान अछि। गाम रूपी समुद्रक पहिल फनबैया तँ भेबे केलौं किने। एक तँ गाममे अखन तक पाँच साए परिवार रहितो तीन गोरे मेडिकल साइंस पढ़ि डॉक्टर बनल अछि। तइ तीनमे हमहीं ने ओहूसँ आगू (एफ.आर.सी.एस.) हनुमानजीक लंकाक समुद्रकेँ फनलौं। ओना, एक तँ अपन देश-दुनियाँक शिरोमणि अछि तहूमे देशक शिरोमणि ने अपनो सभ सगरमाथबला भेलिऐ। गंगा-महानन्दा सन नदीसँ लऽ कऽ ब्रह्मपुत्र धरिक बीच बसैबला...। पुनियानन बाबाक मन बुदबुदेलैन-

"कहू जे विदेशसँ पोता ज्ञान गुनि कऽ आएल, अबिते गोड़

लगलक अछि, किछु असिरवाद नइ देलिऐ!"

मुदा लगले दोसर मन पुनियानन बाबाक पहिल विचारकेँ दोसर विचार ई रोकैत धोपलक जे आब अपना रहल कि जे पोताकेँ असिरवादमे देब। आब तँ ऐगला पीढ़ीक ओ ने भेल, अपन जे विचारमे छल ओ तँ कइये पुरौलौं किने...। एकाएक, पुनियानन बाबाक मनमे जेना हूबा जगलैन। हूबा जगिते नजैर ऊपर केलैन तँ डॉ. नैनारामक आँखि मलिन बुझि पड़लैन। नैनारामक मलिन आँखि देख मने-मन विचारए लगला जे कोनो गाछक फूल वा कोनो गाछक फल, तखन ने अपन रूप बेदरंग बनबैए, जखन ओकरा देहमे कोनो रोग-वियाधि गरसने रहल।

पचीस बर्खक नौजवान डॉ. नैनाराम, जेकर उठाइन पहाड़ जकाँ अछि। मुदा मनक उठाइन जहिना पहाड़ जकाँ उठैत रहैए तहिना विचारैत समुद्र जकाँ गहिंर नइ होइए सेहो नहियेँ कहल जा सकैए। गामसँ उठल नैनाराम, स्कूल-कौलेज होइत शिखरपर पहुँच गेल अछि। होइतो तँ अहिना अछि जे गरीबीमे जहिना धड़धड़ाइत जिनगी खसैए तहिना अमीरीमे धुधुआइत उठिते अछि। डॉ. नैनारामक सेहो ने एहने जिनगी अछि।

दरबज्जाक कोठरीमे डॉ. नैनारामक सभ वस्तु-जात रखबा सुखिया दादी लग आबि पोताकेँ कहलैन-

"बौआ, कखुनका खेने हेबह कखुनका नहि, तँए पहिने कपड़ा-लत्ता बदैल नहा-सोना लएह।"

पत्नीक विचारकेँ सहर्ष मानि पुनियानन बाबा बजला-

"हँ बौआ, पहिने नहा-धो लएह, किछु खा-पीब लएह, पछाइत निचेनसँ आगू-पाछूक सभ गप हेतइ।"

ओना जहिना कपड़ा पहिरबोक चलैन सभठामक अलग-अलग

अछि तहिना नहाइ-धोइक अन्तर सेहो अछिए। मंत्रो स्नान नइ होइए सेहो तँ नहियेँ अछि। मुदा जैठामक रहैक अभ्यस्त नैनाराम भऽ गेल छल तैठामक लेल अनुकूले छल। मुदा 'जेहेन देश तेहेन भेष' सेहो अनुचित नहियेँ अछि। गर्म प्रदेशमे जहिना कमसँ कम, हल्लुकसँ हल्लुक वस्त्रक जरूरत होइए तहिना ठंढ प्रदेशमे गर्मसँ गर्म आ अधिकसँ अधिक वस्त्रक जरूरत होइते अछि। ओना, डॉ. नैनाराम तीन साल विदेशमे रहल मुदा तइसँ पहिलुका–बाइस-तेइस बर्खक–जिनगी तँ अपने ऐठाम बीतल छेलइ। तैसंग ईहो तँ भइये गेल अछि जे नैनारामक विचारमे परिपक्वता सेहो आबिये गेल अछि। जइसँ बोधमे सुबोधता सेहो आबि गेल...। तैबीच सुभद्रा चाहो आ पानियोँ नेने दरबज्जापर पहुँचली।

चाह-पानि देख सुखिया दादी बजली-

"बौआ, जँ अखन नहाइक मन नइ होइ छह तँ नहि नहाबह, हाथे-पएर धोइ पहिने चाह पीब लएह।"

ओना पुनियानन बाबा सेहो मने-मन नैनारामक मलिन नजैरकेँ अपना नजरिये आँकि रहल छला मुदा मनक बात तँ तखने ने बुझता जखन डॉ. नैनारामक मनक भरास निकलत। से तँ नैनारामो निकालि नहि रहल अछि, जइसँ पुनियानन बाबाक मनमे ईहो होनि जे हमरा की, सभकेँ बुझल छै जे 'गमैया गोनैर दुनू कात चिकने..!' जँ परिवारक आमद समटल बान्हल रहत आ तइ बीचक जिनगी रहत, ओकरा जँ कियो, माने तइ परिवारोक आ परिवारजनोकेँ, आँगुर उठा कनाह वा अन्हराएल आँखिये देखत, तँ ओहू परिवारजनकेँ बराबरीक विपरीत पाशा तँ ओहन भइये जाएत जे कनहाक बँचलोहो आँखि आ अन्हराक चौपटोकेँ फोरत।

संयोग नीक बनल, एक तँ ओहुना जेना बोनाएल बोनमे

अनगिनत गाछक बीच अनगिनत रस्ता रहने जेमहर जाइक हुअए, रस्ते-रस्ता रहैए, तहिना परिवारोमे कोनो रूपक नव आगमन भेने सेहो एकठाम बैस बतियाइक संजोगक रस्ता नइ बनैए सेहो नहियेँ कहल जा सकैए। तहूमे गामे छी, जखन ऊँट-गदहापर लदल लोकक प्रवेश होइए आ दसटा देखनिहार आगू-पाछू होइत देखए लगैए तखन तँ डॉ. नैनाराम सहजे 'डॉक्टर' बनि परिवारमे पहुँचल अछि। सोभाविके अछि जे परिवारमे कमासुत पुत भेने जहिना माए-बापक मनमे पुतपन जगै छैन तहिना बाल-बोध आसक संग दहेजी दुनियाँमे दहाइत बेटी-बहिनक आशा सेहो जगिते अछि। बाबा-दादी भलेँ गरियाइये-गरियाइये किए ने कहथिन जे 'बेहूदा निमक-हराम भऽ गेल! केकरा एते नून खुएलौं जे बीस बर्खक बिसैर गेल! एहेन बिसराहकेँ जे छह मासक पछाइत नून चटेलौं, से जन्मक छठिये दिन चटा दैतिऐ।'

तैसंग ईहो ने कहबे करथिन जे 'जेकरा बुझै दुआरे पढ़ेलौं, ओ जे एते बुझला पछाइतो ऐगला नइ बुझत, तँ की आनो अपन सात जन्मक औरुदा ओकरे दऽ देत! सभ अपना-अपना औरुदे ने जीबो करैए आ मरबो करैए। औरुदा केकरो कियो केतौसँ आनि कऽ देत आकि अपना मने-देहमे छइ।'

संजोग बनल जे चाहे पीबैत-पीबैत रंग-रंगक चाह सेहो जगिये गेल। भाय, 'जेतइ चाह तेतइ ने राह।' सभकेँ अपन-अपन जिनगीमे बधो-रूकाबट छइहे। चाह चलला पछाइत पान चलल। पान तँ चलल मुदा डॉ. नैनाराम मनाही करैत सुभद्रा-बहिनकेँ कहलक-

"नइ, बुच्ची पान नइ खाइ छी।"

ओना, सुभद्राक मनमे ईहो भेल जे अपनो ऐठामक डॉक्टर आ विदेशोक सभ पान नइ खाइ छैथ, सिगरेटे चुरुट पीबै छैथ। मुदा से बाबाक सोझामे एहेन गल्ती हम केना करब। खाहिंस हेतैन आ बजता

तँ छोट बहिन छिऐन्हे आनि देबैन। मुदा एते रच्छ रहल जे चाहे तक विचार अँटैक गेल।

पुनियानन बाबा अपन ताकमे रहैथ जे अपन अनुभव तँ नैनारामे ने बाजत। जे हम सभ नइ बुझने छी, बुझब। ओना पुनियानन बाबाक अपन विचार छैन जे मनुखक जिनगीमे जहिना काजक महिरम तहिना विचारक महिरम जँ प्रेमसँ मिलल-जुलल नइ रहत तँ चलैक महिरम केना औत। आ जखन चलैक महिरमे जे नइ बुझत तँ ओ जिनगीक महिरम की बुझत। आ जखन जिनगीक महिरमे नइ बुझत तँ 'महि'मे रमब केना बुझत? केना बुझत जे करमे जीवन छी आ मने बिसवास? आ जखन सएह नइ बुझत तखन 'महि'मे महियाक कील बनि मेहकेँ अँटकौत केना? आ जँ से नइ तँ ओ मनुखक भेल आकि जंगलधारी बनमानुखक? भाय! बोनक बास जहिना ऋषि-मुनिक छै तहिना ने मनुखो-बनमानुखक छइहे।

ओना परिवारक सभजन सोझमे कातो-करोटसँ नव लोकक बीच नव-नव विचार सुनि नवांकुर जिनगीक विचार सुनैले कान लगौने छल।

डॉक्टर नैनाराम शुरूहेसँ नीक विद्यार्थी रहल, शुरूहेसँ नीकपन बनल रहलै आ अखनो ओहिना छइ। अपन अध्ययनक दौड़मे डॉक्टर नैनाराम ओइ सिमानपर पहुँच गेल अछि जैठाम आगूक अध्ययन शेष अछि। सोभाविक अछि जे उत्तर बाँकी रहबे करत। ओना, सुखिया दादीक मनमे खौंझ सेहो उठैत रहैन जे केहेन ई छौड़ा भऽ गेल अछि, जेना एते ऊपरसँ आएल तेना सभसँ हँसैत-बजैत सभकेँ हँसबैत-बजबैत रहैत मुदा.., अनेरे गोंग जकाँ मोम बनल अछि। जेना धोबियाक गदहा जकाँ सौंसे दुनियाँक बोझा उधने हुअए तहिना मुँहचुरु केने अछि। मुदा लगले सुखिया दादीकेँ युक्ति सुझलैन,

पुनियानन बाबा दिस मुँह घुमा कऽ बजली-

"बौआक पढ़ाइसँ तँ निवृत्ति भइये गेलौं। आब बिआहो कइये दियौ।"

परिवारक जे वृद्धजनक सोचक ढंग अछि ओइ अनुकूले सुखिया दादीक विचार छेलैन। मुदा पुनियानन बाबाक मनमे एकसंग अनेको प्रश्न उठि मोटा जकाँ लदा गेलैन। नैनारामकेँ उठैमे जहिना अपन नजैर केलकै तहिना ने हमहूँ नजैरमे रखलिऐ। रखबे नइ केलिऐ अखनो रखने छिऐ जे नैनारामे किए तइसँ आगू मैनारामोक अपन जहिना नीक दिस बढ़ैक नजैर उठतै तँ ओहिना हमहूँ अपन दायित्व भरि नजैर उठौने रहबै...। मुदा लगले पुनियानन बाबाक नजैर सुखिया दादीपर गेलैन। मनमे खौंझ उठलैन जे बीचमे भादवक भदवा बनि बैसल छैथ, तँए तेते ने हौहैटिया कलकैलिया जकाँ देह-हाथ-मुँह कुरियौनाइकेँ सुख बुझि जिनगीक सुखकेँ आरो भूखा देती जे किछु कहौ कि नहि! कहू ई केहेन भेल जे नैनारामकेँ पढ़बैमे मिसियो भरि अपना मनमे खरोंच नइ रहल जे नैनारामक विचारकेँ कहियो दबलौं। आब ओ अपन विचारक स्वतंत्र मालिक अछि, अपन कर्ता-धर्ता भेल। तैबीच हिनका[3] बिआहक कोन खगता भऽ गेलैन! भाय, ई की छोट-छीन बात छी, बजैकाल तँ सभ बाजि दइ छिऐ जे पचास प्रतिशत महिला आ पचास प्रतिशत पुरुख अछि। गाममे अदहा-अदही महिला रहनौं नैनारामक जोड़क दोसर नइ अछि, अहिना ने सभ गाममे छै, तखन परिवारक गाड़ीक पहिया केना पाहि लगा चलत। ओ तँ दू रंग चलबे करत किने। आब ऐ बुढ़ाड़ीमे गामे-गाम लड़कीक खोज-पुछारि करब हमर साधक अछि जे अनेरे बीचमे टपैक गेली..!

पत्नीकेँ हटैत-डपटैत पुनियानन बाबा बजला-

[3] पत्नीकेँ

"बुझि पड़ैए जेना अहीं विदेशसँ पढ़ि-गुनि आएल होइ तहिना बीचमे टपकै छी। नैनाराम डॉक्टरीक शिक्षा पेब विदेशसँ घुमल अछि, आगू-ले ओ अपने की सोचि रहल अछि, से नैनारामक मुहेँ ने अपना सभ सुनब।"

ओना, सुखिया दादी पुनियानन बाबाक विचारकेँ नजरियेसँ परेख लइ छैथ, तँए विचारकेँ मोड़ैक ढंग सेहो सीखिये नेने छैथ...।

सुखिया दादी बजली-

"बेस बात बौआकेँ बुझौलिऐ!"

पुनियानन बाबासँ नैनाराम बच्चेसँ प्रभावित रहल। जेकर प्रभाव अखनो ओहिना मन-मस्तिष्कमे मसल-गसल छइहे। विचारक बोझतर दबल नैनाराम दादीकेँ सम्बोधित करैत बाजल-

"दादी, जखन डॉक्टरी शिक्षा लेब शुरू केलौं तहिया नमहर दुनियाँ देखै छेलिऐ। मुदा एम.बी.बी.एस. केलाक बाद दुनियाँ आरो विशाल बुझि पड़ल। मुदा जहिना हजारो रोगीक हजारो रोग अछि तहिना हजारो रोगक हजारो दवाइ मनमे नचैत छल।"

सुखिया दादी मुड़ी डोलबैत बजली-

"एकरा के काटत!"

दादीक सह देख नैनाराम बाजल-

"दादी! आब ओइ हजार रोगमे सँ एकवाहि भऽ गेलौं।"

बजन्ता दादी छथिये। बिच्चेमे जहिना आमक गाछक टभकल आम बिनु हवोक खसैए, तहिना सुखिया दादी बजली-

"की एकवाहि बौआ?"

नैनाराम बाजल-

"दादी, आब एक्केटा रोगक नीक जकाँ पढ़ने पैछला सभ रोगो

आ रोगक इलाजो तर पड़ि गेल। जहिना तर पड़ि गेने कपड़ाक थानमे कपड़ाकेँ, किताबक थानमे किताबकेँ लोक बिसैर जाइए तहिना ने भाषाक शब्दक सेहो तर पड़ने बिसरिये जाइए। जेकर उपयोग नइ भेने ओहो बिनु टिकट कटौनहि मनसँ ससैर जाइए।"

पुनियानन बाबा नजैर उठा डॉक्टर नैनारामपर देलैन। बाबाक नजैर पड़िते नैनाराम चौंकल। नैनारामक चौंकब देख पुनियानन बाबा बुझि गेला। जइसँ बाबा-पोताक बीचक धारकेँ धारावाहित करैत बजला-

"बौआ, जहिना हरिक हजार नामक जप, भक्तजन जपै छैथ तहिना तोरो पुरान वस्तु ओते अपना गेल छह जे जिनगीमे केतौ बाध-बाधा नइ हेतह। मुदा आगूक बाट बिटिया बढ़बह कि अतीतमे बेतीत करबह।"

ओना, डॉ. नैनाराम विचारक गम्भीरतम स्तरसँ विचार करैत छल मुदा विचारोक स्तरमे जिनगीक जंगलमे गली-कुची कम अछि सेहो तँ नहियेँ अछि। झड़बैरक जंगल-झाड़ जकाँ निच्चाँ खाली रस्ता जकाँ जँ जगहो अछि तँ ऊपर मेघडम्बर जकाँ काँटक जाल सेहो लगले अछि। तही बीचमे ने अपनो सभ छिऐ। तँए कि ओ निच्चाँ खाली ऊपर भरल नइ भेल सेहो नइ ने कहल जा सकैए। साँझक भोर आ भोरक साँझ सेहो तँ होइते अछि। जहिना सभ-ले दिनो होइए आ रातियो होइए, जइसँ जहिना भोरो होइए आ साँझो होइए, तहिना ने साँझो होइए आ भोरो होइते अछि। आशा भरल मनसँ पुनियानन बाबा पत्नी दिस तकैत बजला-

"पोताकेँ असिरवाद दियौ, जे प्रेमसँ बौआ हँसैत-खेलैत चलैत रहए।"

सुखिया दादी बजली-

"हम जे कहबै ओ कि अहाँ कहने नइ भेलइ।"

दादीक बात सुनि डॉ. नैनारामक मन्हुआएल मन पुन: मन-मनाइत मनुआ महि-सँ-महिया महिरमक लग पहुँच गेल।

❍

शब्द संख्या : 1984, तिथि : 20 नवम्बर 2017

बेर परहक भदवा

सौन मासक अन्हरिया पखक खष्टी तिथिक शुक्र दिन। चारि बजे भोरमे मध्यम अछार भेल छल तँए मौसम खुशनुमा। ओना, मौसमकेँ खुशनुमा बनैमे सोल्होअना जश अछारेकेँ नहि देल जा सकैए, किए तँ जाड़क मौसम हुअ कि गरमीक आकि बरसातक, सभ मौसमकेँ अपन-अपन चौबीसो घन्टाक जिनगीमे जहिना बारहो मास छै तहिना छबो ऋृतुओ तँ छइहे। ओहीमे ने ऋृतुओ सभ अपन-अपन पाला बदैल कहियो साँझ तँ कहियो भोरक धुरी पकैड़ ऋृतुराज वसन्त बनि वसन्ती हवामे वसन्त गीतो आ वसन्त बहारो बहारि-बहारि अपना दिस समेट लइए। जँ से नइ समटैए तँ किए पतझड़ गुलाबक गाछ शीत-पाला सहितो मनमे आशाक मोटरी बन्हने रहैए जे हमरो वसन्त औत आ फूल-पातसँ आच्छादित बनि हमहूँ कलियेबे करब।

ओना मौसममे सोन्हौन जरूर बुझि पड़ै छल मुदा जेहेन ढेनुआर मौसमक होइए तेहेन नहि छल। जहिना गाए-महींसिक दूधक दू छोर होइए- ढेनुआर आ बकेन। ढेनुआर दूधमे पानिक मात्रा बेसी रहने मक्खन कम बनैए आ जेना-जेना समय आगू बढ़ैत जाइए तेना-तेना मक्खन बढ़ैत जाइए आ पानिक मात्रा कमैत जाइए।

ओछाइनेपर पड़ल रही, ओना सुति कऽ उठैक बेर सभकेँ अपन-अपन होइए, हमरो अपन अछि, तँए बेसी बिलम नहि भेल छल मुदा बिलैम जरूर गेल छेलौं। जहिना रेडियो स्टेशन सभ खुजिते पहिने भरि दिनक कार्यक्रमक परिचय दइए तहिना मनमे भेल जे अपनो भरि

दिनक परिचय पेबैक खगता तँ अछिए, औझुका दिन मन पाड़ैमे ऐगला दिनक खगता पड़बे करैए मुदा तइले पहिने पैछला दिनक तारीख मन पाड़ब तखन ने ओइपर नवका दिन रोपब। जे फुलैत-फड़ैत काल्हिकेँ पकड़त। मन पाड़ए लगलौं।

काल्हि अनहरियाक पंचमी छल तँए आइ खष्टी भेल, पक्ष तँ ठामे रहल किएक तँ पनरह दिनक होइए। दिनोक भाँज लगिये गेल जे काल्हि बरस्पैत छल आइ शुक्र भेल। शुक्र मन पड़िते मनमे उठल-जहिना वृहस्पतियाचार्य तहिना ने शुक्रोचार्य सेहो भेला। सहोदर भाए जकाँ दुनूक घरो सटले छैन। मुदा मन आगू कि बढ़त जे पाछूए घुसैक गेल। पहिल बरखा दिनसँ अखाढ़ मानल जाइए-'अषाढ़स्य प्रथम दिवशे'- कालीदास–से अखन तक कहाँ भेल? भोरमे एकटा अछार भेल। जखन अखाढ़े पछुआएल अछि, तखन सौन केना भेल?

ओझराएल मने संकराँइतकेँ मोन पाड़लौं। परसू अखाढ़क संकराँइत छी, तखन सौन केना आगुरवारे आबि गेल? जहिना पुर्ण राजाकेँ तीसटा दिन छैन, भलेँ छोटे-पैघ किए ने होइत रहए मुदा छैन तँ जरूरे, तहिना ने सकराँइतो महराजकेँ तीसेटा दिन छैन। अंग्रेजिया जकाँ नहि ने जे कोनो अठाइस दिनक तँ कोनो एकतीस दिनक हएत। मन तँ सोझराएल नहियेँ मुदा ओछाइनेपर पड़ल रहने सोझराइयो जाएत सेहो तँ बात नहियेँ अछि। ओना मनमे खुटखुटी जरूर लगि गेल छल। खुटखुटी ई जे कखनो हुअए- जे जखन भोरके जतरा भङ्गैठ गेल तखन दिनमे की हएत की नहि! फेर हुअए जे हेबाक हेतै से हेतइ, तइले माथे-कपार पीटि लेब तहूँसँ तँ नहियेँ हएत। की करितौं, असमंजसमे पड़ल रहनौं, उठिते रही कि कानमे अवाज आएल-

"हरिहर छह हौ?"

'हरिहर' सुनि अवाजेसँ बुझि गेलौं जे जीवेश्वर काका छैथ। सुग्गा जकाँ बोल बदैल बजलौं-

"हँ काका, एलौं...।"

सुग्गा जकाँ बोल बदलब भेल जे दूरीक हिसाबसँ अपन बोलमे स्वर भरब। ओना जीवेश्वर काकाकेँ समाजमे बेसी लोक 'उन्मादी काका' सेहो कहै छैन, मुदा तेकर अर्थ अखनो तक नहि बुझि पेलौं अछि जे लोक किए हिनका 'उन्मादी' कहै छैन। लोकक बोली छी, एकरा कोनो व्याकरणसँ तँ नहियेँ काटल जा सकैए, मुदा शब्दक गुण तँ तकले जा सकैए। मुदा ई भेल समाजक बात, अपन सम्बन्ध-सूत्र जीवेश्वर कक्काक संग ई अछि जे एक दिन कौलेजसँ अबैत रही। परीक्षाक तिथिक घोषणा भेल छल तँए धार आकि पोखैरमे डुमकी मारैबला लोक जकाँ हमहूँ अपन असरा ताकए लगलौं। संजोगसँ जीवेश्वर काका रस्तेपर भेट गेला। भाय, असरा केतौ राखल अछि आकि बौको-बकलेल काका-बाबा किए ने होथि हुनको जखन गोड़ लगबैन तखन ने ओहो मुँहक असराक मुँगबा देता। काकाकेँ आगूएसँ कहलयैन-

"काका, गोड़ लगै छी।"

ओना बजैक क्रममे बाजि गेलौं मुदा लगले भेल जे 'गोड़ लगै छी काका' सँ बेसी नीक होइत पएर छुबि प्रणाम करब। मुँहक चुकल बोल आ पैरक चुकल हाथीक उपाये की। मुहसँ तँ बजलौं मुदा मनमे रहए जे आब कि परीक्षा कोनो अपने लिखने कियो पास करैए। चीट-पुरजी पहुँचेनिहारसँ लऽ कऽ कॉपीमे नम्बर देनिहार तकक आसरा तँ करइ पड़ै छइ। तँए कक्को सन लोकक असरा तँ अछिए।

तैबीच असीरवाद दैत काका बजला-

"बौआ, तोरे सबहक असरामे ने जाबे जीबै छी ताबे जीबै छी,

तँए नजैर रखिहह।"

कक्काक विचारे नइ बुझलौं आकि की, धड़फड़मे बजा गेल-

"अहाँकेँ ऐ देहक जखन जरूरी हुअए काका, तैयार रहत।"

तइ दिनसँ सम्बन्धो बनैत-बढ़ैत गेल आ समयो खटियाइत गेल।

रस्तापर अबिते जीवेश्वर काकापर नजैर दैत मुँह उठा कऽ तकलौं कि काका बजला-

"कौल्हुका जे हरिद्वार जाइक प्रोग्राम बनौने छेलह से काल्हि छोड़ि दहक।"

हरिद्वार जाइक प्रोग्राम छल, जेना-जेना समय लगिचाइत गेल तेना-तेना ओरियानो कऽ नेने छेलौं। कपड़ा-लत्तामे आइरन आ दतमैनक ओरियान कइये नेने छेलौं। एक तँ भिनसुरका समय, तैपर हरिद्वारक विचारक बात, एक्केबेर जेना दुनू कानमे दुनू दिससँ थप्पर लगि गेल। कान तँ झनैक उठल मुदा मन थीर रहल। ओना आन अलगटेंट धिया-पुता जकाँ ई नइ बाजि पेलौं जे 'काका, बुढ़ भऽ गेलौं मुदा बजै-भुकैक ठौर-ठेकान नइ अछि। नइ जेबाक छल तँ नइ बजितौं आ जखन मरदक मुहेँ बजलौं तखन मरदगानीसँ पाछू किए डेग ससारै छी? ओना, धड़फड़मे किछु बाजबो उचित नहि बुझि पड़ल। किए तँ बनल प्रोग्राममे बाधा भेल तेकर तँ सइयो कारण भऽ सकैए। अनठेकानी जँ किछु कहबैन आ तइसँ जँ हुनक मन-विपरीत होनि तखन तँ अनेरे आरो भोरका जतरा भङ्गैठ जाएत। तहूमे जँ किछु खा-पीब नेने रहितौं तखन तँ जतराक किछु भदवा अपने कटि जाइत आ जखने किछुमे कटनियाँ लागए लगैत तखन ओकरामे खाली छबे-छअ, छअ दइक छल। किछु भदवा भेल जे अपना इलाकामे किछु गाम एहेन दगनीसँ दगा गेल अछि जे सुति-उठि ओइ गामक नाओं नेने

भरि दिन अनजल नइ हएत, जे आइये नहि कहिया केतए-सँ एहेन धारणा बनल अछि। एहेन तरहक भदवाक बाट तँ खेलहा-पीलहा लोककेँ कटिये जाइए। ओना अहू बातसँ नकारल नहियेँ जा सकैए जे किछु पुजेगरी सभ छथिये जे बारह-एक बजेमे नहा कऽ पूजा करै छैथ तेकर पछातिये दिनक फलक भोग चढ़बै छैथ, तँए हुनका सबहक भिनसर भेल बारह बजे दिनक पछाइत। तैसंग दोसरो नइ अछि सेहो नहियेँ कहल जा सकैए। दोसर अछि जे किछु गोरे भिनसरमे जे पूजाक ओरियानमे लगै छैथ ओ आठ बजे तक फुलडाली साजि-धाजि लइ छैथ जे ई फूल भेल फल्लाँ देवक, तँ ई भेल फल्लाँ देवीक। भोला बाबा तँ भोले बाबा भेला–ऐँठ-काँठ तीत-मीठ खाइबला–तँए जे फूल किनको पसिन नहि से हुनकर भेलैन। खाएर जे भेलैन से भोला बाबा अपन फरिछा लेता। नअ बजेमे तिलक धियान करैत पूजापर बैस फूलक रस-पान चढ़ा एक बजेमे उठबे करै छैथ तँए हुनकर दिनक भिनसर एक बजे बेरुका बादे होइ छैन...।

मन अनेरे घोर-मट्ठा हुअ लगल। बिना घोर-मट्ठा भेने ने घोरे बनत आ ने मक्खने बनत। घोरमे उज्जर पानिक रंग जे मट्ठाक धोनक पानि भेल, जेकरा लोक दालिक बदला तीमन बना सेहो खाइते अछि। मट्ठा तँ मट्ठे भेल जे अपन अन्तिम मैल तियागि मखनैत घी बनत...।

बिना किछु बजनहि जीवेश्वर कक्काक मुँहपर आँखि गड़ेलौं। ओ बुझि गेला जे हरिहर कौल्हुका प्रोग्रामक विषयमे बुझए चाहि रहल अछि। जीवेश्वर काका बजला-

"हरिहर, तोरा दरबज्जाक चाहो पीना बहुत दिन भऽ गेल। चलह चाहो पीब आ किछु गपो-सप्प करब।"

ओना, सुति कऽ लगले उठले रही तँए मन कनी सकपका जरूर गेल। मुदा कक्काक विचारकेँ टारलो तँ नहियेँ जा सकैए। सकपकाइक

कारण भेल जे चाह पीब गप-सप्प करैक प्रक्रियामे पर-पैखाना, हाथ-मुँहमे पानि लेब इत्यादि पछुआएले छल, मुदा दरबज्जापर जीवेश्वर काका सन लोककेँ चाह पियाएब धिया-पुताक खेलो नहियेँ ने छी। तैठाम जँ जीवेश्वर काका अपने मुँह खोलि चाह पीब गप-सप्प करैक विचार देलैन, तखन मुहोँ मोड़ब नीक केना हएत, तँए आग्रह करैत बजलौं-

"ऐँह काका! अहीं सन लोककेँ ऐने ने टुटल-फुटल दरबज्जाक रंग चमकत। नहि तँ मुरुदघटी जकाँ तँ लगिते अछि।"

गुरुक रूपमे जीवेश्वर काका बजला-

"एना जे बकलेल-ढहलेल जकाँ बजबह तखन..?"

'तखन' कहि काका अपन बोलीमे साइकिल जकाँ बिरेक लगा लेलैन। हुनकर मुँहक बात छिनैत बजलौं-

"काका, तीत कि मीठ, अहाँ लग जेना बजै छी तेना आनो लग थोड़े बजै छी।"

जीवेश्वर काका पाछू घुसकैत बजला-

"देखहक हरिहर, शब्द कोनो अधला नइ अछि। एक्के शब्दक विपरीत परिस्थितिमे माने बदैल जाइए। जेना संगी-साथीक बीच गदहा शब्दक चलैन, बुड़िपना देखि लोक बजैए। मुदा वएह गदहा शब्द विचारक टकराहटक जगहपर खुनिया शब्द बनि जाइए!"

मुदा तैबीच पत्नी एते सतरकी केने छेली जे चाह बना नेने छेली। दरबज्जापर जीवेश्वर काकाकेँ बैसबैत आँगन गेलौं। पत्नीकेँ चाह कहि, बाथरूप दिस बढ़लौं। मनमे बिसवास बनले छल जे जँ कहीं जीवेश्वर काका खोजो करता तँ तीन-केँ-तेरह बनबैवाली पत्नी छथिए जे जीवेश्वर काकाकेँ अलंकारेमे वौआ देतैन। माने भेल दुनूक अपन-अपन विचारक अनुकूल शब्दक विन्यास आ ओकर जेबरो-गहना बुझै

छी....।

जीवेश्वर कक्काक हाथमे चाह देख अपन मन थिरैक गेबे कएल छल। मनमे उठल- हाथमे चाह गेला पछाइत जीवेश्वर काका अपन मुँह बन्ने रखने हेता से असम्भव। ओना, ईहो भइये सकैए जे चाह दइवालीपर सँ नजैर उछैट चाहेपर चलि गेल होनि आ ओकरे रंग-रूप निहारए लगल होथि तँए भरिसक चाहवालीकेँ किछु ने पुछलैन। ओना, पत्नीक आचारणसँ पूर्ण परचित छीहे जे जँ जीवेश्वर काका हमर खोज केने हेता तँ पतिव्रता पत्नी छथिए। हुनका हाथे-मुहेँ कियो बेपाइन थोड़े होइ छैथ जे हम हएब। कहि देथिन जे सूलबाहि होइ छैन। भलेँ सत्-केँ फुसि बना अपन इज्जत गमा लेती मुदा हमर पाग थोड़े खसए देती। से तँ पाइयो भरि कम नहि, सोल्होअना पत्नी छथिए।

ओना, अपनो काजमे सतरकी कऽ नेने छेलौं। सतरकी ई केने छेलौं जे लेटरीनेमे ब्रश सेहो नेनहि गेल छेलौं आ गैस्टिक बेमारी सेहो नहियेँ अछि। तँए धड़फड़ करैत, कनियेँ-कालक पछाइत काका लग पहुँच बजलौं-

“काका, बिनु बुझल चाह बनल छल तँए नीक नइ लगल हएत। एक बेर आरो पीबू तखन मन सोल्होअना चाहपीबू जकाँ भऽ जाएत।”

ओना काजक एकटा प्रक्रिया जीवेश्वर काकामे छैन्हे जे जहिना हम सभ विचार मानै छिऐन तहिना ओहो हमरो सबहक मानिते छैथ। भलेँ किछु टुट-फाट किए ने भऽ जाए। मुदा मूल तत्व ओहिना रहैए। ओना, जीवेश्वर काकाकेँ बजैक विचार जगि गेल रहैन मुदा हमर विचार सुनि मन ठमैक गेलैन। ठमकैक कारण भेलैन जे हम नीक मुहेँ बाजब आ सुनिनिहारक काने उड़ल रहत तखन ओइ लागल अपनो विचार ने उड़ि जाएत। तँए सुनिनिहारक कान सेहो ने चहगर हेबा

चाही। मुदा मन बहलबैत जीवेश्वर काका बजला-

“हरिहर, हरियरीक की हाल-चाल?”

एक तँ ओहुना भिनसरेसँ मन भङ्गठल छल, कटही गाड़ी जकाँ ढकर-ढकर चलैत रही, तैपर तेहेन सोझराएल शब्दमे ओझराएल विचार काका रखि देलैन जे सोझरा कऽ जवाब हमरा बुते देले ने हएत! मुदा साँझ-भोरक ने हवा खाएब छी। रंग-रंगक फूल-पातक गन्ध लगले रहैए...।

बजलौं-

“काका, की हरियरीक हाल रहत। कखनो बेहाल भऽ जाइए तँ कखनो पेमाल भऽ जाइए आ कखनो नेहाल भऽ जाइए।”

तही बीच पत्नी चाह नेने दरबज्जापर पहुँचली। चाहक लीकर देख जीवेश्वर कक्काक मन खुशी भऽ गेलैन। मुस्की दैत बजला-

“हरिहर, भगवान तोरो नीक भनसिया देलखुन?”

ताबे तीन-चारि घोंट चाह पीब नेने रही, कनी-कनी मन फुहराम हुअ लगल रहए। निरुत्तर करैत बजलौं-

“से कि काका हम दहेजमे दहाएल कनियाँ पकैड़ कऽ अनने छी, आकि हाथी चढ़ि गौड़ पूजल अनने छी।”

चाह सठल, पान चलल। मुँहमे पान लइते जीवेश्वर काका बजला-

“बौआ हरि, कौल्हुका जे हरिद्वारक प्रोग्राम छल ओ बाधित भऽ गेल।”

जिज्ञासा भेल, बजलौं-

“की बाधित भेल?”

पैछला विचारकेँ अगुअबैत जीवेश्वर काका बजला-

“बेर परहक भदवा आगूमे ठाढ़ भऽ गेल अछि। ओना, जखन मन हुअ तखन कहिहह। लगले तैयार भऽ विदा भऽ जाएब। मुदा भदवा अगुआ कऽ जाएब नीक नहि।”

बजा गेल-

“तब ते अवसरक भदवा कहियौ कि भादवक भदवा आकि बेर परहक भदवा, पकड़िये लेलक! मुदा एकटा उपाय तँ अछिए जे भदवाक नाँगैर पकैड़ कहियौ- ‘रे भदवा भाग-भाग, रे भदवा भाग-भाग।’ तखन ओ पड़ा जाएत आ अपना सभ विदा हएब।”

अपना जनैत हम बुझल बात बजने छेलौं मुदा जीवेश्वर काका से नइ मानलैन। बजला-

“सुप बजौने जँ ऊँट भागै तँ दुनियाँ आछन्न भऽ जाएत।”

ओना, भिनसुरका पहर छल तँए मन हाथक काज दिस ससरए लगल छल, मुदा कोन तरहक भदवा काकाकेँ लगल छैन से तँ बुझब जरूरी अछिए। बजलौं-

“काका! छोड़ू दुनियाँदारीकेँ, कोन मायाजालमे अनेरे पड़ब। अपन की भदवा लगल से कनी कहियौ।”

जे बात कहैले जीवेश्वर काका आएल छला, तैठाम आबि गेला। जेना नव कोनो उलझन मनकेँ झमारि देने होनि तहिना झमरैत बाजब शुरू केलैन-

“गाममे एकटा एहेन अपाहिज लोकक आगमन भेल अछि जे केतेको अपाहिजकेँ जन्म देत! से सुनबो केलह आकि..?”

आगूक विचार कक्काक पेटेमे रहैन तइ बिच्चेमे बजा गेल-

“नइ!”

‘नइ’ सुनि जेना काकाकेँ अचरज भेलैन तहिना बजला-

“एहेन-एहेन पैघ-पैघ दुर्घटनाक पुल बनैए आ तूँ आँखि-कान बन्न रखने रहै छह!”

ओना जइ घटना दिस जीवेश्वर काका इशारा करै छला से अछि सोझेमे, मुदा आँखिमे ग्लुकोमा भऽ गेल अछि आकि गेजर से बुझिये ने पेब रहल छेलौं। मुदा एते तँ मनमे बिसवास बनले अछि जे कोनो नइ बुझैबला बातकेँ एक बेरक कोन बात जे सइयो बेर जँ काकाकेँ पुछबैन तैयो हुनका जीहपर तिलबा नहियेँ जनमतैन। मनमे जे होइत होनु मुदा मुँहक मुस्की मुस्कियाइते छेलैन।

बजलौं-

“काका की कहब, तेहेन ने धिया-पुताक चालिमे पड़ि गेल छी जे भरि दिन तंग रहै छी, मुदा तैयो तबाही रहिते अछि।”

जीवेश्वर काका-

“से की?”

“से, की कहब काका, छोटका बेटो आ बेटियोकेँ प्राइवेट स्कूलमे पढ़ैले देने छिऐ। अपने जेते कौलेजमे खर्च होइ छल तइसँ बेसी खर्च होइए। ओ दुनू मिला दोबरा गेल अछि तैपर समए-साल देखते छिऐ।”

समए-सालकेँ तँ जीवेश्वर काका मनेमे रखला मुदा पढ़ै-लिखै दिस नजैर बढ़ि गेलैन, बजला-

“जहिना गीताक पछातिक भागवत अछि तहिना ने तोरासँ ऊपर तोहर बेटो-बेटी हएत।”

काका व्यंग केलैन आकि रस्ताक बात कहलैन से निर्णय धड़फड़मे भइये ने सकल। तँए विचारक मुड़ीकेँ लत्तीक मुड़ी जकाँ ओकर दिशा बदैल बजलौं-

“काका, आब की स्कूल-कौलेज ओ स्कूल-कौलेज रहल। आब तँ दोकानक कोन बात जे बजार बनि गेल अछि। जखने बच्चाकेँ नाओं लिखबियौ तखनेसँ ओकरा दोकानक किताब, कॉपी, कलम, कीनियौ। देहक वस्त्र कीनियौ, खाइ-पीबैसँ लऽ कऽ खेलै-धुपै धरिक वस्तु-जात कीनियौ, माने जिनगीक सभ किछु..!”

हमर बात सुनि जीवेश्वर काकाकेँ जेना अकच्छ लगलैन तहिना अकच्छाइत बजला-

“हरिहर, छोड़ऽ ऐ सभ बातकेँ, जहिना गाछक भँट्टा कनाह तहिना ने लत्तीक सीमो लहियाएल। सभ अपने बेथे बेथाएल अछि।”

हमरो नीक लागल, बजलौं-

“की कहए लगलिऐ काका जे गामक घटनाक पुल?”

जीवेश्वर काका बजला-

“परसूखन एकटा हेराएल संगीसँ भेँट भेल।”

बजा गेल-

“भोज-भात खाइ बेरमे हरिहर थोड़े मन रहत?”

जीवेश्वर कक्काक मन मलिन नइ भेलैन। बाजए लगला-

“परसूखन, भदवानन दुनू परानी गाम आएल। बचपनक संगी तँए भेँट करए गेलौं।”

बिच्चेमे पुछलयैन-

“के भदवानन?”

ओना बुझल अछिए जे भदवानन गामेक छैथ। मुदा ओ तँ उमेरदार डॉक्टर छैथ। शहरमे रहै छैथ। ओ किए गाम औता। आ जँ गाम देखैले आएले हेता तँ घन्टा-दू-घन्टामे घराड़ीक दर्शन करि चलि गेल हेता।

जीवेश्वर काका-

“भदवाननक संगी छी। संगे दुनू गोरे गामक स्कूलसँ हाइ स्कूल धरि पढ़ने छी। ओ तेजगर रहए, डॉक्टर बनल। हम भुसकौल रही गाममे रहि गेलौं।”

बजलौं-

“भदवानन अहाँक संगी छैथ काका! मुदा जिनगीक हाड़-काठसँ दुनू गोरे संगी जकाँ नइ लगै छी। सुनै छी जे कमा कऽ ओ बुर्ज लगा नेने छैथ आ अहाँ साढ़े तीन हाथक साढ़े तीनियेँ हाथ छी!”

जीवेश्वर काका-

“कमाएत की दैवक कपार। दू भाँइ अछि, भाए ओहन ऊहिगर नइ छै, तेकरा ऊहि कहाँसँ दइते तँ अपने दुनू परानी मौज करैए आ भाइक दशा देखते छहक।”

बजलौं-

“सभकेँ अपन-अपन कपार होइ छै किने काका। जँ से नइ होइतै तँ लोक किए घरवाली-ले हाथी चढ़ि गौड़ पूजैए।”

हमर गप जीवेश्वर काकाकेँ नीक नइ लगलैन। जहिना मुँहपर माछी-मच्छर बैसते लोक ओकरा हाथसँ रोमि लइए तहिना हमर बातकेँ रोमैत जीवेश्वर काका बजला-

“केहेन, भाग होइ छै से तँ दुनू परानी बुझिते अछि।”

बजलौं-

“से की, काका?”

जीवेश्वर काका-

“बाजल जे से कहै छिअ। तीन बर्ख नोकरी अपन बाँकी छै आ पाँच बर्ख घरवालीक बाँकी छइ। तेकरा छोड़ि दुनू गाम आबि गेल

अछि। मतिछिन्नु जकाँ दुनूक दशा भऽ गेल छै, मुदा अपना धिया-पुता भेबे ने केलइ। मुदा जखन गाम आबि गेल तखन तँ ओहो समाजे भेल किने। जखन समाजमे कोनो बेर-बेगरता उपस्थित भऽ जाए, तेकरा छोड़ि बाहरो जाएब नीक नहियेँ ने हएत।”

बजा गेल-

“हँ से तँ नहियेँ हएत।”

ओना मनमे ईहो हुअ लगल जे लोक तँ हरो जोतैबला बरदो कीनैए तँ ओकर मुँह-कान, सींग-नाँगैर देख लइए, तैठाम मनुख तँ मनुख भेल किने। मनकेँ खाइबला भेल कि खुअबैबला?

मुदा लगले मनमे उठि गेल जे ई बात कोनो कि जीवेश्वर काका नइ बुझै छैथ। ओ सभ किछु देख-सुनि नेने हेता किने। ओना हमर ठमकल मन देख जीवेश्वर काका आँकि नेने छला, जे-सभ बात मनमे छल से अनुमान कऽ नेने छला। तँए सभ विचारकेँ अष्टरस-शर्बत बनबैत बजला-

“बौआ हरि, अखन तक दुनू परानीक मनमे छेलै जे सन्तान होइबला उमेर अछि। मुदा जखन पचपन टपि गेल आकि विचार खधिया लगलै। पागल जकाँ दुनूक मन उच्छटए लगलै। हारि कऽ नोकरी छोड़ि आएल अछि।”

बजा गेल-

“काका, अहाँ तँ धोती-खूटक पानि गाड़ि कऽ जेकरा दइ छिऐ तेकरो बेटा-बेटी भइये जाइ छै किने।”

जीवेश्वर काका बजला-

“धुर्र बुड़ि! एते जँ सामर्थ रहैत ते अही गाममे रहितौं, आकि उड़ि कऽ अकासमे चलि गेल रहितौं। परसू जखन भेँट करैले गेल रही ते

देखलिऐ जे एक दिस होमक सूरसार होइत आ दोसर दिस झाड़ो-फूकबला आ गहबरियो सबहक लिस्ट बनैत! की करितौं हमहूँ कहलिऐ जे ‘हरिवंश पुराणक कथा सुनि लएह, सन्तान हेबे करतह।”

❍

शब्द संख्या : 2726, तिथि : 29 नवम्बर 2017

सड़क-कातक खेत

जेठ मासक अन्तिम समय। मास पुरैमे मात्र दू दिन बाँकी रहि गेल अछि। ओना सकराँतिक हिसाबसँ अखनो सात दिन बाँकी छै, पूर्णिमाक हिसाबे मात्र दू दिन। चारिम दिन अखाढ़ो चढ़त आ आर्द्रा नक्षत्र सेहो। जेठ मासक जे लक्षण होइए ओइसँ भरल-पुरल मास अछिए। माने ई जे आने साल जकाँ गरमीक तापमान अकास छुने अछि। ओना, पैछला मासमे[4] छोट-छीन एकटा अछार जरूर भेल मुदा ओ रस्ते-पेरे रहि गेल जइसँ धरती छगाएले रहल। कनी-मनी मौसममे मीठपन जरूर आएल मुदा पाँच दिन बीतैत-बीतैत ओहो मेटा गेल, जइसँ पूर्वतक रूपमे मौसम पुन: पहुँच गेल। लोकोक मनमे बर्खाक गुण विलीन भऽ विला गेल।

आइ तीन बजे भोरमे निम्मन बरखा भेल। बलुआह खेतमे बीत भरि हाल पकैड़ लेलक मुदा आन-आन माटिक खेतमे से नहि भेल, कोनो खेतमे छह आँगुर तँ कोनो खेतमे मात्र चारि आँगुर हाल भेल आ हल्लुक दोमट माटिमे धानक बीआ खसबै-जोकर हाल भेल। ओना ओहासी परक खेत-सभमे पानि लागि गेल। ओहसगर खेत ओ भेल जइ खेतमे घरो-आँगन, गाछियो-बिरछी आ नीचरस खेत रहने ऊँचरस खेतो सबहक पानि टघैर-टघैर आबि जमि जाइए। तँए एक रंग बरखा भेनौं सभ खेतमे एकरंग हाल नइ पकड़लक। पकड़बो केना करत, सबहक हालक अपन-अपन कारणो अछि किने। ओना धरतीक स्नान

[4] बैशाखमे

नइ भेल सेहो नहियेँ कहल जा सकैए। भलेँ ओ कौआ-नहान हुअए आकि मंत्र-स्नान मुदा भेल तँ जरूर। जखन स्नान भेल तखन स्नानक हालो तँ हेबे करत, भलेँ ओ केतौ कम भेल आ केतौ बेसी...।

अगियाएल-धधियाएल धरती नहेबो कएल आ थोड़-थाड़ पानियोँ पीबे केलक। भोरमे बरखा भेने सोनमे सुगन्ध तँ आबिये गेल। एक तँ ओहुना कोनो मासक वा मौसमक चौबीस घन्टाक दिन-रातिमे भोरुका-पहर अपने-आप वसनतानि भइये जाइए, तैपर कड़ुआएल धरतीपर मधुआएल झमटगर बरखा भेल जइसँ असमान-सँ-धरती धरिक मानसूनक बीच रस्सा-कस्सी चलिये रहल छल। ओना जखन बरखा भेल तखन मेघो खूब गरजल, छोट-पैघ बिजलोको खूब लौकल आ हवो खूब बहए लगल जइसँ नीन टुटि गेल, जगले रही। मुदा अदहा घन्टा बीतैत-बीतैत जहिना हवा शान्त भेल तहिना अपनो शान्त होइत जा कऽ ओछाइनपर सुति रहलौं। ओछाइनपर सुतैक माने भेल देह-हाथकेँ समेट सिरमापर माथ रखि आँखि मुनि चेतना-विहीन हएब, मुदा सुतबक आरो माने अछि। जेना, कोनो काजमे हाथ लगा बिच्चेमे छोड़ि देब। तहिना जीबैक आनो-आनो सभ काज अछि जेकरा कियो जगि कऽ, चेतनशील भऽ कऽ करैए आ कियो सुति कऽ, चेहनहीन भऽ कऽ निमाहिते अछि। तँए दुनूक लीलो आ धामोमे तँ अन्तर हेबे करत। मुदा से सभ नहि, जखन समैये मधुरा कऽ आनन्ददायी बनि गेल तखन जँ चैनक नीन नइ लेब सेहो केहेन हएत। तँए अवसरसँ नहि चुकलौं। बिछौनपर जा सुति रहलौं।

बर्खासँ पहिने पहिलुका तोरमे जे नीन भेल छल तइसँ कनी बेसी नीको, सोहनगरो आ सक्कतो नीन जरूर भेबे कएल। बर्खाक पछाइत की भेल से किछु ने बुझलौं। जे भेल से भेल मुदा आने दिन जकाँ नीन

अपना समैपर पूरि गेल, जइसँ समैयेपर भक् खुजल। ओछाइनपर सँ उठलौं। उठिते मनमे उठल जे जिनगीक लीलाक अखन शुभ मुहूर्त ने छी। अखुनके बिहुसल मन ने भरि दिन..! बिहुसैत खिलैत रमैत रमल रहत। तँए शुभ प्रभात तँ भेबे कएल।

लगले धाँइ-दे मनसँ खसल-

“हे भगवान अदहा बरखा अहाँ दुनियाँ-ले देलिऐ आ अदहा हमरे-ले देलौं! नमस्कार..!”

ऐठाम एकटा शंका जरूर अछि जे एक्केरंग बरखा सौंसे गाममे भेल मुदा बर्खाक फल सभकेँ एकरंग नइ भेटल। जखने एक रंग फल सभकेँ नइ भेटल तखने ने एहेन हेबे करत जे जिनका जेहेन कतरनी करैक लूरि हेतैन से तेहेन अपना दिस फाजिल कतैर अपने दिस कऽ लेता। फाजिल कि जे बीज तक कतैर कऽ लइये लैत हेता..! मुदा से सभ बात नहि अछि। बात अछि जे गाममे जेते किसान परिवारक लोक छैथ ओ ढहैत किसानी जिनगी छोड़ि चढ़ैत उद्योग-धन्धा दिस उन्मुख भऽ शहर-बजार दिस बढ़ि जिनगीकेँ आगू बढ़ा रहला अछि। मुदा गाम तँ पहिलुका गामोसँ बेसी पाछू पड़ि रहल अछि। ओना रंग-रंगक उपकरण सभ सेहो खेतियो लेल आबि रहल अछि, मुदा बेवस्थित ढंग नइ पकड़ने निच्चे-मुहेँक रूखि पकड़ने अछि। खाएर...।

कहने छेलौं जे अदहा बरखा अनका-ले भेल आ अदहा हमरे-ले...। एकर कारण दोसर अछि। एकर कारण अछि जे एकबेर आठम-नअम दशकमे, नब्बे प्रतिशत सरकारी सहायतासँ किसानकेँ बोरिंग भेटल। ओना ऐ पाछू बहुत बाधा उपस्थित भेल, से सभ अखन नहि। अखन एतबे जे पाँचटा बोरिंग अपनो गाममे भेल। हजार-बारह साए रूपैआक खर्चपर किसानकेँ बोरिंग भेटल। चारि गोरेक संग

पाँचम अपने रही। ओ चारू चालू-पुरजा लोक, खेतीसँ बिमुख भऽ अपनो खेत-पथार बटाइ लगा, दोसर-दोसर धन्धामे लगि गेला तँए ओ चारू बोरिंग बैस गेल। तेसर साल टपैत-टपैत पाइपकेँ माटि खा गेलै आ केते पाइपमे मूसो सभ अपन-अपन किला बना-बना घरवालीक संग बालो-बच्चाकेँ लोहाक किलाक सुख नइ देलक सेहो बात नहियेँ अछि।

खाएर जे भेल से भेल, अपना बोरिंगकेँ जीया कऽ रखलौं। जीया कऽ राखब भेल, ओकरासँ पानियोँ लेब आ ओकर ताको-हेर करब। मुदा गामक खेती ओतइ अँटकल रहि गेल जेतए पहिने छल। ओना अपना बोरिंगकेँ जीवित रखने अपनो आ तीन-चारिटा आनो-आन किसानक खेती एके रंग चुहचुहाइत आबि रहल छल। तेसर साल अपनो बोरिंगक पाइप नष्ट भऽ गेल। समुच्चा पाइपकेँ माटि खा गेल। मुदा खेतीक रंग-रूप अखन तक ओहने अछि जेहेन पानि रहला–माने बोरिंग रहला–पर छल। मुदा ऐबेर अपन बोरिंग नष्ट भेने समैपर ने गरमा धाने आ ने बरसाती तीमने-तरकारीक खेती कए सकलौं। जून मास समाप्त भऽ गेल। तँ पियासल मन रहने कहा गेल-

“अदहा बरखा हमरे-ले भेल।”

ओना भगवानो तँ भगवाने छैथ, ओ थोड़े बुझता जे भक्तजन हमरा बेइमान बना रहल अछि। हुनका तँ जेहेन सेवक भक्त छैन तेहने ने ओहो भक्तक सेवक छथिन। तैठाम जँ कनी-मनी किछु भइये गेल तइ दिस ओ धियाने किए देता। हुनको तँ ढेरी काज छैन्हे, जँ एमहर धियान देता ओमहर अपन काज छुटि जेतैन। अपनो कि कम काज छैन, दुनियाँमे जेतेक जीवधारी भक्त छैन तेतेक ने भक्तियो पुरबए पड़ै छैन, तँए भगवानो अपना पाछू तबाह रहिते छैथ।

गाममे बेवस्थित किसान किसुन काका छैथ। सालक पहिल बरखा छी तँए शुभ-मुहूर्तमे शुभ विचार जरूरी अछिए। कहैले तँ किसानेक गाम छी मुदा कोन धानक बीआ कहिया खसाएब, तेकरो अखियास नहि। रहबो केना करत, दिनक हिसाब जोड़ि जइ धानक खेती हएत तैठाम जे मौसमक हिसाब मनकेँ पकड़ने अछि ओ कहियो काल तँ सुधैर जाइए मुदा पुन: फेर ओहीठाम पहुँच जाइए। कोनो जिनगीक मुख्य काज तँ यएह ने होइए जे जे गुण-अवगुण अपन भेल ओ समैपर चुकबैत चली। जँ से नइ चुकबैत चलब तँ केतौ अपने चुइक जाएब वा केतौ कियो आने चुका देत..! पत्नीकेँ कहलयैन-

“ओना किसुन काका ऐठाम सेहो चाह पीबे करब मुदा घरसँ निकैल रहल छी तँए पहिल घरक पूजा हएब जरूरी अछि। इन्होरो-तिन्होरो चाह पीआ दिअ। मुदा से जल्दी पिया दिअ। नहि तँ चाह छोड़ि चलि जाएब। जरूरी काज भऽ गेल अछि।”

ओना कखनो काल, कखनो काल किए बेसी काल, पत्नी भंगठले रहै छैथ मुदा अखन से नहि, अखन एकमुहरी सुढ़ियाएल छेली। चाहक खगता सुनिते बजली-

“जाबे अहाँ मुँह-कानमे पानि लेब ताबे हमहूँ चुल्हि महरानीकेँ आँखि-कान पोछि बना लेब।”

मनमे उठल- जखन निर्धारित समैपर कियो अपन निर्धारित काजकेँ पुरा लइ छैथ तँ वएह ने भेल हुनकर काजक एकाग्रता, जे सार्थक जिनगीक एक कड़ी छी। तँए काजुल लोककेँ तँ एकरे ने खगता अछि जे अपन क्षमतानुसार अधिक-सँ-अधिक काज निसचित समैपर पूर्ति करैत आगूक डेग उठबैत डेगे-डेग रोपैत चलए, तँए एहने मसीममे किए ने पत्नीक संग मुकाबला भइये जाए। जोशमे बजा गेल-

“यएह भेल रणभूमि, पहिने अहाँ तैयार भऽ पहुँचै छी कि हम से

देखा चाही।”

बजा तँ गेल मुदा लगले मन पाछू घुसकए लगल। अखन एहेन परीक्षाक कोन जरूरत अछि? मुदा मरदक बोल आ हाथीक दाँत एक्के बेर ने निकलैए। तँए अपन काजकेँ घटबी करैत माने पैखानाकेँ कटौती करैत हाँइ-हाँइ कऽ चारि घुस्सा दाँतमे देलिऐ आ दू रगड़ जीहमे दइते दुनू झलैक गेल। चारि कुर्रा मारि तैयार हुअ चाहलौं। ओना पत्नियोँ चौकस भऽ अपन विजय-पताका गाड़ए चाहै छेली। अपनो मनमे भेल जे कोनो धरानी अखन विजय पताका गाड़ब अछि। भाय! पहिने घर आ घरनीकेँ दहिन बनाएब तखन ने दुनियाँकेँ दहिना-बामा करैत बढ़ब। तँए जिनगीक समरक पहिल युद्ध तँ कृत्ति-भूमिमे पत्नियेँसँ करब ने अछि। ओना विजय-ले कृत्तिकेँ घटा नेने छेलौं, मुदा जैठाम पत्नीक संग हीन-श्रेष्ठक प्रश्न अछि तैठाम जँ कनी-मनी काजमे कटबियो केने वा घुसो-पेंच लगौलासँ जँ नीक नम्बर परीक्षामे आनि ली तँ लोक ओकरे माए-बापकेँ ने चाबस्सी दइए। जे फल्लाँ अपन बेटा-बेटीकेँ अकास चढ़ौलैन। ई कियो थोड़े कहत जे गुँहचोरिक सम्पैतक मोले की? एहेन सम्पैत जँ माए-बाप अपना सन्तानकेँ दइ छैथ जे तइसँ नीक ने हएत जे जइ बच्चाकेँ जन्मक छह मासक बाद जे नून चटबै छैथ से छह मास पूर्वे चटा दौथु। कोन नजरिये कियो अपन बाल-बच्चाकेँ देख रहला अछि से तँ अपन-अपन नजरिक खेल छी किने। जिनगीक लेल ज्ञान चाही नहि कि कागतक तगमा। ओना पत्नियोँ अपन अजादीक पूर्ण उपयोग कइये रहल छेली। एक नजैर चुल्हिपर आ दोसर नजैर हमरेपर रखने छेली, जे कहीं अपने ने पछुआ जाइ। खाएर जे भेल से भेल। मुदा एते तँ जरूर भेल जे जहिना अपने चाह पीबैले बढ़लौं तहिना पत्नियोँ चाहक कप हाथमे नेने हमरा लग पहुँचली।

दुनू बेकतीक बीचक रणभूमिक हार-जीत मनमे नुका रहल। चाह देख मन कलैश गेल। बजलौं-

“शुभ मुहूर्तक शुभ कर्मे ने शुभ्रफल दाता छी।”

ओना पत्नियोँ कि चाह कोनो हमरा मने पिआबए चाहै छेली? नहि! ओ तँ अपन काज सुतारै दुआरे हमरा अनुकूल बनबए चाहै छेली, से बुझबे ने केलौं। हुनकर रंग-रूप देख मन चपचपा गेल छल। दोसर, पहिल घोंटक चाह नीक जकाँ कण्ठसँ निच्चाँ उतरलो ने छल कि छिट्टा भरि फरमाइस आगूमे छिड़ियबैत बजली-

“एकोटा ने तीमन-तरकारीक बीआ आ ने कोनो सागे-पातक बीआ घरसँ निकलल।”

मन खुशियाएल रहबे करए, पत्नीक विचारकेँ ऊपरे लोकैत बजलौं-

“अहाँ मन पाड़ब तखन मन पड़त। अपने नइ देखै छी जे हालक दुआरे अनरनेबो गाछ रोपब पछुआएले अछि।”

हमर बात सुनिते पत्नीक मन आरो मीठेलैन। किए मीठेलैन से तँ ओ जानैथ मुदा अपना बुझि पड़ल जे अखन तक पत्नी तरकारियेक बोनमे वौआइ छेली आ तरफल वा फलतरक भाँज मनमे उठले ने छेलैन जे भरिसक अनरनेबा सुनिते उठलैन- अररनेबा फलो आ तरकारियो तँ छीहे। एना कहब जे लतामोक चटनी-अँचार होइ छै तँए ओहो वएह भेल, से नहि। फलबला लताम आ चटनीबला वा अँचारबला लताम अलग-अलग होइए। दुनू दू गाछक फड़ छी।

चाह पीबिते रही कि पत्नी पान लगा बामा हाथमे चारि आँगुरसँ दाबि, जरदाक डिब्बा दहिना हाथमे रखने छेली। मनमे भेल जे एक टोन लगा दिऐन जे दहिना हाथक काज बामा हाथे आ बामा हाथक काज दहिना हाथे किए करै छी। मुदा फेर भेल जे जेठुआ हाल हाथ

लागल अछि, पत्नी कि सीता जकाँ कोनो बोन थोड़े जेती जे गप-सप्प करैक समय नइ भेटत। निचेनमे सभ गप कऽ लेब। पहिने जे सालक मौसम हाथ लागल अछि ओइ दिस बढ़ी, किएक तँ जिनगीक बाढ़ि तँ ओ ने हएत तँए पत्नीक आगू मुँह खोलैसँ नीक अखन बन्ने राखब। मुदा तैयो बजा गेल-

“बरसाती खेतीक जे जे बीआ-बालि घरमे अछि ओकरा निकालि कऽ रखने रहब, ओमहरसँ–माने किसुन काका-ऐठामसँ–घुमि कऽ आएब आ खेती दिस बढ़ि जाएब।”

सबेर-सकाल सुति कऽ उठैक आदत किसुन काकाकेँ शुरूहेसँ रहलैन। ओना आब उमरदार भऽ गेला हेन मुदा अपन दुनियाँ अपन मनक अनुकूल तँ छैन्हे। राजा बलि जहिना अपन सिरसँ धरती धरि वामन महराजकेँ तीनियेँ डेगमे नपा देलैन तेहने चालिक लोक किसुन काका सेहो छथिये...। गामक सभ बाध-बोनसँ टहैल किसुन काका दरबज्जापर आबि संध्या-बन्धन तँ नहि, मुदा भोरक बन्धनमे जरूर लगि गेल छला। पत्नीकेँ बुझले छैन जे केतौ रहता तँ चाह पीबैबेरमे आ खेनाइ-पीनाइसँ लऽ कऽ सुतैबेर तकमे दरबज्जेपर रहता। बुढ़े भेली तँ की बिसैर गेली जे एतबो नइ अह्लाद करथिन। माने भोजन करैबेर अह्लादि कऽ आँगन नइ लऽ जेथिन, नमगर-चौरगर पीढ़ीपर नइ बैसेथिन। कियो हाथीए-पर चढ़ि नाचत तँ नाचह काकीकेँ जेतबे विभव छैन तेतबे नचती। कियो पान खाएत काकी पानक डण्टिये खेती। अपन विचारक बाटपर बुधनी काकी सोल्हन्नी सन्तुष्ट रहिते छैथ। नमहरका गिलासमे चाह नेने बुधनी काकी दरबज्जापर पहुँच दरमान-सिपाही जकाँ आगूमे ठाढ़ भऽ किसुन काकाकेँ कहलखिन-

“मनो मन्हुआएल आ मुहोँ सुखाएल बुझि पड़ैए तँए पहिने मुँह-कान धोइ पानि पीब लिअ। पछाइत चाह पीब।”

बाधक रूप देख किसुन कक्काक मन बेसुध भऽ गेल छेलैन तँए बेसुधिक अवस्थामे दरबज्जापर पहुँचल छला। एतबो अपन सुधि-बुधि नइ रहलैन जे जखन बाध-बोनसँ टहैल आएल छी, तहूमे जखन सभ रस्ता-पेरा शीताएल अवस्थामे छल। तैपर भोरका बरखा आरो बेसी शीतेबे केने छल। ओना, काकीक मनमे ईहो ठहकैत रहैन जे ऐना बेसुध होइक कारण आगू दिस देखब छैन आकि पाछू दिस..?

ऐठाम किसुन कक्काक बेसुधपनमे जेतेक मन बेसुध रहैन तेतेक देह नहि, मुदा शीताएलमे टहलने-बुलने पएरो आ हाथो थोड़ेक मलिन भइये गेल रहैन। जइसँ सौंसे देह तँ नहि, मुदा ऐँड़ीसँ चोटी धरि चोटा जरूर गेल रहैन। खाएर.., अखन तँ किसुन काका पत्नीक अधिकार क्षेत्रक सीमामे छैथ तँए सीमांकन करैत बजला-

“उमेरक दोख आब नइ हएत तँ कहिया हएत। भोरसँ टहैलते छी, चारू बाध घुमलौं हेन तँए कनी चेहरा मन्हुआ गेल हएत।”

पतिक विचार सुनि बुधनी काकी बेसी लड़-लपट नइ केली। अपन अन्तिमे निर्णय सुनबैत बजली-

“जीता-जिनगी अहिना होइ छइ। जएह बाध-बोन घुमत तेकरे ने शीत-रौद लगतै आ जेकरा पैरमे जेते शीत-रौद लगतै ओकरे पएर ने ओते चहकबो करत। जेकर पएर जेते चहकत, सएह ने बेमाइक बेसी सुखो-दुख बुझत। सोझे ‘पीर पराइ’ बजलेटा-सँ नइ ने होइ छइ..!”

बुधनी काकीक निर्णयात्मक विचार सुनि किसुन कक्काक मनमे चेनियत एलैन। चाह पीब पान खाइते किसुन काका लगसँ हटि बुधनी काकी आँगन पहुँचले छेली कि पहुँचलौं। ओना अँगनाक कोनचर लगसँ बुधनी काकी हिया कऽ हमरो देख नेने छेली। दरबज्जाक निच्चेसँ बजलौं-

“काका, गोड़ लगै छी।”

ओना तरे-तर किसुन कक्काक मन झखैत रहैन। झखैक कारण छेलैन जेठुआ बर्खाक हाल। तहूमे अपन खेतक जे दशा देखलैन तइसँ आरो बेसी हाथ मलै छला। तरे-तर मन कलैप-कलैप कानि रहल छेलैन। मुदा कहबो केकरा करथिन। जँ पत्नी लग बजता तँ ओ तेहेन अगि-लगौन छैन जे सौंसे गाम पसाही जकाँ पसाइर देथिन। जइसँ आरो तेते लोक कपार खोधए चलि औतैन जे अनेरे जेतबो मौस देहमे बँचल छैन सेहो रहए देतैन कि नहि। मुदा अपन चिन्ता अपन मनेक होइए किने। तैयो जँ कियो दरबज्जापर आबि गेला तँ पहिल चिन्ता हुनकर भऽ जाइए। दरबज्जा जखन बनौने छी, तखन दरमानी तँ करए पड़त। आ जँ से नइ भेल तँ दरबज्जाक मोले की रहल। जे बाट-बटोहीकेँ एक मुट्ठी अन्न आ एक लोटा पानिसँ आदर नइ भेल..!

किसुन काका बजला-

“नीके रहह बौआ। भोरका बरखा तँ लोककेँ मस्ती आनि देलक।”

किसुन कक्काक विचारक बीचमे अपनो विचार बहि कऽ भँसियाए लगल। एकाएक बजा गेल-

“काका, जेठक बरखा आ भादवक आड़ि[5] जँ चलै-जोकर पकड़ा गेल तँ गाम कि गामे रहत।”

ओना बजाएल अपने मुहेँ, मुदा बजाएल बिनु विचारल बात, तँए किसुन काकाकेँ केहेन लगलैन से देखा चाही। ओना, अखन किसुन कक्काक मन साहित्यसँ अर्थशास्त्र दिस टहैल गेल छेलैन तँए हमरा बातकेँ मनक कतबाहिमे लगा बजला-

[5] खेतक आड़ि

“बौआ, बरखा ते सभ-ले भेल, मुदा हम-तूँ तँ किसानी जिनगीसँ ने जुड़ल छी, तँए अपन-अपन ने हिसाब जोड़ब। केहेन हाल पड़ि लगलह?”

अपन बात सुनिते मन दरैक गेल। तीन साल पहिनहि बोरिंग ठाँठ भेल, जखन कि पानि गिरहस्ती जिनगीक मुख्य आधार छी। ओना किछु दिन काबूमे रहबो कएल मुदा आब से नइ रहल, बेकाबू भऽ गेल अछि। पोखैरक माछ जहिना पानिसँ निकैल जाधैर थलिआएल कीनछैरमे रहैए ताधैर कूदब-फानब ओकर मनोरंजक खेल सदृश रहैए। मुदा वएह माछ जेना-जेना सुखाएल धरती दिस चढ़ैए तेना-तेना ओकर छटपटी बढ़ए लगै छै जे खेलक नहि मृत्युक रहै छइ। अपनो स्थिति सएह भऽ रहल छल। तखन हालक हाल की कहबैन। मुदा छगाएल मन पानि-ले रहबे करए, बाल-बोध जकाँ बजा गेल-

“काका, अदहा हाल गाम-ले भेल आ अदहा बुझू हमरे-ले भेल।”

गाम सुनि किसुन कक्काक मन हालक चर्चसँ हटि गामक खेत-पथार दिस बढ़ि गेलैन। बजला-

“बौआ, गामक जे खेत सबहक सूरत बनि गेल अछि, से कहै-जोकर नइ अछि।”

किसुन कक्काक बात कानमे पड़िते अपन मन एकाएक चौंक गेल जे बीचमे ई की बजला- ‘खेत सबहक सूरत बिगैड़ गेल!’ खेत तँ खेते छी, केतौ चौआरि बान्हल अछि तँ केतौ बिनु आड़ियेक अछि। तखन ओकर सूरत की भेल जे काका बजला..! पुछलयैन-

“की कहलिऐ काका जे खेतक सूरत बिगैड़ गेल?”

तही बीच बुधनी काकी चाह नेने आबि दुनू गोरेक हाथमे पकड़ा, दुनूक मुँह बान्हि बजली-

“बौआ, धिया-पुता सबहक बिआह-दानसँ कहिया फारकती लेबह?”

काकी की कोनो अधला मने बाजल छेली जे दुख होइत। कहलयैन-

“काकी, अखन ते स्कूलेक पछड़ामे पड़ल छी, तखन बिआह दिस केना ताकब।”

चाह पीब किसुन काका बजला-

“बौआ, अपन जे खेत अछि से देखते छहक जे सड़कक काते-काते अछि। गाममे सड़क बनल, सबहक नीक-ले बनल, मुदा सड़कक कातक खेत सबहक जे केकरो नाक कटि गेल, केकरो पेट कटि गेल अछि, तेकरो विचार ते अपने सभ ने करब।”

कक्काक बात सुनि जेना भक् खुजल। बजलौं-

“काका, अखुनका समय हालीक अछि तँए अखन बेसी गप-सप्प नइ करब। बरसाती फसिलक तँ सभ बीआ माटिमे दऽ दिऐ किने?”

ओना किसुन कक्काक मनमे एलैन जे ‘हँ’ कहि दिऐ मुदा पहिल बरखा छी, कोन खेतमे कोन बीआ पड़त आ ओइमे केहेन हाल अछि, से बिनु बुझने केना ‘हँ’ कहबै। किसुन काका बजला-

“बौआ, अपन सड़क-कातक खेतमे ठाढ़ भऽ कऽ देखलौं। खेतमे एको खपटा पानि नहि छल, मुदा ओही खेतमे सड़क-ले जे माटि खुनल गेल तइ खाधिमे पानि भरल छल!”

बजलौं-

“खेतकेँ चौरस बना अड़ियेने नै छेलिऐ?”

किसुन काका बजला-

"सभ कथुक तेहेन समस्या बनि गेल अछि जे की करब की नइ करब से बुझिये ने पेब रहल छी।"

❍

शब्द संख्या : 2722, तिथि : 10 दिसम्बर 2017

दोहरी हाक

महिना दिनसँ बुझि पड़ैए जे भरिसक आब चेतन भऽ गेलौं किएक तँ पहिलुका जकाँ भोरेसँ पत्नीक संग झगड़ा नइ लधाइए। पैछला मास तक एको दिन एहेन नइ होइ छल जे सुति कऽ उठैये बेरसँ झगड़ा नइ लधाइ छल। ओना झगड़बकेँ सेहो सोल्होअना अधले नहियेँ कहल जा सकैए मुदा झगड़बो तँ एके रंगक नइ होइए, तँए झगड़ब-झगड़बमे सेहो भेद होइते अछि जइसँ किछु नीको अछि आ किछु अधलो तँ अछिए। खाएर जेतए जे अछि मुदा अपना संग से बात नइ छल, अनुचित झगड़ा छल जइसँ मुक्ति भेटल, तँए मनमे खुशी अछि आ अपनाकेँ चेतन बुझए लगलौं। मुदा चेतन-अचेतनक बीच मन अखनो ई मानैले तैयार नइ अछि जे पहिने गलत छेलौं आ आब सही भऽ गेलौं। किएक तँ पहिने जे छेलौं सएह ने अखनो छी। दिन-दिनकेँ जोड़ब तँ कनी-कनी बेशियाइत जरूर गेलौं मुदा खेनाइ-पीनाइसँ लऽ कऽ देहो-हाथ ओहिना अछि जेहेन मास दिन पूर्व छल। खाएर जे छल कि अछि, सएह छल आ सएह अइछो। मुदा बीचमे एकटा जरूर भेल जे काजमे थोड़ेक संशोधन कऽ लेलौं। माने काजक प्रक्रियाकेँ थोड़ेक सुधारि लेलौं।

बचपनक बचकानी विचार जँ पहिने नहि कहि देब तखन अहूँ केना बिसवास करब जे फल्लाँ ठीके आब चेतन आकि सियान भऽ गेला। जेना-जहिना कोनो काज करैमे नीकक सुधार भेने काज सुधरैत जाइए, जइसँ सुधरल काज बनैत जाइए, तहिना जिनगीक क्रिया

सुधरने बालपन चेतनपन दिस बढ़ैत चेतन सियान बनैए। सएह भेल। लेधे-गोधे आठटा बेटा-बेटी अछि। नवम पत्नी आ दसम अपने छी, तँए दस गोरेक परिवार अछि। दस गोरेक परिवारमे अपन सिरक संग देहो-हाथ बेसी धुनाइते अछि मुदा एहेन खुशी तँ हुनकेटा ने हेतैन जे दस गोरेक परिवारमे बास करै छैथ। असगर-दुसगरकेँ आकि निवंशाकेँ ई खुशी थोड़े हेतैन, नहियेँ हेतैन। तँए हरदम मन दुखसँ दुखीए रहैए सेहो बात नहियेँ अछि। धान दौन करैबला खरिहाँनक मेह जकाँ ठाढ़ जरूर छी। असगर देहो रगड़ौने तँ काज गड़बड़ेबे करत जइसँ परिवारमे अनेको अनसून-मनसून आपैत-बिपैत नइ औत सेहो नहियेँ कहल जा सकैए। जखन पैछला पीढ़ीक अन्त भेल–माने माइयो आ बाबूओ मरि गेला, बाबा-दादी तँ पहिनहि मरि चुकल छला, जइसँ परिवारक भारो पड़ल आ गारजनी सेहो अनायासे भेटल–तखन अपन गारजनीमे परिवारक देख-रेखपर नजैर रखइ पड़त किने। परिवारो तँ परिवार छी, एक दिस बाल-बोध सुर्ज सदृश उदय होइत रहैए तँ दोसर दिस सुरूजे जकाँ अस्त होइत अस्तांचलगामी नइ होइत रहैए सेहो नहियेँ कहल जाएत। मुदा जेतए जे हुअए अपन तँ पैछला पीढ़ीक अन्त भाइए गेल।

ओना माइए-बाबूक अभिभावकत्वमे अपन बिआहो-दुरागमन भेल आ चारिटा धियो-पुता भेल, मुदा तहिया अपन महत परिवारमे ने कमाइबलामे छल आ ने विचारबला विचारकमे। बुझै छेलिऐ जे मनुख अपन परिवारक गाड़ीकेँ जोति अपने कन्हेठ चलबै छैथ, तँए मनुखकेँ अनेरे कोनो चिन्ता-फिकिर नइ करक चाही। बुझले बात आ देखले आँखि छल। ओना, बीच-बीचमे पत्नी जोर दैत एतेक जरूर कहैत रहली-

"ई जे चारिटा धिया-पुता अछि से अनकर छिऐ, ओकरा जँ खुएबै-पीएबै नहि तखन ओ जीयत केना..?"

ओना कहैत रहली नीक बात, से मने-मन अपनो बुझैत रहलौं। मुदा भगवानपर अटूट श्रद्धा आ बिसवास नइ रहए सेहो नहियेँ कहल जा सकैए। श्रद्धाक संग बिसवासो रहबे करए। भाय! बिसवासेक गाछमे मेवा फड़ैए किने, अपनो तँ बिसवास ऐछे जे फड़बे करत...। तँए चिन्ता-फिकीर करैक खगते की। ओना गोटे-गोटे दिन पत्नी रबाड़ैत ईहो कहिते छेली-

"घरमे कमाइ नइ होइए ते परदेश जाउ।"

मुदा उपाइयो तँ दोसर नहियेँ छल, सिवा पत्नीक बातक सहाज करब छोड़ि कऽ, तँए सुनियोँ कऽ अनठबैत रहलौं। ओना, कहियो-कहियो मनमे उठै छल जे आब की कोनो माए-बाबू छैथ दोकानो-दौरीसँ उधार-पुधार नून-तेल आनि, कि अनकासँ पैंचो-पालट करि आकि कमाइये-खटा कऽ परिवारक खर्चा पुरौता। आब तँ अपने दुनू परानीपर परिवारक भार अछि, हमरे ने सभकेँ पुरबए पड़त। आब माए-बापक राज थोड़े रहल, आब तँ अप्पन भेल...। तैसंग लगले मनमे ईहो उठि जाए जे जे भगवान खाइक मुँह बनौलैन वएह ने खाइक ओरियानो करता। तइले अपन कोन काज।

..अही असमनजसमे समय बीतैत गेल आ परिवार बढ़ैत-बढ़ैत दस गोरेक भऽ गेल। माने चारिटा धिया-पुता आरो भऽ गेल। अखन तक ओही बचकानी मतिक-गतिक रीति पकड़ने चलि आबि रहल छेलौं। मुदा तइमे एकटा मोड़ आएल। मोड़ ई आएल जे अभावक जिनगीकेँ जहिना रंग-रंगक भूत-प्रेतसँ लऽ कऽ राक्षस-दैत्य धरि दतिया

कऽ धेने रहैए तहिना अपनो धेनहि छल। तँए दुनू परानीक बीच कहा-कही होइते छल।

घरक बगलेमे मरनी दादीक घर छैन। अस्सी बर्खक मरनी दादी चारि बजे भोरे उठि आँगन-घर बहारि, दुआर-दरबज्जा बाहरैत मालक घरक थैर-गोबर करैत, पथियामे छाउरक संग करसी-मरसी उठा घरक बगलेक चौमासमे फेक, बाड़ी-झाड़ीसँ तीमन-साजन नेने आँगन अबैत-अबैत भिनसुरका पहरक बिसरजन करै छैथ। मुदा हमरा दुनू परानीमे सुति कऽ उठैये बेरमे जे झगड़ा लधाइए ओ भरि दिन लधले रहैए। भैंसा-भैंसीक कनारि जकाँ जहिना अपने पत्नीपर कनखरल रहै छी तहिना पत्नियोँ भरि दिन हमरापर कनखरले रहै छैथ, जइसँ बेर-बेर किछु-ने-किछु कहा-कही होइते रहैए। जुति-भाँति-ले होइए आकि की से बुझबे ने करै छेलौं। तेना भऽ कऽ अखनो नहियेँ बुझै छी। कियो अपना अँगनामे भरि दिन गीते गौत आकि झगड़े करत तइसँ अनका की। जखन अनकासँ अनका मतलबे नइ रहत तखन समाजे की? मुदा से बात मरनी दादीमे नहि छैन। दुनू परानीक बीचक झगड़ाकेँ केता दिन मान-मनोबैल करैत पहिनौं फरिछौने छैथ। मुदा फेर ओहिना-क-ओहिना रमा-खटोला शुरू भइये जाइए।

ओइ दिन सेहो तहिना भेल जइ दिनक बात कहै छी। मरनीए दादी जकाँ अपनो ओहिना अखनो उठै छी आ सभकेँ–माने परिवारक आन-आन सभ सदस्यकेँ–सुतले छोड़ि अपने दिन-दिनक काजमे लगि जाइ छी। माने उठि कऽ माल-जालकेँ घरसँ निकालि खाइले दऽ दइ छिऐ, दुआर-दरबज्जाकेँ बहारि-सोहारि पर-पैखानासँ निवृत्ति होइत मुँह-हाथ धोला पछाइत एक तोरक काजकेँ जखन सम्हाइर लइ छी तखन टिफीन होइए, माने चाह-पानक बेर होइए। तखन परिवारक आन-आन सदस्यकेँ उठबए जाइ छी। आइयो तहिना उठबए गेलौं। चारि-पाँच हाक जेठका बेटाकेँ देलिऐ। जहिना गहुमन साँप हनहनाइत

निकलैए तहिना भोरक हल्ला सुनि पत्नी घरसँ हनहनाइत निकलली, निकैलते हल्ला करए लगली।

जहिना गाम-समाजमे कहियो घरमे आगि लगलापर तँ कहियो घरमे चोर पैसलापर रंग-रंगक हल्ला होइए तहिना ने घरो-परिवारमे होइते अछि। मुदा दुनू हल्लाक दू रूप अछि। आगिक हल्लामे लोक घैल-डोलमे पानि भरने दौड़ैए तँ चोरक हल्लामे लाठी-ठेंगा नेने दौड़ैए। तहिना परिवारोमे भेल।

धिया-पुताक नाओं लऽ लऽ जगैले शोर पाड़लिऐ। किए ने शोर पाड़बै। परिवारक जवाबदेही जखन कन्हापर अछि तखन ओकरा सम्हारि लऽ चलबो तँ अपन दायित्व भेल किने। परिवारजनकेँ अपन दायित्वक संगे ने अधिकारो होइते अछि। मुदा जे अछि आ जेते अछि से तेते अछिए। बजैकालमे कौआसँ मेना तक कि नइ बजैए जे 'भाय प्रकृत्तिसँ मिलि-जुलि कऽ चललापर जहिना भगवान जकाँ प्रकृत्ति मनुखक मददगार होइए, तहिना ओइसँ हटि कऽ चलब तँ ओ दानव-दैत्य जकाँ भक्षक सेहो भऽ जाइए। मुदा ईहो तँ झूठ नहियेँ अछि किने जे रातिकेँ ढलानपर ढलिते, अढ़ाइ बजे भोरे परबा-पौरकीक संग मुर्गा-मुर्गीक माध्यमसँ प्रकृत्ति जगैक आवाहन करैए। तखन जँ अपने आठ बजेमे ओछाइन छोड़ि दुनियाँ दिस ताकि अपनाकेँ जगबए लगब तखन कोन रूपक जगान हएत? नीक हएत कि अधला तहू दिस ने देखए पड़त? खाएर...।

ओछाइनसँ उठि ललकैत पत्नी घरक चौकैठ टपि आगूमे आबि ठाढ़ होइत बजली-

"अखन सुतै बेर छै, खुट्टा जकाँ बाप-माए जीबै छै, तैबीच जँ सुख-मौज अखन नइ करत तँ कहिया करत।"

पत्नीक बात जेना-जेना कानमे पैसल जाए तेना-तेना मनमे लहैर

उठल जाए। कोन हाथी चढ़ि गौड़ पुजने छी जे एहेन हथियाह मनुख जिनगीक संगी बनि संग पूरत। मुदा लगले मनक विचार तर-मुहेँ ससरल। ससरल ई जे जखन शरीरक भीतर सेहो प्रकृत्ति अनुकूल आ प्रतिकूल विचारक संग चलैत प्रकृतस्थ होइते अछि तखन अनेरे...। जहिना पुरुखक सोभाव तहिना ने नारियोक अछि। सभ ने अपन वचस्व चाहैए। तैठाम तँ पुरुख-नारी कहियौ आकि पति-पत्नी, अपन-अपन विचारानुकूल दुनूकेँ परिवारमे नव पीढ़ीक सृजन करब अछिए...।

रंग-रंगक विचार मनमे बर्खाक बुन्नक बुलबुला जकाँ उठितो रहल आ फुटितो रहल आ गोटे-गोटे आगूओ पानिक धारक संग चलितो-बहितो रहबे कएल।

समय आ स्थिति जेहेन छल, तइमे की नीक हएत आ की अधला हएत, ई विचार जँ परिवारक सिरजन नहि करैथ तँ बिनु सीरबला वा कम सीरबला वा जलियाएल सीरबला कोनो विचारमे की गति देत से तँ विचारणीय अछि किने, जे विचारए पड़त। पति-पत्नीक बीच जखन परिवारक कोनो काज सृजित हएत तखन जे सृजनकर्ता छैथ–माने माता-पिता–ओ सृजनक सीर तक नहि पहुँच अल्हुआ[6] वा पोरो सागक लत्ती जकाँ जँ ऊपरेसँ काटि रोपि कऽ नव सृजन चाहता तँ ओहो एक क्रिया भेल। मुदा किछु भेल, भेल तँ बिनु सीरेक। तैठाम दोसर-तेसर आकि चारिमजन जँ कम्मो सीरगर हुअए वा एकसिरे हुअए आकि सघने सीरबला होथि, होइ तँ अछिए। मुदा सघन सीरबला गाछकेँ जँ अल्हुआ वा पोरो जकाँ ऊपरसँ काटि कऽ रोपब, तँ ओ थोड़े सृजित भऽ सकैए। मनुखोक वंश-वृक्ष तँ तेहने अछि। तँए, पति-पत्नीक बीचक जे विचार अछि तइ अनुकूल बजलौं-

[6] शकरकन्द

"बाल-बोधकेँ ताधैर उठबैये पड़त जाधैर ओ ओछाइनसँ उठि ठाढ़ भऽ आगू बढ़ै दिस डेग नइ उठौत।"

हमर विचारक वाण पत्नीकेँ जइ रूपे लगल होनि से ओ जानैथ, मुदा बिलसँ निकलल गहुमन साँप जकाँ आरो हनहन करैत बजली-

"आध पहर रातिसँ जहिना अहाँ अपन जान गमबैत रहै छी तहिना दोसरोक जान लेबइ..!"

पत्नीक बात सुनि मनमे उठल जे कहिऐन-

"उठि कऽ चलैले जँ दिनक सुर्जक इजोते भरोसे रहब आ जँ कहीं दिनमे कुहेस लगि जाइ, तखन तँ अशे-अशीमे रातिये जकाँ दिनो सुतले-सुतल बहि जाएत। जाबे अचेतन चेतनक बाट पकैड़ सुरूजे जकाँ रातिक अन्तिम पहर–जे राति-दिनक संक्रमणकालक पहर छी–तइमे अपनो रातिक वृत्तिकेँ[7] दिनक वृत्तिक[8] बीच संक्रमण नइ करब तखन संक्रमित केना हएब? आ जँ संक्रमित नइ हएब तखन केहेन जिनगी पेब पएब?"

तरेतर मन कड़ुआए लगल। कड़ुआइते उठल- कहू! जे जेकरा-ले चोरि करौं सएह कहए चोरा! एक दिस हम अपना संग पत्नियोँ आ परिवारक बालो-बच्चाकेँ धार सिरैज धाराक रूपमे धराधाम दिस बढ़ैक विचार कऽ रहलौं अछि, मुदा दोसर दिस परिवारक कियो सुतले अछि आ कियो झगैड़ते अछि तखन ओ प्रवाहित केना हएत..?

कड़ुआएल आँखि ललिया गेल, पत्नीकेँ पुछलयैन-

"दोसरक जान लिअ चाहै छिऐ आकि दिअ चाहै छिऐ?"

हमर बात पत्नी की बुझली, केना बुझली कि सुनबे-बुझबे ने

[7] काजकेँ

[8] चेतन वृत्ति

केली आकि सुनि कऽ मतसून जकाँ मठैर देली से तँ ओ जानैथ, मुदा मनक विचार फाड़ि बजली-

"जहियासँ ऐ घरमे पएर देलौं तहियासँ एक्को दिन सुख नइ भेल..!"

पत्नीक बात सुनि मन बेसम्हार हुअ लगल। ई तँ नमहर उपराग भेल! आइ जँ अपने सीमा तकक–अपन सीमाक माने भेल जहियासँ गारजनी भेल तेतबे तकक–उपराग रहैत तँ पति-पत्नीक बीचक बात बुझि छोड़लो जा सकै छल, मुदा जैठाम पैछला पीढ़ीक उपराग अछि तैठाम तँ पत्नीक मुँहमे लगाम लगौने बिना कियो चेतनशील केना भऽ सकैए। जिनगी जिनगी छी, ठट्ठा नहि। किछु सीखए पड़ै छै, किछु बिसरए पड़ै छै, किछु जोड़ए पड़ै छै आ छोड़ौ पड़िते छइ। आ जँ से नहि हएत तँ हीर-मति लाल-जवाहरक संग अमृतसँ भरल ई दुनियाँ खढ़-पातसँ तेना ढकि कऽ झँपा जाएत जे चीन-पहचीन सभटा लोप भऽ जाएत! जखन नीक-अधलाक विचारे लोप भऽ जाएत तखन जिनगीए की आ जीवने केहेन रहत?

मन तेते गरमा गेल जे अपन विचार जोर-जोरसँ पत्नीपर लादए लगलौं। मुदा ओहो उतारामे की कहली, नइ कहली, से सुनि अखनो कान ओहिना बहीर अछि जेना सुनसान असमसान हुअए। मुदा चुपचाप सुनि कऽ बरदासो करब, केतौसँ उचित नहि बुझि पड़ल। बेतुकार मुहसँ निकलए लगल। जइसँ दुइये गोरेक बीचक बात अनघोल जकाँ भऽ गेल। तहीकाल मरनी दादी घर बहारि आँगन बहारै छेली आ सुनबो करै छेली। जखन अनसोहाँत लगलैन तखन डेढ़ियापर बाढ़ैन रखि पहुँचली।

अखन तक दादी दुनू गोरेक बाते अकानैत, बाजैत किछु नहि। मुदा विवादक जड़ि जखन नजैरमे नइ एलैन तखन अनधुन बजली-

"की जोलहा-धुनियाँक घर जकाँ झूठ-फूसकेँ धुनकीमे धुनबो करै छह आ तानी-भरनी तानि अनेरे खटखुट करै छह।"

ओना दादी हमरा दिस ताकि बजै छेली, तँए पत्नीकेँ अपन पछपात बुझि पड़लैन, जइसँ मुँह सुपुट लेलकैन। दू गोरेक बीच अपने फँसि गेलौं। एक दिस पत्नीक नजैर तेज होइत उठैत देखिऐन तँ दोसर दिस मरनी दादीक विचारकेँ आइ धरि कहियो सोझा-सोझी कटने नइ छी तँए किछु करैत किछु-ने बनैत रहए। मुदा रच्छ रहल जे आगू भऽ कऽ पत्नियेँ, दादी दिस नजैर उठा बजली-

"दादी, भिनसरू पहरकेँ लोक राम-राम करैत नीन तोड़ैए आ ई सभकेँ तेना हकबाहि करै छैथ जे गाम-समाजक लोको सुनि की कहैत हेता!"

ओना मरनी दादी पत्नियोकेँ आ अपनो ठेहुन लगसँ के कहए जे छाती धरि नीक जकाँ चिन्है छैथ। जे दुनू परानीक जिनगीमे की अन्तर अछि। ओना कोनो झगड़ाक पनचैती दू रूपक पंच दू रूपे करै छैथ। एक करै छैथ जे झगड़ाक गहींर पानिक पता नइ पौनिहार जकाँ आ दोसर करै छैथ झगड़ाक जड़िक पताल तक जानि कऽ। मरनी दादी दोसर श्रेणीक पंच छैथ। मुदा जेहेन ललका-ललकी दुनू परानीक बीच भेल छल सेहो तँ अपने काने सुनने छेली, केकरो कहलाहा नइ सुनने छेली, तँए घरमे लगल आगिकेँ पहिने जलक बूनसँ नहि चैल वा बाल्टीनक पानियेसँ ने तोपि कऽ शान्त कएल जा सकैए...।

सामंजस करैत दादी बजली-

"तोरा सबहक दुआरे होइए ऐ टोलकेँ के कहए जे गामेसँ पड़ा जाइ। ने रहब एहेन टोल आ ने सुनब एहेन लोकक बोल।"

ओना अपना बुझबामे आबि गेल जे मरनी दादी एकभग्गू पनचैती कऽ रहली अछि, मुदा दुनू परानी जैठाम आमने-सामने दू

पार्टी बनल छी, तैठाम जँ किछु बाजब तँ सोल्होअना दोखी हमहीं हएब किने। तँए मुँहकेँ बरैज लेलौं। मुदा दादीक बात सुनि पत्नीकेँ बुझि पड़लैन जे दादी हमरा विचार दिस भऽ गेली। माने हमर विचारकेँ मानि लेली। मुस्की दैत पत्नी बजली-

"दादी, गाममे ई सभसँ सिरिस[9] छैथ, हिनकर बात जहिना ने कहियो कटलयैन हेन तहिना ने कहियो कटबैन।"

ओना जहिना अपने बुझै छेलौं तहिना मरनी दादी सेहो पत्नीक घटी-कुघटी जनिते छैथ, मुदा ईहो तँ जनबे करै छैथ जे दुनू परानीक बीचक झगड़ा छी। ओना, जँ समतल जगहपर आनि कोनो घुरछीकेँ छोड़ौल जाए तँ ओ असानीसँ छुटि जाइए। मने-मन दादी ईहो देखबो आ सुनबो करैथ जे सभ दिन भोरे-भोर ओछाइन छोड़ि उठैले कहा-कही होइए। जखन चेतनो-सियान से नइ बुझत तखन की हएत..!

हाथ पकैड़ आँगनसँ निकलैत मरनी दादी आँखिक इशारा देलैन। बुझि गेलौं जे किछु कहती, मुदा तइसँ पहिने पत्नीकेँ कहलखिन-

"कनियाँ, घर-दुआर आकि बाल-बच्चा केकरो अनकर छिऐ, कि अपने छी। जाउ, अँगना-घरक काज सम्हारू।"

हाथ पकड़ने मरनी दादी अपना अँगना आनि ओसारपर बैसा कहली-

"बौआ, किछु भेलह ते पुरुख-पात्र भेलह किने। नारीमे नारीत्व आबि सकैए मुदा पुरख-ले ते दुनियाँ पसरल अछि। तहूमे अखन जुआन-जहान छह, अखन नमहर जिनगी जीबैक छह, तँए मिलि-

[9] श्रेष्ठ

जुलि कऽ रहह।"

पत्नीक सोझमे मरनी दादीसँ जे विचार-विनिमय केलौं ओ एक रंगक अछि। माने जैठाम दू धारक मुँहक बीचक घाटक मिलानी होइए आ जखन पत्नी नइ रहै छैथ तखन एक घाटक मुँह जकाँ धारक गहींरपन दिस होइए। अखन दुइए गोरे छी, माने हमहीं छी आ मरनीए दादी छैथ। तँए मुर्दघटक अपन-अपन सीमा छै, जे मरनियोँ दादी बुझै छैथ आ अपनो बुझै छी। तैठाम जँ मरनी दादी दुनू परानीकेँ मिलि-जुलि रहैक बात कहलैन से केना सम्भव हएत। ओना दुनियाँमे किछु असम्भवो नहियेँ अछि, मुदा तैबीच अनुकूल-प्रतिकूल परिस्थिति नइ अछि सेहो केना कहल जाएत। मुदा शंको तँ शंका छी, पत्नीक संग सामंजस करैत जिनगी चलि सकैए मुदा ओते बिसवासू नहियेँ हएत जेते हेबा चाही। मुहसँ खसि पड़ल-

"दादी, जैठाम कर्मक जिनगी आ अकर्मक जिनगीक झगड़ा हएत तैठाम मिलान केना हएत जे मिलि-जुलि रहब?"

ओना अपन मन गरमाएल जकाँ बाजल मुदा मरनी दादी-ले चैनसन। मुस्की दैत बजली-

"बौआ, सब दिन कोरा-काँखमे लऽ खेलबैत एलियह से कि मनसँ हेरा गेल जे विचार बदैल जाएत। दुनू गोरेक बीच छेलौं तँए एहेन बात बाजब उचित छल।"

ओना मरनी दादी खोलि कऽ नहि बाजल छेली, मुदा इशारामे ओ यएह बाजल छेली जे जहिना काजक जिनगी–माने कर्मशीलक जिनगीक अनुभवात्मक बोध–आ अकाजकक जिनगी, जे मात्र विचारक सीमाक भीतर रहैए, दुनूमे की दूरी छै तइ ठिकिया कऽ इशारा केने छेली। ओना, मरनी दादीक बात सुनि कनी-मनी मन नरमा जरूर गेल मुदा सोलहन्नी ठंढाएल नहि, तँए बजा गेल-

"दादी, मुँह देख मुँगबा परसबकैं अहाँ केना उचित कहै छिऐ?"

जहिना अकासमे उड़ल बैलून, जे जेते नमहर रहल, धरतीपर उतरैकाल ओ ओते असानीसँ पकड़ाइए, तहिना मरनी दादी पकड़ैत बजली-

"बौआ, चौमैतपर चारिटा मति एकठाम भऽ ओझराइए वा लड़ै-झगड़ैए, तैठाम केना कएल जाएत। कनी-कनीकैं घटा-बढ़ा, घीच-तीर कऽ ने एकठाम साटल जाएत। एकर माने ई नहि ने भेल जे पाछूसँ अबैत मति चौमुहानीक पछाइत अपन रूपे बदैल लेत। ओकर तँ स्पष्ट दिशा छै जे पूबसँ आएल रस्ता जखन चौमैतमे मिलि चबुतरा निरमबैत आगू दिस बढ़ि जाइए। जे पूब-पच्छिम, उत्तर-दच्छिन सभ दिस बढ़ैए। तैठाम तँ कहले ने जाएत जे पच्छिम-मुहेँ जाएत किने ओ पुबरिया रस्ता भेल आ जे दच्छिन-मुहेँ जाएत ओ उत्तरबरिया भेल। जे दुनू दिससँ माने सभ दिससँ भेल।"

ओना मरनी दादीक बात कनी-कनी बुझबो केलौं आ कनी-कनी नहियोँ बुझलौं। मुदा भिनसुरका समय गप-सप्पक तँ छी नहि। बजलौं-

"दादी, अखन काज सभ अछि काजसँ जखन निचेन हएब तखन आगूक गप-सप्प करब।"

मास दिनक बीच अपन विचारक संग काजमे संशोधन केलौं। जइसँ काजक रूप रूपायित भऽ बदैल गेल। भोरक झगड़ा मेटा गेल। काजक रूप ई बदलल जे जैठाम जेठका बेटाक नाओं लऽ लऽ शोर पाड़ै छेलिऐ जे अवाज सुनि सभ उठत। ओ छोड़ि देलौं। आठटा धिया-पुता रहने पत्नीकैं सेहो टोकब छोड़ि देलिऐन। माने सुति कऽ उठैबेर, आठो धिया-पुताकैं एक-एक बेर नाओं लऽ लऽ जोर-जोरसँ

बजै छी, जइसँ आठ अवाजमे धिया-पुताक कोन गप जे बिनु टोकल पत्नियोँक नीन टुटि जाइ छैन। मुदा दोहरा-दोहरा बजितौं तखन ने ओहो सोन्हिमे सुइया तकितैथ, से तँ रहलैन नहि। तँए चुपे-चाप गबदी मारि ओछाइन छोड़ि उठि जाइ छैथ।

❍

शब्द संख्या : 2700, तिथि : 21 दिसम्बर 2017

पाइक इज्जत

आइ सातम दिन सेहो प्रेमानन्द बाबाकैं पाँच रूपैआ निकैल गेल छैन। ओना ओ पहिलुके दिन बुझि गेल छला जे पाँच रूपैआ निकलल अछि, मुदा बजला किछु ने। से ओही दिन नइ बजला से बात नहि, छअ दिन तक मुँह बन्न केने रहला। प्रतिदिन पँच-पँच रूपैआ निकललैन। मुँह बन्न रखैक कारण परिवारिक जिनगी छेलैन। झमटगर परिवार छैन, रंग-रंगक लोक रहने रंग-रंगक परिवारिक काज तँ सदिकाल परिवारमे होइते अछि। हेबो केना ने करत। जहिना कोनो झमटगर गाछमे दू-चारिटा पाते कि ठहुरिये सुखल रहैत तहिना ने परिवारो छी। तहूमे नमहर-झमटगर परिवार रहने तँ आरो सोभाविक अछिए। एक पुरखिया गाछमे ने एक-आधटा पात आकि एक-आधटा डारि सुखल रहत, जेकरा हटा देबै, गाछ निरोग भऽ जाएत। ओना, कम आँट-पेट रहने रोगो-वियाधि तँ कम लगबे करैए। मुदा झमटगर परिवार तँ झमटगर-ओझराएल गाछ जकाँ ने होइत अछि जइमे दू-चारिटा पातो आ दू-चारिटा ठहुरियो सदिकाल सुखले रहैए। तँए प्रेमानन्द बाबा मुँह बन्न केने रहला जे अँगने-घरक काजक बात छी, जखन परिवारमे बाबा-दाखिल छीहे तखन जँ परिवार ओइ बले नइ चलए, सेहो तँ नीक नहियेँ कहल जाएत। मुदा केतेक दिन बाबा बले फौदारी चलत। ओ तँ अपने-अपने सिरे ने चलत। तँए कि परिवार नहि चलि सकैए, सेहो बात तँ नहियेँ अछि। ओ तँ परिवारक विचारधारा छी। जइमे स्वच्छ धारा बनि सेहो प्रवाहित होइए आ दुबराएल, पतराएल, मराएल सेहो चलिते अछि।

ओना, पाँच रूपैआक महत्ते की भेल? मुदा एक-एक पाइक महत अछि, पाँच तँ 'पाँच रूपैआ' भेल। खुदरा जिनगी प्रेमानन्द बाबाक तँए पँचहजारी-दसहजारी नोटक ओतेक महत हुनका-ले नै छैन जेतेक महत खुदरा पाइक छैन। होइते अहिना छै किने जे पाँच रूपैआक काजमे पँचटकही बेसी नीक। तैठाम जँ देबालकैं दसहजारी देबइ, तँ ओ मने-मन गारि पढ़बे करत किने जे 'नबाबी देखबए एला हेन!' तइमे एकटा आरो अछि, रूपैआ तँ लेन-देनक बीचक वौस छी। काज तँ नहि। तैठाम जँ काजक समयकैं रूपैये गनैमे नष्ट करब तँ अधला भेबे कएल किने। ओना, पँचहजारी-दसहजारी इज्जतखोर अछि सेहो बात नहि। जखन सोना-चानीक दोकानपर जाएब आ पँचटकही नोट देबै तँ ओहो तँ गारि सुनेबे करत किने जे 'एला हेन हाथी किनैले आ संगमे छैन बकड़िया पाइ!' खाएर जे अछि से अछि। अपन-अपन दुनियाँ आ अपन-अपन जग-जहान तँ सभकैं अपन-अपन अछिए। एते तँ मनुख भेने अजादी भेटले अछि किने जे 'कोइ काहू मगन, कोइ काहू मगन, जे जेहेन मगन से तेहेन पेबन!'

सूर्यास्तक समय। लक्षणसँ प्रेमानन्द बाबाकैं बुझि पड़लैन जे परिवारमे एके बेकती एहेन अछि जे पाइ निकालैए...। मने-मन धपा कऽ ओकरा सोर पाड़लैन-

"सुशील, कनी सुनिहह।"

ओना, प्रेमानन्द बाबाक परिवारक सभ-कियो आज्ञाकारी छैन्हे।

बाबाक लगमे आबि सुशील बाजल-

"की कहलौं, बाबा?"

प्रेमानन्द बाबाक सोझा अबैसँ पहिने सुशीलक जाँघ थरथराए लगल जे प्रेमानन्द बाबा आँकि नेने छला। मुदा मनमे पानिक बुलबुला जकाँ उठिये रहल छेलैन जे सुशील अखन हाइ स्कूलक बच्चा छी,

परिवेश एहेन बनि गेल अछि जे हाइ-स्कूलक नबे-सँ-पनचानबे प्रतिशत बच्चा नशाक लतसँ प्रभावित भऽ रहल अछि, भलेँ ओ चौकलेटेक रूपमे किएक ने होइत होउ। लत तँ लत छी। एहेन परिस्थितिमे एकटा बाल मनकेँ दुतकारब वा चोरीक कलंक लगा चोर कहब, सेहो उचित नहि। किएक तँ जँ कियो तेसर सुनि लिअए आ भविसमे कहियो यएह बात ओकरा उनटा कऽ कहि दइ जे 'तूँ चोर छँह', तखन ओ धब्बा जकाँ ने बनि जाएत! जबकि अखन ओ उदीयमान सुर्ज सदृश अछि। जँ ओकरा गहन[10] जकाँ गरैस लेल जाइ से केहेन हएत? ओ तँ सँपाएल गहुमनक वृत्ति हएत..! मुदा बिनु किछु कहने छोड़ियो देब तँ उचित नहियेँ हएत।

मन खोलि कऽ प्रेमानन्द बाबा बजला-

"बौआ, औझुका काज-ले पाँचटा रूपैआ रखने छेलौं, से नइ देखै छी..!"

सुशील-

"हम लेलौं।"

साफ धारमे जहिना पाइनो साफ होइत सफा बनि बहैत चलैए तहिना पोताक गढ़पनकेँ गढ़ैत बाबा बजला-

"बौआ, दुनियाँमे सभकथूक इज्जतो अछि आ बेइजती सेहो अछि। मानो अछि आ अपमानो अछि।"

बाबाक बात सुनि सुशील कान ठाढ़ करैत बाजल-

"से की, बाबा?"

प्रेमानन्द बाबा बजला-

"आम तँ नीक फल छी, दुनियाँ जनैए मुदा जँ कियो पीलुआहा

[10] ग्रहन

आकि खटहा आमक गाछ रोपि बाग लगौत तँ ओ केहेन हएत?"

बाबाक विचारकेँ सुनि सुशील मने-मन अँटकारए लगल जे बाबा कि कहलैन। आम तँ फल छी, तहूमे मीठ फल छी। जँ कम मीठका फल रहैत, जेना खीरा- तँ दोसर परिस्थिति बनैत से नहि, आमक गिनती उच्च कोटिक मीठ फलमे अछि। तैठाम मीठक बदला चुनेखट्टा आ अमृत सन भोज्य पदार्थमे उज्जर-उज्जर सोहरी लागल पील भेटए से, केहेन हएत..?

सुशील बाजल-

"ओ ते केहनो ने हएत।"

सुशील जे बुझि बाजल हुअए, मुदा प्रेमानन्द बाबाकेँ बुझि पड़लैन जे कनियेँ चोटसँ तबला स्वर पकैड़ लेलक! खुशी होइत प्रेमानन्द बाबाक मनमे जे गामक लोक वा दोसर परिवारकेँ नहि बुझए देब, मुदा अपन जे परिवार अछि तैबीच सुशीलक आचरणसँ सभकेँ परिचय करा दिऐ जइसँ चारू दिससँ सबहक नजैर सुशीलपर पड़त। जखने चारि दिसक चारिटा आँखिक बीच सुशीलक आचरणपर पड़त तखने ओ सुधैर कऽ सोझ भऽ जाएत। मुदा लगले विचारकेँ मनक दोसर विचार रोकि कहलैन जे अखन तँ प्रश्न दुइये गोरेक बीच अछि, मुदा जखने दू-सँ-तीन वा चारिक बीच जाएत तखने चारि रंगक भाव-कुभावक उदय सेहो हएत। भलेँ ओ परिवारेक लोक किए ने हुअए। आ जखने चारि रंगक भाव-कुभाव एकठाम हएत, तखने बाबा-पोताक बीचक जे सम्बन्ध सूत्र अछि ओइमे किछु-ने-किछु अतिक्रमण हएत। जखन प्रश्ने नान्हिटा अछि, नान्हिटा ऐ दुआरे जे एक दिस प्रेमानन्द बाबा सन प्रेम पद पौनिहार तँ दोसर दिस हाइ स्कूलक बच्चा सुशीलकेँ कुशीलसँ विरक्त कऽ सुशील बनाएब अछि। दू गोरेक बीचक विचार छी। तहूमे सुशीलक बालपनक बालमन अछि। तँए

ओकरा मनकेँ एतेक नइ झमारि दिअए जे अल्मुनियमक तार जकाँ रेगहा पड़ि जाइ जैठामसँ कखनो टुटि जाए..!

प्रेमानन्द बाबा बजला-

"केहनोक माने की भेल बौआ?"

सुशील बाजल-

"ने नीके आ ने अधले।"

प्रेमानन्द बाबा बजला-

"बाह! खूब कहलह!"

जहिना झँपाएल सुर्ज रहने दिनक अन्हारमे कियो डिबिया बाड़ि घरमे कोनो काज करैत हुअए आ एकाएक जँ सुर्ज उगि फरिच कऽ दैत जइसँ डिबियाक ज्योति मलिन भऽ जाइत तहिना सुशीलकेँ भेल।

सुशीलक विदीर्ण होइत मलिनाएल चेहरा देख प्रेमानन्द बाबा अपन शान्त चित्तकेँ प्रशान्त चित्तमे बदैल बजला-

"बौआ, अखन तोरा दुनियाँमे आएले केते दिन भेलह। तँए अखन दुनियाँक तहियाएल तहकेँ नीक जकाँ नइ बुझि पेबहक। मुदा तैयो कहै छिअ।"

बाबाक 'कहै छिअ' सुनि सुशील हरिणक बच्चा जकाँ आँखि-कान दुनू ठाढ़ करैत बाजल-

"केना बुझबै?"

सुशीलक प्रश्नमे बुझैक जिज्ञासा देख प्रेमानन्द बाबा बिहुसैत बजला-

"बौआ, आमक गाछी तीन रंगक होइए, एकटा भेल मीठहा आमक गाछी, दोसर भेल पीलुआहा वा खटहा आमक गाछी आ तेसर भेल दुनूक बीचक मिलल-जुलल गाछी। जइमे खटहा-मीठहा दुनू

रहैए।"

प्रेमानन्द बाबाक विचार सुनिते सुशीलक मनक तृष्णामे जेना एकाएक तृप्ति जागए लगलै। जइसँ बुझैक जिज्ञासा आरो तेज हुअ लगलै। बाजल-

"तखन तँ खटहा आम आकि पीलुआहा आमक गाछीक कोनो मोल नइ भेल?"

प्रेमानन्द बाबा बजला-

"बौआ, जइ दुआरे तोरा शोर पाड़ने छेलियह से कहब तर पड़ि गेल अछि, तँए पहिने ओ कहब जरूरी अछि, मुदा जखन बीचमे दोसर प्रश्न उठा देलह तँ पहिने वएह कहि दइ छिअ। जहिना मीठ आमक गुण पकलापर अबैए, तहिना खटहो आ पीलुओहोक गुण अन्तिमे अवस्थामे अबैए। तइसँ पहिने दुनूक एके रंग गाछो, पातो होइए आ पकैसँ पूर्व अवस्था तक दुनूक काजो आ गुणो एके रंग रहैए। तँए ओइसँ पहिने, माने पकैसँ पूर्व दुनूक काजो एके रंग होइए। माने ई जे जहिना लकड़ीक चीज-वौस, तहिना आमक चटनी-अँचार...। मुदा जे फलक फल छी तइमे अन्तर आबिये जाइए। अखन एकरा एतै छोड़ह। दोसर दिन नीक जकाँ सभ बात बुझा देबह।"

'दोसर दिन सभ बात बुझा देबह' सुनि सुशीलक जिज्ञासामे मिसियो भरि कमी नइ आएल। मन ओहिना उत्फुल रहल जहिना तत्काल बुझैले जागल। होइतो अहिना छै जे कोनो बात-विचार आकि कोनो वस्तुए-जात तत्काल भेटने आकि कनी ठहरियो कऽ भेटलासँ मनमे ओहन निराशा नइ अबै छै जे नहियेँ भेटत। भेटैक आशा बनले रहै छइ।

सुशील बाजल-

"बड़बढ़ियाँ।"

सुशीलक मुहसँ 'बड़बढ़ियाँ' सुनि प्रेमानन्द बाबा बजला-

"बौआ, जहिना आम आ आमक बागक इज्जत अछि तहिना दुनियाँमे सभ कथुक अछि।"

ओना सुशील अखन तक इज्जतक सम्बन्ध सिर्फ मनुखेटा सँ बुझैत रहए मुदा 'सभ कथु' सुनि मनमे नव जिज्ञासाक संचार भेलइ। बाजल-

"से की बाबा?"

सुशीलक प्रश्न सुनि प्रेमानन्द बाबा मने-मन विचारलैन जे अखन सुशील बाल-बोध अछि तँए ओहन विचार राखब नीक नहि, जइसँ ओ अकबका जाए वा बुझबे ने करए। किएक तँ फलो-फलमे अन्तर अछिए। जहिना कुफल-कुफलमे आ कुफल-सुफलमे अन्तर अछि। दुनूकेँ जँ सींगसँ नाँगैर तक माने आदिसँ अन्त तक निहारब तँ ओहिना 'सींग-नङरिया' कहियौ आकि 'नङरिया-सींग' कहियो, भेटबे करत। जहिना नख-सिख वर्णन आ सिख-नख वर्णनमे नायिकाकेँ भेटैए। खाएर जे भेटैए, जेतए भेटैए आ जेकरा-ले भेटैए से जानए। ऐठाम तँ पोता-बाबाक बीचक बेवहारिक जिनगीक सम्बन्ध अछि। तँए जँ नीक जकाँ नइ बुझा देबै तखन बुझबैक मतलबे की रहल। तँए, ओतेक जरूर बुझा देबै जेतेसँ ओ अपने विचारि कऽ फल-कुफल बुझए लगत। जखन हंस सन पक्षी दूध-पानि बेरा सकैए, काग भुसुण्डी सन कौआ दुनियाँक सत्य-असत्य बुझि सकैए तखन तँ सुशील मनुखक बच्चा छी। एकरा बुझैमे देरीए केते लागत। तखन तँ यएह ने भेल जे खेत तँ अन्नेक छी मुदा अखन जोत-कोरक अभावमे परती बनल अछि। तँए कनी ओइ रूपे बुझबए पड़त। मुदा ईहो तँ सत्य ऐछे जे ने पचास बर्खक मनुखक बुधिक सक्कत परती जकाँ अखन सुशीलक बुधि अछि, आ ने पेटक बच्चा सदृश पानिमे पनियाएल खेत जकाँ

अछि। ई दीगर भेल जे माटिक परतीक कोन बात जे पत्थरोसँ पथराएल पहाड़पर सेहो गाछ-बिरीछ उगिते अछि, भलेँ ओइपर केसर-किसमिसक उपज नइ होइत होइ। तहिना पानियोँमे रंग-रंगक उपजा सम्भव नइ अछि सेहो नहियेँ कहल जा सकैए। खाएर किछु अछि, मुदा सुशील तँ चौदह बर्खक बच्चा मनुखक छीहे। भगवान राम चौदहे बर्खक बीचमे पिताक मृत्युक संग अयोध्या छोड़ैसँ लऽ कऽ लंकाक रावणकेँ मारि लंकाकेँ जरबैत जरल लंकाक लंकापति विभीषणकेँ बना अपने अयोध्याक राजा बनला। सुशील तँ सहजे सुशील छी। धरतीपर एला पछातियो केतेको रोग शरीरमे घुसि कऽ पकड़ैए आ धरतीपर अबैसँ पहिने सेहो केतेकेँ पेटेमे पकड़ैए। मुदा ऐठाम तँ सुशील से नहि अछि। बाहरी परिवेशक हवामे रोगाएल अछि, जेकरा मौसमी रोग कहल जा सकैए। तँए ओहने प्रतिकार करब ने नीक हएत जइसँ सुशील पुन: ओ सुशील बनि जाए, जे गलत आचरणसँ पूर्व छल...।

प्रेमानन्द बाबाक मन बिहुसि उठलैन। मुस्की भरैत सुशील दिस तकला। जहिना विद्यालयमे गुरु-शिष्यक बीचक तार एकसूत्रमे आबि जाइए तहिना प्रेमानन्द बाबाकेँ बुझि पड़लैन। ओना, जेहेन अपन मुस्कान भरल मनक मुँह रहैन तेहेन सुशीलक नहि छल, जेकरा ओ भाँपि लेलैन। सुशीलक जिज्ञासु चेहराक उदसपन सुरखीमे प्रेमानन्द बाबाकेँ अनुकूल आवरण बुझि पड़लैन। बजला-

"बौआ सुशील! दुनियाँमे सभ किछुकेँ जेते इज्जतो अछि आ इज्जतक बाटो अछि तहिना तेते बेइज्जतीक सेहो अछिए, तँए एहेन जे जिनगीक धार अछि तेकरा बीचे-बीच चलब सीखह।"

ओना हरियाएल चास जकाँ सुशीलक मन सेहो हरिया चुकल छल, मुदा हरियाएलो चासमे ओहन बीजकेँ औंकुरब कठिन ऐछे जे माटिक तहक बीच औंकुरैक शक्ति रखने अछि।

हिया हारि सुशील बाजल-

"बाबा, बाल पोथीक बोलमे कनी नीक जकाँ बुझा दिअ।"

प्रेमानन्द बाबा बजला-

"बौआ, अँगनामे दादी-मुहेँ सुनैत हेबह जे अपना पुतोहुकेँ कहैत रहै छथुन- जे ने तूँ जारन-काठीक इज्जत बुझै छह आ ने थारी-लोटाक, ने कपड़ा-लत्ताकेँ सेखीसँ रखि इज्जत दइ छहक आ ने घर-दुआरक सेखी रखने छह।"

प्रेमानन्द बाबाक बात सुनि सुशील ठठा कऽ तँ नहि हँसल, मुदा मुँह खोलि भभा कऽ जरूर हँसल। हँसैत बाजल-

"हँ, से तँ दादीक मुहेँ बरमहल सुनैत रहै छी।"

प्रेमानन्द बाबा बजला-

"ओकर सीमा-सरहद सेहो बुझि लएह आ सोचहक। जहिया तक पुतोहुकेँ माने तोरा माएकेँ, जारन-काठी जोगबैक आ थारी-लोटा रखैक समुचित बोध नहि हेतैन ताधैर ई बात सासु कहबे करतैन किने?"

जहिना धाराक धार पेब पोखैरो-झाँखैरक आ खेतो-पथारक जमकल पानि गतिशील भऽ जाइए तहिना सुशीलोक मनक गति गतिशील भेल। बाजल-

"हँ, से तँ उचिते किने।"

सुशीलक प्रवाहित होइत विचारक धार देख प्रेमानन्द बाबा आँकि लेलैन जे आब सुशीलक मन फरीच भऽ गेल छै तँए जे पुछबै आकि कहबै ओ हरे-हरे-कऽ सभटा बुझि जाएत। प्रेमानन्द बाबा बजला-

"टेबुलपर राखल पाइ तूँ लेलह?"

बाबाक बात सुनि सुशील गुम भऽ गेल। होइतो अहिना छै जखन चोर-मोट एकठाम होइए। ओना सुशीलक मुहसँ किछु ने निकलल, मुदा मनमे विषाद जरूर जागि गेलै जइसँ मुँहक सुरखी बदैल गेल।

सुशीलक मुँहक रूप देख प्रेमानन्द बाबा बजला-

"गुम नइ हुअ। ईहो एकटा रोगाएल मनुखक लक्षण भेल। ओकरा मथि-मथि माथक मथानीसँ जरूर निकालि ली। जइसँ ओ रोग निरकटौवैल भऽ छुटि जाए।"

सुशील बाजल-

"हँ, छह-सात दिनसँ एक-एकटा पँचटकही लइत एलौं हेन।"

सुशीलक बात सुनि प्रेमानन्द बाबा बजला-

"जहिना दादीबला विचार सुनलह तहिना पाइयोक इज्जतो अछि बेइज्जती सेहो अछिए।"

ओना बाबाक विचार सुशीलक हृदयकेँ बेधैत बैस रहल छल तँए कोनो तेहेन कम्पन्न बाबाकेँ नहि बुझि पड़लैन। बजला-

"पाइक जे समुचित काज अछि, जँ ओइमे ओ लगौल जाएत तँ ओकर इज्जत भेल। आ जँ से नइ भेल तँ ओ दुइर होइत बेइज्जतीक कारण भेल। खाएर जे भेल से भेल, जखने जागी तखने परात।"

❍

शब्द संख्या : 1999, तिथि : 05 जनवरी 2018

सेहन्ता

भिनसुरका समय। ओना घड़ीक सात बजि गेल मुदा ने सुर्ज भगवान अपन कुह फाड़ि उगि सकल छला आ ने दिनेक आभास बुझि पड़ै छल। शीतलहरीक लपेट चलि रहल छल। पूस-माघ मासक बीचला आड़ि परक समय रहने दुनू समगम छल। सात बजे शंकर काका अपन भिनसुरका कर्मसँ निवृत्त होइत, चाह-पान करैत दरबज्जापर बैस परिवारजनक दुख-सुखक बात सुनबो करै छला आ ओकर निमरजनाक परियास सेहो करै छला। परिवारे छी, सभकेँ अपन-अपन भुक्ति अपन-अपन मुक्ति-ले रहिते अछि।

ओना शीतलहरी दुआरे शंकर काकाकेँ ओछाइन छोड़ि उठैमे बिलम सेहो भेलैन आ ठण्ढक तेज आक्रमणसँ सेहो पछुआ रहल छेलैन्हे। होइतो अहिना छै जे जँ प्राकृतिक मौसम अनुकूल रहल तँ अपनो मन मौसमक अनुकूल भेल, जइसँ काजक अनुकूलता भेने समयक हिसाबसँ गति-विधि बढ़बे करैए, तहिना प्रतिकूल भेने सेहो घट-घटाव होइत घटबे करैए। पैखाना जाइसँ पहिने तमाकुल चुना शंकर काका ठोरमे लइते छला कि पवित्री काकी लगमे आबि कहलकैन-

“बहुत दिनसँ मनमे एकटा बात औनाइत चलि आबि रहल अछि से पुछैक ने तेहेन गरपर अहीं चढ़ै छेलौं आ ने अपने तेहेन गर लगै छल, तँए मुँह झाड़ि कहियो किछु ने कहि भेल, से..?”

ओना, शीतलहरीक झटका शंकार कक्काक देहक संग मनकेँ

शान्त-शीतल केनहि छेलैन तैपर पत्नीक सुवचन सुनि आरो शान्तराम भऽ गेलैन। बजला-

“एकटा किए, जेतेक छुटलाहा बात अछि सेहो आ आगुओक हजारटा बात पुछि लिअ।”

ओना, शंकर काका पवित्री काकीक विचारकेँ हलुकाएल[11]-फलुकाएल[12] बुझि जिज्ञासा केलैन, मुदा गहिंराएल काजकेँ जँ हलुआएल बोलसँ पुछल जाए तँ उत्तर देनिहारक मनमे धोप-चट हेबे करत किने। सएह शंकर काकाकेँ सेहो भेलैन। ओना, शंकर काका जेहने काजक गहिंरगर तेहने विचारोक छथिये, मुदा अखन पत्नीक प्रश्नकेँ ऊपरे मने लेलैन।

पतिक विचार सुनि पवित्री काकी औनाए लगली। औना ई लगली जे पैछला छुटलाहासँ ऐगला धरिक हजार बात कहैले कहलैन। मुदा ऐगला हजार कि लाखो-करोड़ो बात-विचार जे अछि ओहो तँ छुटले अछि। तखन तँ यएह ने भेल जे पाछूसँ आगू धरिक सभटा छुटले अछि। जेतए एहेन छुटलाहा बात-विचारक बोन-झाड़ अछि तेतए की पुछबैन आ की नइ पुछबैन..?

पवित्री काकी अगदिगमे पड़ि गेली। मुदा अगदिममे रहली नहि, एकाएक सचेत भेली। सचेत ई भेली जे जखन दुनियेँ छी, जइमे रंग-रंगक हजारो-लाखो गाछ-बिरीछ अछि, हजारो-लाखो जीव-जन्तुक संग हजारो-लाखो बीघामे पानियोँ अछिए..! असगरे केते उपछब..! मुदा थकथकाएल मनकेँ एकाएक थीर करैत पवित्री काकी बजली-

“जहिना सभ दिन एके सिरहन्ने रहलौं तहिना आगूओ सभ दिन एके सिरमे जरन-मरन केना हएत? सएह सिहन्ता मनमे तही दिनसँ

11 हल कएल

12 फलक प्राप्ति

औनाइए जइ दिन दुनू गोरे एक मरबापर बैस जिनगीक संगी बनलौं।”

ओना, पवित्री काकीक विचारमे जे रहल होनि मुदा तैपर धियान नहि अँटका शंकर काका फुसियारि पत्नीक फुसियाह पति बनि फुसियबैत बजला-

“ई तँ अहाँ हमरे मनक बात बजलौं! हमहूँ की ऐसँ हटल छी।”

शंकर कक्काक विचारक चपचपीमे पवित्री काकी चपचपा गेली मुदा मन ओइ चपचपीकेँ कबुल नहि केलकैन। मनमे उठलैन जे पुछलयैन किछु आ बजला किछु। तहुमे तेहेन बात बजला जेकर कोनो लागि-भागि विचारसँ अछिए नहि! ओना, हमरा हिसाबे तँ हिनकर प्रश्नोत्तरीक समय छिऐन, मुदा शीतलहरीक जे रूप अछि ओइमे धरतीसँ अकास धरि चपेटाइये गेल अछि, भरिसक हिनको मन तही कन-कनीमे कन-कना गेल छैन। आ तँए जनु हीय सेहो काँपि रहल छैन, मुदा हमरासँ छिपा रहल छैथ। जँ से नहि तँ किए जीवन-संगी रहितो बाल-बोध जकाँ फुसिया रहला अछि?

बाल-बोधक फुसियाएब मनमे अबिते पवित्री काकी तरंगित होइत मन तरँग गेलैन। बजली-

“दिल्लीक लड्डु जकाँ फुसियाउ जुनि। अपनो आँखि देखैए जे अखने ओछाइन छोड़लौं हेन, भिनसरू पहरक नित्य-क्रिया सेहो पछुआएले अछि।”

पत्नीक चोटाएल बात सुनि शंकर कक्काक मन चटकलैन। चटैकते बजला-

“भोरे-भोर एना किए आगियाएल छी। पहिने ऐ आगिकेँ चुल्हिमे पजाइर चाह बनौने आउ। ताबे हमहूँ मुँह-कानमे पानि लऽ लइ छी।”

पतिक आश्वासन पेब पवित्री काकीक मन मानि गेलैन जे अखन

जेहेन शीतलहरीक सरदी पसरल अछि तइमे केकरो विचार सरदीसँ सरदिया जा सकैए मुदा जिनगी तँ से नहि छी, तहूमे पति-पत्नीक बीचक जीवन छी। पुरुखे ने ई बात बुझता जे बाल-बच्चा सेहो माइयक दू-चारि बर्ख उमेर खाइते अछि, तँए दू-चारि-पाँच साल कम उमेरक कन्याक संग बिआह होइए जे दुनू हिसाब माइनस-प्लस करैत एक रंग भेल, तँए जहिना एक सिरहन्ने जीवन गुदस होइए तहिना ने अन्तो-अन्त तक हेबा चाही।

एक तँ पूस-माघ मासक नमहरका राति, कोनो बैशाख-जेठक राति नहि। जइसँ मन अरामक अभावमे हराम जकाँ करत। आइ जँ बैशाख जेठक समय रहैत तँ थोड़-थाड़ मानलो जा सकै छल, मुदा से तँ अछि नहि।

ओना, पवित्री काकीक विचार शंकर कक्काक मनमे तेना घुरिया-फिरिया लगलैन जे तमाकुल खेने छला पैखाना जाइक खियालसँ मुदा से बिसैर पत्नीयेँक गपमे अँटकल रहि गेला। थोड़ेकालक पछाइत जखन पत्नीक चाह मन पड़लैन कि हाँइ-हाँइ कऽ दतमैनसँ चारि घूसा दाँतमे लगा, जीहकेँ जीभियासँ जीभिया, कुर्ड़ा करि पानि पीब एला। तैबीच पवित्री काकी सेहो चाह नेने पहुँच चुकल छेली।

एक घोंट चाह पीब शंकर काका बजला-

“हमरा होइ छल जे आइ करूआएल मने करूआएल चाह बना पीआएब मुदा से नहि, बड़ निम्मन चाह अछि!”

पतिक बातपर पवित्री काकी ओते धियान नइ देली जइ हिसाबसँ शंकर काका बाजल छला। किएक तँ अपन ओहन प्रश्न पवित्री काकीक मनकेँ घेरि नेने छेलैन जे केम्हरो तकैये ने दैत रहैन। चोट्टे आँगन जा पवित्री काकी अपनो चाह पीली। चाह पीब अपन विचारक प्रश्नकेँ ओरियौने पुन: दरबज्जापर पहुँचली। तैबीच शंकरो

काका चाह पीब पान खा दरबज्जाक ओसारक चौकीपर देवाल लगा ओङ्गैठ बैस चुकल छला।

आगूमे बैस पवित्री काकी बजली-

“चाहो पीलौं, पानो खेलौं तैसंग भिनसुरका क्रिया-कर्मसँ निवृत्त सेहो भइये गेल छी तँए आब..?”

आगूक बात पवित्री काकीक पेटेमे रहैन कि तइ बिच्चेमे मुँहक बात छिनैत शंकर काका बजला-

“हँ-हँ, से तँ भइये गेलौं। आब कहू जे अहाँ की पुछने छेलौं।”

शंकर कक्काक समगम मन देख पवित्री काकी बजली-

“यएह ने कहने छेलौं जे जहिना बिआहक मरबापर जे जीवन-संगिनी बनलौं ओ जरन-मरन धरि बनल रही।”

पवित्री काकीक प्रश्नमे केतौ खोंच-खाँच नहि देख शंकर काका बजला-

“से तँ अपनो विचार अछि। होइतो अहिना छै ने जे पतिक मृत्यु अपना औरुदे भेल आ अछैते औरुदे पत्नी अछियामे शरीरान्त कऽ संगी बनि मृत्यभुवनमे ओहिना रहै छैथ जहिना जीवितमे एक बात-विचारक संग मर्तभुवनमे रहै छैथ, तइमे भेद-भाव की बुझि पड़ैए?”

जहिना न्यायालयमे वकील, ऑपरेशन थियेटरमे डॉक्टर आ क्लासमे शिक्षक अपन पूर्ण तैयारीक संग जाइ छैथ तहिना पवित्री काकी पतिक संग सबाल-जवाब करैले तैयार छेली जे जे प्रश्न उठत ओकर जवाब देब। बजली-

“कहलौं ते बड़बढ़ियाँ जे अपना ऐठाम पतिक अछियामे हवन करैत पत्नी अपन सतीत्व निमाहै छेली, मुदा ओहन प्रथा तँ किछु परिवार विशेषक छल सौंसे समाजक नहि। जइमे अपना सबहक

परिवार तँ नहियेँ छल तखन केना हएत?”

पत्नीक विचार सुनि शंकर कक्काक मन चनकलैन। अपन विचारकेँ अपना सोझहेमे हत्या होइत देखलैन। ओना, शंकर काकाक जिनगीक सोचक आगूमे पवित्री काकी हल्लुक छेली, मुदा प्रश्नोक तँ अपन वजन होइए, तइमे पवित्री काकी सिरचढ़ भऽ गेल छेली। अपन मान सतीत्वक विचारकेँ शंकर काका ओतइ चोपैत कऽ मनमे समेट लेला आ जहिना कोनो गाममे बहैत धारकेँ गौआँ सभ अपन गामक धार बुझै छैथ मुदा ओही गौआँमे किछु एहनो पारखी लोक तँ छथिये जे धारकेँ जड़िसँ पकैड़–माने जेतए-सँ धारा बनि धार चलैए तेतैसँ–पकड़ने-पकड़ने अपन गामक धार देखैत आगू केना-केना बढ़ैत समुद्रमे मिलैए तेतए तकक खोज करैत वीण बजबै छैथ, तहिना शंकर काका अपन वीणकेँ वाणीपर चढ़बैसँ पहिने अपन बेनु बनक तार जोड़ि लेला।

जखने बेनु बनक वीणाक तार शंकर कक्काक वाणीसँ जुड़ए लगलैन कि हिया हारि मन गबाही देलकैन जे यएह समाज छी, जइमे एक-एक पुरुख दोहरी-तेहरीक कोन बात जे दर्जनक दर्जन, सोरेक-सोरे बिआहो करै छैथ आ बिनु बिआहोक नारीक संग अपन भोग-पिपाशु मनकेँ तृप्ति सेहो करै छैथ आ सोरैहिया जीव जकाँ धियो-पुतो जनमैबते छैथ। मुदा तहीठाम नारीक लेल एहेन छूट अछि? नहि! हुनका संग प्रतिबन्ध लगल छैन! तेतबे नहि, जँ पुरुख (पति) झगड़ा-झंझट केने संग छोड़ि दैन आकि अपने कोनो कारणे मरि गेला तँ ओ दोसर पुरुखक संगो नहि पकैड़ सकै छैथ! मुदा लगले शंकर कक्काक मनक कोढ़ी ओहिना फुटि गेलैन जहिना फूलक कोढ़ी अपन मुँह फोड़ि रंग-रंगक फूल प्रदर्शित करैए। मनमे उठलैन- एहनो प्रथा तँ किछु परिवारे विशेषक अछि, सौंसे समाजमे–माने समाजक सभ परिवारमे–नहि अछि। अपन चारू कातक घेराएल बाट देख शंकर काका बजला-

“अच्छा, ई कहू जे एहेन प्रश्न मनमे किए उठल जे दुनू प्राणी सभ दिन एक सिरहन्ने..?”

पर्वत सदृश्य अपन नारीत्वक प्रश्न उठा शंकर कक्काक दिशाक बाटपर[13] रखैत पवित्री काकी बजली-

“जँ पुरुख बिनु नारीक असगरो दुनियाँमे जीब सकत आ अपन अस्तित्व रखि सकत, जे कि अपन पुरुषत्वक विचार कबुलने अछिए, तैठाम पुरुख अपने किए ने पत्नीक मृत्युक पछाइत ओहन व्रत अपनो-ले बना निमाहि रहल अछि?”

पवित्री काकीक सुबुद्ध मनक सुशील विचार सुनिते शंकर काकाकेँ पत्नियेक विचारमे नुकाएल एकटा गर भेटलैन। गर ई भेटलैन जे पुरुषोमे एहेन पुरुषवान पुरुष नइ भेला आकि नहियेँ छैथ सेहो केना मानि लेबैन। एहनो-एहनो वीर पुंगव पुरुष भेबे कएल छैथ, अखनो अनेकानेक छथिए जे अपनाकेँ ओही दिशामे बढ़ैबतो जाइये रहला अछि। एक-सँ-एक एहेन वीर पुंगव पुरुखक प्राचीन धारा बहिये रहल अछि आ अनवरत बहितो रहबे करत। तखन तँ ईहो नहियेँ नकारल जा सकैए जे समुद्र रूपी समाजमे सेहो ओहिना लहरियो उठैए आ ज्वारो उठिते अछि, जइसँ पुरान डेंगी नाह सेहो डगमगेबे करैए। ‘गहरी नदिया नाव पुरानी...!’ तँए ओइ नाहकेँ समुद्र रूपी समाजक एक किनारसँ दोसर किनार पहुँचैक शक्ति नइ अछि, सेहो नहियेँ कहल जा सकैए...।

विचारक दौड़मे शंकर काका मने-मन दहा-भँसिया रहल छला, जइसँ जहिना कोनो तेज हवा वा विर्रोमे धरतीक कोनो खढ़-पात–जीअल वा मुइल–धरतीसँ उड़ि अकास छुबि लइए आ जेना-जेना हवा आकि विर्रो कमैत जाइए तेना-तेना धरतीपर पुन: आबि जाइए तहिना

[13] चलैक बाटपर

शंकरो काकाकेँ भेलैन। धरतीपर विचारकेँ अबैत देख शंकर कक्काक मन ओहिना पसिझए लगलैन जहिना रौदमे वा आगिक तावमे पात सीझि कऽ पसिझए लगैए। पसिझैत शंकर काका बजला-

“लऽ दऽ कऽ दू प्राणी भेलौं, तखन एते चिन्ते किए मनमे रोपल अछि, जे एना हएत तँ ई दुख हएत, ओना हएत तँ उ दुख हएत आकि सुखे हएत! तइले मन किए डराइए? जखन दुनू प्राणी मनुखेक वंशक छी तखन किए कोनो चिन्ता करै छी। जँ मनुख वंशसँ देववंशमे नहि पहुँचब तँ जानवरे वंशमे किए जाएब।”

ओना शंकर काका अपना जनैत पवित्री काकीक मनकेँ भरल कोठीक चाउरकेँ निकालि जहिना गृहिणी रौदमे सुखबै-फटकैकाल हाथसँ तर-ऊपर करै छैथ तहिना सेहो करए चाहलैन मुदा पवित्री काकीक कड़ुआएल मन एकाएक शान्त नइ भेलैन। ओना, किछु मद्धिम जरूर भेलैन। बजली-

“पैछला जिनगी ने गपे-सप्पमे कटि गेल, मुदा ऐगला तँ भारी अछिए?”

ओना अपना जनैत पवित्री काकी ठिकिया कऽ प्रश्न रूपी ढेप गाछक पाकल आमपर फेकने छेली। जे शंकर काका अपन मन रूपी फलमे लगैसँ पहिनहि बुझि गेल छला। बजला-

“जहिना एक-एक दिनक घटबीसँ जिनगीमे घटैत-घटैत एतए तक पहुँच गेलौं तहिना ऐगला जिनगीक ऐगला एक-एक दिनकेँ घटबैढ़ करैत अहिना नीक जकाँ ऐगलो गमा लेब। तइले अनेरे जे एते चिन्ता-फिकिर मनकेँ दबने अछि सएह भेल नारीक नरिपन। यएह जखन पुरुखपन बनए लगैए तखन हमर-अहाँक बीच भेँट कमैए। देखै छिऐ! शीतलहरीक कूहि फटल जाइए, तँए ठंढमे दबल अकराएल देहक शक्तिकेँ बिनु रौदमे पकौने केना अंकरा छोड़ाएब।”

ओना बजैक क्रममे शंकर काका अपन मनक बात उगललैन, मुदा मनक बात उगलला पछाइत जखन पेट खलिया गेलैन तखन पवित्री काकीक विचार नव शिरासँ पेटमे औंकुरा दिअ लगलैन।

पत्नीक औंकुराइत विचार देख शंकर कक्काक मनमे उठलैन- पत्नीक विचारकेँ जँ निरुत्तर करि मन सोल्होअना हल्लुक नहि कऽ देबैन तँ हुनका मन-रोग भऽ जेतैन। तँए जेतेक शास्त्र-पुरानसँ लऽ कऽ घर-अँगनाक विचार अछि ओ अपना ढंगे करबे नीक।

ऐठाम दूटा विचार शंकर कक्काक मनकेँ घेरि लेलकैन। पहिल अपन परिवारक पत्नीक विचार आ दोसर समाजमे पसरल विचार। समाजमे छोट-छोट जनसमूह बनि छोट-मोट काजक दौड़ शुरू कऽ रहल अछि, मुदा काजक स्तर–आमदनीक हिसाबसँ–अपन जीवन स्तरसँ केतेक दूर अछि आ केतेक लग अछि से तँ अपने ने विचारए पड़त। एहेन तँ नहि जे अपन मोबाइलोक रिचार्ज आ सरफो-साबुन उधारीए चलबए पड़त।

समाज दिससँ मन ससैर शंकर कक्काक मन पवित्री काकी दिस बढ़लैन। आँखि उठा जखन पवित्री काकीपर देलखिन तँ बुझि पड़लैन जे लाखो घैल पानि आँखिमे डबकल छैन। तँए जाबे अपन मनक भड़ाँस पत्नी अपने मुहेँ नइ उगलती ताबे ओकर रस्ते की खोजल जाएत। मुस्की दैत शंकर काका बजला-

"ऐगला दिन जे भारी बुझि पड़ैए, से किए? ने हमरे डायबिटीज-बल्डप्रेशर अछि आ ने अहींकेँ अछि तखन भारी किए बुझि पड़ैए जे चिन्तासँ घेराएल छी?"

शंकर कक्काक मुँहक 'चिन्ता' सुनि पवित्री काकीक मनमे निश्चिन्तता उठए लगलैन, निश्चिन्त होइत बजली-

"अहाँ अछैत जँ हमरा चिन्ता हुअए, यएह ने भेल हमर

नदानी।"

नहलापर दहला आ बीबीपर बादशाह फेकैत शंकर काका बजला-

"अही नदानीक चलैत ने हमरो हाथ पकड़लौं आ हमहूँ हाथ पकैड़ कऽ अपना घर अनलौं। यएह घर ने गृहो बनत, निकेतनो बनत आ समय पेब भवनो बनत, सदनो बनत। तहिना जखन मौसमक संग समय पकड़त तखन धामक संग मन्दिरो बनबे करत।"

पतिक विचारमे अपन सहमत जतबैत पवित्री काकी बजली-

"जीते जिनगी ने कियो किछु पेबो करैए आ लूटेबो करैए।"

❍

शब्द संख्या : 2014, तिथि : 11 जनवरी 2018

राक्षसक झड़

दर्जन भरि बच्चाक संग गुरुजी क्लासमे क्लास लइ छला। ऐठाम गरुजी आ शिष्यक चर्च करब, किएक तँ जहिना गुरुजी-अध्यापक, शिक्षक आ मास्टर भेल छैथ तहिना ने विद्यालयो-पाठशाला, स्कूल आ कनभेन्ट सभ बनल अछि। ओना! संस्कृत-मैथिली आ अंगरेजीक शब्द सभ छी मुदा से लोको मानए तखन ने। तँए, ई सभ शब्द पर्यायवाची भेल। खाएर जे भेल से भेल, ऐठाम विद्यालय, गुरुजी आ शिष्यक प्रयोग करब तँए कोनो शंका मनमे नइ रहए...।

गुरुजी भागवतक कथा पढ़बैत कहै छेलखिन जे भागवत सन अनमोल रत्न जे कि कल्पवृक्ष वा कामधेनु सदृश्य अछि। ई जानकारी तँ गामक बच्चा-बच्चा तककेँ अछि, जँ से नइ अछि तँ कहू जे कोन गाम अवंच अछि जइ गाममे साले-साल वा सालमे दुइयो बेर- तीनियोँ बेर भागवत-कथा व्यासजीक मुहेँ नइ होइए। आ जइ गाममे होइए तइ गाममे सौंसे ग्रामीणकेँ हकार दए नहि सुनाएल जाइए आ विसर्जनक पछाइत भगवत-प्रसाद नहि पबै जाइ छैथ...। गुरुजी भागवत कथाक ओइ अंशमे अंशदान कए रहल छला जइमे मनुख आ मनुखक झड़क चर्च अछि। बिच्चेमे एकटा शिष्य गुरुजीक लगमे आबि अपन हाथक पाँचो आँगुर देखबैत कहलकैन-

"गुरुजी, पाँच मिनट..!"

ओना, गुरुजीक ठेकानपर रहैन जे जखनसँ प्रवचन शुरू केलौं

तखनसँ ऐ छौड़ाक पेशावक ई पाँचम खेप छी! मुदा भगवत कथाक बीच पेशावक शिकायत उचित नहि, तँए आदेश दैत गुरुजी बजला-

"राक्षसक झड़ कहीं-के ने..! जेतए जाइ-के छौ जो..!"

बजैक क्रममे तँ गुरुजी भागवत कथाक आवेगमे छला जेना कोनो धारक धाराकेँ होइ छै, तैठाम जँ धारक धाराक बीचमे कोनो बाधा उपस्थित होइए तँ ओइठाम धाराक प्रवाह रूकि केम्हरो उफनए लगैए जइसँ विचारक धारामे बेवधान उपस्थित भइये जाइए सएह गुरुजीकेँ विचारक धारामे भेलैन- 'मनुखक झड़'क जगह 'राक्षसक झड़' कहा गेलैन। जहिना सीकपर राखल वस्तुकेँ उतारिते सीक हिलए-डोलए लगैए तहिना गुरुजीक मन हिलए-डोलए लगलैन। हिलैत-डोलैतकाल सीक जहिना दुनू दिस जाइए तहिना गुरुजीक मन सेहो दुनू दिस भेलैन। एक दिस मनमे उठलैन जे भागवतक कथा सुना रहल छी, जैठाम देवते-राक्षसक चर्च चलि रहल अछि, तैठाम तँ ईहो ने कहए पड़त जे भागवतक कोन खण्डक शब्द 'राक्षसक झड़' छी। किएक तँ दर्जनो भरि शिष्य दर्जन भरि बुधि-विवेकक संग बैसल अछि। केकरा मनमे की उचैड़ रहल छै, से जानब आसान थोड़े अछि..? हेहरू[14] जकाँ गुरुजीक मन मलिन भेलैन मुदा लगले सीके जकाँ डोलैत गुरुजीक विचार ओइ छौड़ापर चलि गेलैन जेकरा कहने छेलखिन। मियादि तरैंग गेलैन। तरैंते बुदबुदेला-

"तड़िपीबा जकाँ ऐ छौड़ाकेँ खुच-खुची धेने छै जे पाँचम बेर ई बाधा उपस्थित केलक! एक बेर तँ उचिते भेल, किएक तँ जागलमे एक-पहर आ सुतलमे दू-पहरपर पेशाव हेबेक चाही। तँए, चारि-पाँच घन्टाक बैसारमे एक-बेर सोभाविक भेल, दुइयो बेर ठीक अछि। किएक तँ जहिना गाइयो-गाइयोक दूध आ महिंसो-महींसक दूध मोट-

[14] हीयसँ हारल

पातर होइते अछि तहिना ने लोको-लोकमे होइए। मुदा ऐ छौड़ाकेँ जे तड़िपीबा जकाँ खुचखुची धेने छै, से भरिसक हमर विचार बुझैमे नइ अबै छै तइ दुआरे खुचखुची धेने छै आकि झड़हा धान जकाँ अछि जे कोनो ठेकाने ने छइ!"

सीके जकाँ गुरुजीक मन दोसर दिस हिललैन। हिलते मनमे उठलैन- 'पेशावक खुचखुची तँ रोग छी!'

रोग मनमे अबिते गुरुजीक विचार हुड़कलैन। हुड़ैकते मन बुदबुदेलैन- 'रोगो तँ रोग छी! तँए रोग भोग नइ छी सेहो केना कहल जाए? केकरो तन रोग होइ छै, केकरो मन रोग होइ छै आ केकरो धनरोग सेहो होइते छइ..!"

ओना गुरुजी मने-मन विचारितो छला आ बुदबुदाइतो छला जे शिष्य सभ सेहो देखबो करै छेलैन आ सुनबो करै छेलैन। विषयसँ विषयान्तर भइये रहल छला। जहिना दुनियाँमे[15] रंग-रंगक पानि, रंग-रंगक हवा, रंग-रंगक माटि, रंग-रंगक आगि रहितो ओइ बीचमे रंग-रंगक गाछ-बिरीछ, रंग-रंगक जीव-जन्तु आ रंग-रंगक मनुखकेँ रंग-रंगक बुधि-विवेक नइ रहैए सेहो नहियेँ कहल जा सकैए...। फेर मन घुमलैन। घुमिते अपनापर एलैन। अखन हमहूँ ने गुरुजी छिऐ आ ईहो-सभ ने शिष्य छी। काल्हि दिन हमहूँ शिष्य छेलौं आ काल्हि दिन ओहो सभ गुरुजी हएत। जँ दुनूक बीच तादात्म रहत तँ व्यवधान किए हएत? दुनू गोरे ने बुझितिऐ जे एक-बटिया जैठाम दू-बटियामे आ दू-बटिया जैठाम तीन-बटिया–चरि-बटियामे मिलैए तैठामक मिलन-मोड़पर पेशाव-पैखानाक संग चाह-पान आ खाइ-पीबैक समय सेहो भेटैए..!

गुरुजीक मन फेर घुमलैन। घुमिते मनमे उठलैन- मने ने मनकेँ

[15] प्रकृतिमे

पकैड़ काबू करत मुदा जेकर देह रोगाह छै ओकरो तँ अपन हिसाब छइहे? फेर मन दोसर दिस छिटकलैन, छिटैकते ओइ छौड़ाक–माने जइ शिष्यपर क्रोध छेलैन ओकर–परिवार दिस नजैर दौड़ गेलैन। नजैर दौड़ते मनमे उठलैन जे गुरु-आश्रम जेबा-ले माने गुरुक सम्पर्कमे जेबा-ले परिवारक परिवेशो एकटा मूल कारण तँ छिऐ। जँ नइ छिऐ तँ किए जैठाम माने जइ देशमे भिखमंगाक ढवाहि लागल अछि, आन्हर-लुल्हक हिसाबो ने अछि, तैठाम एकटा मेडिकल विद्यार्थी-ले चालीस लाख रूपैआक खर्च केवल मेडिकलक चारि सालक कोर्स-ले अछि, बाँकी बाल-वर्गसँ कौलेज धरिक खर्च छोड़ि कऽ। जैठाम बाल वर्ग सेहो आब लाखक खर्चक भऽ गेल अछि..?

गुरुजीक मन विषसँ विषविषा बिसाइन-बिसाइन हुअ लगलैन। तही बीच एकटा शिष्य पुछि देलकैन-

"गुरुजी! 'मनुखक झड़', 'धानक झड़' आ 'पानक झड़' तँ सुनने छेलौं मुदा 'राक्षकक झड़' नइ सुनने छेलौं, से कनी खोलि कऽ कहियौ।"

शिष्यक प्रश्न सुनि गुरुजीक मन ठमकलैन। ठमैकते निसाँस छुटलैन। निसाँस छुटैक माने ई भेल जे कोनो गम्भीर विषयक बात बुझैमे जखन व्यग्र छी आ तखने जँ कोनो नव प्रश्न सोझामे आबि जाइए तँ ओही गम्भीरतासँ ने ओकरा पकड़ल जाइए। तखन जे गहींरगर साँस चलैए, वएह भेल निसाँस। तइले गुरुजीकेँ अनुकूल परिस्थिति भेटलैन। बजला-

"बौआ, बड़बढ़ियाँ बात पुछलह जे 'राक्षसक झड़ की? मुदा पहिने ई कहि दाए जे 'झड़'क माने की बुझै छहक?"

एकटा शिष्य ठाढ़ होइत बाजल-

"वएह ने 'झड़' भेल गुरुजी, जे समय नहि पकैड़ या तँ समयसँ

पहिने झड़ि गेल वा फुलेमे फुलहैर गेल वा फड़लाक पछाइत फले फलहैर गेल..?"

ओना, शिष्यक उत्तर पेब गुरुजीक मनमे तोड़-जोड़ करैक विचार जगलैन मुदा अपन भारपनकेँ सम्हारैत चेतला। जे बच्चा नव-नव रूपमे दुनियाँकेँ देखै जाइक विचार कऽ रहल अछि, तेकरा जँ सघन बोनक बीच लऽ जा कऽ वौआ दिऐ से उचित नहि।

मुस्की दैत गुरुजी बजला-

"बौआ, महाभारत अछि कि रामायण अछि आकि गीते-भागवत अछि, ओकरा पढ़ै-गुनै मनुख अछि मुदा सुनै-सीखैए राक्षसे-देवताक बात।"

दोसर शिष्य, जेकर बोल टेंटियाहा सुग्गा जकाँ अछि, ओ बिच्चेमे टाँहि देलक-

"गुरुजी, रामायण लिखवैया तुलसी बाबा अपना जिनगीमे हारला कि जीतला से तँ रामायणे कहै छैन, मुदा 'गृह कारण नाना जंजाला' कहि जइ दुनियाँकेँ छोड़ि ओ पड़ा गेला ओइ दुनियाँक लोक हुनका की बुझि की कहतैन?"

जेना-जेना शिष्य दिससँ प्रश्न उठैत रहल तेना-तेना गुरुजीक मन सेहो शान्तसँ शान्ताराम होइत, प्रशान्त भऽ गेलैन। तैबीच पहिल शिष्य पुन: अपन दाबा पेश करैत बाजल-

"गुरुजी, हमर प्रश्न तर पड़ि गेल..!"

मुस्की दैत गुरुजी बजला-

"नइ हौ बौआ, जहिना तूँ बुझै छहक जे हमर प्रश्नक नम्बर तर पड़ि रहल अछि तहिना सभ प्रश्नकेँ एला पछाइत जँ एक्केबेर उनटा देबै तखन तरके ने सभसँ ऊपर चलि औत, तइले अन्देशा किए करै छह।"

बिहुसैत शिष्य बाजल-

"गुरुजी, अन्देशा किए हएत! जखन अहूँ जीबै छी आ हमहूँ जीबै छी तखन औझुका जँ आइ नहियोँ हएत तँ काल्हि हएत सएह ने..?"

ओना, गुरुजीक मन वौआए लगलैन। वौआए ई लगलैन जे तेहेन प्रश्न ई छौड़ा रखि देलक जे महाभारते जकाँ काट-मार हएत। जँ कहबै जे 'बौआ, घरो-परिवारमे आ देशो-दुनियाँमे जे काज अखन नइ सम्भव अछि ओ काल्हि सम्भव हएत, ऐगला पीढ़ी ओकरा नीक जकाँ सम्हारि-सुधारि आरो नीक बना करत...।'

मुदा लगले उनैट गुरुजीक मनमे एलैन जे जँ ई कहबै- 'बौआ, जिनगीक कोनो ठेकान नहि, तँए जे काल्हि करबह तेकरा आइये करैले कबीर बाबा कहने छैथ..!'

असमंजसमे गुरुजीक मन पड़ि गेलैन। मुदा रच्छ रहलैन जे प्रशान्तचित्त रहने बुलबुला जकाँ मनमे उठलैन- 'उच्च कोटिक विचार तँ वएह ने भेल जे कोनो घटना कि सुघटना आकि दुर्घटनाक विचार जँ घटनेकाल सुझि जाए तँ ओ सुफल घटनाक कारण हएत..!

ओना, रंग-रंगक विचारक बुलबुलो आ शिष्य सबहक सिरजन शक्तियो मिलि गुरुजीक मनकेँ घोर-मट्ठा करैत रहैन। मुदा गुरुजी अपन मुँहक केबाड़क पट्टा तेतेक कसि कऽ मुँहमे लगा लेलैन जे मनक बात मनेमे मुड़िया-मुड़िया मोइनिक पानि जकाँ चकभौर लिअ लगलैन। गुण भेल जे एकटा दोसर छौड़ा बिच्चेमे कौआ जकाँ काँइ-काँइ केलक-

"गुरुजी, बुलनी दादी सदिकाल कहैत रहै छैथ जे 'बौआ, गीता नइ पढ़ियह, बताह भऽ जेबह! घर छोड़ि अनेरे घुड़मुड़िया करए लगबह..!"

जहिना अझकमे कोनो ईंटा वा पाथरक टुकड़ाक चोट माथमे लगिते समुच्चा शरीर झन-झना जाइए तहिना शिष्यक बात सुनिते गुरुजीक सौंसे देह झुनझुना उठलैन। मुदा पाछू उनैट जखन रक्षा कवच दिस आँखि तकला तँ बुझि पड़लैन जे जहिना कियो औगताएलमे किछु धड़फड़ाइत बाजि देलक तहिना ई छोड़ा बाजल अछि। खाएर बाल-बोध अछि, कमसँ कम एते जिज्ञासा तँ भेलै जे अपना गुरुजी लग अपन विचार खुलि कऽ रखलक। जखन विचार रखैक जगह मनमे बनतै तखने ने विचारशील बनि काल्हि दिन देखत। अखन ओ किआँ-ने गेल जे कौओ एकटा जीव छी आ मनुखो एकटा जीव छी। मुदा दुनूमे अन्तर नइ अछि सेहो नहियेँ कहल जा सकैए। विवेकशील मनुख अपन जिनगीक जीबैक सभ कलासँ पूर्ण अछि, जे कौआमे नइ छइ। मुदा कार कौआकेँ, जेकरा बोलीकेँ अपशगुन मानि वएह सृष्टिकर्ता ने कागभुशुण्डी सन ज्ञानी-भक्त सेहो सृजन केनहि छैथ..!

विद्यालयक गहमा-गहमीमे कमी आएल। वातावरणमे शान्ति पसरल। सब-सबहक मुँह दिस देखए लगला। माने गुरुजी शिष्य दिस आ शिष्य गुरुजीक मुँह दिस ताकए लागल...।

जहिना अस्त्र-शस्त्रक संग रणभूमिमे रणी अपन रणभूमिक हाक हियाबए लगैए आकि अपन औजारक संग खेतमे पहुँच किसान जहिना खेतक ताक हियाबए लगैए तहिना विद्यालयक वातावरण बनि गेल। एकदम्म शान्त! विद्यालयक शान्त वातावरण बनिते गुरुजीक मन शान्त-सँ-प्रशान्त होइत प्रसन्न हुअ लगलैन। एकाएक बजला-

"बौआ, सभ कियो सुनि लएह! औझुका क्लासक विषयमे तीन मोड़ भऽ गेल अछि। एक मोड़ भेल- हमर-तोहर बीचक माने गुरु-शिष्यक बीचक, दोसर मोड़ भेल- शिष्य-गुरुक बीचक आ तेसर मोड़

भेल- शिष्य-शिष्यक बीचक। माने ई जे किछु प्रश्न एहेन आएल जइसँ स्पष्ट भेल जे ओ शिष्य पढ़ने अछि तँए प्रश्न पुछलक। मुदा ओही क्लासक आन शिष्य पढ़ने अछि कि नहि से केना बुझब?"

अपन प्रश्नकेँ टरैत देख पहिल शिष्य बाजल-

"गुरुजी, जाबे काजक समय अछि, ताबे किछु कऽ लिअ।"

शिष्यक मनमे छेलै जे जँ एको-आधोटा प्रश्नक निमरजना हएत तँ अपन प्रश्नक भइये जाएत। जे गुरुजी बुझि गेला। बजला-

"बौआ, हदियेलासँ काज हरदिआनि भऽ जाइए। तँए! ओ केना हरिआइन बनत ई तँ पहिनहि विचार करए पड़त किने। ताबे शॉर्ट-कटमे अखन कहि दइ छिअ, नीक जकाँ काल्हि कहबह।"

शिष्य बाजल-

"गुरुजी! भलेँ शॉर्ट-कटेमे किए ने कहिऐ, मुदा बुझै-जोकर तँ कहबे करबै किने?"

गुरुजीक मनमे एलैन, ई छौड़ा बड़ लगराह अछि! जान नइ छोड़त! बजला-

"बौआ, आइ एतबे बुझह जे जे कलमी आम जकाँ गुदगरो आ रसगरो धारक खेबैया अछि ओ भेल राक्षस आ जे से नइ अछि आ अनेरे बाट-घाट छेकि बाधा पहुँचा बाधित करैए ओ भेल राक्षसक झड़, जे समैयक चरौर करैए।"

❍

शब्द संख्या : 1649, तिथि : 15 जनवरी 2018

बेरपर

पैछला सालक अही मासक औझुके तारीख छी। ओना, बीचमे तीन साए पैंसैठ दिन आ बारह मास गुजैर गेल। तारीखक हिसाबसँ औझुका दिनो बदलल अछिए। पैछला साल शुक्र दिन छल आ ऐबेर मंगल दिन छी। मुदा जे भेल से दिन-मास आ तारीखक भेल ओइसँ डॉक्टर ध्रुव बाबूकेँ कोन मतलब? मतलब छैन मात्र अपन जिनगी, अपन परिवार, अपन सर-सम्बन्धी आ अपन समाजसँ। ओना, जखन अपन जिनगी दिस तकै छैथ तँ बहैत धारक बीचमे उग-डुम कऽ रहला अछि। मुदा एते बिसवास तँ छैन्हे जे सत्तैर बर्खसँ ऊपरक समाजमे छी जे कि भरि गाममे चारि-पाँच गोरे गनल-गूथल छी। अधिकतर लोक सत्तैर बर्खमे अबैत-अबैत मरि गेला। अपन स्कूलक तीनटा संगीमे असगरे छी, बाँकी ओ दुनू मरि गेला। तँए, मरैसँ डरब मूर्खता भेल। सर्वविदित अछि जे जे जन्म लेलक ओ मरबे करत, मुदा मरैयोक तँ निसचित दिन-तारीख नहियेँ अछि जे फल्लेँ दिन आ फल्लेँ तारीखकेँ फल्लाँ मरत। जँ से रहैत तखन तँ सभकेँ बुझल-गमल रहितै, लोक अपन मरैक ओरियान करि कऽ मरैत मुदा सेहो तँ नहियेँ अछि। एक साए पाँच बर्खक ममियौत भाए ओहिना तना-उतार टन-टन करै छैथ, तहिना ने गामबला पीसा सेहो छैथ, एक साए पचीस बर्ख भेलैन अछि मुदा जँ अखनो कियो कहै छैन जे मरबै कहिया बाबा? तेकरा उत्तरमे ओ पचासटा गारि पढ़ैत कहै छथिन- 'केकरो कपारपर बैसल छियौ आकि अपना औरुदे जीबै छी। जेते दाना-पानी हिस्सामे अछि ओते खेला-पीला पछाइत ने मरब। पहिने अपन हिस्सा दाना-पानी पुरा लेब

तखन ने मन कहत जे आब ऐ दुनियाँमे अपन किछु ने अछि, तखन ने मरि जाएब।'

ओना पुरान महींसक बकेनमा दूधक मक्खन जकाँ ध्रुव बाबूक बुधिक अनुकूल विवेको सकताइये गेल छैन, जइसँ बुझब आ सोचब-विचारब सेहो सकताइये गेल छैन..!

बाँस भरि सुर्ज ऊपर आबि गेल, अपन घरक कोठरीमे ध्रुव बाबू पैछला साल भरिक जिनगीक हिसाब मने-मन जोड़ि रहल छला। साल भरिसँ पड़ल-पड़ल देहो अकैड़ गेल छेलैन आ काम-काजी रहने हाथो-पएर आ बुधियो-विवेक अकड़िये गेल छेलैन। मुदा कइये की सकै छला, जखन देहे काजक नहि रहल छेलैन। जिनगीमे जहिना बुधि-विवेकक संग घटना घटैए तहिना देहोक संग घटिते अछि। घटना तँ घटना छी, मुदा ओहीमे ने लोक अपन घटी-बढ़ीक हिसाब सेहो जोड़ैए। अपन साल भरिक जे जिनगी ध्रुव बाबूक रहलैन ओ ओहन रहलैन जे बिनु दोसराइते पेशावो-पैखाना आकि किछु खेबो-पीब कठिन भऽ गेल छेलैन।

संजोग बैसल, ध्रुव बाबूक पत्नी–रुक्मिणी–केँ बुझल छेलैन जे औझुके तारीखकेँ पति घरक कोठरीसँ निकैल दरबज्जापर जा कऽ बैसता। तँए रुक्मिणी भोरेसँ पतिकेँ सहिआरैक पाछू लगि गेल छेली। पतिकेँ जलखै-चाह-पान करा टंच कऽ नेने छेली। तैसंग दरबज्जाक चौकीपर गदगर ओछाइनिक संग गोलगर-गदगर मसलन सेहो लगा लेली। सभ ओरियान केला पछाइत जखन पाछू उनैट रुक्मिणी अपन काजक हिसाब मिलौलैन तँ बुझि पड़लैन जे अखन धरिक प्रकरणक सभ काजसँ निवृत्ति भऽ गेलौं।

ओना, जहिना रुक्मिणी सदिकाल दासो-दास रहै छैन तहिना बेटो-पुतोहु आ भातिजो-भतिज पुतोहु सेहो रहिते छैन, जइसँ ध्रुव

बाबूक मन सदिकाल दुखितो अवस्थामे सुखिते रहै छैन। आगू-आगू रूक्मिणी, तइ पाछू भातीज- दातादीन आ बेटा- मातादीनक संग दूटा कम्पाउण्डर–फूलकान्त आ कृष्णकान्त–डॉ. ध्रुव बाबूक कोठरीमे पहुँचल।

एकाएकी समांग सभकेँ कोठरीमे अबैत देख ध्रुव बाबूक विचारमे बिसवसपन जगलैन जे आइ कोठरीसँ निकैल दरबज्जापर पहुँचब। एकाएक फुद्दी जकाँ मन फुदैक कऽ चहकलैन जे आब निरोग भऽ गेलौं, देहसँ दुख हटि गेल! एका-एकी अपन देहक अंग सभकेँ अजमा-अजमा देखए लगला।

सभ अंग अजमा कऽ देखला पछाइत ध्रुव बाबूक मन उछैट कऽ परिवारक संग सर-कुटुम आ सर-समाज दिस बढ़लैन। मुदा लगले ई सोचि ध्रुव बाबू अपन मनकेँ बहटाइर लेलैन जे जखन दरबज्जापर सभ कियो बैसब तखन विचार करब। किए तँ जहिना सरकारी तंत्रमे सुप्रीम कोर्टसँ लऽ कऽ अनुमण्डल कोर्ट तक एक-सूत्रमे बनल बन्हाएल अछि तहिना समाजोमे बेकती-सँ-परिवार आ आँगन-सँ-दरबज्जाक संग सरो-समाजक बेकती आ सर-कुटुमक बीचक मुहोँ तँ खुजले अछि। ओना, खुजल आ बन्नक बीच सेहो नमगर रस्ता अछि मुदा से अखन नहि। जखन गामक कोनो काज वा विचार विशेष हुअए तखन तँ गामक सभ परिवारक ने दायित्व बनि जाइए जे ओइ विचार आकि ओइ काजकेँ परिवारक सूत्रमे बान्हि एकसूत्रता आनी तइले ते पहिने परिवारकेँ एकसूत्र करब अछि। एहेन तँ नहि, जेना आजुक परिवार सभ चलि रहल अछि जे परिवारमे जेतेक सदस्य तेतेक रंगक विचारो। तइमे जँ एक-सूत्रता नइ औत तखन समाजमे परिवारकेँ जाएब कठिन अछिए। टूट-नफा मिला चलियो सकैए, जे चलितो अछि, मुदा तइमे किछु-ने-किछु कमी तँ रहिते अछि।

अपन कोठरीमे, माने जइ कोठरीमे ध्रुव बाबू रहै छला, परिवारोक सभजन आ दुनू कम्पाउण्डरकेँ देख ध्रव बाबूक मनमे जिनगीक प्रति आरो बिसवास जगलैन, जइसँ मनक खुशपन मुहसँ निकलए लगलैन-

“यएह छी दुनियाँ! अही-ले लोक एते दिन-राति बेचैन रहैए..!”

ओना, अपना जनैत ध्रुव बाबू अपन स्वस्थताक परिचय दैत बाजल छला मुदा से ने पत्नियेँ, ने बेटे-भातिज आ ने कम्पाउण्डरेक मनमे घर केलक। तेकर कारण ई जे सबहक मनमे यएह सोग-समाएल छेलैन जे हो-न-हो देहक कोनो अंगमे अखनो कोनो तरहक कसैर रहिये गेल ने होनि। जँ से हेतैन तँ आरो दिन अही अवस्थामे रहए पड़तैन। जइसँ अपनो सबहक मनक बिसवास आ डॉक्टरो साहैबक काजक बिसबासमे कमी एबे करत। अपना जनैत डॉक्टरो साहैब–जे ऑपरेशन केने छेलैन–ने समय निर्धारित केने छथिन। डॉ. ध्रुव बाबू अपनो डॉक्टर छथिये, रोगक ऊपरक भाग भलेँ, आन डॉक्टर किए ने जाँचि-परेख ऑपरेशन केलकैन मुदा रोगक भीतरिया दर्द तँ अपनो बुझिते छैथ। आनो सभकेँ बुझक चाहिऐन जे जिनगी आकि देहक जे रोग अछि ओकरा नीक जकाँ बुझि-सुझि वा देख-परेख चललासँ देखौआ रस्ता भेटैए, जइसँ हेराइ-भोथियाइक डर कम रहत। जखने राह चलैमे देखल-जानल देखपन औत तखने ने निडरपन औत, आ निडरपन एला पछातिये ने निर्भयपन औत, आ निर्भयपन एला पछातिये ने निर्भीकपन औत, जेकरा संगे चलबे ने जिनगी भेल।

ओना जेते गोरे–माने रूक्मिणी, दातादीन, मातादीन, फूलकान्त, कृष्णकान्त–छैथ सभ ध्रुव बाबूकेँ कोठरीसँ अँगनाक ओसार धरि चला-बुला देखिये नेने छला, मुदा औझुका तारीख तँ आँगनसँ दरबज्जापर पहुँचबक छेलैन, अखन तक अँगनेक ओसार आ कोठरी

भरिमे सभ चला-बुला कऽ देखने छलैन। ओना, सबहक मनमे एहेन बिसवास जरूर उपैक गेल छेलैन जे जेते रोगक अन्देशा अछि तइसँ बेसी रोगमुक्त छैथ। जखने जिनगीकेँ रोगसँ मुक्ति भेटै छै तखने ने ओ एहेन निर्णायक मोड़पर आबि ठाढ़ भऽ आगू दिस देख मुक्ति-भुक्तिक विचार करैए...।

रूक्मिणी बजली-

“दरबज्जापर चलैक अछि?”

ओना पहिनेसँ ध्रुव बाबू तैयार छेलाहे, तँए बिना कोनो हिचक-झिझक केने ओछाइनपर सँ उठि, हाथमे बेंत पकड़ैत बाहर दिस विदा होइत बजला-

“चलै चलू।”

आगू-आगू रूक्मिणी, दुनू पजरामे दातादीन-मातादीन आ पाछू-पाछू दुनू कम्पाउण्डर- फूलकान्त-कृष्णकान्त...।

आगू-पाछू चारू भाग समांग सभकेँ देख ध्रुव बाबूक मनक बिसवास आरो बढ़लैन। सबहक संग दरबज्जापर पहुँच चौकीपर बैसला। सभ समांग सेहो परिवार जकाँ चारू भाग सजि गेल।

मसलनपर ओंगैठते ध्रुव बाबूक मनमे औझुका तारीख एलैन। ओना, तारीखक संग औझुका दिन सेहो मनमे एलैन, मुदा दिन आ तारीखक मिलान नइ भेने मन थोड़ेक कछमछेलैन। दिन-तारीखक मिलानक माने भेल जे औझुके तारीख माने 2017 इस्वीक पहिल जनवरी, आ 2018 इस्वीक पहिल जनवरी। तइ बीचक साल भरिक किरिया-कलाप। तारीख आ महिनामे एकरूपता रहितो, दिन आ सालमे अन्तर भइये गेल। माने ई जे 2017 इस्वीक जगह 2018 इस्वी भऽ गेल आ दिनो शुक्रसँ मंगल भऽ गेल। मुदा दिन-महिना आ तारीख-सालमे जे भेल से भेल मुदा घटना तँ ओहिना रहल जहिना

भेल छल। ओइमे कनियोँ कम-बेसी नइ भेल। कच्छर कटैत ध्रुव बाबूक मन थीर भेलैन। मन थीर होइते समांग सभसँ गप-सप्प करैक इच्छा भेलैन।

ओना, सभकियो चौकीक ओछाइनपर गोलिया कऽ बैसल छेलैन मुदा गप-सप्पक क्रम नहि उठल छल तँए सभ सबहक मुँह तकैत रहैथ। मुहोँ ताकब उचिते छल। साल भरि पहिने, जहिया ध्रुव बाबूक रीढ़क हड्डीक ऑपरेशन भेलैन, तहियासँ सभ हिनका पाछू लागल छला, मुदा वास्तविक तीत-मीठक सुआद तँ ध्रुवे बाबूकेँ ने भेलैन, तँए हुनके ने अपन साल भरिक दुख-दुखान्त कहब छैन।

ओना, सबहक मनमे किछु-ने-किछु उठिये रहल छेलैन। रूक्मिणीक मन भीतरे-भीतर गद-गद होइत जे विधवा होइसँ बँचलौं। जाबे सधवा छी ताबैये ने अपन दुनियाँ आ अपन राज-पाट अछि, जखने से दिन घटैत तँ बेटा-पुतोहुक राज मुँहतक्कीक होइते अछि, तइसँ तँ बँचलौं। तँए, रूक्मिणीकेँ मने-मन गदगद हएब सोभाविके छल। तहिना बेटो-भातीजक मनमे खुशी रहै जे ‘टुटलो हथिसार तँ नअ घरक साँगह!’ किछु भेला तैयो तँ पढ़ल-लिखलक संग उमेरदार-अनुभवी गारजन तँ वएह छैथ। हम-सभ किछु भेलौं तँ छौड़े-माड़ए ने भेलौं, जहिना ट्रेनमे बुड़िबकहा-सभकेँ दोस-दोसतियारे जोड़ि ठक-सभ सिगरेटमे नशा पीआ, साल-सालक कमेलहा ठकि लइए तहिना ने हमहूँ-सभ भेलौं। तेतबे नहि, देखै छी जे फगुआमे आकि जूड़शीतलमे महादेव-पार्वतीक रूप बना नचबैए वा राम-जानकीक रूप बना नचेबो करैए आ रंगो-अबीर उड़ैबते अछि। तैसंग पाकल केरा महींसक गढ़गर दूधक संग मिश्री फेंट भाँग घोरि पीआ-पीआ निशेबे करैए आ धनो-सम्पैत आ इज्जतो-आबरू लूटिते अछि। से तँ हमरा सबहक संग नहि हएत...।

तहिना दुनू कम्पाउण्डर–फूलकान्त आ कृष्णकान्त–क मनमे खुशी। ऐ दुआरे खुशी जे हमरा सबहक अध्यापक हाथसँ निकैल जइतैथ! बेलल्ला होइसँ बँचि गेलौं। ओना, शरीर कमजोर भेने अपन किरिया-कर्ममे डॉक्टर साहैबकेँ थोड़ेक दिक्कत जरूर हेतैन मुदा हमरा सबहक काजमे मिसियो भरि बाधा नहियेँ हएत...।

मसलनपर ओंगैठ कऽ बैसल ध्रुव बाबूक नजैर आगूक ओसारमे टाँगल कलेण्डरपर गेलैन। साल भरिक झोल-झालकेँ रूक्मिणी आइये साफ केने छेली जइसँ ऊपरका झोल तँ झड़ि चुकल छल मुदा जे जमि कऽ सियाही जकाँ बैस गेल ओ रहबे कएल। मुदा साफ वा मटियाएल जे रहल मुदा साल बदैल गेने आब काजक तँ नहियेँ ने रहल। तथापि कलेण्डरक महीनाक संग दिन-दिनपर डॉक्टर ध्रुव बाबूक नजैर नाचए लगलैन। जेना-जेना नचैत गेलैन तेना-तेना आँखिमे बादलक बून जकाँ पीड़ाक बून भरए लगलैन। एक जनवरीक तारीखपर नजैर पड़िते ध्रुव बाबूकेँ छठिआरीक दूधक संग आ पत्नीक कएल खरदुतिया पाबैन मन पड़लैन। मन पड़लैन- यएह एक जनवरी छी, अही दरबज्जापर बैस भिनसुरका उखड़ाहाक मरीज देख साढ़े एगारह बजे खेनाइ खाइले उठि विदा भेलौं। अँगनाक चापाकलपर पहुँच हाथ-पएर धोइ आपस होइकाल कलक चबुतरापर चप्पल पिछैड़ गेल, जइसँ उताने खसल रही! रीढ़क हड्डी साफ दू टुकड़ी भऽ गेल..! ओना, तइसँ साल भरि पहिने भँगवताहक चलैत आकि शरीरक भारीपनक चलैत कुरसीपर सँ सेहो तेना खसल छला ध्रुव बाबू जे रीढ़क दुनू हड्डीक जोड़ छिटैक गेल छेलैन। डॉक्टर साहैब नहि बुझि पेला जे संगठनमे शक्ति रहै छइ। जखन दुनू हड्डी संगठित छेलैन तखन बेसी मजगूती छेलैन आ जखन ओ चहैक कऽ दू फाँक भऽ गेलैन तखन ओ कमजोर भऽ गेलैन। ओना, साधारण रोग बुझि डॉक्टर साहैब किछु दिन दवाइ खेलैन तँ अपना नीक बुझि पड़लैन। कोनो कष्ट नहि बुझि पड़लैन, जइसँ छबे

मास जाइत-जाइत रोग बिसैर गेला। ओना, जखन अपन रोग आ दवाइक फाइल देखै छैथ तँ हड्डी चहकब मन पड़ि जाइ छैन मुदा लगले बिसरियो जाइ छैथ। तेकर कारण ईहो छैन जे तेते नियमित काजे रहै छैन जे जइसँ पैछला काज जँ नहियोँ बिसरै छैथ तैयो औझुका विचारक तरमे तँ जरूर पड़िये जाइ छैन। खाएर जे छैन ओ डॉक्टर साहैबकेँ छैन...।

कलपर खसिते पाँचे-सात मिनटमे अचेत भऽ गेला, जइसँ एते लाभ जरूर भेलैन जे कुहैर-कुहैर जे कनै छला से बन्न जरूर भऽ गेलैन। भाय! जाबे दुनियाँमे आँखि तकै छी ताबैये ने ई दुनियाँ अछि। रहब तँ अही दुनियाँमे, चाहे हवा बनि रही आकि माटि-पानि। मुदा देखै-देखबै-ले आँखि ताकब जरूरी अछिए...।

परिवार जनकेँ जेना एकाएक माथपर ठनका खसलैन। सबहक मुहसँ निकलल-

“डॉक्टर साहैब मरि गेला..!”

मुदा एतेक बिसवास सभकेँ बनल रहबे करैन जे, शरीरक अधिकांश रोगक चर्च बेसी काल डॉक्टर साहैब करै छला। तहूमे चेतनशून्य होइसँ पहिने कुहैर-कुहैर ईहो कहि देने छेलखिन जे ‘हमरा किछु ने हएत, हम ठीक भऽ जाएब। जेते जल्दी हुअ पटना अस्पताल पहुँचाबह।’ परिवार-जनक मन तँ कनैत-कनैत वौआएल रहैन मुदा समाजक जिज्ञासुक विचार सेहो आ कम्पाउण्डरक संग बेटा-भातीजक मनमे एलैन जे जाबे डॉक्टर नहि मृत्यु धोषित करता, ताबे जीवित मानब। तँए मनमे रोपि लगले गाड़ीपर बैसा पटना विदा भेला।

साँस चलनिहारकेँ ने अनाड़ियो-धुनाड़ी जीवित-मृत्यु बुझैए मुदा बिनु साँस चलनिहारकेँ तँ डॉक्टरे ने बुझनिहार भगवान छैथ। शरीर क्रिया विज्ञानक उन्नति तँ एते भइये गेल अछि जे देहक कोन बात जे

माथोक जटिल-सँ-जटिल इलाज आसान भइये गेल अछि। साढ़े चारि घन्टाक सघन ऑपरेशनक पछाइत शरीरक रूप तैयार भेलैन। सात घन्टाक पछाइत होश एलैन माने चेतना घुमलैन। असीम कष्ट, असीम पीड़ाक संग छह मास धरि एक्के कड़े रहए पड़लैन। धीरे-धीरे सुधार होइत गेलैन जइसँ आनो-आनो अंग संचालित हुअ लगलैन। साल भरिक पछाइत आइ दरबज्जापर पुन: ध्रुव बाबू पहुँचला। जहिना ऐ सालक पहिल जनवरीक खुशी मनमे छैन तहिना पैछला सालक पहिल जनवरी, अपन सौंसे जिनगीक घटना-चक्र मन पाड़ि देलकैन।

पचहत्तरिम बर्ख ध्रुव बाबूक पार भऽ गेलैन। चौहत्तरिम बर्खक दिसम्बर बीतला पछाइत पचहत्तैरम बर्खक पहिल जनवरी छल। ओना, रंग-रंगक विचार मनमे उपकैत रहैन मुदा सुख-दुखक बीचक बीतल जिनगीक अनुभव रसे-रसे मनकेँ थीर केने जा रहल छेलैन। जेतेक मन थीर होइए साधना तेतेक अस्थिर होइते अछि। साधना जेते अस्थिर होइत जाइए साधन तेतेक कमथीर हेबे करत। तँए जिनगीकेँ दुनियाँक खगता पड़िते छइ। एकाएक ध्रुव बाबूक मनमे एलैन जे जँ अपन छिहत्तैरम बर्ख धरिक जिनगीक साधल विचारकेँ दुनियाँमे बाँटि नइ लेब तँ केना लोकक मनेमे रहब आ किए लोक मन राखत? जिनगीमे क्रियाक गति तँ छइहेँ, ओहीमे ने अपनो हेराएल रहब...।

डॉ. ध्रुव बाबूक जन्म चालीस-बियालिस इस्वीक बीच भेल छेलैन। ओइ समय, देशमे आजादीक तूफानी आन्दोलन चलि रहल छल। देशक मसिजीवी, श्रमजीवीसँ लऽ कऽ असिजीवी धरि अपन-अपन भविसक विचारक पाछू अपन समर्पण करैले कटिबद्ध भऽ गेल छला। राजनीतिक संक्रमणक दौड़ तेजीसँ चलि रहल छल। देशक अर्थबेवस्था ढहए लगल छल। एक तँ ओहिना हजारो बर्खक राज-सत्ता आमजनक जिनगीमे बाधा उपस्थित करिते आबि रहल छल तैपर सँ अंगरेजी शासन तँ आरो चरमरा देलक।

आन्दोलनक तूफानी दौड़क कारण भेल जे 1935 इस्वीसँ पहिने एकमुँहरी नेतृत्वक आन्दोलन छल जइमे प्रगतिशील विचार केनिहार विचारवान लोक आन्दोलनक दिशामे प्रगतिशील दिशाक आन्दोलनक समर्थक बनि उठि ठाढ़ भेला। अखन धरिक नेतृत्वमे जबर्दस्त विरोध भेल आ आन्दोलनमे तूफानी दौड़ आएल। देश स्वतंत्र भेल। दरभंगामे मेडिकल कौलेज खुजल। ध्रुव बाबू डॉक्टरी पढ़लैन। डॉक्टरी पढ़ि सरकारी डॉक्टर बनला। साठि बर्खक अवस्थामे सेवा निवृत्त सेहो भेला। सेवा निवृत्तिक पछाइत अपन प्राइवेट इलाज अपन दरबज्जापर बैस करए लगला।

एकाएक जेना डॉक्टर ध्रुव बाबूक भक् खुजलैन, पत्नी दिस तकैत बजला-

“बुझलौं किने दुनियाँमे केकरो ने कियो छी आ ने केकरो बिना कोइ जीविते रहि सकैए। यएह छी जीवन आ जीवनी धार।”

रूक्मिणीकेँ पतिक बातक गहींर विचारसँ जेतेक खुशी नइ भेलैन तइसँ बेसी खुशी भेलैन टनगर बोलीक टाँसमे मनगर बात सुनि। मुदा बजली किछु ने। जहिना साल भरि पहिने डॉक्टर साहैबक सभ बात रूक्मिणी चुपचुप सुनि लइ छेली, भलेँ करै छेली अपने मने, तहिना आइयो हुनकर सभ बात सुनि जीवित दर्शन करैत मुस्किया देली।

ओना, भातीजक मनमे कनी-मनी कुड़बुड़ी डॉक्टर साहैबपर उठबे करैन। किए तँ अपन कारोबार बाधित भेल छेलैन। मुदा ओइठाम जा कऽ मन मुकैड़ गेलैन जैठाम देखला जे डॉक्टरे साहैब लऽ कऽ अपनो हाथ-पएर अछि। जखन जड़िये टुटए लगल तखन अपनो टुट तँ हेबे करत किने। तँए, कुड़बुड़ाइत मनकेँ सुरखुराइत विचारसँ दाबि अपनाकेँ समगम रखने छला।

ओना, कृष्णकान्तक मनमे सेहो जगलै जे केना-केना डॉक्टर साहैब कष्ट झेललैन से जेते नीक जकाँ बुझल रहत तँ ओते अपने ने नीक हएत। मुदा अपन सभ समांगकेँ देख कृष्णकान्त अपन विचारकेँ तहिया-तहिया मनमे ओइ दिन-ले राखए लगल, जइ दिन डॉक्टर साहैब असगरमे हमरे बातटा सुनता। मुदा सभकेँ चुपचाप देख कृष्णकान्तकेँ नहि रहल गेलइ। बाजल-

"डॉक्टर साहैब, अखन तँ कोनो तेहेन प्रश्न उठा अपनेक मनपर विचारक बेसी भार नइ दिअ चाहै छी, मुदा बिसरैक डर होइए जे काल्हि-दिन कहीं बिसैर ने जाइ।"

एक तँ ओहिना कृष्णकान्तक संग डॉक्टर साहैब शुरूहेसँ हीय खोलि बजै छला, तैठाम कृष्णकान्तक जिज्ञासा देख आरो मन पनपना गेलैन। बिच्चेमे बजला-

"आब हम जीब गेलौं किसुन। जे पुछैक छह से बाजह।"

ध्रुव बाबूक पिपाशु मन देख पपीहा जकाँ कृष्णकान्त बाजल-

"डॉक्टर साहैब, की सभ अनुभव साल भरिक भीतर भेल, से..?"

कृष्णकान्तक प्रश्न रुक्मिणीकेँ जेना नीक नइ लगलैन, मुदा ध्रुव बाबूकेँ नीक लगलैन। बजला-

"कृष्णकान्त, काल्हि तक जिनगीकेँ जेतेक भरोस कऽ जीबै छेलौं से आब नइ रहत। जिनगी किछु ने छी आ सब कुछ छी। मुदा से जीनिहार-ले। तँए जे पुछलह से कहिये दइ छिअ। जे धटना भेल, एकरे लोक बेर-बिपैत्त कहै छइ। जे छोट-सँ-छोट आ पैघ-सँ-पैघ जिनगीक संग घटैत रहै छइ। तँए अखन बेसी नइ कहबह। अखन एतबे...।"

डॉक्टर साहैबक अधखड्डु बोल सुनि फूलकान्तक मनमे जागल,

जे कृष्णकान्तसँ ने अपन भार डॉक्टर साहैब रोकि रखलैन, मुदा हमरा तँ नहि। बाजल-

"डॉक्टर साहैब, बेर-बिपैत्त तँ बिपैत भेल, ओइसँ मनुखकेँ..?"

स्वस्थ शरीर भेने डॉक्टर साहैबक मनो स्वस्थ रहबे करैन, तँए स्वस्थ विचार जागव सोभाविके छल। बजला-

"यएह छी मनुखक चीन-पहचीन करैक जगह! जे जेहेन बेर-बिपैत्तमे लोकक संग लोक पुरैए ओ ओहन ओइ आदमी लेल बेर-परक आदमी भेल।"

डॉक्टर साहैबक विचार जेना सौनक ओहन बर्खाक बुन जकाँ बोल बनि धरतीपर खसलैन जे अपन समांगक संग दुनू कम्पाउण्डरो स्तब्ध भऽ गेल। गुम्मा-गुम्मी पसैर गेल।

❍

शब्द संख्या : 2585, तिथि : 19 जनवरी 2018

कथा लेखन क्रम

संख्या : 172, 122. शिष्यकेँ शिक्षेटा नै परीक्षो- शब्द संख्या : 187, 123. लौह पुरुष- शब्द संख्या : 124, 124. जंग लगल- शब्द संख्या : 150, 125. जीवकक परीछा- शब्द संख्या : 117, 126. तप- शब्द संख्या : 162, 127. उल्टा अर्थ- शब्द संख्या : 203, 128. जाति नहि पानि- शब्द संख्या : 142, 129. ऊँच-नीच- शब्द संख्या : 206, 130. पागलखाना- शब्द संख्या : 223, 131. दोहरी मारि- शब्द संख्या : 1368, 132. केना जीब? - शब्द संख्या : 1039, 133. नवान- शब्द संख्या : 2306, 134. तिलासंक्रान्तिक लाइ- शब्द संख्या : 2056, 135. भाइक सिनेह- शब्द संख्या : 1201, 136. प्रेमी- शब्द संख्या : 2526, 137. बपौती सम्पैत- शब्द संख्या : 2350, 138. डंका- शब्द संख्या : 2401, 139. संगी- शब्द संख्या : 1849, 140. ठकहरबा- शब्द संख्या : 2349, 141. अतहतह- शब्द संख्या : 2486, 142. अर्द्धांगिनी- शब्द संख्या : 3057, 143. ऑपरेशन- शब्द संख्या : 1616, 144. धर्मनाथ- शब्द संख्या : 1968, 145. सरोजनी- शब्द संख्या : 1810, 146. सुभद्रा- शब्द संख्या : 1922, 147. सोनमाकाका- शब्द संख्या : 1572, 148. दोती बिआह- शब्द संख्या : 1822, 149. पड़ाइन- शब्द संख्या : 1970, 150. केतौ नै- शब्द संख्या : 1203, 151. बिहरन- शब्द संख्या : 3300, 152. मायराम- शब्द संख्या : 2095, 153. गोहिक शिकार- शब्द संख्या : 2152, 154. मातृभूमि- शब्द संख्या : 1048, 155. भबडाह- शब्द संख्या : 2105, 156. परिवारक प्रतिष्ठा- शब्द संख्या : 1974, 157. फॉगु- शब्द संख्या : 2134, 158. लफ साग- शब्द संख्या : 1203, 159. तिलकोरक तरुआ- शब्द संख्या : 1835, 160. एकोटा ने- शब्द संख्या : 1149, 161. धोतीक मान- शब्द संख्या : 480, 162. साझी- शब्द संख्या : 998, 163. सतभैंया पोखैर- शब्द संख्या : 2999, 164. न्याय चाही- शब्द संख्या : 1311, 165. पनियाहा दूध- शब्द संख्या : 2152, 166. कर्ज- शब्द संख्या : 2949, 167. परदेशी बेटी- शब्द संख्या : 2515, 168. मान- शब्द संख्या : 648, 169. मनोरथ- शब्द संख्या : 1161, 170. कियो ने- शब्द संख्या : 3780, 171. सूदि भरना- शब्द संख्या : 922, 172. जन्मतिथि- शब्द संख्या : 2370, 173. इमानदार घूसखोर- शब्द संख्या : 2267, 174. पटियाबला- शब्द संख्या : 2395, 175. सनेस- शब्द संख्या : 1284, 176. उलबा चाउर- शब्द संख्या : 2630, 177. बलजोर- शब्द संख्या : 2410, 178. बेटी हम अपराधी छी- शब्द संख्या : 3341, 179. बगबाइर- शब्द संख्या : 1900, 180. मुइलो बिसेबैन- शब्द संख्या : 4288, 181. सड़ल दारीम- शब्द संख्या : 2577, 182. चुप्पा पाल- शब्द संख्या : 2572, 183. मइटुग्गर- शब्द संख्या : 9811, 184. शम्भुदास- शब्द संख्या : 9674, 185. फाँसी- शब्द संख्या : 10487, 186.

कचोट- शब्द संख्या : 315, 187. काँच सूत- शब्द संख्या : 384, 188. बुधनी दादी- शब्द संख्या : 267, 189. खिलतोड़- शब्द संख्या : 395, 190. मुँह-कान- शब्द संख्या : 213, 191. अनदिना- शब्द संख्या : 307, 192. अपन काज- शब्द संख्या : 367, 193. दूरी- शब्द संख्या : 265, 194. पुरनी भौजी- शब्द संख्या : 117, 195. छुटि गेल- शब्द संख्या : 111, 196. काल्हि दिन- शब्द संख्या : 151, 197. अप्पन हारि- शब्द संख्या : 286, 198. कनफुसकी- शब्द संख्या : 132, 199. मुँहक बात मुहेँमे- शब्द संख्या : 134, 200. कनीटा बात- शब्द संख्या : 101, 201. गति-गुद्दा- शब्द संख्या : 250, 202. बिसवास- शब्द संख्या : 316, 203. कचहरिया भाय- शब्द संख्या : 270, 204. गोहाइर- शब्द संख्या : 432, 205. शिवजीक डाक-बाक्- शब्द संख्या : 070, 206. सोग- शब्द संख्या : 341, 207. पनचैती- शब्द संख्या : 195, 208. कनमन- शब्द संख्या : 323, 209. अजाति- शब्द संख्या : 090, 210. पटोर- शब्द संख्या : 409, 211. फुसियाह- शब्द संख्या : 311, 212. गति-मुक्ति- शब्द संख्या : 238, 213. चौकीदारी- शब्द संख्या : 442, 214. झगड़ाउ-झोटैला- शब्द संख्या : 243, 215. घबाह ट्यूशन- शब्द संख्या : 244, 216. दादी-माँ- शब्द संख्या : 411, 217. पटोटन- शब्द संख्या : 350, 218. मुसाइ पण्डित- शब्द संख्या : 568, 219. भरमे-सरम- शब्द संख्या : 233, 220. देखल दिन- शब्द संख्या : 441, 221. फज्झैत- शब्द संख्या : 401, 222. अकास दीप- शब्द संख्या : 235, 223. बुधि-बधिया- शब्द संख्या : 267, 224. पहाड़क बेथा- शब्द संख्या : 216, 225. उमकी- शब्द संख्या : 321, 226. बजन्ता-बुझन्ता- शब्द संख्या : 147, 227. चर्मरोग- शब्द संख्या : 571, 228. शंका- शब्द संख्या : 325, 229. ओसार- शब्द संख्या : 210, 230. छोटका काका- शब्द संख्या : 398, 231. सीमा-सरहद- शब्द संख्या : 200, 232. रमैत जोगी बोहैत पानि- शब्द संख्या : 253, 233. गंजन- शब्द संख्या : 178, 234. सजए- शब्द संख्या : 090, 235. घटक बाबा- शब्द संख्या : 335, 236. आने जकाँ- शब्द संख्या : 046, 237. दान-दछिना- शब्द संख्या : 151, 238. उड़हैड़- शब्द संख्या : 504, 239. मत्हानि- शब्द संख्या : 258, 240. मेकचो- शब्द संख्या : 216, 241. झुटका विदाइ- शब्द संख्या : 359, 242. मुँहक खतियान- शब्द संख्या : 278, 243. कोसलिया- शब्द संख्या : 234, 244. हूसि गेल- शब्द संख्या : 204, 245. पोखला कटहर- शब्द संख्या : 154, 246. सरही सौबजा- शब्द संख्या : 269, 247. तेरहो करम- शब्द संख्या : 322, 248. डुमैत जिनगी- शब्द संख्या : 286, 249. चोर-सिपाही- शब्द संख्या : 202, 250. दूधबला- शब्द संख्या : 275, 251. टाइपिस्ट- शब्द संख्या : 263,

252. समदाही- शब्द संख्या : 295, 253. बुढ़िया दादी- शब्द संख्या : 332, 254. एक धाप जमीन- शब्द संख्या : 2505, 255. ओझरी- शब्द संख्या : 1970, 256. मुसहैन- शब्द संख्या : 2742, 257. केलवाड़ी- शब्द संख्या : 2685, 258. स्वरोजगार- शब्द संख्या : 2388, 259. घूर- शब्द संख्या : 2812, 260. कनियाँ-पुतरा- शब्द संख्या : 2335, 261. वारंट- शब्द संख्या : 1638, 262. गामक मुँह फेर देखब- शब्द संख्या : 3073, 263. पेटगनाह- शब्द संख्या : 236, 264. जनक हाथे खेती- शब्द संख्या : 238,

265. पाइक मोल- शब्द संख्या : 2412, तिथि : 22 दिसम्बर 2013

266. चोरूक्का झगड़ा- शब्द संख्या : 538, तिथि : 24 दिसम्बर 2013

267. अपसोच- शब्द संख्या : 548, तिथि : 26 दिसम्बर 2013

268. पतझाड़- शब्द संख्या : 2587, तिथि : 31 दिसम्बर 2013

269. झीसीक मजा- शब्द संख्या : 453, तिथि : 1 जनवरी 2014

270. मति-गति- शब्द संख्या : 1807, तिथि : 07 जनवरी 2014

271. अपन सन मुँह- शब्द संख्या : 5696, तिथि : 25 जनवरी 2014

272. रिजल्ट- शब्द संख्या : 2343, तिथि : 16 जनवरी 2014

273. सुमति- शब्द संख्या : 3072, तिथि : 30 जनवरी 2014

274. फेर पुछबैन- शब्द संख्या : 346, तिथि : 31 जनवरी 2014

275. माघक घूर- शब्द संख्या : 1683, तिथि : 06 फरवरी 2014

276. खर्च- शब्द संख्या : 330, तिथि : 07 फरवरी 2014

277. अखरा-दोखरा- शब्द संख्या : 342, तिथि : 10 फरवरी 2014

278. पेटगनाह- शब्द संख्या : 593, तिथि : 14 फरवरी 2014

279. बड़की माता- शब्द संख्या : 1224, तिथि : 18 फरवरी 2014

280. धरती-अकास- शब्द संख्या : 184 , तिथि : 19 फरवरी 2014

281. बकठाँइ- शब्द संख्या : 883, तिथि : 24 फरवरी 2014

282. चैन-बेचैन- शब्द संख्या : 936, तिथि : 09 मार्च 2014

283. हथियाएल खुरपी- शब्द संख्या : 645 , तिथि : 11 मार्च 2014

284. अलपुरिया बरी- शब्द संख्या : 287, तिथि : 12 मार्च 2014

285. नीक बोल- शब्द संख्या : 565, तिथि : 13 मार्च 2014

286. सुआद- शब्द संख्या : 624, तिथि : 14 मार्च 2014

287. गंगा नहेलौं- शब्द संख्या : 690, तिथि : 19 मार्च 2014

288. भौंटक गहमी- शब्द संख्या : 508, तिथि : 24 मार्च 2014

289. भँसैत नाह- शब्द संख्या : 597, तिथि : 26 मार्च 2014

290. पान पराग- शब्द संख्या : 1692, तिथि : 29 मार्च 2014

291. सिरमा- शब्द संख्या : 760, तिथि : 31 मार्च 2014

292. नौमीक हकार- शब्द संख्या : 1119, तिथि : 03 अप्रैल 2014

293. फोंक मकड़- शब्द संख्या : 1744, तिथि : 10 अप्रैल 2014

294. केते लग केते दूर- शब्द संख्या : 1252, तिथि : 14 अप्रैल 2014

295. अभिनव अनुभव- शब्द संख्या : 326, तिथि : 16 अप्रैल 2014

296. खोंटकर्मा- शब्द संख्या : 1184, तिथि : 19 अप्रैल 2014

297. किछु ने- शब्द संख्या : 503, तिथि : 22 अप्रैल 2014

298. झकास- शब्द संख्या : 1589, तिथि : 26 अप्रैल 2014

299. अप्पन-बीरान- शब्द संख्या : 2919, तिथि : 01 मई 2014

300. सजमनियाँ आम- शब्द संख्या : 611, तिथि : 04 मई 2014

301. अर्जुन रोग- शब्द संख्या : 1003, तिथि : 7 मई 2014

302. गरदैन कट्टा बेटा- शब्द संख्या : 575, तिथि : 10 मई 2014

303. नैहराक धाड़- शब्द संख्या : 885, तिथि : 14 मई 2014

304. अवाक- शब्द संख्या : 1041, तिथि : 17 मई 2014

305. पोखरिक सैरात- शब्द संख्या : 923, तिथि : 20 मई 2014

306. दनियाँ डाबा- शब्द संख्या : 409, तिथि : 22 मई 2014

307. धरम काँट- शब्द संख्या : 395, तिथि : 23 मई 2014

308. पल भरि- शब्द संख्या : 1116, तिथि : 24 मई 2014

309. किरदानी- शब्द संख्या : 5309, तिथि : 14 जुन 2014

310. सगहा- शब्द संख्या : 2860, तिथि : 22 जुन 2014

311. अकाल- शब्द संख्या : 1238, तिथि : 24 जुन 2014
312. उझट बात- शब्द संख्या : 1152, तिथि : 26 जुन 2014
313. कर्जखौक- शब्द संख्या : 1175, तिथि : 2 जुलाई 2014
314. उनटन- शब्द संख्या : 1187, तिथि : 6 जुलाई 2014
315. रेहना चाची- शब्द संख्या : 1307, तिथि : 9 जुलाई 2014
316. बुधनी दादी- शब्द संख्या : 1256, तिथि : 11 जुलाई 2014
317. अउतरित प्रश्न- शब्द संख्या : 1229, तिथि : 14 जुलाई 2014
318. हारि- शब्द संख्या : 1240, तिथि : 16 जुलाई 2014
319. सोनाक सुइत- शब्द संख्या : 1135, तिथि : 17 जुलाई 2014
320. मरूभूमि◌- शब्द संख्या : 1214, तिथि : 20 जुलाई 2014
321. असगरे- शब्द संख्या : 1557, तिथि : 24 जुलाई 2014
322. पुरनी नानी- शब्द संख्या : 1304, तिथि : 27 जुलाई 2014
323. कटा-कटी- शब्द संख्या : 1140, तिथि : 30 जुलाई 2014
324. केते लग केते दूर- शब्द संख्या : 1206, तिथि : 3 अगस्त 2014
325. गलती अपने भेल- शब्द संख्या :3386, तिथि : 06 अगस्त 2014
326. चोरक चोरबती- शब्द संख्या : 884, तिथि : 6 अगस्त 2014
327. घर तोड़ि देलिऐ- शब्द संख्या : 1527, तिथि : 10 अगस्त 2014
328. सजल स्मृति- शब्द संख्या : 2363, तिथि : 14 अगस्त 2014
329. सनेस- शब्द संख्या : 2654, तिथि : 16 अगस्त 2014
330. सए कच्छे- शब्द संख्या : 488, तिथि : 19 अगस्त 2014
331. एक मुठी घास- शब्द संख्या : 411, तिथि : 21 अगस्त 2014
332. करिछौंह मुँह- शब्द संख्या : 318, तिथि : 24 अगस्त 2014
333. पुरस्कार- शब्द संख्या : 2414, तिथि : 24 अगस्त 2014
334. गावीस मोइस- शब्द संख्या : 687, तिथि : 29 अगस्त 2014
335. मनकमना- शब्द संख्या : 6110, तिथि : 19 सितम्बर 2014
336. घरवास- शब्द संख्या : 4879, तिथि : 26 सितम्बर 2014

337. समधीन- शब्द संख्या : 6098, तिथि : 04 अक्टुबर 2014
338. चापाकलक पाइप- शब्द संख्या : 1616, तिथि : 7 अक्टुबर 2014
339. कलम हानि कऽ- शब्द संख्या : 2226, तिथि : 10 अक्टुबर 2014
340. लतियाएल जिनगी- शब्द संख्या : 1184, तिथि : 14 अक्टुबर 2014
341. गामक शकल-सूरत- शब्द संख्या : 2596, तिथि : 20 अक्टुबर 2014
342. जितिया पाबैन- शब्द संख्या : 3706, तिथि : 24 अक्टुबर 2014
343. सुखाएल सूरत- शब्द संख्या : 3690, तिथि : 30 अक्टुबर 2014
344. भैयारी हक- शब्द संख्या : 3131, तिथि : 4 नवम्बर 2014
345. ठकुआएल भुसवा- शब्द संख्या : 3335, तिथि : 13 नवम्बर 2014
346. खुदियाएल- शब्द संख्या : 2887, तिथि : 17 नवम्बर 2014
347. खटहा आम- शब्द संख्या : 3515, तिथि : 22 नवम्बर 2014
348. ढकरपेंच- शब्द संख्या : 3759, तिथि : 30 नवम्बर 2014
349. असहाज- शब्द संख्या : 2865, तिथि : 04 दिसम्बर 2014
350. समरथाइक भूत- शब्द संख्या : 3853, तिथि : 07 दिसम्बर 2014
351. विदाइ- शब्द संख्या : 5131, तिथि : 17 दिसम्बर 2014
352. खलओदार- शब्द संख्या : 735, तिथि : 19 दिसम्बर 2014
353. मनुखदेवा- शब्द संख्या : 1027, तिथि : 22 दिसम्बर 2014
354. उमेद- शब्द संख्या : 3643, तिथि : 31 दिसम्बर 2014
355. गलगर भैंस- शब्द संख्या : 3392, तिथि : 4 जनवरी 2015
356. जाड़ फाटि गेल- शब्द संख्या : 3328, तिथि : 9 जनवरी 2015
357. सुरता- शब्द संख्या : 3304, तिथि : 15 जनवरी 2015
358. असुध मन- शब्द संख्या : 2353, तिथि : 19 जनवरी 2015
359. धरमूदासक अखड़ाहा- शब्द संख्या : 1410, तिथि : 21 जनवरी 2015
360. ठोररंगू- शब्द संख्या : 1531, तिथि : 23 जनवरी 2015
361. लगबे ने कएल- शब्द संख्या : 1449, तिथि : 25 जनवरी 2015
362. उकडू समय- शब्द संख्या : 1467, तिथि : 27 जनवरी 2015

363. चास-बास दुनू गेल- शब्द संख्या : 1615, तिथि : 29 जनवरी 2015
364. चौरचनक दही- शब्द संख्या : 2095, तिथि : 31 जनवरी 2015
365. अपन मन अपन धन- शब्द संख्या : 1532, तिथि : 3 फरवरी 2015
366. टुटली मरैया- शब्द संख्या : 1951, तिथि : 7 फरवरी 2015
367. हकार- तिथि : 11 फरवरी 2015, शब्द संख्या : 1911
368. दहेजुआ गाए- शब्द संख्या : 1908, तिथि : 15 फरवरी 2015
369. मेटाइत जिनगी- शब्द संख्या : 2129, तिथि : 20 फरवरी 2015
370. धुर बुड़ि तोरा बजै ने अबै छौ!- शब्द संख्या: 1996, तिथि : 23 फरवरी 2015
371. लेहाज- शब्द संख्या : 1906, तिथि : 26 फरवरी 2015
372. विचार हेरा गेल- शब्द संख्या : 1917, तिथि : 1 मार्च 2015
373. ओ दिन- शब्द संख्या : 1782, तिथि : 4 मार्च 2015
374. उरीन- शब्द संख्या : 3235, तिथि : 8 मार्च 2015
375. नहरकन्हा- शब्द संख्या : 1209, तिथि : 11 मार्च 2015
376. बटखौक- शब्द संख्या : 1272, तिथि : 14 मार्च 2015
377. पसेनाक धरम- शब्द संख्या : 1263, तिथि : 16 मार्च 2015
378. जेठुआ गरदा- शब्द संख्या : 1103, तिथि : 18 मार्च 2015
379. हँसीएमे उड़ि गेलौं- शब्द संख्या : 1243, तिथि : 20 मार्च 2015
380. बुड़िबकहा बुड़िबक बनौलक- शब्द संख्या : 1234, तिथि : 23 मार्च 2015
381. हमर बाइनिक विचार- शब्द संख्या : 1207, तिथि : 26 मार्च 2015
382. नोकरिहारा- शब्द संख्या : 1146, तिथि : 26 मार्च 2015
383. घसवाहि- शब्द संख्या : 1213, तिथि : 28 मार्च 2015
384. तेतर भाइक कविता- शब्द संख्या : 1319, तिथि : 1 अप्रैल 2015
385. छूआ- शब्द संख्या : 1223, तिथि : 6 अप्रैल 2015
386. दोसराइत- शब्द संख्या : 1270, तिथि : 9 अप्रैल 2015
387. लछनमान- शब्द संख्या : 1173, तिथि : 13 अप्रैल 2015
388. हमर कोन दोख- शब्द संख्या : 1527, तिथि : 17 अप्रैल 2015

389. मौसी- शब्द संख्या : 1393, तिथि : 21 अप्रैल 2015
390. नटकिया गति- शब्द संख्या : 1313 24 अप्रैल 2015
391. खाए चाहैए- शब्द संख्या : 1223, तिथि : 27 अप्रैल 2015
392. मधुमाछी- शब्द संख्या : 1892, तिथि : 07 मई 2015
393. दनगर घास- शब्द संख्या : 2775, तिथि : 13 मई 2015
394. सझिया खेती- शब्द संख्या : 3135, तिथि : 23 मई 2015
395. मुफतिया माल- शब्द संख्या : 3231, तिथि : 29 मई 2015
396. मथाहाथ- शब्द संख्या : 2923, तिथि : 02 जून 2015
397. पहपैट- शब्द संख्या : 1369, तिथि : 05 जून 2015
398. इजोरिया राति- शब्द संख्या : 1512, तिथि : 07 जून 2015
399. तीन जुगिया भाय- शब्द संख्या : 2010, तिथि : 12 जून 2015
400. अँगनेमे हेरा गेलौं- शब्द संख्या : 605, तिथि : 14 जून 2015
401. डकरा हाल- शब्द संख्या : 2529, तिथि : 17 जून 2015
402. जेतए जे हौउ- शब्द संख्या : 2062, तिथि : 21 जून 2015
403. गठूलाक गारि- शब्द संख्या : 1532, तिथि : 25 जून 2015
404. कनी हमरो सुनू- शब्द संख्या : 1983, तिथि : 29 जून 2015
405. गामक बान्ह- शब्द संख्या : 2437, तिथि : 03 जुलाई 2015
406. गुड़ा खुद्दीक रोटी- शब्द संख्या : 2443, तिथि : 08 जुलाई 2015
407. सीरक गाछ- शब्द संख्या : 3071, तिथि : 13 जुलाई 2015
408. हरदीक हरदा- शब्द संख्या : 2924, तिथि : 19 जुलाई 2015
409. जाम- शब्द संख्या : 3355, तिथि : 29 जुलाई 2015
410. गण्डा- शब्द संख्या : 2304, तिथि : 5 अगस्त 2015
411. हाथी आ मूस- शब्द संख्या : 3016, तिथि : 11 अगस्त 2015
412. मुसरी आ घोड़ा- शब्द संख्या : 3625, तिथि : 17 अगस्त 2015
413. फलहार- शब्द संख्या : 2350, तिथि : 25 अगस्त 2015
414. भोरक झगड़ा- शब्द संख्या : 2697, तिथि : 31 अगस्त 2015

415. क्रियाशील- शब्द संख्या : 3395, तिथि : 13 सितम्बर 2015
416. आइ एम शॉरी- शब्द संख्या : 2927, तिथि : 23 सितम्बर 2015
417. ओऽ होऽ होऽ हूसि गेल- शब्द संख्या : 1025, तिथि : 29 सितम्बर 2015
418. मीनी भ्रष्टाचार- शब्द संख्या : 825, तिथि : 5 अक्टूबर 2015
419. गजपट खेती- शब्द संख्या : 1171, तिथि : 8 अक्टूबर 2015
420. समुद्री विद्या- शब्द संख्या : 787, तिथि : 11 अक्टूबर 2015
421. राकशे रहि गेलौं- शब्द संख्या : 959, तिथि : 12 अक्टूबर 2015
422. निनिया देवीक आराधना- शब्द संख्या : 679, तिथि : 13 अक्टूबर 2015
423. बताहे बताह बनौलक- शब्द संख्या : 574, तिथि : 15 अक्टूबर 2015
424. धोखा- शब्द संख्या : 1172, तिथि : 17 अक्टूबर 2015
425. खसैत गाछ- शब्द संख्या : 2234, तिथि : 22 अक्टूबर 2015
426. वैष्णवी भगवती- शब्द संख्या : 2099, तिथि : 01 नवम्बर 2015
427. प्रिगर शत्रु- शब्द संख्या : 1087, तिथि : 26 दिसम्बर 2015
428. एगच्छा आमक गाछ- शब्द संख्या : 1172, तिथि : 31 दिसम्बर 2015
429. माघ नहाइले जाएब- शब्द संख्या : 2616, तिथि : 4 जनवरी 2016
430. एक घोंट पानि- शब्द संख्या : 2516, तिथि : 10 जनवरी 2016
431. एते दिन अपना-ले आब अनका-ले- शब्द : 3371, तिथि : 16 जनवरी 2016
432. माइक वचन- शब्द संख्या : 2999, तिथि : 21 जनवरी 2016
433. पान- शब्द संख्या : 3115, तिथि : 26 जनवरी 2016
434. आजुक जिनगीक आइ परीछा- शब्द : 1676, तिथि : 01 फरवरी 2016
435. शुभचिन्तक- शब्द संख्या : 3947, तिथि : 08 फरवरी 2016
436. करिछौन लाली- शब्द संख्या : 3000, तिथि : 13 फरवरी 2016
437. मोहरा- शब्द संख्या : 1223, तिथि : 15 फरवरी 2016
438. अपन पुरखाक डीह- शब्द संख्या : 1187, तिथि : 17 फरवरी 2016
439. जेना हाथी रही- शब्द संख्या : 1245, तिथि : 20 फरवरी 2016
440. कठफल- शब्द संख्या : 1294, तिथि : 22 फरवरी 2016

441. गामे उपैट गेल- शब्द संख्या : 1680, तिथि : 25 फरवरी 2016
442. झूठे- शब्द संख्या : 1969, तिथि : 29 फरवरी 2016
443. लाही- शब्द संख्या : 2335, तिथि : 3 मार्च 2016
444. परतीहा खढ़- शब्द संख्या : 1667, तिथि : 6 मार्च 2016
445. उजगी- शब्द संख्या : 1079, तिथि : 9 मार्च 2016
446. हाथक जिनगी- शब्द संख्या : 983, तिथि : 14 मार्च 2016
447. गाछपर सँ खसला- शब्द संख्या : 2000, तिथि : 20 मार्च 2016
448. केतौ ने रहलौं- शब्द संख्या : 2103, तिथि : 25 मार्च 2016
449. अपने केलहा- शब्द संख्या : 2314, तिथि : 31 मार्च 2016
450. बत्तु- शब्द संख्या : 2244, तिथि : 10 अप्रैल 2016
451. कछमछी- शब्द संख्या : 2322, तिथि : 15 अप्रैल 2016
452. गैत-वीध- शब्द संख्या : 2424, तिथि : 21 अप्रैल 2016
453. दियरबा-भैंसुर- शब्द संख्या : 2089, तिथि : 29 अप्रैल 2016
454. एक दिन- शब्द संख्या : 2063, तिथि : 5 मई 2016
455. दुधियाएल बरखा- शब्द संख्या : 2059, तिथि : 11 मई 2016
456. गलफूलू- शब्द संख्या : 2117, तिथि : 14 मई 2016
457. बिटगरहा- शब्द संख्या : 1992, तिथि : 19 मई 2016
458. आब नइ आगि लगैए?- शब्द संख्या : 1962, तिथि : 23 मई 2016
459. कटौज- शब्द संख्या : 1977, तिथि : 28 मई 2016
460. बाल बोध- शब्द संख्या : 2621, तिथि : 2 जून 2016
461. डभियाएल गाम- शब्द संख्या : 2483, तिथि : 6 जून 2016
462. एकबोलिया दादी- शब्द संख्या : 2189, तिथि : 11 जून 2016
463. मरियाएल मन- शब्द संख्या : 1921, तिथि : 17 जून 2016
464. त्राहि-कृष्ण- शब्द संख्या : 2900, तिथि : 23 जून 2016
465. कन्हा भँट्टा- शब्द संख्या : 2539, तिथि : 30 जून 2016
466. जिगेसा- शब्द संख्या : 3977, तिथि : 8 जुलाई 2016

467. गुलेती दास- शब्द संख्या : 5993, तिथि : 12 अगस्त 2016
468. भोलानाथ बाबा- शब्द संख्या : 2359, तिथि : 17 अगस्त 2016
469. दुरकाल- शब्द संख्या : 3189, तिथि : 22 अगस्त 2016
470. कलंक- शब्द संख्या : 2763, तिथि : 27 अगस्त 2016
471. अड़िकट्टा चोर- शब्द संख्या : 2077, तिथि : 31 अगस्त 2016
472. बगदल गाम- शब्द संख्या : 2405, तिथि : 6 सितम्बर 2016
473. बत्तीसोअना- शब्द संख्या : 890, तिथि : 8 सितम्बर 2016
474. कचहरिया रोग- शब्द संख्या : 1651, तिथि : 12 सितम्बर 2016
475. दिन घटि गेल- शब्द संख्या : 2425, तिथि : 5 अक्टुबर 2016
476. मुड़ियाएल घर- शब्द संख्या : 2352, तिथि : 11 अक्टुबर 2016
477. गामक सुरता- शब्द संख्या : 2265, तिथि : 19 अक्टुबर 2016
478. खतियाएल घर- शब्द संख्या : 2057, तिथि : 09 नवम्बर 2016
479. बात-कथा सुनौलक- शब्द संख्या : 1889, तिथि : 15 नवम्बर 2016
480. अनका बेर ओंघी- शब्द संख्या : 2233, तिथि : 20 नवम्बर 2016
481. देव उठान- शब्द संख्या : 2297, तिथि : 24 नवम्बर 2016
482. नमहर घरक चोरि- शब्द संख्या : 2397, तिथि : 28 नवम्बर 2016
483. भोरक सपना- शब्द संख्या : 1013, तिथि : 1 दिसम्बर 2016
484. बालमण्डली- शब्द संख्या : 1288, तिथि : 6 दिसम्बर 2016
485. धोखा केतए भेल- शब्द संख्या : 1053, तिथि : 09 दिसम्बर 2016
486. माघक चाह- शब्द संख्या : 1330, तिथि : 12 दिसम्बर 2016
487. भँसियाएल बाल-बोध- शब्द संख्या : 1306, तिथि : 15 दिसम्बर 2016
488. माघक घूर- शब्द संख्या : 1812, तिथि : 18 दिसम्बर 2016
489. पाही पट्टी- शब्द संख्या : 2370, तिथि : 25 दिसम्बर 2016
490. बीरांगना- शब्द संख्या : 1551, तिथि : 30 दिसम्बर 2016
491. स्मृति शेष- शब्द संख्या : 1941, तिथि : 6 जनवरी 2017
492. मनकेँ फुसलबै छी- शब्द संख्या : 1023, तिथि : 10 जनवरी 2017

493. चहकल विचार- शब्द संख्या : 4173, तिथि : 20 जनवरी 2017
494. विदाइ-दैछना- शब्द संख्या : 2312, तिथि : 25 जनवरी 2017
495. बीरांगना : 2- शब्द संख्या : 1992, 29 जनवरी 2017
496. पकिया चेला- शब्द संख्या : 1976, तिथि : 06 फरवरी 2017
497. कान फुटल कप- शब्द संख्या : 1595, तिथि : 09 फरवरी 2017
498. वर्थ डे- शब्द संख्या : 2535, तिथि : 16 फरवरी 2017
499. जानक मोल- शब्द संख्या : 2782, तिथि : 23 फरवरी 2017
500. गामक कटान- शब्द संख्या : 3115, तिथि : 01 मार्च 2017
501. कर्ज- शब्द संख्या : 3252, तिथि : 07 मार्च 2017
502. बेटीक लिलसा- शब्द संख्या : 2621, तिथि : 11 मार्च 2017
503. अपन गारि अपन दुआरि- शब्द संख्या : 2546, तिथि : 17 मार्च 2017
504. बेटीक पैरुख- शब्द संख्या : 2735, तिथि : 26 मार्च 2017
505. बेटीक कुभेला- शब्द संख्या : 2767, तिथि : 31 मार्च 2017
506. अपन रोपल गाछी भुताहि- शब्द संख्या : 2619, तिथि : 7 अप्रैल 2017
507. बलधकेल कटौज- शब्द संख्या : 2100, तिथि : 11 अप्रैल 2017
508. जारैनक दुख मेटा गेल- शब्द संख्या : 2465, तिथि : 17 अप्रैल 2017
509. पढ़ल सुगा बौक- शब्द संख्या : 3775, तिथि : 26 अप्रैल 2017
510. हरवाहि- शब्द संख्या : 2784, तिथि : मजदूर दिवस (01 मई) 2017
511. क्रान्तियोग- शब्द संख्या : 3432, तिथि : 13 मई 2017
512. उचितवक्ता- शब्द संख्या : 3461, तिथि : 19 मई 2017
513. खेतक बँटवारा- शब्द संख्या : 3607, तिथि : 24 मई 2017
514. विघटन- शब्द संख्या : 3419, तिथि : 31 मई 2017
515. टुटल मनक जुटान- शब्द संख्या : 3456, तिथि : 06 जून 2017
516. बाबा बेलेश्वरनाथ- शब्द संख्या : 2420, तिथि : 11 जून 2017
517. भुतलग्गू आकि भविसलग्गू- शब्द संख्या : 2465, तिथि : 23 जून 2017
518. मर्माहत- शब्द संख्या : 2509, तिथि : 29 जून 2017

519. गुणहीन- शब्द संख्या : 3138, तिथि : 6 जुलाई 2017

520. समझौता- शब्द संख्या : 2280, तिथि : 13 जुलाई 2017

521. जेकर चुन तेकर पुन- शब्द संख्या : 2696, तिथि : 19 जुलाई 2017

522. त्रिकालदर्शी- शब्द संख्या : 2841, तिथि : 25 जुलाई 2017

523. नमहर फेरा- शब्द संख्या : 2902, तिथि : 29 जुलाई 2017

524. आशापर पानि पड़ल- शब्द संख्या : 2391, तिथि : 02 अगस्त 2017

525. कोढ़िया सरधुआ- शब्द संख्या : 2279, तिथि : 06 अगस्त 2017

526. बेटपन- शब्द संख्या : 3054, तिथि : 11 अगस्त 2017

527. छातीक हार- शब्द संख्या : 2291, तिथि : 16 अगस्त 2017

528. उमेरक लेहाज- शब्द संख्या : 2986, तिथि : 22 अगस्त 2017

529. पैंतीस साल पछुआ गेलौं- शब्द संख्या : 2472, तिथि : 05 सितम्बर 2017

530. पुरान साड़ी- शब्द संख्या : शब्द संख्या : 2453, तिथि : 24 अक्टुबर 2017

531. गाम बिसैर गेल- शब्द संख्या : 2482, तिथि : 28 अक्टुबर 2017

532. ऐँठ साड़ी- शब्द संख्या : 2925, तिथि : 01 नवम्बर 2017

533. किछु ने फुरैए- शब्द संख्या : 2095, तिथि : 12 नवम्बर 2017

534. महिरम- शब्द संख्या : 1984, तिथि : 20 नवम्बर 2017

535. बेर परहक भदवा- शब्द संख्या : 2726, तिथि : 29 नवम्बर 2017

536. सड़क-कातक खेत- शब्द संख्या : 2722, तिथि : 10 दिसम्बर 2017

537. दोहरी हाक- शब्द संख्या : 2700, तिथि : 21 दिसम्बर 2017

538. पाइक इज्जत- शब्द संख्या : 1999, तिथि : 05 जनवरी 2018

539. सेहन्ता- शब्द संख्या : 2014, तिथि : 11 जनवरी 2018

540. राक्षसक झड़- शब्द संख्या : 1649, तिथि : 15 जनवरी 2018

541. बेरपर- शब्द संख्या : 2585, तिथि : 19 जनवरी 2018

542. केकरा-ले केलौं- शब्द संख्या : 2646, तिथि : 23 जनवरी 2018

543. स्वाभिमानी जिनगी- शब्द संख्या : 2767, तिथि : 28 जनवरी 2018

544. बाबाक बाग-बगिया- शब्द संख्या : 3083, तिथि : 3 फरवरी 2018

545. अब-तब- शब्द संख्या : 2079, तिथि : 7 फरवरी 2018

546. अगिलह- शब्द संख्या : 2463, तिथि : 11 फरवरी 2018

❍

परिचय



नाओं : जगदीश प्रसाद मण्डल
जन्म : 5 जुलाई 1947 ई.,
माता : स्व. मकोबती देवी।
पिता : स्व. दल्लू मण्डल।
पत्नी : श्रीमती रामसखी देवी।
पता : गाम- बेरमा, भाया- तमुरिया,
प्रखण्ड- लखनौर, अनुमण्डल- झंझारपुर,
जिला- मधुबनी, (बिहार) पिन : 847410, **मो.** 9931654742

मातृक : मनसारा, भाया- घनश्यामपुर, जिला- दरभंगा। **जीविकोपार्जन :** कृषि (मुख्यत: तरकारी खेती) **शिक्षा :** एम.ए. द्वय (हिन्दी, राजनीति शास्त्र) **साहित्य लेखन :** 2001 ईस्वीक पछाइतसँ...। **सम्मान/पुरस्कार :** 'विदेह सम्मान', 'विदेह भाषा सम्मान', 'टैगोर लिटिरेचर एवार्ड', 'वैदेह सम्मान', 'यात्री सम्मान', 'विदेह बाल साहित्य पुरस्कार' तथा 'कौशिकी साहित्य सम्मान'सँ सम्मानित/पुरस्कृत।

मौलिक रचना संसार- 1. गीतांजलि, 2. सुखाएल पोखरिक जाइठ, 3. तीन जेठ एगारहम माघ, 4. सरिता- **गीत संग्रह**। 5. इन्द्रधनुषी अकास, 6. राति-दिन, 7. सतबेध- **कविता संग्रह**। 8. पंचवटी- एकांकी संचयन। 9. मिथिलाक बेटी, 10. कम्प्रोमाइज, 11. झमेलिया बिआह, 12. रत्नाकर डकैत, 13. स्वयंवर- **नाटक**। 14. मौलाइल गाछक फूल, 15. उत्थान-पतन, 16. जिनगीक जीत, 17. जीवन-मरण, 18. जीवन संघर्ष, 19. नै धाड़ैए, 20. बड़की बहिन, 21. भादवक आठ अन्हार, 22. सधवा-विधवा, 23. ठूठ गाछ, 24. इज्जत गमा इज्जत बँचेलौं, 25. लहसन- **उपन्यास**। 26. कल्याणी, 27. सतमाए, -28. समझौता, 29. तामक तमघैल, 30. बीरांगना- **एकांकी**। 31. तरेगन, 32. बजन्ता-बुझन्ता- **बीहैन कथा संग्रह**। 33. शंभुदास, 34. रटनी खढ़- **दीर्घ कथा संग्रह**। 35. गामक जिनगी, 36. अर्द्धांगिनी, 37. सतभैँया पोखैर, 38. गामक शकल-सूरत, 39. अपन मन अपन धन, 40. समरथाइक भूत, 41. अप्पन-बीरान, 42. बाल गोपाल, 43. भकमोड़, 44. उलबा चाउर, 45. पतझाड़, 46. लजबिजी, 47. उकड़ू समय, 48. मधुमाछी, 49. पसेनाक धरम, 50. गुड़ा-खुद्दीक रोटी, 51. फलहार, 52. खसैत गाछ, 53. एगच्छा आमक गाछ, 54. शुभचिन्तक, 55. गाछपर सँ खसला, 56. डभियाएल गाम, 57. गुलेती दास, 58. मुड़ियाएल घर, 59. बीरांगना, 60. स्मृति शेष, 61. बेटीक पैरुख, 62. क्रान्तियोग, 63. त्रिकालदर्शी, 64. पैंतीस साल पछुआ गेलौं, 65. दोहरी हाक, 66. स्वाभिमानी जिनगी- **लघु कथा संग्रह**। ❍



पल्लवी प्रकाशन
जे.एल.नेहरू मार्ग, तुलसी भवन
निर्मली, सुपौल, बिहार : 847452
ISBN : 978-93-87675-62-9
₹ 251

3rd Edition

अपन मन अपन धन

जगदीश प्रसाद मण्डल



अपन मन अपन धन

जगदीश प्रसाद मण्डल



पल्लवी प्रकाशन
निर्मली

समर्पण भाव

एक दिस कोनो काजक मूर्तिरूप अछि
दोसर दिस खढ़-माटिसँ गढ़ल...
तैठाम देखनिहारोकेँ तँ किछु दायित्व बनियेँ जाइ छै..!



ISBN : 978-93-87675-02-5

दाम : ₹ 251/-

तेसर संस्करण : 2017

प्रकाशक : पल्लवी प्रकाशन
तुलसी भवन, जे.एल.नेहरू मार्ग, वार्ड नं. 06, निर्मली, जिला- सुपौल, बिहार : 847452

वेबसाइट : http://pallavipublication.blogspot.com
ई-मेल : pallavi.publication.nirmali@gmail.com
मोबाइल : 8539043668, 9931654742

प्रिन्ट : मानव आर्ट, निर्मली (सुपौल)
आवरण : दी साहु प्रिन्टिग प्रेस. निर्मली (सुपौल) पिन : 847452

APAN MAN APAN DHAN
Collection of Short Stories by Sh. Jagdish Prasad Mandal.

कथाक सत्तैर

चौरचनक दही

कुशी अमवसियाक परात। आइसँ चौरचनक दही पौड़ल जाएत...।

सुतले रही कि पत्नी देह डोलबैत बजली–

“सभ कियो दूध आनए जाइए आ अहाँ सुतले रहब।”

गाढ़ नीनमे रही तखन ‘दूध आनए जाइए’ से बजली मुदा नीन टुटला पछाइत ‘अहाँ सुतले रहब’ सुनलौं। ओना सुतैक इच्छा अपनो रहए आ अपना मनोकेँ। किएक तँ भादो, माघ आ जेठ मास जँ सूतल-सूतल बीतए तँ ओइसँ नीक की हएत। यएह ने भेल राज सुख। तहूमे आब कि भादो ओ खिच्चा रहल आकि अजोह रहल आब तँ अदहा परक अमवसिया सेहो बीति गेल, मुदा कड़कड़ाएल भादोक जुआनी तँ अछिए। ताकल आँखि बन्न भऽ गेल...।

दोहरबैत पत्नी बजली–

“गाए-महींस पोसनिहार एक-एक किसानकेँ जेते दूध होइ छै तइसँ बेसी लेबाले सभ पहुँच गेल हएत। तैठाम जँ अगुआ कऽ नइ जाएब, तँ दूध हएत?”

ओना मन सुतैक रहए मुदा पाबैनक दूध छी, जँ नै हएत तखन पाबैन केना हएत। तैसंग मन सुतैपर टँगेने ईहो भेल जे आब कि कोनो

गाए कि महींसबला सुच्चा दूध थोड़े दइए, पानि मिला दूध बेचैए। मुदा लगले भेल जे पानियोँ मिला कऽ जे दइए तँ दइतो तँ दूधे कहि कऽ अछि। आ कहबेटा थोड़े करैए, दूधेक दामो तँ लइते अछि। तखन तँ भेल जे दूध-पानि दुनू बरबैर...।

..फेर भेल जे जँ दूध-पानि दुनू बरबैर भेल तखन अनेरे लोक एते हरान भऽ कऽ गाए-महींस किए पोसैए, इनारे-पोखैर किए ने एकेबेर खुना लइए जे पुस-पुसताइन चलैत रहतै। मुदा पेट-पेटक अपन-अपन महत छै ने, केकरो पेटमे पानि रहै छै, केकरो पेटमे दूध रहै छै, केकरो पेटमे बीख रहै छै तँ केकरो पेटमे अमृतो रहिते छइ। मुदा लगले मन उछैट गेल। उछैट ई गेल जे दूधोकेँ तँ लोक पनिछरहा दूध कहिते छइ। माने ई जे जरसी वा आन-आन किसिमक जे गाए अछि ओकरा दूधकेँ पनिछराह दूध बुझि दामो कम दइए आ खाइक परियासो कम करैए। किए ने कम करत, ओकर छालही, डारही, दही तक ने पनिछराहे हेतइ।

ओछाइनेपर मन अकैछ गेल जे अनेरे कोन लफड़ामे पड़ि गेलौं। दूध-पानिक फरिछौट खेनिहारे-पोसनिहारे अपन करत। कुत्ता रहै केकरो आ किदैन देखै आन। मुदा अपने तँ केतौ ने छी, ने खेनहारे छी आ ने पोसनिहारे। पाबैनक नामपर साल भरिपर दर्शन दहीक होइए। से केहेन दर्शन करब, मक्खनबला दहीक आकि पनिछरहाक? मन घुरिया गेल। घुरिया ई गेल जे दूधपनियाँ जकाँ दूध होइए। जइमे पानियोँ फेँट देने तँ पचिये जाइए। मुदा डिब्बाबलामे तँ से नइ हएत, ओइमे हाफ क्रीम, फुल क्रीम दुनू रहै छै, जखन दूधक सभ गुण ऐछे, तैसंग ईहो ऐछे जे गरदाएल रहैए, पानिक केतौ दरस नै रहै छइ। अपना मने जेते फुरत तेते पानि दऽ कऽ तेहेन दूध बना लेब...।

..फेर भेल जे जँ कम पानि दऽ कऽ गहुम-चाउरक चिक्कस जकाँ

सानि कऽ मटकूरमे पाथि देबइ, ओहो तँ दहीए भेल। अनेरे किए एक बेर दूध आनब, दोसर बेर जोरन-ले वौआएब, सेहो केतौ मंगनी भेटत तँ भेटत नइ तँ दोकानसँ कीनि कऽ आनए पड़त, फेर ओकर ताकक गरे अम्हौर देबै, तखन ने दही हएत। बड़ मेठैन अछि। मनमे ऐबते पत्नीकेँ कहलयैन–

"जेकरा-ले नोर बहावी, तेकरा कोनो ढेकारे ने।"

पत्नी चौंकली। हम दूध आनैले जाए कहै छिऐन आ ओ नोरक गप कहि देलैन! मुदा अनठेकानी किछु अनुमानो करब तँ नीक नहियेँ हएत। पानिकेँ ऊपरसँ केना बुझबै जे थलगर अछि कि पँकिगर, पीछड़ाह अछि कि घुच्ची-घाची छइ। रोड़ा-पत्थर छै आकि काँट-कुश। तँए नीक हएत जे पुछिये किए ने लिऐन–

"केकरा-ले नोर बहबै छी आ ओकरा ढेकारे ने छै?"

मनमे खुशी भेल। खुशी ई भेल जे अनका जकाँ नहि ने जे अपना मने कऽ लेब आ दोख लगा देब घरक पुरुखकेँ। एते तँ जरूर भेल अछि जे पत्नी मनक बात बुझए चाहै छैथ।

कहलयैन–

"अहींक दुख-धंधाक बात सोचै छी। मुदा से अहाँ बुझब थोड़े, कखनो देह पकैड़ डोलबै छी तँ कखनो बाँहि पकैड़ झमाड़ै छी।"

पत्नीकेँ बुझि पड़लैन जे हमरे दुआरे मनमे बेथा छैन। जहिना मन-चोभिया नाचमे नंगेड़ाक संग डिगरी गिरगिराइत रहैए तहिना गिरगिराइत बजली–

"हमरा दुआरे जँ मनमे वेदना अछि तँ लिअ, हम गलती मानै छी।"

मन चपचपा गेल। मुँह-आँखि गम्भीर बनबैत बजलौं–

"अखनसँ जे दूधकेँ औंटै-पौड़ैमे लगल रहब, तइसँ नीक ने जे पौडरबला दूधकेँ सानि कऽ मटकुरीमे पाबैनियेँ बेर थोइप देब आ टटके दही खाएब।"

मुदा हमर गप हुनका नीक नै लगलैन। पिनैक गेली। पिनकैत बजली–

"अपन कोंढ़िपना दुआरे हमरा कोंढ़नी बनबै छी। हमरा कि नइ बुझल अछि, जे अरबा चाउरकेँ पीसि कऽ पिठरिया दही पौड़ लेब।"

की करितौं, भोरे-भोर पत्नी-मुहेँ 'कोढ़िया' सुनि कनी ईर-खा मनमे ईर जगल। झझकारि कऽ बजलौं–

"कनी दू घुस्सा मुँहमे दऽ कुर्ड़ा केने अबै छी ताबे लोटे आकि कमण्डले अखाइर कऽ राखू। अखन चाह-ताह नै पीआउ, आइ पौडरबला दूधक चाह नहि, महींसे दूधक चाह पीब।"

ओना पत्नीकेँ दुलरबैत कहलयैन मुदा मनक तमतमी नइ मिझाएल रहए। घरसँ भागल लोकक डेग जहिना झटकल होइत तहिना दरबज्जापर सँ निकललौं। ओना मनमे ईहो भेल जे एक बेर पाछू उनैट नजैर देख लिऐन मुदा जाबे तमतमी कमै-कमै ताबे डेढ़िया टपि रस्तापर चलि एलौं। रस्तापर ऐबते तरंगल मन जेना वीणाक तार जकाँ तरंगित भऽ गेल। तरंगित मनमे पवन पाबन पाबैन उठि गेल। जाबे पाबैनक जोगाड़ नै करब ताबे हँसी-खुशीसँ मनाएब केना। जोगाड़ो की कोनो एके-आध टाक करए पड़त, तीन दिन पाबैनक जोगाड़ेमे लगत। दूध बसियाएत तखन दही बनत, दही तक अबैत-अबैत मन थीर भऽ गेल। थीर होइते मन चौरासी लाख जीवपर चलि गेल। कोनो दुधपिबा तँ कोनो बिनु दुधपिबा, मुदा छी तँ सभ जीवे-जन्तु। जेते मन फरीच करए चाहैत रही, तेते घोराइते गेल। घोराएले मनमे उठल, जीव तँ गाछो-बिरीछ छी, जे जीवो-जन्तुसँ नमहर होइए

ओ कोन दूध पीबैए। बड़ पीबैए तँ सिरक गरे पानि पीबैए। मुदा ओकरा दूध नै होइ छै, सेहो तँ नहियेँ कहल जाएत। चौबगली निच्चाँ-ऊपर सीरबला गाछ, बिनु सिरबला गाछ आ बर्ड़ूबला गाछ केकर दूध पी कऽ एते-एते अछि..?

..फेर मन ओझरा गेल। ओझराइते आगू बढ़ल, ओह! जखन एतए तक आबिये गेलौं तखन झिंगुर काकाकेँ सेहो भेँट काइए लेबैन। बहू दिन भेँट भेना भऽ गेला। तहूमे आब निच्चाँ मुहेँ भेल जाइ छैथ, आँखिक रोशनाइयो दिनो-दिन कमियेँ रहल हेतैन। चिन्हबो करता कि नहि। मुदा फेर भेल जे जखने हाथ जोड़ि कहबैन जे 'गोड़ गलै छी' तँ ओ अनेरे ने बोलीसँ परेख लेता।

मुदा बीचमे एकटा काजक झंझट तँ ऐछे, पहिने दूधले जाएब कि हुनकासँ भेँट करबैन। फेर भेल जे जँ दूहैमे देरी हेतै तँ कमण्डल रखि कहि देबइ। नइ जँ दूहा गेल हएत तँ दूध लऽ लेब। जँ से नइ केने रहब तँ जहिना खिसिया कऽ घरसँ निकललौं तहिना पहुँचते खिसिऐनीसँ फेर भेँट हएत। अनेरे किए खिस्सा-खिसनीक भाँजमे पड़ब...।

महींसोबला शिकारी, ओ महींस दूहबे ने केने रहए। महींस बोली दइ, मुदा ओहो दोहरी लाभक भाँजमे रहए। पहिल जँ महींस डिरिआइत-डिरिआइत पन्हा जाएत तँ पर्ड़ूकेँ घासो-तासो दऽ कऽ निमाहि लेब। तैसंग दूधक गहिंकियोक भाँज-भुँज लगि जाएत। नपै-जोखैक भाँज बुझले रहए। दूहि कऽ पहिने आँगनमे ढार देत तखन ने दरबज्जापर आबि बेचत। बुझले हिसाब छै, तीन हिस्सा दूध निकालि कऽ रखि तीन हिस्सा पानिक ढार दऽ नेने औत। जँ रतुका दूध रहितै तँ हाथेसँ गाब निकालि लेने रहैत। मुदा से नै रहइ। तहूमे जँ कियो किछु बजबो करत तेकरा थोड़े चलए देत। थनसँ दूहि कऽ सभकेँ देखा देत।

कोनो कि कच्चा खेलाड़ी अछि, पुश्तैनी अछि। जखन राम नामक लूटे भऽ रहल अछि तखन की ओहए एहेन अछि जे छुटि जाएत...।

दरबज्जापर पहुँचते मलकार पुछलक–

"भाय साहैब, केते दूध लेबइ। अखन नइ दूहलौं अछि, कमण्डल रखि दियौ। नापि कऽ रखि देब।"

सवुर भेल। सवुर होइते पत्नीक आदेश पालनक वफादारी बुझिते मनमे खुशी भेल। कहलिऐ–

"कनी झिंगुरकाकासँ भेँट करए जाइ छी जँ कनी अबेरो भऽ जाए ते विथुत नइ करिहह।"

बन्हौटा गहिंकी जकाँ मलकारक मनमे खुशी भेलइ। बिसवास दिअबैत बाजल–

"अखन ते भिनसरे अछि जे दुपहरोमे ऐबतौं तँ की विथुत हुअ दइतौं।"

ओना झिंगुर काकासँ भेँटक अँटावेश देख मन फुलाएल रहए मुदा मलकारक अश्वासन सुनि हवाक लहकीमे जहिना फूलो, पातो आ फलो अपना समैसँ पहिने बेसिया जाइए तहिना मन बेसिया गेल। बेसियाइते मनमे उठल- एकटा महींस छै, पाँच किलो कि सात किलो दूध भिनसर आ ओते साँझोमे होइत हेतइ, मुदा बिकरीक ठेकान अछि जे केते लेबाल औत केते नै, तखन एहेन अश्वासन किए देलक? भेल जे पुछिऐ, मुदा गाइयो-महींसक कि ठेकान अछि। कोनो एहेन होइए जे साँझ-भिनसर बन्हौटा लागत तँ कोनो एकोशिया भऽ एकसँझू लागत। तहूसँ बेसी एकोशिया भेने बेठेकान भऽ जाएत। गोटे दिन भोरेमे लागत तँ गोटे दिन रातिमे...।

मन मानि गेल जे एना तँ होइते छइ। मुदा लगले भेल जे ऐसँ अखुनका प्रश्नक हल कहाँ भेल? ई तँ भेल घटबी। मुदा अछि तँ

बढ़बीक प्रश्न। मुदा लगले जेना मन चीतसँ पट भऽ गेल। माने ई जे धर्मक संग पाप, रातिक संग दिन, चोरक संग साधु, एक्केठाम केना पति-पत्नी जकाँ रहैए..?

..एक तँ झिंगुर काकासँ भेँट करैक अछि, तैसंग पत्नीक आढ़ैत सेहो अछि, तैपर अपने कोन ओझरीमे ओझरा गेलौं! मुदा टीकमे लागल चिड़चिड़ी जँ छोड़ा नइ लेब तँ अनेरे ताबे तक धेने रहत जाबे तक ओकरा छोड़ाएब नहि। मन मानि गेल जे दूधक बढ़बीक विचार काइए लेब नीक। कहैले तँ गाइए-महींस भेल, मुदा सबहक चालियो-ढालि आ गुणो-धर्म एके रंग थोड़े होइ छइ। कोनो साले-साल बच्चा दइए जेकरा पुरैहिया कहै छिऐ, तँ कोनो सालक-साल दूधे दइए आ कोनो एहेन टिपौड़ी होइए जे घासकेँ सूंघि कऽ छोड़ि देत आ कोनो एहेन होइए जे निङ्हेसो चिबा खाइए। तैसंग मनुखे जकाँ कोनो ढाहियो मारत, लथारो मारत आ हूरियोहो लइए तँ कोनो एहनो तँ होइते अछि जे अपने बच्चा जकाँ पेट-थन सभतैर आनो बच्चाकेँ सिनेहसँ अपन दूधो देखबैए आ मुँहमे ढारो दइते अछि..!

..फेर मन घूमल। ऐसँ दूधक बढ़बी कहाँ बुझलौं? मन आगू दिस ससरल, गाइयो-महींस तँ एहेन होइते अछि जे समए-कुसमए नइ बाड़ैए। जखने थन लग कोनो वर्तन लऽ कऽ पहुँचब तँ पनहा जाएत। भलेँ बन्हौटा जकाँ पाँच किलो, सात किलो दूध नै होइ, अदहे किलो होइ मुदा दूध दइमे कोताही नहियेँ करैए? हँ से तँ ठीके। मुदा एहनो तँ ऐछे जेकरा कामधेनु कहै छिऐ, ओकरा जखन इच्छा हुअए तखन दूहि लिअ। धुर्र! अनेरे दूध-दहीक लपौड़ीमे मनकेँ घुरिऔने छी। जानए जअ जानए जत्ता। सतुआ संग घुन पीसाउ आकि घुन संगे सतुआ..; से ओ जानए। सालमे एक दिन चतुरथी चानक चमकमे छह-छह करैत आगू अबैए तइले एते बुधि खपौने अपने नोकसान हएत। मन-चित मारि झिंगुर काका ऐठाम विदा भेलौं।

झिंगुर काका अखियासी लोक। ओना उमेरो उदियास्त दिस निच्चाँ उतैर रहल छैन, मुदा जहिना-जहिना भिनसुरका सुर्ज धीरे-धीरे प्रखर होइत बारह बजेक सीमा पार होइते साँझ दिस धीरे-धीरे उतरए लगैए तहिना झिंगुरो काकाकेँ भऽ गेल छैन। दरबज्जाक ओसारक दछिनवरिया चौकीपर देवालसँ ओंगैठ पूब मुहेँ आँखि बन्न कऽ बैसल रहैथ। आँखि मूनि भरिसक सुर्जपर धियान लगौने रहैथ। ओसारपर बैसल देख मनमे खुशी भेल। खुशी ई भेल जे वाड़ी-झाड़ी केतौ ताक-हेर नै करए पड़ल, बैसकियेपर भेट गेला। पएर छुबि कहलयैन–

“गोड़ लगै छी, काका।”

जेना कोनो विचारक बीच कानसँ अवाज गेलैन तहिना चौंकैत बजला–

“के गौड़ीसुमन?”

कहि जेना फेर अपने दिस नजैर खिरबैत चुप भऽ गेला। किछु-कालक पछाइत बजला–

“बौआ, आब होइए मरबे नीक। अनेरे कोन जंजालमे पड़ि गेल छी।”

काकाकेँ मरै दिस नजैर झूकल देख मनमे छगुन्ता लगल। छगुन्ता ई लगल जे गाड़ी-सवारीसँ थौकचो भेल लोक जीबए चाहैए जेकरा जिनगी भरि अपनासँ ठाढ़ो ने भेल हेतइ। मुदा झिंगुर काकाकेँ कोनो तेहेन भीर-भार नहियेँ देखै छिऐन, तैयो एहेन बात बजै छैथ? कहलयैन–

“काका, अखन अहाँ बीस बर्खसँ ऊपरे जीब, तखन किए अखनेसँ गाड़ीक रिजरवेशन करबए चाहै छी।”

जेना हमर गप काकाकेँ नीक लगलैन तहिना मुँहक सुरखीसँ बुझि पड़ल। बजला–

“बौआ, जाबे जीवन भाय आ डाक भाय जीबै छला ताबे गपो-सप्प करैमे मन लगै छल। मुदा जहियासँ ओ दुनू मरि गेला, तहियासँ होइए जे अनेरे जीबै छी।”

झिंगुर कक्काक बात नीक जकाँ नहि बुझलौं, मुदा बीचमे नाकर-नुकुर करब सेहो नीक नइ बुझलौं। नाकर-नुकुर केने पाशा बदैल जाइए, तहूमे एकभग्गू लोक झिंगुर काका छैथे, जेम्हरे ढुलकता तेम्हरे धार-धूर, मोइन फोड़ैत आगू बढ़ि जेता। तइसँ नीक जे कनी पाछूएसँ सह दिऐन। सह देलिऐन–

“आ-हा-हा..; ओ-हो-हो..!”

‘आ-हा-हा, ओ-हो-हो’ सुनि जेना झिंगुर काकाकेँ सुनिनिहार संगी भेट गेल होइन तहिना मन कलशलैन। मुदा एक चिड़की मेघ उठि जहिना रौदकेँ रोकि अन्हरा दइए तहिना जेना मनमे भेलैन। भेलैन ई जे सुनिनिहार जँ बिच्चेमे उठि कऽ चलि जाए तखन तँ सींग सुनने रहत तँ नाँगैर छुटि जेतै, नइ जँ नाँगैर सुनने रहत तँ सींग छुटि जेतइ। मुदा लगले मनमे जेना किछु फुरि गेलैन तहिना जोरसँ पत्नीकेँ कहलखिन–

“बाँस भरि सुर्ज ऊपर आबि गेल, मुदा अखन तक मुँहमे पानियोँ नइ लेलौं हेन। घरक लोक रही तखैन ने..?”

खग जानए खगक भाषा, फुलटुस्सी काकीकेँ अनसोहाँत नइ लगलैन। ओना चाह बना चुकल छेली, मुदा हमरा देखते ठमैक गेली। ठमैक ई गेली जे जँ दुनू गोरेले चाह नेने जाइ आ ओ[1] कहैथ जे अहाँक चाह नइ पीब। तखन तँ दरबज्जाक बेइज्जती हएत आ जँ नइ लऽ कऽ जाएब, तखन जँ ओ अपनाकेँ अपमान बुझैथ..?

[1] गौड़ीसुमन

..अही द्वन्द्वमे फुलटुस्सी काकी आगू बढ़ली।

चाहक चुस्की लैत झिंगुर काका पुछलैन–

“केमहर-केमहर चललह, गौड़ीसुमन?”

कहलयैन–

“दूध-ले आएल छी, कनी देरी देखलिऐ। अहूँसँ बहूदिन भेँट भेना भऽ गेल छल। तँए...।”

झिंगुर काका–

“की करबह दूध?”

“चारिम दिन चौरचन छिऐ किने, तहीले दही पौड़ल जाएत।”

‘पाबैन आ दही’ सुनि झिंगुर काका ठमैक गेला। एक दिस पाबैन दोसर दिस जुआन भावदक दही! अपन दोख हटबैत बजला–

“बौआ, जीवन भाय बेर-बेर कहै छला चैतक चूड़ा, भादवक दही, ऐ दुनूसँ बँचले रही।”

◌

शब्द संख्या : 2095, तिथि : 31 जनवरी 2015

अपन मन अपन धन

भोरहरबेमे सुकल भाइकें नीन टुटिते मनमे उठलैन, जहियासँ ठेकान अछि तहियासँ जेतबेटा छेलौं तेतबेटा अखनो छी, तैबीच केते साल, केते मास आ केते दिन ससरैत ससैर गेल तेकर ठेकानो कहाँ अछि। ठेकानो केना रहत, जहिना अपने छी तहिना दिनो-राति तँ अछिए। ओहो कहाँ महिना-सालक संग अछि। मुदा ओ ठेकान औत केना? मिडिल स्कूलमे मास्सैब डायरी लिखनाइ सिखौलैन, हाइ स्कूल जाइत-जाइत छुटि गेल, तहियासँ डायरियो ने लिखै छी जे तेकरो देख कऽ ठेकनाएब...।

ओना नीके भेल जे डायरी लिखब छुटि गेल। आब लोककें ओते पलखैत छै जे समए निकालि डायरी लिखत। तहूमे ओकर आब उपयोगिते की रहल? नोकरीक वेतन आकि दिनक भत्ताक खर्च लिखियो सकै छी, मुदा उलफी आमदनियोँ आ काजो लिखब नीक थोड़े हएत। जखन लिखबे ने नीक हएत तँ ओहन शीलापटकें राखबे केते नीक हएत?

मुदा लगले सुकल भाइक मन घुरि गेलैन। घुरि ई गेलैन- भाइ! सबहक ई दुनियाँ छी, सबहक दिन राति छी, तैसंग कि लोको-वेद नइ छी। मुदा ओ तँ तखने ने हएत जखन लोक-वेदकें खोद-बेद करैत रहब। ओना खोदो-बेद असान थोड़े अछि। खोदो जहिना पहाड़सँ

समुद्र धरि अछि तहिना ने वेदो अछि। पहाड़क पाथर खुनी आकि गावीस माटि खुनी, घी जकाँ पीघलैत पाथर खुनी आकि झहरैत झरना- बहैत धार खुनी, चाहे ओइसँ बनल समतल भूमि- गंगा-ब्रह्मपुत्रक मैदान- खुनी आकि सभ धारक संगोरल गंगासागरक घाट खुनी, बंगालक खाड़ी खुनी आकि प्रशान्त महासमुद्र खुनी। केते खुनब..! केते खोदब..! ई खुनब आकि खोदब असान थोड़े अछि? आ तइसँ की कम वेदोक थोड़े अछि? एक्के चिकसकें दूध-पीठिया बनाबी आकि दलि-पीठिया, चाहे आगिमे पका कऽ लिट्टी बनाबी आकि तेल-घीमे पका पुड़ी-कचौड़ी बनाबी, चाहे रोइटपक्कामे पका रोटी-सोहारी बनाबी- जेकर एकटाकें पपरे ने हएत तँ दोसरमे गुद्दे गाइब भऽ पपरे भऽ जाएत। ई तँ भेल तेल-घीमे मुदा तँए कि पानिमे नइ होइए सेहो बात तँ नहियेँ अछि। जहिना दूध-पिण्ड होइए तहिना पानि-पिण्डसँ लऽ कऽ भक्खो, बगिया धरि होइते अछि...।

..बगियो की वगिया छी, रंग-रंगक बगिया अछि, जेते लोक तेते बगिया ने अछि। कियो बगूरक गाछ रोपि बगुरवगिया बनबैए तँ कियो फूलक गाछ रोपि फूलवगिया लगबैए तँ कियो फलवगिया लगबैए। मुदा तँए कि ईहो सोझ-साझ अछि। जँ तीनियेँटा रहैत माने बगूर, फूल, फल- तैयो नीक रहैत। सेहो ने अछि, घोदा-घोदे तीनू अछि। जहिना बगूरमे काँट तहिना तहूसँ मोटगर काँट बेलमे आ टाभ नेबोमे अछि। फूल-पात जहिना बगूरमे तहिना पातो आ फूलो सैनीमे अछि, भलें बगूरक लस्सा आकि टुस्सा कहै जे तोरासँ नीक छी, मुदा काँट तँ नमहर ऐछे! तइसँ नीक ने सैनी, जेकर काँट छोट छइ। तहिना ने फूलोक अछि जे एकटा धरतीपर फुलाइए तँ दोसर अकासोमे फुलाइते अछि आ तहिना ने फलोक अछि जे एकटा खेने पेट भरैए तँ दोसर पेनौं तँ मन खुशियाइते अछि..! घुमैत-घुमैत घुमन्तूकें आकि चलैत-चलैत चलनिहारकें जहिना चालि चलिया घुरिया जाइ छै तहिना सुकल

भायकें सेहो भेलैन। हाथ-पएर बैसल रहितो मन चलए लगलैन। किनौं ठाढ़े ने होइन, मुदा घीचि-तीरि कऽ थीर केलैन। थीर होइते मनमे वेद उपैक गेलैन। उपैकते भेलैन- वेद तँ वेद छी, अक्षर ब्रह्म। मुदा वेदोमे भेद तँ अछिए। जँ से नै अछि, तँ एते रंगक वेद आ एते वेदवेत्ता केना भेला, कि छैथ?

..भेदो उचिते ने, जेहेन देश तेहेन भेष। जेहेन उपारजन तेहेन भोजन, मुदा उपारजनो तँ प्रकृते अनुकूल, तँए जेहेन भोजन तेहेन जिनगी...।

मुदा जखन देश-देशक माटि-पानि, उपजा-वाड़ी रंग-बिरंगक अछि तखन तँ जिनगियो ने सभ रंगक हएत चाहे लाल हुअए कि कारी! आ जखन जिनगी सभ रंगक हएत तँ जीबैक विधो-बेवहार ने सभ रंगक हएत। जखन बीध-बेवहार फर-फराक हएत तखन तँ वेदोमे भेद हेबे करत किने...।

..पड़ले-पड़ल सुकल भाइक मन घोर-मट्ठा भऽ गेलैन। मनमे उठलैन जे जे बात बुझए चाहै छी से तर पड़ि गेल आ आने-आने ऊपर भऽ गेल! तखन? तखन तँ यएह ने नीक हएत जे जइ चीजक खेती करब तइमे तइ चीजकें छोड़ि बाँकी- ओ चाहे उपयोगीए वस्तु किए ने हुअए- सभटा घासे भेल किने। बिना ओकरा हटौने जजात अपन अनुकूल नइ ने हएत। ओ तँ तखने अनुकूल भऽ सकैए जखन दोसर ओकर माटिक शक्ति नइ लइ...।

..मने-मन भेल- डायरीसँ ठेकान नै पेब सकै छी। एक तँ ओहुना ओ अधखरूआ होइए, दोसर अपने लिखनाइए छोड़ि देलौं। तखन? हँ! दोसर ठेकान आरो भऽ सकैए। ओ अछि छठिहारीक दूध। मुदा ओहो तँ डुमले पोखैरक पानि भेल! छह दिनक बच्चाकें की ठेकान रहतै जे छठिक दूध केहेन होइ छै, भलें छठम दिन किए ने ओही

दूधपर ठाढ़ भेल रहल हुअए। ओहो बेठेकाने अछि। तखन? हँ, तखन तेसरो अछि- पेटक मल आ जन्मक मल। मुदा ओ तँ प्राण छुटैबेर अपन परिचए दइए...।

ओह! ओहूसँ भाँज नै लगत, ओ तँ भविसक भेल। तखन? तखन तँ यएह ने हएत जे जहियासँ अप्पन ठेकान अछि तहीसँ ठेकना ली। मुदा ओहो तँ बेठेकाने अछि। सभ दिन नवके-नवके भेँट होइत गेल, मुदा एते तँ ऐछे जे जहिया स्कूलमे पिताजी नाओं लिखौलैन तहिया जे गुरुजी उमेरक उमेद करैत पितेक सोझहामे कहलैन- 'जेहेन अपन मन तेहेन अपन धन।'

बच्चा रही मन खाली रहए असथिरसँ मनमे पइस गेल। मन बेसी भरलो ने रहए जे उमटाम होइत। खाली रहए घोरि-घोरि पीबए लगलौं। अखनो मोन अछि। मुदा मोनेटा अछि! मोनेटा किए ने रहत? जहिना दिन-राति लोक अष्टयाम-नवाहमे मंत्र जप तँ करैत अछि, मुदा भीतरक रस-रहस्यसँ तँ हटल रहिते अछि, तहिना अपनो हटल रहलौं। एकर माने ई नइ ने भेल जे सटल नै रहलौं। हँ! मनसँ सटल रहलौं कर्मसँ हटल रहलौं, तेतबे ने भेल? आ तेतबे किए भेल, जनकपुरक जनक बाबाक संकल्पित धनुष उठबैक कुबत नै भेल, सएह ने। अयोध्यासँ सजल आएल बरियाती जनकपुरमे नै हेराएल से कि नै बुझल अछि। बुझले अछि। तँए कि दौजी बरियाती रहैथ सेहो ने। मुड़हन रहैथ, जे जनकपुर आबि ने धोखा खेलैन? जँ नइ खेने रहितैथ तँ डोमक घरकें किए जनकक सीता बिआहक बरियातीक बास-स्थल बुझितैथ? ओ की कोनो अयोध्यासँ लऽ कऽ आएल रहैथ आकि जनकपुरेक सज-सजिया, हेल-मेल आ विधि-बेवहार देख बुझलैन। जँ बुझल रहितैन तँ...।

जखन कि लोहाक हथियार गज-फीट-इंचक हिसाबसँ पहुँच

सकैए आ देवगणक धुपकाठीक सोझ धुआँ समान्य परिवार आ विशेष परिवारक[2] दूरी नै बुझा सकलैन! एके रंग हएत तेतबो ठेकान नै रहलैन! मनुख तँ मनुखे छी। जेतए मिथिलाक अर्थात् जनकपुरक सुग्गो-मेना शास्त्रार्थ करैए, कोइली बाजा बजबैए आ हरिणक संग मजूरो डान्स करैए..! सभ जनकेँ अपन-अपन जिनगी छैन, ओ पूर केहेन बाटे हुअए? उपारजनोकेँ कमाइए बुझल जाइए, मुदा उपारजन आ कमाइ दू भेल। उपारजन भेल नव वस्तुक सृजन आ कमाइ जेकरा बुझै छिऐ ओ कोनो बाटे किए ने आबए, मुदा दुनूमे अन्तर तँ ई ऐछे जे एक पैदाइशी भेल दोसर फेड़-फाड़केँ घुमा-फिरा एक बढ़ब दोसर घटब भेल...। जाबे तक जन-जनकेँ उपारजनक दिशामे नै बढ़ौल जाएत ताबे तक पुरक निरमाण कठिन तँ नै मुदा असम्भव तँ रहबे करत...।

सुकल भाइक मन आगूसँ पाछू घुमलैन। घुमिते अपनापर पड़लैन। अपनापर पड़िते मन तड़ैप कऽ अपन पढ़ाइ दिस बढ़लैन।

पचपन बर्खक सुकल भाइक नजैरपर एक दिस औझुका आड़ि माने पचपन बर्खक जिनगी पड़लैन आ दोसर आड़ि जइ दिन स्कूलमे नाओं लिखौलैन तइ दिनक गुरुजीक ओ वाक्यवाण अखनो हृदैमे गंगाजल जकाँ हेल रहल छैन– 'जेहेन अपन मन तेहेन अपन धन।'

..मुदा मनो तँ मन छी। बाल मन, सियान मन, चेतन मन, अचेतन मन इत्यादि-इत्यादि हजारो रंगक मन अछि। जहिना रंग तँ रंग भेल, मुदा वेदरंग आकि कुरंग की भेल? भाय! ओहो रंग भेल, नै भेल एहेन प्रश्न नै अछि। हँ, एते भेल जे जइ रंगकेँ रंग बुझै छिऐ से नै भेल, कुरंग भेल, चाहे वेदरंग भेल, मुदा भेल तँ ओहो रंगे। तखन? तखन यएह जे अनेरे दुनियाँमे केतए वौआएब तइसँ नीक जे अपन आँखि

[2] यज्ञ-जपक परिवार

अपना देहमे साटि झरिया कोयला मजूरक नाच किए ने नाची।

जहिना सहस्रकेँ खँतिया दहाइ, इकाइमे आनल जाइए तहिना अपनोकेँ खँतिया ली। अखन किसान छी, जे स्कूल-कौलेज छुटला पछाइत भेटल। एक भेल किसानी जिनगी, दोसर भेल विद्यार्थी जीवन। तइसँ पहिने बाल-बोध छेलौं। प्लास्टिकक गेनो गुड़केलौं आ राइफलो छोड़लौं आ बैटो घुमेलौं। ओकरा छोड़ू। भगवान राम चौदह बर्ख बोनमे वौएला, अपनो सभ ओते मानि लिअ...।

..ओना आइक बच्चा चौदह बर्खमे हाइ स्कूल टपि जाइ छैथ, मुदा सुकल भाइकेँ से नै भेलैन। हाइए-स्कूलमे रहैथ। मुदा चौदह बर्ख जँ छोड़ि देब तखन तँ इसथिते बिगैड़ जाएत! बिगैड़ ई जाएत जे केते बर्खक अवस्थामे रामकेँ बोनबास भेलैन आ केते बर्खक अवस्थामे लंकासँ घुमि कऽ एला? मुदा ओ रामायणिक बात भेल, एतए अपन विचार करैक अछि। चौदह बर्ख चाहे बारह बर्ख जँ निच्चासँ छोड़ि देब तखन तँ गुरुजीक ओ बात जे 'जेहेन अपन मन तेहेन अपन धन।' छुटि जाएत, जैपर जिनगीक दिशा ठाढ़ अछि। हम आगू मुहेँ जाएब आकि पाछू मुहेँ, ई तँ हमरे देखैक वस्तु छी। जइ दिन गुरुजी कहलैन ओइ दिन ओ सूत्र-वाक्य संगीत बनि सुतिया गेल। आइयो ओहिना अछि। मुदा ओइ दिनसँ आइमे एते अन्तर तँ आबिये गेल जे- मनुखकेँ अपन मन-मनुक हिसाबे मुनिक दिशाक बोध होइ। यएह छी मिथिला दर्शन जइसँ अपन उपारजित जिनगी बनबैत, मृत्युक मुहसँ बँचबैत, हँसैत आनन्द लोक पहुँचबैत...। लगले सुकल भाइक मन डोलि कऽ पत्नी दिस पहुँच गेलैन। ओछाइन छोड़ि उठि कऽ बैसैत पत्नीकेँ सोर पाड़लखिन–

"केतए गेलौं, एमहर आउ?"

मुदा फुलटुस्सियोकेँ जेना ठोरेपर रहैन तहिना उत्तर देलखिन–

"भोरे-भोरे लोक भगवानक नाओं लइए आ अहाँ हमरा सोर पाड़ै छी।"

सुकल भाइकेँ पत्नीक बोल कटलकैन नै आमक चोभ जकाँ बुझि पड़लैन! मुस्कियाइत बजला–

"हम की कोनो तुलसी बाबा छी जे सरजू नदीक तटपर तीन आँगुरक कोपिन पहीरि घर-परिवार छोड़ि मिथिला दर्शन करए जाए पड़त। सद्य: मिथिलामे छीहे। मुदा छोड़ू ई सब बात, एकटा हिसाब दुनू गोरे फरिछा लिअ।"

सुकल भाइक बात सुनि फुलटुस्सी भौजी सहैम गेली। सहैम ई गेली जे दुनू ओहेन खेलाड़ी छी, जैठाम नीक-अधला कटम-कटा होइत चलैए तैठाम हिसाबे की पछुआएल अछि जे फरिछाएब...।

बजली–

"जे अहाँ दिस हमर बढ़ल से हम छोड़लौं आ अहूँक जे आएल से ओही तरे छूटल। चाह बनबै छी, पीब कऽ भक्क खोलैत आगू दुनियाँ देखयौ।"

◌

शब्द संख्या : 1532, तिथि : 3 फरवरी 2015

टुटली मरैया

दिन लहैस गेल मुदा सुर्यास्त नै भेल छल, ओना अपन आखिरी कगनीपर पहुँच गेल छला। रस्ता कातक अढ़ाइ-कठवा वाड़ीमे विचारदेव काका धनियाँक कमठौन करि उठि कऽ डाँड़ सोझ करैत रहैथ कि तखने दछिनसँ चारि गोरेकेँ रस्ता धेने अबैत देखलखिन। डाँड़ सोझ होइते अपने कोबीक किआरी दिस आगू बढ़ि गेला।

कतिका कोबी कटल खेत, जइमे गोर पच्चीसे फूल लागल। आड़िसँ निच्चाँ होइते, हँसैत-खेत देख अपनो हँसी लगि गेलैन। नीक सुतार सुतरल। एक तँ नीक बीआ पइर लगने नीक फूलो भेल, तैपर भौउ सेहो पकड़ाएल। हराहरी सए रूपैए फूल करीब भेल। चारि सए गाछ सए रूपैए फूल! मनसम्फे उपजा बुझि पड़लैन। ओ चारू गोरे पहाड़ी भेष-भूषामे, बोलियो सएह। लाल-बून चेहरा, छरे-छाँट जवान।

विचारदेव काकाकेँ देख सभ कियो ठमैक गेल। रूकि कऽ चारू गोरे विचार करए लगल जे एक तँ अपना सभ परदेशी भेलौं, देखल-सुनल इलाका नइ अछि, तँए अही गाममे राति-बीच अँटैक जाएब नीक हएत। एक तँ अनभुआर इलाका तैपर ऐगला गाम केते आगू हएत, तेकरो ठेकान थोड़े अछि। गुनधुन करैत रस्तापर चारू गोरेकेँ देख विचारदेव कक्काक मनमे उठलैन जे आगू बढ़ि पुछिऐ जे किए रूकै

गेलौं। मुदा लगले मनमे भेलैन जे भऽ सकैए पैछला संगी सबहक दुआरे अँटैक गेल हुअए। फेर जखन हिया कऽ देखलैन तँ बुझि पड़लैन जे अनठिया सभ छी। भेष-भूषा पहाड़ीक बुझि पड़ैए। आगू ससैर विचारदेव काका पुछलखिन–

"अहाँ सभ किए ऐठाम अँटकल छी?"

'अँटकब' सुनि चारू गोरे एकमत बनौलक जे सत्-सत् सभटा बात कहबैन। चारू गोरेक बीच जे मेट रहै, जेकरा बड़का बहादुर तीनू गोरे कहैत, बाजल–

"भाय साहैब, हम सभ वेपारी छी, सभ किछ लूटा गेल, आब चाहै छी जे कहुना जान बँचा घर पहुँच जाइ।"

विचारदेव काका–

"राति-बीच अहाँ सभ अँटकऽ चाहै छी?"

बड़का बहादुर–

"हँ।"

विचारदेव काका–

"एक मुट्ठी धनिया पत्ता आ दूटा कोबी काटि लइ छी, संगे चलब। दरबज्जेपर सभ गप हेतइ।"

दुनू फूल कोबी गमछामे बान्हि मुट्ठीमे धनिया पात नेने आगू-आगू विचारदेव काका विदा भेला। ओना विचारदेव कक्काक मनमे भेलैन जे किछु गप-सप्प करैत चली, मुदा लगले भेलैन जे बहरबैयाक गपमे गपिया जाएब तँ अपन अभ्यागतीक बेवस्थामे कमी आबि जाएत। तँए मने-मन गर अँटबए लगला जे चारि गोरेक भोजनसँ रहैक बेवस्था करैक अछि। ओना अखन तेहेन जाड़ नहियेँ होइए मुदा तैयो तँ जाड़ेक मास छी।

पाँच दिन पहिने हरिहर क्षेत्रक मेला शुरू भेल। बिहारसँ बाहरो राज्यक वेपारी सभ पहुँच गेल छला। चारू गोरे ऊनी वस्त्रक वेपार ई ठिकिया कऽ शुरूहे दिनसँ केने जे कम-सँ-कम तीन खेप नइ तँ चारियो-पाँच खेप कमाइ हेबे करत। पचास-पचास किलो ऊनी वस्त्र-स्वीटर, चद्दैर, गुलेबन इत्यादि- हरिहर क्षेत्रमे कीनि-कीनि वेपारक योजना बनौने छल। ओना कातिक पूर्णिमा भऽ गेल तँए पाँच दिन अगहनक अन्हार बीति गेल मुदा संक्रान्ति पछुएने अखन कातिके छी। जहिना गंगा तहिना गण्डको धार कोरा गेल। पेटे-पेट पानि। मुदा पचतिया बाढ़ि ऐने मेला-क्षेत्रक जमीन दलदल करै जइसँ केतौ-केतौ गढ़ा-गुढ़ीमे पानियोँ छेलैहे। जहिना रस्ता-पेराक मरम्मतमे करीब सइयो गोरे व्यस्त, तहिना सैंकड़ो वेपारी अपन-अपन दोकान सजबैमे व्यस्त। जहिना सइयो गाए-महींस, हाथी-घोड़ा, भेँड़-बकरी पहुँचल छल आ पहुँचियो रहल छल, तहिना आनो-आनो राज्यसँ सूती वस्त्र ऊनी-वस्त्रक संग अनेका-नेक वस्तुक दोकान सजियो गेल छल आ सजितो छल। पचास-पचास किलो ऊनी वस्त्र खरीद चारू गोरे गाँठ बना ट्रकपर लादि विदा भेल। मेलाक इलाका तँए छोट वेपारीक बजार मन्द लग-पासमे हेबे करत। तँए दस कोस हटिए कऽ नफगर कारबार चलि सकैए।

यएह सोचि चारू गोरे हरिहर क्षेत्रक मेलासँ समान आनि मुजफ्फरपुरमे उतैर गेल। दोसर दिन भोरे पीठपर लादि पएरे गाम दिस विदा भेल। मन्दी देख आगू बढ़ैत गेल। गोसाँइ लुकझुइते एकटा गामक कातक एकटा गाछीक बँसबिटी देख डेरा रखलक। सुखाएल कड़ची जारैनक कमी नहियेँ, पहिने नीक जकाँ खड़रलक। ओना बाँसक निच्चाँमे चिक्कन रहिते छइ। खाइ-पीबैक ओरियान-बात करैत दोसर साँझ भऽ गेल। मुदा तइसँ पहिने दारू बना चारू गोरे पीब मस्तीमे आबि गेल छल। तही बीच गामक एकटा महिला बहरेली।

बड़का बहादुर ठाढ़ भऽ कऽ नाचो करैत आ फकड़ो-फुकड़ी कहैत रहए। एक तँ अनभुआर आदमी तैपर फकड़ा-फुकड़ी! ओ औरत आबि अपना सासुकेँ कहलखिन–

"बँसबिट्टीमे चारिटा अनठिया अछि, ओम्हरे गेल छेलौं, गारि पढ़लक।"

सुनिते सासु विढ़नी बनि गेली। पचपन-साठि बर्खक सासुक मनमे एबे ने केलैन जे परदेशी सभ छी राति-बीच रहत, से जँ पुतोहुकेँ बात बुझि कहि दितऽथिन तँ विवाद एतइ समाप्त भऽ जाइत। मुदा से भेल नइ, अखनो बहुत गाम ऐछे जे पुरने सीख-लीख धेने अछि। मामूली पएरो-पैडिल साइकिलक जँ दोसर बच्चाक देहमे भीरल कि नइ भीरल मुदा ओ बच्चा माल जकाँ डेँगा देल जाइए। मारिक संग हाड़-पाँजर तोड़ि देल जाइए। आखिर आन बच्चाकेँ बच्चा किए ने लोक बुझऽ चाहैए? आब तँ सहजे नव उमेरक नव फसल लहलहा रहल अछि। चौक-चौराहा रंगबाजक अड्डा बनि राही-बटोहीकेँ लूटल जाइए। वेचारी सासु माए नहि महरानी बनि अपन पुरुखकेँ कानमे नइ दऽ सौंसे गाम नाचि एली। एक्के बात सबहक कानमे भरि एली जे- 'अनठिया सभ हमरा पुतोहुकेँ वेइज्जत केलक हेन!' खुदरा-खुदरी सुन-गुनी धधकए लगल। मुदा एते बिसवास तँ गौंआँ सभकेँ रहबे करै जे चारू गोरेकेँ भारी समान छै, राति-बीच रहबे करत, धड़फड़ीक बाते ने अछि तँए पुरुख-पात लेल धनिसन जे गाममे किछु भेबे ने कएल। मुदा गामक गुन-गुनी गामक गुणा-भागक हिसाब बैसबए लगल। भर्ले चिड़ै एकेटा किए ने होइ मुदा जेहेन शिकारी तेहेन रंग तँ देखबे करैत। जहिना हिरणी सीताकेँ सोनाक बुझि पड़ैन आ वएह लक्ष्मणक लेल जंगली पशु रहए! कियो गोटी बैसबैत जे जँ सौंसे गामक लोक संगोर करि कऽ जाएब तँ फड़िक्केसँ ओ सभ देख राता-राती अन्हारक गरे पड़ाइयो सकैए। जइसँ बड़ पइर लगत तँ चारिटा मोटा पइर लगत।

तहूमे नमहर अछि। ससतौआ वौस हएत। कोनो कि चरस-अफीम छी जे जेबीक रूमालेमे करोड़क छिपल रहत। मुदा फेर सोचए जे एक तँ गामक बहुत लोकक कानमे चलि गेल अछि, सभ ओहीपर कोटाक चीनी-मटिया तेल जकाँ टक लगेनहि हएत। तैठाम सोलहन्नी माल हड़पब बदनाम करत। केकर गाए, के रोमए जाए...। ई तँ विचारणीय अछिए। मुदा एहेन विरहाएल हवा कहियो काल केकरो नसीब होइ छै, तहूमे राजनीतिमे। एक-मुहरी गाम बनल अछि, तँए नेतृत्वक अवसरकेँ हाथसँ गमाएब घटिया राजनीति भेल...।

..एकटा द्रोपदी कुरू वंशकेँ नाश केलक, रावणक वंशकेँ सीता। तहिना ने साउसो छैथ। एक तँ बाहरी वेपारी, तहूमे आन इलाकामे अपन कारोबार करैत, तैसंग कमाइक लूरि रहबे करै। गामक चाल-चूल देख एका-एकी केते गोरे आबि-आबि देख चुकल छल। बड़का बहादुर बुझि गेल जे समानक चोरि हएत। एकटा चोरि होइ छै जे चुपेचाप जेबीसँ किछु निकालब आ दोसर होइ छै, एक गोरेपर एक ठाढ़ भऽ जाइ छै आ दोसर-तेसर, जेहेन जे समान रहल, तइ हिसाबे उठा कऽ विदा होइए। मुदा एतबे टा नइ ने होइए चीजक संग चीजबलाकेँ सेहो गाइब करए चाहैए! तखन तँ वस्तुक संग जानोक भेल..!

..बड़का बहादुरक मन चहैक गेलइ। अखन तक चुपे-चाप विचारै छल। अपन डुमैत नेतृत्वक संग अपन टुटैत जिनगी देखैत तँए अपन बुधिकेँ कोसैत...। मुदा उपाए? गरमाइत गामकेँ देख बड़का बहादुर तीनू छोटका बहादुरकेँ कहलक–

"कारोबार तँ लूटेबे करतह जे जानो बँचब कठिन अछि।"

एक बोलिया एक चलिया पहाड़ी बड़का बहादुरक विचार मानि चारू गोरे वस्तु छोड़ि दोसर बँसबिटीमे जा कऽ बैस रहल। पाँच

अन्हार रहने इजोरिया धाही देलक। जेकर शंका बहादुरकेँ छल से भाइए गेल, मुदा जानो आ रस्ता खर्चक पैयो सभ बँचा लेने। अनका माथपर अपन सम्पैत देख चारू बहादुर छातीमे मुक्का मारि राता-राती ओतएसँ विदा भेल...।

अपन घर लग पहुँचते विचारदेव काका बजला–

“यएह भेल अपन टुटली मरैया।”

कहि आँगन तरकारियो आ अभ्यागतक जानकारियो दइले बढ़ि गेला। मुदा बड़का बहादुरक मनमे खुटखुटी उठि गेल। खुटखुटी ई जे अपना खेतक तीमन-तरकारी, अपन एहेन सुन्नर रहैक घर, एहेन सुन्नर देह-दशा छैन, तखन किए टुटली मरैया कहलैन..? तीन हाथक लकड़ीक घरमे रहि ओकरे नीक बुझै छिऐ आ एहेनकेँ किए टुटली मरैया कहलैन। जहिना पतियानी लगल लोक राशनक दोकानपर रहैए आ ऐगला पहिने उचैक लइए तहिना बड़का बहादुरक मनक बात उचैक खसल–

“भाय साहैब, टुटली मरैया की कहलिऐ से नीक जाहिन नइ बुझि पाबि रहल छी।”

बड़का बहादुरक बात सुनि विचारदेव काका पघिलऽ लगला। मन पड़ि गेलैन अपन जिनगी। तैबीच पत्नी- फुलकुमरि काकी- चाह नेने दरबज्जापर पहुँचली। अपन आगत-भागत देख जहिना चारू बहादुर मने-मन चपचाइत तहिना दुनू परानी विचारदेवो काका अपन दरबज्जाक नेहमान-मेहमानीसँ गदगदाइत। मुदा जे चुहचुही बहरबैया पाहुनक आगमनसँ हेबा चाही ओ चुहचुही वातावरणमे नै छल। कारण, चुहचुही कि दिन-रातिमे अछि ओ तँ अछि ओकरा देखैक आँखिमे। जहिना एक दिस चारू बहादुर अपन लूटाएल सम्पैतक चोटसँ चोटाएल, दोसर दिस विचारदेव काका बहादुरक मुहेँ ‘टुटली

मरैया’ दोहराएबमे ओझराएल। कोन रूपमे ओ सभ आएल छैथ, तैठाम जँ अपने सोखर पसारि देब, ईहो तँ नीक नहियेँ हएत। मुदा कहबो केना करबैन जे ने खाइ-पीबैमे कोताही होइए आ ने घर-दुआरक दिक्कत अछि, मुदा ऐगला बाल-बच्चा तँ नइ अछि। ओह! किए अपन बेथा आनकेँ कहब। जहिया जे भेल भेल। मुदा अपना तँ काल्हि दिनक झखैन करके चाही। मुदा जँ बैसले-बैसल पाशा बदलए चाहब तँ भऽ सकैए जे हुनका सभकेँ कहीं ई ने भऽ जान्हि जे हमरा गपक मोजरे ने देलैन। पहाड़ी छी! एक बोलिया होइते अछि, जखने एकटा मुँह खोलत तखने भोरुका नढ़िया जकाँ सभकेँ जगबैत कहबे करत- ‘मुँहक पान मलिन भेल..!’ तखन कोन उपए? हँ एकटा उपाय अछि, नीक कि अधला कोनो धरानी दोसरकेँ विचारमे बान्हब। जइसँ बिसवास जगै छै आ ओही बिसवासक संग लोक आगू बढ़ैए। मने-मन विचारदेव काका सोचलैन जे उठि कऽ केम्हरो चलि जाइ छी ताबे चाहक संग अपन दोसरो अमल खा-पीब लइ जेता आ हड़बड़ाएल आबि पुछि देबैन जे अखन तक परिचैयो-पात ने भेल। जखन कि ई ऐठामक बेवहार छी जे पहिने कुशल-छेम होइत आबि रहल अछि...।

..मनमे ऐबते विचारदेव काका आँगन पहुँच पत्नीकेँ कहलखिन–

“अहूँ दरबज्जेपर चलू, लछनसँ बुझि पड़ैए, केहेन पहाड़ सन दिन पहाड़ीक कटैए, ओ सुनैक अवसर भेटत। अपना हाथक राति छी कनी अबेर कि सबेर भानस हेबे करत।”

पतिक बात सुनि फुलकुमरि काकी टुसि देलखिन–

“अपना सबहक खान-पान की अछि ओकरा सबहक की छै ओ बिना बुझने तँ भरि पेट खुआइयो नहियेँ सकै छी।”

पत्नीक बात सुनि विचारदेव काका कलियाइत बजला–

“तहूमे जँ अपन भानस करैक भार अपने लऽ लिअए तखन

किए ने अपनो दुनू गोरे ओकरा सबहक बनाएबो देखब आ कहियो देबै जे अपनो दुनू परानीक अभ्यागती अहीं सब दिस।”

दुनू परानी विचारदेव काका चारू गोरेक बीच दरबज्जापर पहुँचला। ओना फुलकुमरि काकीकेँ मन होइन जे पहिने ‘की खाएब’ से पुछि लिऐन। मुदा विचारदेव काका आँखि दबैत इशारामे कहलखिन–

“अखन ओहन परिचए नइ भेल अछि जे खान-पानक हिसाबसँ एक्के क्षेत्रक आकि दोसर क्षेत्रक छैथ तँए अखन थम्हू।”

मुदा से भेल नहि, बैसते विचारदेव काका पुछलखिन–

“चिन्हा-परिचए पहिने भऽ जाए तखन आरो गप हेतइ।”

अपन परिचए दैत बड़का बहादुर अपन सविस्तर काज-बातक कथा एक्के साँसमे बाजि गेला। बड़का बहादुरक बात सुनि दुनू परानी विचारदेव काका अपन जिनगीक गंगामे डुमकी मारए लगला। केना माए-बापक श्राद्धक कर्जसँ गाम छोड़लौं...। बीस बर्ख दिल्लीमे बितेलौं...।

आ जखन ऐगलो पीढ़ी पैछलो पीढ़ीकेँ हेराइत देखलौं तखन ऐ दुनियाँमे अपना छोड़ि रहल की...। पछाइत गाम आबि बीस बर्खक कमाइसँ सात कट्ठा खेत कीनि अपन टुटली मरैयाक बास कऽ रहल छी।

बड़का बहादुरक घटना आकि अपन जिनगीक बेथा-कथा विचारदेव कक्काक मनमे धक्का तँ मारलकैन मुदा जड़ि-उखड़न नै भेलैन। विचारभूमि बँचल रहलैन।

अनायास विचादेव कक्काक मनमे उठलैन, टटके कोबीक आमदनी भेल अछि, किए ने गर लगा पुन: ऐ यात्री सभकेँ कारोबार दिस घुमाबी। ओना चारू गोरेमे बीस-पच्चीस हजारक क्षति भेल, ओते

जँ नहियोँ हएत तैयो जीबैक बाट पकैड़ लेत। गामो-घरमे देखै छिऐ हजार-डेढ़ हजारमे सेकेण्ड हेण्ड साइकिल कीनि लोक एक क्वीन्टल तरकारीक कारोबार करि डेढ़-दू सए रूपैआ एक उखराहामे कमा लइए।

बहादुरक बात सुनि विचारदेव काका कहलखिन–

“देखते छी जे अपनो टुटलीए मरैया अछि, ई तँ गुण अछि जे साग-तरकारी आ फल-फलहरी उपजौनै छी जे अन्नक जोगेटा सँ काज चलि जाइए।”

विचारदेव कक्काक विचारमे जेना बड़का बहादुरकेँ भेटलै, केना डेढ़ सए रूपैआ लऽ कऽ कारोबार शुरू केने रही तहिना जँ डुमैतकेँ तिनकोक सहारा भेट जाए तँ जीबैक आशा तँ भेटिये जाइ छइ। बहादुर सबहक मनमे बिसवास पनैप गेल जे नइ मामा तँ कनहो मामा हेबे करत।

विचारदेव काका विचारि लेलैन जे हजार-हजार रूपैआ पूजी आ दू-दू सए रूपैआ बटखर्चा दऽ देने काज चलि सकैए। ई नइ कहबै जे अहाँकेँ अहिना दऽ देलौं। कहबै जे भाय, जहिया अहाँ सभकेँ घुमबैक मन हएत तहिया घुमा दइ जाएब। ओना छी पहाड़ी एकबोलिया! एक चलिया! गलत काजसँ परहेज करैबला! तँए नइ घुमबैक बिसवास नइ कएल जा सकैए।

चारिम बहादुर फुलकुमरि काकीक संग भनसा-घर पहुँच सभ चीज देख बाजल–

“दादी, अहाँ बैसू, हम भानसो करब आ गीतो गएब।”

◌

शब्द संख्या : 1951, तिथि : 7 फरवरी 2015

हकार

ओछाइनपर सँ उठल नइ रही मुदा नीन टुटि गेल रहए। जवाबदेह लोक जहिना नीन टुटिते सिरमा तरसँ डायरी निकालि दिनक कार्यक्रमपर नजैर चढ़ा चैनसँ ओछाइन छोड़ैत, तहिना अपन काज दिस नजैर खिड़ेलौं।

घरसँ जखने नजैर निकलल कि जगरनाथ कक्काक घरक न्योँपर चलि गेल। रहैक घर बनेता तेकरे नीब लेता, सएह हकार काल्हिये बेरूपहर देलैन। सूहकारैत कहि देने रहिऐन जे समैसँ दस-पाँच मिनट पहिने जरूर आएब। जे भरोस हुनका छैन्हे। मुदा लगले भेल जे काल्हि कहाँ आइए ने बेरूपहर हकार देने छला। जाबे ओछाइनपर सँ उठि नव सुर्जक दर्शन नइ भेल ताबे तक तँ आइए ने भेल। आइ भेल कि काल्हि भेल, तइमे अनेरे अपनाकेँ ओझड़बए चाहै छी, कियो बारह बजे रातिक पछाइतेसँ नव दिन बुझए लगैए तँ कियो जखने नीन टुटल तखनेसँ तँ अपना सन-सन लोक अठबजिया ओछाइन छोड़ि बुझै छी। किए ने बूझब, स्वतंत्र देशमे जँ एतबो स्वतंत्रता नइ भेल तँ स्वतंत्रते की भेल?

मुदा पत्नियोँ तँ पत्नीए छैथ, ओ तँ सदैत संग पुरिते छैथ। एते तँ विचार मनमे छैन्हे जे सदिकाल पतिक अनुकूल रहबो करिऐन आ बनेनौं रहिऐन। जँ अपन विचारे चलितैथ तँ अपन समैसँ चाह बना

हमरो नीन तोड़ि चाह पीऐबतैथ आ अपनो पीबितैथ। मुदा से नइ, बुझल छैन्हे जे नीन टुटलापर दस मिनट देह-हाथ सोझ करैमे लगबे करै छैन, तैबीच चाह बना लइ छी आ प्रेमसँ आगूमे बैस दिनक पहिल चहरा अहरामे दइ छिऐन। मुदा भोरेसँ गजपट हएब शुरू भेल। नीन तँ टुटि गेल रहए मुदा देह-हाथ सोझ करै दुआरे नै उठलौं, नइ उठैक कारण मनमे हकार उठि गेल। ओही विचारमे लगि गेलौं। मुदा पत्नी बुझली जे अखन सुतले छैथ। जेकर फल भेल जे चाह पीला पछाइत जेना मन हल्लुक होइए से नइ भेल। मनमे जगरनाथ कक्काक हकार हुकड़ए लगल, मुदा मन फरीच नइ रहने हकारक गोड़ा पकड़बे ने करए। घरक न्योँ लेता। घरे परिवार बनैए आ परिवारे घर। मुदा बीचक समए-संयोग नीक रहल। नीक ई रहल जे असमसानक लहास देख जहिना गीध सभ हरकट्टा भौर लइत आँखियेपर चोट करैत तहिना पत्नी आँखि लग आबि देखली जे नीन टुटलैन की नहि। मुदा लाभ उनटा भेल, जखने लग अबए लगली कि झपटैत कहलयैन–

"नअ बजेक हकार जगरनाथ काका देने छैथ, झब दे चाह बनाउ, अङ्गस-मङ्गस करिते समए भऽ जाएत। दसो-पाँच मिनट पहिने नइ जाएब, से केहेन हएत?"

मुदा संयोगे औझुका खराप अछि। एक हवाइ चप्पल कि जूता हरेने जहिना लोक दोसरकेँ जुमा कऽ कातमे फेक दइए तहिना पत्नी झपटि लेलैन–

"अहाँक मन खीरपुड़िया हकारपर टँगल अछि आ हमर?"

मुदा एते वेचारी रच्छ रखली जे कौआ-कुकुर जकाँ लोल कि मुहसँ पकैड़ घीच्चम-तीर नै केलैन, अनुशासित पत्नी जकाँ चाह बनबए गेली। मुदा अपन मन पुन: दोसर घुरछीमे ओझरा गेल। पत्नी कि बाजि गेली जे 'खीरपुड़िया हकार..?' काका सोझहे हकार देलैन, खीरपुड़िया

केतएसँ चलि आएल। मन औनाइते रहए कि पत्नी हाथमे चाह नेने ठाढ़ भऽ गेली। पैछला सभ बात बिसैर गेलौं। चाह हाथमे पकड़बैत पत्नी बजली–

"औझुका दिन शुभ अछि।"

पत्नीक बात नीक नै लगल। नीको केना लगैत, अपने बेर-बेर गजपटेमे पड़ै छी आ भऽ गेल शुभ! जहिना चाहसँ मुँह पकल छल तेहने पाकल बोल मुहसँ निकलल–

"शुभ-अशुभक असीरवाद अहीं मुँहमे अछि।"

वेचारी किछु बजली नहि। की मनमे उठलैन की नै से तँ ओ जानैथ मुदा दोसराक घरक हकार पुरब नान्हिटा बात नइ छी। गुरु-शिष्य जकाँ पत्नी आगूमे बैस गेली। रंग-रूप देख जेना मनमे झड़क उठि गेल। झड़को केना ने उठैत, शुभ-अशुभ तँ काजक फल छी- जेहेन काज तेहेन फल, आकि मुँहक ठकुआ परसाद छी..?

..जेना-जेना पेटमे चाह निजाइत गेल तेना-तेना तामसो कम होइत गेल। जे बात अपने नइ बुझि पेलौं मुदा पारखी पत्नी परेख गेली। परेखते जेना ओ बमरोटिया हाथे टीक पकड़ैक कोशिश केलैन माने रंग-रंगक भभटपन पसारि...।

..मुदा परिस्थितिकेँ विपरीत कहियौ आकि सुरीत, घरक न्योँक हकार अछि, अखन तक घर-अँगनाक बात पत्नीए बुझैत एली अछि, अपने तँ किछु बुझै नइ छी। जहाँ धरि देखैक बात अछि से तँ खढ़-खुट्टा, भीत आ काँच पजेबाक देवाल छोड़ि आगू देखलौं नहि, तैठाम ईंटा-सीमेट, लोहाक बात अछि! की बूझब आ की बाजब। दस लोकमे मुहोँ बन्न राखब अपनाकेँ पाछू मुहेँ धकियाएब भेल। मुदा गलती तँ पछुआ पकैड़ नेने अछि। माने ई जहिना जगरनाथ काका हकार देलैन तहिना मानि लेलिऐन। अनेरे अपने चालिये ओझरीमे

फँसि गेलौं। फेर मनमे भेल जे जे हूसि गेल से हूसि गेल मुदा ओकरा...। नै जाएब तँ कहबे करता जे फल्लाँ चारि सए बीस अछि। गपक कोनो ठौर-ठेकान नइ छै, बाजत किछु करत किछु। तहूमे जँ चाहो-ताहोक ओरियान केने होथि, तखन नइ गेने- हेए चाहपत्ती-चीनीक खर्च नइ हेतैन मुदा दूधक दाम तँ दुरि भाइए जेतैन। बेटाक सुमारक लोक बिसैर जाइए, पाइक सुमारक थोड़े बिसरल जाइ छइ। फेर मन अपनापर सँ जगरनाथ काकापर पहुँचल। मन तमतमाएल रहबे करए, धारक पानि जकाँ तमतमाइत आगू बढ़ि गेल। की सोचि जगरनाथ काका हकार देलैन! हम कहिया ईंटा-सिमटीक घर बनेलौं जे हुनका हकार देने छेलिऐन?

मुदा फेर मन घुसकल। घुसकल ई जे जखन जगरनाथ काका भीत-घरसँ ईंटा-सिमटीक घरमे प्रवेश करए जा रहल छैथ आ श्रद्धापूर्वक हकार देलैन तँ नहियोँ जाएबकेँ उचित नहियेँ कहल जा सकैए। मन ठमकल, मुदा बेसीकाल ठमकल रहल नहि। चारिटा बेटा जगरनाथ काकाकेँ छैन, पाँचम अपने भेला। परिवारक भीतरो तँ परिवार अछिए। एक भैयारीक परिवारमे बाल-बच्चाक आगमन रहैए जइसँ ओछाइन-बिछाइनसँ लऽ कऽ घर-ओसार धरि किछु-ने-किछु विकृत भाइए जाइए, दोसर भैयारीकेँ दस बर्ख पूर्ब एहेन समस्या छेलैन आ नइ छैन तँए घर-ओसारक सेखी बरबैर केना रहत।

मुदा जेते मन आगू दिस ससरए तेते जाले-जाल, महजालमे फँसल जाइ। घड़ीपर नजैर पड़िते मन चौंक गेल। चौंकते निर्णए केलौं जे हकरिया जकाँ नइ समांग जकाँ जगरनाथ कक्काक संग बेवहार करब।

मुदा लगले भेल जे चामेक मुँह छी, कहीं गपक सहमे किछु बजा गेल जे जगरनाथ काका-ले अबघात होइन तखन तँ आरो गड़बड़

हएत। पत्नी दिस नजैर उठेलौं तँ बुझि पड़ल जे ओ टीक पकैड़ चानिपर चढ़ए चाहि रहली अछि। कि बिच्चेमे धक-दे मनमे उठल, 'की खीरपुड़िया हकार' बजल छेली। गर पबिते बजलौं–

"अहाँ बिच्चेमे तखन की टपैक गेल छेलौं- खीरपुड़िया हकार? काका तँ सोझहे मुहेँ हकार देलैन आ सोझहे मुहेँ सूहकारि लेलिऐन।"

मुदा पत्नियोँ कि पत्नी छैथ ओ लालबुझक्करि जकाँ बुझि गेली जे अहिना पुरुख-पात केतौ विदा होइकाल रोब झाड़िते छैथ जे जूता-चप्पल गंदा अछि केना लोक लग एहेन पहीरि कऽ जाएब। मुदा मूल प्रश्न तँ अछि जे ईंटा-सिमटीक घरक माने भेल पचास बर्ख ऐगला जिनगीक रहैक ठौर, चारि भाँइक भैयारीक घर, केना बनौल जाए? जेना ओ बुझिते छेली कि की, बजली–

"भिनसुरका चाह पीब लेलौं से बड़बढ़ियाँ, झब-दे नहा कऽ ओइठाम चलि जाउ।"

पत्नीक सह पाबि अपन सह मारैत बजलौं–

"जखन घरसँ बहरा आनठाम जाएब तखन किछु अनजल नइ कऽ लेब से नीक हएत?"

पत्नीकेँ जेना बुझले रहैन कि की झपाटा मारलैन–

"शुभ मुहूर्तमे घरक न्योँ लेल जाएत। केना पैछला पुरुखा ऐगला-ले गाछी-कलम, पोखैर-इनार, इस्कूल-अस्पताल बना सेवाक दुआर खोलने रहला तहिना ने बुझए पड़त जे आगूओ अहिना खुजल रहइ।"

ओना पत्नीक सभ बात नीक नाहित नइ बुझलौं, मुदा एते बुझैमे आबि गेल जे जहिना आइ घरक न्योँ हँसी-खुशीसँ जगरनाथ काका लेता तहिना सभ दिन परिवार हँसैत बास करैन।

समैसँ अदहा घन्टा पहिने- साढ़े दस बजे- जगरनाथ काका ऐठाम पहुँचलौं। पुरना दरबज्जापर असगरे जगरनाथ काका बैसल चौचंग रहैथ। देखते जेना मनमे उत्तकण्ठ जगलैन। जेना हमरा एने हुनकर घर बनि कऽ ठाढ़ भऽ गेल होइन, बुझि पड़ल जे तहिना भेलैन। बुढ़ाएल देह रहितो जेना पानि चढ़ि गेल होइन तहिना चौकीपर सँ उठि दहिना डेन पकैड़ देखबैले विदा भेला। मुदा से भेलैन नहि। मलेटरी जकाँ परिवारक सभ अपन-अपन काजपर कनखड़ल। जेठकी पुतोहु- जे हमरा भावो हेती- बिच्चेमे दू गिलास चास नेने पहुँच बजली–

"पानियोँ पीथिन।"

भैंसूर-भावोक बीचक बात छी, ओना वंशगत भावो सेहो होइ छैथ, आ समाजगत सेहो। ऐठाम समाजगत अछि। भैंसूर-भावोक बीच बाजब वर्जित अछि। भैयारी बीचक कोनो बात-विचार भैयारीक भेल। ओना नीक काज शुभ होइत अछि तहूमे जगरनाथ काका तीन जोड़ ऊपर छैथ, तँए मने नइ हृदैमे सेहो खुशी छैन्हे। खुशियो केना ने रहतैन, अपन ओहन घर बनि रहल छैन, जे जिनगीमे दोहरा कऽ समस्या नइ हेतैन। तैसंग ईहो देख रहल छैथ जे चारू बेटो, जे बीस बर्खसँ चालीस बर्खक अछि ओकरो सभकेँ भरिसक पार-घाट लागिये जेतइ। तैसंग जे छोट-छोट बच्चा अछि ओकरो पचास-साठि बर्खक सेवा भाइए रहल छइ। अपने चुपे रही कि बिच्चेमे जगरनाथ काका कहलखिन–

"पानियेँ किए, पुड़ी-परसाद सेहो खेबे करता। जाउ, अहाँ अपन काज देखू। दुनू-बापूत चाहो पीब आ बतियेबो करब।"

जगरनाथ कक्काक मनमे तेते खुशी पइस गेल रहैन जे चाहो अदहा मुँहमे जानि अदहा ठोरपर होइत नीचे खसि पड़ैन। चाहक

इच्छा ओते नइ जेते किछु बजैक मन रहैन। पुतोहुकेँ गवाही रखि बजला जे दुनू-बापूत बतियाइ छी। हमरो हरल ने फुरल पुछलयैन–

"काका, अपनेक तँ आँखि-मुना मानैबला लोक छी, अपने हकार बजलिऐ, हम सूहकारि लेलौं।"

हमर बात जेना जगरनाथ काका नीक जकाँ नइ बुझलैन। अधखरूआ बुझि पड़लैन आकि की। बाल-बोध बच्चा जकाँ मुँह दिस मुँह तकए लगला। जेना हुनकर आँखि आँखिमे पइस गेल। पैसते बुझि पड़ल जे अखन दुइए गोरे छी। काका गुरुए भेला, हम चेले भेलिऐन। जँ कियो तेसर रहैत तँ लाजो होइत। मुदा जँ गुरु लग अपन बात लाजे छिपाएब आकि कोनो रोग डॉक्टर लग आ झर-झगराक बात ओकिल लग तँ ओ अशुभ छोड़ि शुभ नइ...। जेना तरसँ उधुक्का मारलक तहिना भेल। कहलयैन–

"काका, हकारकेँ पत्नी तेना लिड़ी-बीड़ी करए लगली, जे किछु फुरबे ने कएल।"

आगू बजैले बात ऐबते रहए कि बिच्चेमे जगरनाथ काका लोकि लेलैन। बजला–

"बौआ, हकारक बात पाछू करब पहिने बतिआइ जे छी से कहै छिअ।"

काका-बातक कोनो अरथे ने लगल। की बतिआइ छी? मुदा आँखि देखते ओ बुझि गेला। बजला–

"गप-सप्प जे करै छी बतियाएब भेल। तहिना जखन खेत जोत-कोर होइत बतिआइए तखन ओ खेत गहुम-जअक बीआ पचबै-जोकर भऽ जाइए। तहिना घरो निच्चाँ सँ तैयार होइत ऊपर छड़ा रहै जोकर बनि जाइए तखन ओ अन्तिम बातीसँ बान्हि बतिआएल जाइए।"

ओना कक्काक विचार कानकेँ सुनैमे नीक लागए मुदा मन

भीतरे-भीतर उविआइत रहए जे पत्नीक नालिस हाइ-कोर्टमे केने छी, देखा चाही, फैसला केकर अनुकूल होइए। मुदा बीचमे टोकबो केना करबैन। तहूमे पत्नीक प्रश्न लऽ कऽ। लगले कहि देता जे पत्नी जोड़ू होइ छैथ, तँए कखनो तोरो जोड़ऽ पड़तह आ कखनो हुनको जोड़ए पड़तैन। मुदा तेहेन कोसी-कमला धारक वेग जकाँ काका उधिआ रहल छैथ जे हुनका पकैड़ अनैमे अपनो भँसि जाएब। सेहो डर हुअए। मुदा सुतरल, कहलयैन–

"काका, आइ ते घरक नाउएँ लेब, तखन जे मठौठक बाती बान्हि बतिअबै छी..?"

शिकारी काका शिकार पकैड़ लेलैन। शिकारीकेँ आनन्द तँ शिकारे पछुअबैमे अबै छइ। ओ बुझि गेला जे पत्नीक बात पहिने बुझए चाहैए। एक्केबेर मोड़ि बजला–

"बौआ, अपना ऐठामक ताना-बना विशाल अछि। विशालक माने ई भेल जे जइमे सबहक अँटावेस अछि।"

कक्काक सहटैत विचार देख सह दैत बजलौं–

"काका, खीरपुड़िया हकार की भेल?"

बजैक झोंकमे तँ बाजि गेलौं, मुदा कक्काक जे मुखमण्डल देखलयैन तइसँ बुझि पड़ल जे ओ भरिसक बुझि गेला जे घरवालीक बात पुछलक हेन। मुदा कक्काक तँ अँखिमुना विचार घर छिऐन तँए लाजे-संकोच किए हएत। बजला–

"बौआ, जेते रंगक अपना ऐठाम काज अछि तेते रंगक हकारोक बेवहार अछि। अखन तँ धड़फड़ीमे छी। जँ गप शुरू करब आ बिच्चेमे जइ काजक स्थापना करब ओकर जँ कोनो खगता उपस्थित भऽ जाएत तखन जँ नाँगैर बुझने रहबहक तँ मुँह छुटि जेतह आ मुँह बुझने रहबहक तँ नाँगैर छुटि जेतह।"

कक्काक विचार सुनि बुझि पड़ल जे काका काज दिस घरमुहाँ भऽ गेल छैथ तँए बातकेँ आगू बढ़बैत पुछलयैन–

“काका, घरक न्योँ लेब, तइमे खाइ-पीबैक ओरियान अनेरे किए केलौं।”

हमर बात सुनि काका घड़ी दिस नजैर खिड़ौलैन तँ बुझि पड़लैन जे पान-सात मिनट जगह फाँक अछि। बजला–

“बौआ, खाइ-पीबैक बेवहार सेहो अपना ऐठाम, एहेन सूत्र बनौने अछि जइमे समाजक सबहक खान-पीनक चलैन चलि रहल अछि। केतौ जातीय तँ केतौ समाजिक, जनारक रूपमे हरिजन, तँ भोज-भण्डारामे सहरगंजा।”

आगू बजैले बाँकीए रहैन कि बिच्चेमे मोबाइल टनटनेलैन। घरक कारीगरक संग जेठका बेटा पहुँच रहल छैन। कक्काक काज देख कहलयैन–

“काका, हमहूँ समांगे छी, अपना सिमटी-ईंटाक घर नइ अछि जे किछु बुझल रहैत। तखन अहाँ लग रहब, हाथक आँगुरक इशारासँ जे कहब से करब।”

चारू दिससँ सभ समांग पहुँच पूजा शुरू केलैन। खीर-पुड़ीक परसाद। कोदारिक पूजा करैत न्योँ खुनब शुरू भेल।

◌

तिथि : 11 फरवरी 2015, शब्द संख्या : 1911

दहेजुआ गाए

फगुआक दिन। सम्मत सेहो जरत। ढोलक-डम्फाक संग रंग-रंगक गबैया रंग-रंगक गीतो गौत आ नचबो करत, कखनो विरह गौत तँ कखनो वसन्त, कखनो फागु गौत तँ कखनो जोगीरा, कखनो एक-तलिया तँ कखनो बहु-तलिया गीतो गौत आ पीहकारियो भरत। मुदा पीहकारी तँ पीहकारी छी, हास-हँसीक छी आकि दुख-दुखिक ई तँ ओ जानैथ जिनका पीहकारी भरऽ अबै छैन। ओना आब फगुओक चालि-प्रकृति बदैल गेल तँए जँ नचनाइ-गौनाइ बदलल, तँ कोनो अतिश्योक्तियो नहियेँ भेल, मुदा बदलल की? फागुन पूर्णिमाक दिन-राति मनबैबला पाबैन, भोरेसँ लोककेँ पाबैनक बमकोला मने-मन फुटऽ लगैत। रंग-अबीर चढ़ौल पुआ खेबे करत, विरह-वसन्तगेबे करत, दिनक जे रातिक सीमा अछि तइकाल सम्मत सेहो जरबे करत। चैतक नव प्रभातमे प्रवेशो करबे करत। किए ने धुम-धामसँ पाबैनक सुआगत हुअए। पाबैन छी, सबहक छी, अपना ओकातिये सभ खेबो-पीबो करत आ गेबो नचबो करत। बाइस बर्खक विवेक आ एक्कैस बर्खक सुजीता सेहो किए ने पाबैन मनौत..?

बाल सुर्ज उगि गेल मुदा अपना पएरे ठाढ़ नइ भेल छल, चाहक तैयारी करैत सुजीता विवेककेँ बजबए चुल्हि तरसँ उठि आगू बढ़ल। सबहक अपन-अपन बुझै-चलैक लूरि अपन-अपन छइ। इमानदारीन

सुजीताक मनमे मिसियो भरि कुवाथ नहि जे भनसा घरमे पतिकेँ किए चाह पीबैले आकि खाइले नइ देबैन। जाबे ओ भनसा घर आबि नहि खेता-पीता ताबे भाड़ाक वर्तनक सुख-दुख केना बुझथिन। मुदा से विवेकोकेँ रहै जे गामक छौड़ो-माड़रि आ छह-पाँच करैबला बुढ़ो-पुरान किए ने खिधांश करैत, मुदा तेकर मिसियो भरि परवाह मनमे नइ छेलइ। अपन-अपन सभकेँ मुँह छै, अपना बुधिये बजैए, तइसँ हमरा की। अपन जिनगी अछि, अपन परिवार अछि, अपन समाज अछि, अपन संसार अछि। चुल्हिक पँजरामे दुनू बेकती- विवेक आ सुजीता- बैस चाहो पीबैत आ गपो-सप्प करैत। अपन पाबैन मनेबाक विचार व्यक्त करैत विवेक बाजल–

“अहाँक तँ पहिल होली ऐठामक[3] छी।”

एक तँ फगुआक उन्मत हवाक झोंक तैपर पतिक संग बैस चाहो पीबैत, सुजीताक मन मचैल उठल। बाजल–

“जखन साले भरिमे बिसैर गेलौं, तखन ते ऐगला जिनगी बिसरले हएब।”

पत्नीक विचार सुनि विवेक ठमैक गेल। मुदा पाबैनक दिन, तँए औझुका विचारो आ पूरो करब अनिवार्य अछि। मनमे एकटा झटहा जकाँ विवेककेँ लगि गेल, मुदा समैयो तँ समैए छी। बाँस भरि सुर्ज चढ़ि गेला मुदा अखनो किछु ने विचार केलौं आ ने ओरियान केलौं हेन। सामंजस करैत विवेक बाजल–

“अहाँक बात विचारैले उधार रखै छी, नगदी काज अखन चलए दियौ।”

पतिकेँ अनुकूल बनैत-बनबैत सुजीता बाजल–

[3] सासुरक

“होली पाबैनक दिन छी, तीत-मीठ आइ सभ खाएत-पीअत तँए उधार रखै छी ते राखू मुदा आइए सालक अन्त हएत आ नवका साल चढ़त, तँए नव-पुरानमे नवकाकेँ पुरनामे ने घोंसिया देबै आ कि पुरनेकेँ नवकामे।”

‘नव-पुरान’ सुनि विवेकोकेँ सुतरल, बाजल–

“नवे पुरानो होइ छै मुदा..?”

‘मुदा’क पछाइत विवेकक बोलती बन्न भऽ गेल। तुकबन्दीक हिसाबसँ नवे पुरान होइ छै, तहिना पुराने नव हेतइ। ओना नव आ पुरान सभ किछुमे होइते अछि, मुदा अपन-अपन सभकेँ जगह छै केतौ नव पुरानो होइए आ केतौ पुरान नबो, मुदा एके दाबिये खीरो आ खिचड़ियोकेँ थोड़े लारल जाएत। ओना जे बात विवेकक पेटमे छल ओ पेटेमे रहने बोलीक बाटे नइ निकलल छल। तहिना सुजीतोक मनमे विवेकक मनसँ भिन्न दोसर-ठाम छलि तँए ओहो विवेकक विचारकेँ ने नाँगैर पकैड़ सकलि आ ने मुँह। मुदा फगुआक खुमारी चढ़ल, तँए भुतलग्गु जकाँ खरियबैत सुजीता बाजल–

“‘मुदा’ कहि कऽ चुप किए भेलौं?”

ओना विचारक गर देख सुजीताक मन पतिक विचारपर लदब छेलैन, मुदा से सुतरल नहि। बीचक जे चुपा-चुपी समय खटियाएल ओ विवेककेँ पाशा बदैल फेकैक अवसर दऽ देलक। हूसल आ बिनु हूसल दुनू परिस्थिति दू रंगक वाण बनबैए। मुदा से नइ विवेककेँ अपने बात मनमे घुरियाइत तँए साधि कऽ वाण फेकैक अवसर भेटते, बाजल–

“साले-साल वसन्तो अबैए, होलियो अबैए, मुदा होली कोन वसन्तमे अबैए से कहू।”

पतिक साधल वाण लगिते सुजीता सकपका गेल। सकपका ई

गेल जे चैत-बैशाखकेँ वसन्त रीतु शास्त्र-पुरानमे कहल गेल अछि, मुदा रंग-अबीरक संग वसन्त तँ माघ-इजोरिया पंचमीएकेँ आरम्भ भऽ जाइए। जइ दिन सरस्वती पूजा सेहो होइए। तइ हिसाबसँ दस दिन शेष-माघ आ तीस दिन फागुन मिला चालीस दिन भऽ जाइए। सालक छह रीतुमे वसन्त एकटा सेहो अछि। तँए दू-दू मासक हिस्सा भेल। तइ हिसाबसँ मात्र बीस दिन चैत बँचैए। ई तँ भेल एक दिसक, दोसर दिस जँ बैशाखक पूर्णिमासँ लइ छिऐ तँ तीस दिन बैशाख आ तीस दिन चैतसँ पहिने फागुनेक पूर्णिमामे होली होइए। तखन तँ एको दिन ने बँचैए, तखन होली केना वसन्ती पाबैन भेल..? विचारक बोनमे अपनाकेँ हेराइत देख सुजीता बाजल–

"जँ पाबैन रीब-रीबेमे खपा लेब तखन तँ फगुआ फगुए रहत।"

सुजीता अपन बेथा नहि बाजि, विचारकेँ बहटारलक, मुदा से विवेक बुझि गेल। पहिने अपने अनुकूल बनब तखन ने पत्नियोँ अनुकूल बनती। जहिना पत्नीक मनमे पतिक अनुकूलता नचै छै तहिना ने पत्नियोँक अनुकूलता पतिक मनमे नचिते अछि। विवेक बाजल–

"अखन तक अहीं ने गप-सप्पमे ओझरौने छी नइ तँ हमर मन बनल अछि जे दुनू परानीक सझिया कारोबार अछि आ सझिया पूजियो छीहे, से नै तँ दुनू गोटे औझुका आमद पाबैनमे लगा दियौ।"

पतिक इशारा सुजीता नीक जकाँ नहि बुझि पएल। बजली–

"जँ दिन-दिनक आमदसँ अनदिनो चलत आ पाबैनो चलत तखन पाबैन की भेल?"

अखन धरिक जे गप-सप्प पति-पत्नीक- माने विवेक आ सुजीताक- बीच रहल ओ अपन जिनगीक बाट बना अपन विचारक जिनगीक बीच दुनू बेकती जीवन-जापन हँसी-खुशीसँ बितबैत

रहल...।

आइ फगुआ छी भोरेसँ सभ अपन पाबैनक पवनौट पबैमे लगले छैथ। ओना विवेकक मनमे उठल जे व्यास बाबा अपन व्यास पद्धैतसँ जोड़ि औझुका कमाइ काल्हिले राखब वर्जित केने छैथ। मुदा जँ एहेन बात अखन बाजब तँ अनेरे महा भारत उनैट जाएत! खेबा-पीबा दिन जँ रमा-कठोला भेल तखन तँ पाबैन पाबैने रहत! अपन जोड़ क्रिया करैत विवेक बाजल–

"जइ आमदनीपर अपन जिनगी ठाढ़ अछि ओकरा लगौलासँ सगर समाजक पाबैन मना लेब।"

'सगर समाजक पाबैन मना लेब' पतिक मुहसँ सुनि सुजीता बाजल–

"जखन सौंसे समाजक पाबैन मनाएब तखन किए ने अपन पैछलो जिनगीक सोहर-समदौन सेहो सुनाइए देबैन।"

'सोहर-समदौन' सुनि विवेक भोतिया गेल। भोतिआइक कारण भेल, फगुआ दिन लोक फागु गौत, जोगीरा गौत, विरह-वसन्त गौत आकि सोहर-समदौन गौत। मुदा पाबैनक दिन छी किने, पूवजनक फगुआ किए ने दुनू परानी मनाइए लेब। बाजल–

"अहूँकेँ ते बुझले अछि जे मास्टरो साहैब[4]केँ दुधाएल भाँग पीऔनहि हेबैन।"

सुजीता–

"किए ने बुझल रहत। केता दिन पाकल केरा, दूध आ मिसरीक संग भाँग मिला सेहो पीऔने छिऐन।"

विवेक–

[4] सुजीताक पिता

"अपन तीनू गाइयक औझुका दूधक शरबत बाल-गोपालसँ चेतन धरिकेँ पीआ देबैन।"

जहिना बी.ए. पास विवेक तहिना बी.ए. पास सुजीता। विवेक एकटा बुधियार किसानक बेटा आ सुजीता किसान परिवारसँ उठल शिक्षकक बेटी। दुनू परिवारक अपन रीति-रिवाज, अचार-विचार। विवेकक पिता जगरनाथ, बहुत बेसी खेतबला किसान नहि मुदा अपन किसानी जिनगी ओहन बनौने छैथ जे अखन धरिक मिथिलाक परिवारक रहल। बी.ए.मे जखन विवेक पढ़ैत रहए, तखन केते सभामे दहेजक विरोधमे बजबो कएल आ दहेज नइ लेब, से सप्पतो खेलक। मुदा जेना-जेना सभाक माध्यमसँ बढ़ैत गेल तेना-तेना भेटैत गेलै जे बहुसंख्यक समाज ऐ बातकेँ मानि चलि रहल अछि जे जेकरा जेते बेसी दहेज भेटत ओ ओते प्रतिष्ठित परिवार भेल। तेतबे किए, एके आदमी बेटा बेर राजा आ बेटी बेरमे रंक बनि हँसबो करैए आ कनबो करैए। विवेककेँ मन धिक्कारलकै। बी.ए.मे पढ़ै छी, दू बर्खमे पढ़ाइ सम्पन्न हएत। एम.ए. तँ प्रोफेसर बनैले प्रोफेसरक बेटा पढ़ैए, आन किए एकपेरिया रस्ता पकड़त। बी.ए. मूल चौराहा भेल। ऐठामसँ लोक अपन जिनगीक चौबगली रास्ता धरैए। दुइए बर्खक भीतर पढ़ाइ सम्पन्न हएत, बिआह हएत परिवार ठाढ़ करैक भार सेहो पड़त। बहुत दिन दहेजक भाषण केलौं। दहेज तँ समाजक बोहैत धार छी। जइमे पाप-पुन दुनू दहाइए!

सुजीताक पिता हाइ-स्कूलक शिक्षक, जिनका केते गोटे एकभग्गू कहै छैन तँ केते गोटे बहुभग्गू। जे अपनो मनिते छैथ। जखन अपनाकेँ बहु-भग्गू मानि विचारै छैथ तँ मानि लइ छैथ जे एमेले आकि एम्पीक चुनावमे केतेको गोटे भोँट मंगैले अबै छैथ, शिक्षक छी हमरा कोन राजनीतिसँ मतलब अछि, पढ़ब-पढ़ाएब अधिकार-कर्तव्य भेल। दरबज्जापर आएल आगन्तुककेँ सुआगत केना ने करबैन, एहेन

परिस्थितिमे मास्टर साहैब सन लोककेँ उकड़ू हेबे करतैन। से भेने भोँटो ने खसबै छैथ जे से अपन मन खुटखुटेतैन जे जुवानक कोनो ठेकान नइ अछि। मुदा एकटा भोँट दस गोटेमे बाँटब केना, तइसँ नीक ने ई भेल जे जँ कियो कहता जे हमरा भोँट नइ देलौं, तँ हमहूँ ने सवारी कसि देबैन जे जँ अहाँकेँ नइ देलौं तँ किनका देलिऐन, सएह कहू। सोझ-साझ रस्ता भेटने बहुभग्गू मानि लइ छैथ। एकभग्गू ऐ मानेमे छैथ जे कोनो झगड़ा दू गोरेक बीचक रहल तेकरा एकतरफा बुझि अपन विचार सुना दइ छथिन, तइसँ एकभग्गू कहि गाममे कियो बातक मोजरे ने दइ छैन। मुदा तँए कि मास्टर सहैबक मुँह मलिन रहै छैन, सेहो नहियेँ रहै छैन। अपन धूनमे अपन जिनगीक गाड़ीकेँ कखनो जुआ पकैड़ तँ कखनो पछुआ पकैड़, कखनो ठेलैत तँ कखनो घीचैत चलिये रहल छैथ।

ओना उमेरक हिसाबसँ विवेक एक बर्ख तीन मास सुजीतासँ जेठ, मुदा दुनू मैट्रिको एके बैचमे पास केलक। दुनू दू गामक मुदा एके कौलेजमे दुनू पढ़ैत। सुजीताक बिआह मास्टर साहैब करता, पढ़ैओक दृष्टिसँ आ उमेरोक हिसाबे सुजीता बियाहै जोकर भाइए गेल छलि। मास्टर साहैबक विचारक अनुकूल केतौ सुजीताक बिआहक गरे ने लगैन। ने अपन विचार बदलैक पक्षमे रहैथ आ ने कियो नाकपर माछीए बैसए दन्हि। जेते बेटीकेँ बेसी पढ़ाएब तेते बेसी दहेजो लगबे करत। जे बात मास्टर साहैब सुजीताक बिआहक गप-सप्पक क्रममे बुझलैन। अपनो छगुन्ता लगैन जे कहू ई केहेन भेल जे जइ बेटीकेँ पढ़ा-लिखा, सज्ञान बना दोसराक हाथमे देब, आ तैपर सँ नगदो नारायण देब! ओना मास्टर साहैबक विचार ईहो रहैन जे एक नव परिवर ठाढ़ होइए तँए परिवार ठाढ़ होइक जे आवश्यक काज अछि ओकरा पुराएब आवश्यक अछिए। अपने शिक्षक तँए दहेजक अपन परिभाषा बनौनहि रहैथ। परिभाषा रहैन जे नगद-नारायण दहेज भेल,

मुदा वस्तु-जात तँ से नइ भेल। ओ तँ जिनगीक आवश्यक वस्तु भेल जे बेटा-बेटीकेँ माइए-बाप ने पुरौत। ओना सुजीतापर मास्टर साहैबक प्रभाव ओते नइ जेते माइक प्रभाव छल। नारी जिनगीक देखल-सूनल अनुभव माएकेँ छेलैन, तँए सुजीताकेँ अपन जिनगी अपना हाथमे रखि ठाढ़ केने छेली।

गामसँ कोस भरिपर हाइयो-स्कूल आ कौलेजो। जहियासँ सुजीता गामक मिडिल-स्कूल टपि हाइ-स्कूलमे नाओं लिखौलक तहियासँ मास्टरे साहैबक संग स्कूल-कौलेज जाइत-अबैत छलि। आ स्कूल-कौलेज जाइसँ पहिने आ एला पछाइत माइक देख-रेखमे रहै छलि। स्कूल-कौलेजसँ एला पछाइत सुजीता घर-परिवारक काजमे जुटि जाइ छलि। बच्चेसँ सुजीता बुझि गेल छलि जे अपन शक्ति भरि परिवारक काजमे माइक संग पुरैत रहब तखने ने मातृत्वक गुण औत। जँ से नइ करब तँ माए थोड़े खर्ड़ा-बाढ़निसँ झाँटत, गलैत मने यएह ने कहत जे जेहेन धी रहत तेहने ने मातृत्व पौत। सफल नारीत्व तँ सफल मातृत्वेमे ने भेटै छइ। जँ से नइ भेटै छै तँ कुमारियो केना मातृत्व प्राप्त कऽ माए कहबैत आबि रहल छैथ..?

विवेकक पिता जगरनाथ अपन कर्तव्यक सीमा-सरहदक संग परिवारमे जीवन-जापन करैत जुआनीएसँ चलि आबि रहल छला। बेटाक पढ़ाइयोक भार अनका जकाँ माथपर कहियो ने पड़लैन। जे विद्यार्थी परिवारसँ दूर रहि विद्याध्ययन करै छैथ, हुनका ने बेसी खर्च-बर्च होइ छैन, जइ भारसँ पिता परेशान रहै छैथ। तेहेन ने परिस्थिति कहियो जगरनाथकेँ भेलैन आ ने पढ़बै-लिखबैक कहियो मत्थदुखी भेलैन। एकरसक जिनगी परिवारमे सभ दिन बनल रहलैन। ओना विवेककेँ एते बात घोरि कऽ पीआ देने रहथिन जे बौआ पढ़ब-लिखब ज्ञान अर्जन करब भेल। ऐ ज्ञानसँ अपन जिनगीमे समायानुसार बढ़ौतरी करैत चलब रहबे समतल जिनगी बना जीब भेल। जखने

उबड़-खाबड़ औत तखने जिनगीमे घटी-कुघटी हएत। पिताक विचारकेँ गिरह बान्हि अपन चालि बना चलैक रास्ता विवेक रोपि नेने छल। दहेजक धारमे उठल अवारकेँ विवेक परेख नेने छल। जइसँ गुलामी आजादीक जिनगीमे अपन सीमांकन कऽ नेने छल।

साल भरिसँ मास्टर साहैब सुजीताक बिआहक चर्च-बर्च करैत आबि रहल छैथ मुदा अपन विचारानुकूल केतौ बिआहक गर नइ लगलैन। विवेककेँ बुझल जे मास्टर साहैबक विचार अनका-ले जे होउ, मुदा हमरा-ले तँ अनुकूले अछि। हुनकासँ नगद-नारायण नइ लेब, मुदा खाइ-पीबैले, जीवन-जापन-ले गाए तँ देबे करता। किए ने अपन दुनू परानीक जे उपारजित शक्ति अछि माने श्रम करैक जे समए अछि ओकरा जीवनोपार्जनक दिशामे बढ़ाबी।

बी.ए. फाइनलक तेसर मासमे विवेक आ सुजीताक भेँट भेल। ओना दुनू एक-दोसरसँ परिचित। मुदा बिआहक सुन-गुनी दुनूक कान तक पहुँच गेल छल। दुनू अपन जिनगीक किताब सादा पन्नामे लिखब शुरू कऽ नेने छल। दुनू किसान परिवारसँ उठल, किसानी जिनगीकेँ उठबैक संकल्पक संग एक-दोसरसँ सम्बन्ध-सूत्र बनबैक विचार एक-दोसरकेँ दऽ देलक।

विवेक आ सुजीताक श्रम-शक्तिकेँ अँकैत मास्टर साहैब जीवनोमुखी रस्तापर आनि विवेककेँ जमाए बना लेलैन।

◌

शब्द संख्या : 1908, तिथि : 15 फरवरी 2015

मेटाइत जिनगी

तीन बर्खसँ रमेश काका भेँट नै भेल छला, भेँट नइ भेल छला एहेन बात नहि, तीन बर्खपर अपने गाम आएल छेलौं। बंगालमे रहै छी, रविन्द्र संगीत मण्डलीसँ जुड़ल छी। ओना सरकारी आकि कारखानाक नोकरी जकाँ बन्हाएल नइ छी, मुदा संगीत मण्डलीक बान्ह तँ लगले अछि। सइयो मण्डली बंगालमे चलिते अछि जइसँ कोनो ने कोनो मण्डलीमे जगह भेटिये जाइए।

गाम ऐबते मनमे भेल जे पहिने रमेश काकासँ भेँट करबैन, मुदा गाड़ीक झमाड़सँ एते झमैड़ गेल रही जे मनो आ देहो असोथकित जकाँ बुझि पड़ए। एक तँ गुरु ऐठाम जाएब, रमेश काका संगीत विद्याक आदि गुरु छैथ। जहिया हाइए-स्कूलमे पढ़ैत रही तहियेक गुरु छैथ। तैपर जँ अलसाइत-मलसाइत जाएब सेहो केहेन हएत। तैबीच दिनेश भाय आबि गेला। रस्तेमे अबैत रही कि कियो हुनका कहि देलकैन जे महेश गाम एला अछि। रस्तेसँ रस्ता दिनेश भाय पहुँच गेला। दिनेश भायकेँ देखते माएकेँ कहलिऐ–

"माए, चाह पीबैक मन होइए।"

पुरान विचारक लोक माए, उनटा कऽ बाजल–

"ई केहेन हएत जे रस्ता-बाटक भुखाएल छह, पहिने किछु खा लेबह तखन चाह पीबह आकि पहिने चाहे पीबह!"

अपन बातक जिद्दी माए, किनौं बात नइ मानैत। तँए बात बदलैत बजलौं–

"टीशनपर गाड़ीसँ उतैरते जीआलाल कक्काक दोकान मन पड़ि गेल। सानल छोला-सिंघारा तैपर आमीलक चटनी आ अमीरती भरि पेट खा लेलौं। अखन खाइक मन नइ अछि, दिनेशो भाय छैथे।"

छोला-सिंघारा तँ माइक मनमे नहि अँटकलै कनी-मनी राहड़िक दालि, आमील अँटकबो केलै तँ कँचका आमक फाँड़ा, मुदा अमीरती कण्ठे लग अँटैक गेलइ। बाजल–

"पहिलुके जकाँ जीआलाल दोकानक अमीरती रहैए आकि धिया-पुता सभ आब बनबै छइ।"

माइक बात सुनि आरो चपाड़ा देलिऐ–

"एँह माए! आब बुड़हे जकाँ धियो-पुताक हाथ बैस गेलैन, पहिलुकोसँ नीक बनबै छैथ।"

माए अनुकूल होइत बाजल–

"पानि पीबह किने?"

कहलिऐ–

"कोनो कि पाछूके नोनगर खेलौं जे पियास लागत, अमीरती तँ ओहिना कण्ठ लग बैसल अछि। चाहेटा पीब।"

माए चाह बनबए गेली। दिनेश भाय बजला–

"ऐबेर बहु-दिनपर एलह।"

तीन साल पहिने सालमे चारि-पाँच बेर आबि जाइ छेलौं, मुदा ऐ बीच एहेन काज बढ़ि कऽ नमरि गेल जे तीन साल केमहर बाटे चलि गेल से बुझबे ने केलिऐ। ओना भेल ईहो जे बंगालसँ मण्डलीक संग आनो-आनो राज्य कार्यक्रममे जाइत-अबैत ओहीमे हेराएल रहलौं।

मुदा दिनेश भाइक प्रश्न उचिते छेलैन, तँए किछु बीचमे बाजब उचित नै बुझि मानैत कहलयैन–

“हँ भाय, तीन सालपर एलौं। गामक की हाल-चाल अछि?”

जेना दिनेश भाय बुझिते रहैथ कि की तहिना आन सभ गपकेँ मनसँ टारैत बजला–

“रमेशकाका मेटा रहला अछि!”

‘रमेशकाका मेटा रहला अछि!’ सुनि मन चौंकल। की मेटा रहला अछि? पैछला खेप जे आएल रही, केहेन बढ़ियाँ रहैथ। ओना पहिलुका जे रूआव आ सैहबी छेलैन तइमे कमी तँ भाइए गेल रहैन, मुदा मेटा रहल छैथ ई तँ बड़ भारी बात भेल। तही बीच माए चाह नेने पहुँचल। तीनू गोटे- हमहूँ, दिनेशो भाय आ माइयो- चाह पीबए लगलौं। मुदा रमेश कक्काक समाचार जेना मनकेँ हौंड़ैत रहए तहिना मने-मन बुझि पड़ए। केना दिनेश भायकेँ पुछितिऐन जे की मेटा रहला अछि। किछु छैथ तँ रमेशे काका ने पहिल गुरु छैथ। चाह पीला पछाइत दिनेशो भाय चलि गेला आ माइयो काज-उदममे लगि गेल। बैगकेँ सिरमा बना, बिना कपड़ा बदलनहि चौकीपर ओंघराइत बजलौं–

“माए, थकान बुझि पड़ैए कनी लोट-पोट कऽ लइ छी पछाइत नहाएब। नहा-खा कऽ कनी अराम करब पछाइत रमेश काका ऐठाम जाएब।”

साठि बीघाबला रमेश कक्काक परिवार। रइस ठाठ-बाठ। पिता- दयाराम- जेहेन धन-सम्पैतसँ सम्पन्न तेहने पढ़ल-लिखल। रमेश काकाकेँ कहियो अपना अमलदारीमे घरक कोनो काज-भार नै पड़ए देलखिन। रमेश काका संगीत-प्रेमी लोक तँए संगीतक बोनमे हेरेलहा सभ जे अबैत तेकर सुआगत संगीए जकाँ करैथ। शुरूहेसँ रमेश

कक्काक झुकाउ संगीत विद्या दिस रहैन। तँए दोसर दिस किछु देखबे ने करैथ। हाइ स्कूलक पछाइत रमेश काकाकेँ सभ साजो-बाज आ सिखौनिहारोक बेवस्था घरेपर पिता कऽ देने छेलखिन। ओना रमेश काका मूलत: गायनक प्रेमी छैथ, मुदा सभ साजो-बाज बजबैक लूरि सिखनहि छला। कृष्णे जकाँ रंग-रंगक संगी, आनो छैन्हे।

पिताक परोछ भेला पछाइत रमेश कक्काक जिनगी एकभग्गू भऽ गेलैन। अपन मण्डली, बजन्त्रीकेँ दरमाहा-भोजन दऽ अपने ऐठाम रखै छला। खेती-गिरहस्ती दिस नजैरे ने जान्हि। जाबे विधवा माए जीलिखिन ताबे महाजनियौं आ खेतीओ-पथारी जीवित तँ रहलैन मुदा निच्चाँ मुहेँ हहरऽ लगल छेलैन। नोकर-चाकरक हाथे काज चलने उपजो-वाड़ी आ महाजनियौं, दिनो-दिन कमए लगलैन। मुदा तैयो पिताक परोछ भेला पछाइत पाँच बर्ख धरि, जाबे माए जीलिखिन ताबे, कर्ज-बर्ज आ खेत-पथारमे हाथ नइ लगल छेलैन।

शास्त्रीय संगीतक प्रेमी रमेश काका, अपना ऊपर भार एलो पछाइत जिनगीमे कोनो बदलाउ नइ एलैन। जहिना माता-पिताक अमलदारीमे तहिना पछाइतो रहलैन। जइसँ साले-साल चीज-वौस खेत-पथार बिलटए लगलैन। साले-साल खेत बेचऽ लगला। पिताक अमलदारीक जेहेन जिनगी आ मन बनि गेल छेलैन ओ बनले रहि गेल छेलैन, मुदा साल दसेक करीबसँ जखन ढहैत सम्पैत दिस नजैर उठि पहुँच गेलैन जे किछु दिनमे सम्पैत ओरा जाएत, मुदा जिनगीक कोन ठेकान अछि, पछाइत केना चलत..? एहेन विचार मनमे ओही दिनसँ चलि अबैत रहैन जइ दिनसँ अपना मण्डलीक लोक सभ, जेना कियो ठेका वादक, तँ कियो वीन वादक, कियो मजरी बनि घुरघुराइत तँ कियो राधा-कृष्ण बनि नचैत छेलैन, ओ सभ कियो मण्डली बदैल-बदैल अठजाम, नवाह, अध-मासी, मासी, सबा-मासी, तीन-मासी, छह-मासी, बर्ख, तीन-बर्ख, तेरह बर्खक चौबीस घन्टाक धुनमे समए

लगबए लगला...।

..मुदा अपने? पँच-पँच घन्टा एक स्वर-साधनामे लगबै छला ओ भग्न हेबे करत किने। की ओ ओइ स्थानक भग्नावशेष जकाँ ने तँ भऽ गेला?

रंग-रंगक विचार महेन्द्रक मनमे उठए लगल। जे रमेश काका मरि नहि रहला अछि तँ कुहरि जरूर रहला अछि। मुदा लगले रमेश काकापर सँ नजैर हेट भऽ अपनापर ऐबते महेन्द्रक मनमे उठल जे की हुनके जकाँ अपनो कुहरै छी? से तँ नइ कुहरै छी। मुदा छैथ तँ वएह गुरु। तखन हुनके किए एना भेलैन? मुदा किछु छैथ तँ ओ गुरुए छैथ आ हम चेले छिऐन किने। तँए अपना मुहेँ की बजै छैथ से सुनला पछातिये किछु विचारब नीक हएत। जँ केतौ बुझैमे नइ औत तँ शंका उठा समाधान करा लेब। मनमे अबैत-अबैत महेन्द्रक विचार जेना तनल। एगारहक समए भऽ गेल छेलइ। रमेश कक्काक नहाइ-खाइ-अराम करैक समए छैन, अखन जाएब नीक नहि। तैबीच ताबे अपनो नहा-धो खा-पी किछु लोट-पोट कऽ लेब। तीन बजे हुनका लग हाजिर भऽ पहिल पतियानीमे बैस चाहो पीब, पानो खाएब आ अपन फुलाइत मुँह बन्न केने रमेश कक्काक विचार सुनि मनमे घोंटब। जाबे घोंटब नइ ताबे बूझब केना? कौआ कान नेने उड़ैए, तइ पाछू दौड़ब थोड़े नीक हएत, दुनू हाथे दुनू कानमे आँगुर दऽ देख लेब जे केतौ गुज्जी-तुज्जी ने तँ अँटकल अछि। उठि कऽ महेन्द्र नहाइले विदा भेल, मुदा कलेपर मनमे उठि गेलै, हहरैत जिनगीक सभ किछु हहरऽ लगै छइ। रमेश कक्काक आब ओ देवियो आ कराहो धीरे-धीरे छीना रहल हेतैन। तँए एहेन खसैत-पड़ैत जिनगीक दर्शन-ले विचार करब नीक। जखने एते दिनपर भेँट करए जेबैन, आ बुझि रहल छी जे ओ खसि-पड़ि रहला अछि, तखन किछुओ दिनक खुशी नइ देबैन सेहो केहेन हएत। मुदा ईहो तँ विचारणीय ऐछे जे जखन मन-माफित उपार्जन करै छी तँ किए

ने किछु अपनो प्रदर्शन गुरु-आश्रममे करी। मन मानि गेलै जे ऐगला खेप जे आएब तैबीचक जिनगीक भार उठा कहबैन, गुरु दछिना दिअ?

अढ़ाइए बजे तैयार भऽ कऽ रमेश काकासँ भेँट करए विदा भेल। ओना चाहपत्ती, कौफी आ साल भरि चलैबला दूधक पैकेटक संग आरो सनेस सेहो लऽ लेने रही तँए समैसँ पहिनौं पहुँचब अनुचित नहि। अनुचित ओतए जेतए धरवारीकेँ बिनु परेखने कखनो पहुँच जाइऐ। ओना एहनो धरवारी तँ छैथे जिनका अपनासँ अधिक वौस नै छैन, तिनका ऐठाम समै-कुसमैक जँ ठेकान नइ राखब से केहेन हएत।

रमेश काका सुति उठि, मुँह-कान धो पानि पीब दरबज्जाक ओछाइनपर बैसते रहैथ तखने पहुँचलौं।

नीक जकाँ बैसलो ने रहैथ, बैसैक ओरियान करिते रहैथ कि पाछूएसँ कहलयैन–

“गोड़ लगै छी काका!”

पाछू उनैट तकलैन कि नजैर पड़लयैन। तैबीच चीज-वौसक कार्टून दुनू हाथसँ बढ़बैत कहलयैन–

“काका, ई काकीकेँ सुमझा दियनु।”

‘काकी’क नाओं सुनि रमेश काका चोटे दुनू हाथसँ कार्टून पकैड़ बजला–

“बैसह, पहुँचेने अबै छी।”

आँगन दिस बढ़ला तँ पाछूसँ कहलयैन–

“काका, चाहपत्तीक संग कौफियो अछि, भलेँ अपने फुटा-फुटा फुटमे पीब, मुदा अखन दुनू मिला तीनू गोरे संगे बैस कऽ पीबो करब आ गप्पो करब। बहुदिनक गपो बाँकी अछि। हम तँ अपनेक रूप

काकियोमे पबिते छी।”

काकी चाह बनबैले चुल्हि पजारिते रहैथ कि रमेश काका कहलखिन–

“कनी थमि जाउ। पहिने कार्टून खोलि वौस निकालि लिअ। महेन्द्र बाजल जे अही वौसक चाह पीब।”

कार्टून खोलिते काकी-ले आनल साल भरिक वस्त्र, ओना सालक लेल मौसमी वस्त्रक खगता होइए मुदा एको मौसमक एहेन वस्त्र तँ होइते अछि जे सालो भरि चलैए। वस्त्रक संग मंगटिका तैसंग खेबो-पीबोक किछु वौस आ किछु नगदो-नारायण देख दुनू बेक्तिक छाती उमैड़ गेलैन। ललियाइत मनो आ मुहोँ नेने रमेश काका दरबज्जापर पहुँच कहलैन–

“बौआ, केते दिनपर गाम एलह?”

तैबीच चाहो आ बिस्कुटो नेने काकी पहुँचली। केना कहितिऐन जे बिस्कुट नइ खाएब। जुग उनैट गेल अछि, खैयो-पीबैमे बम-बारूद तँ चलिते अछि। तीनू गोटे संगे बैस चाहो पीबैत आ एक-दोसरकेँ देखबो करैत, मुदा बजैत कियो ने किछु। महेन्द्रक मनमे रहै जे रमेश काका बजता ओइ अनुकूल अपनाकेँ ठाढ़ करब, मुदा रमेश काकाकेँ पुश्तैनी टुटैत विचारमे अखनो एहेन विचार मनमे रहबे करैन जे अपन हारल-मारल जिनगीक बेथा दोसरकेँ केना कहबै? फेर मनमे ईहो होइन जे महेन्द्र चेला छी, कहियो किछु छिपौलिऐ नइ, मुदा फेर ईहो होइन जे अपन घर-परिवारक बाते कहिया कहलिऐ जे छिपौलिऐ नहि। फेर होइन जे तीनियेँ बर्खमे एते निच्चाँ उतैर गेलौं, सेहो बात तँ नहियेँ अछि, आस्ते-आस्ते उतरैत तँ रहबे केलौं। सेहो तँ नहियेँ कहलिऐ। कहबो केना करितिऐ। कोनो कि बुझै छेलिऐ आकि मनमे उठबो कएल रहए जे एहेन दिन देखए पड़त। एकाएक जखन तीन बर्खक

बीच संगी छोड़ि चलि गेल, परिवारक लछमी पड़ा गेली, असगरे घरमे औनेबो करै छी आ वौएबो करै छी। से कहबो केना करितिऐ।

..विचारक खण्डन-मण्डनमे रमेश काका नीक जकाँ ओझराएल रहैथ। हमरा हुअए जे रमेश काका जे बजता, तइमे अपनो विचार सामिल करब, मुदा जँ बजबे ने करता तखन सम्मिलित केतए हएब। बजलौं–

“काका, अपने तँ नमहर जिनगी जीब दुनियोँकेँ बहुत देखलिऐ, हम तँ नव-नौतार छी, तँए पहिलुका समए आ अखनमे कि दूरी बनल बुझि पड़ैए?”

हमर बात सुनि रमेश कक्काक ह्रदए चनैक गेलैन। शीशा जकाँ चुरम-चूर भऽ गेलैन। मुदा चनैकतो मनमे विचार चमकबे करैन, बजला–

“बौआ, ओ समए ओहन छल, जइमे शास्त्रीय संगीत अपन जुआनी पेब खूब फुलाएल फड़ल छल। जिनगीमे औझुका जकाँ भाग-दौड़ नइ छल। मुदा तँए दौड़म-दौड़ नइ छल, से बात नहि। समटल जिनगी, समटल किरिया-कलाप छल। पैघ दरबार होउ आकि मध्यम, सबहक बीच संगीतसँ जुड़ाउ अनिवार्य छेलइ। मुदा..!”

‘मुदा’ कहि रमेश कक्काक मनमे पाछूसँ जेना धक्का लगलैन। धक्का लगिते बजैक क्रम भंग भऽ गेलैन। धक्का ई लगलैन जे समैकेँ पकैड़ लेब, यएह तँ जिनगी छी। मुदा से तँ बुझितो छुटि गेल। समैए ने जीव-जन्तुसँ मनुख धरिकेँ ऊर्जा दऽ ऊर्जवान बनबैए। मुदा लगले मन मलकि गेलैन, मलैकते भेलैन जे मनमे एहेन तँ ने भ्रम भऽ गेल अछि जे जे अपने भोगै छी ओ महेन्द्रोकेँ कियो कहि देने होइ जे से ओहो बुझैत हुअए। जँ ओ बुझैत हएत तहन जँ छिपाएब तँ सद्य: झूठ बाजब भेल। झूठ तँ जिनगीक ओहन मूठ छी जे हाथसँ छुटिते निकैल

जाइए। जे छिपबए चाहै छी तँ ओ संगीक संग बिसवासघात हएत...।

..मनमे बिसवासघात उठिते पसीज गेला। पसिजते मनमे उठलैन जे किए ने महेन्द्रसँ जहिया पहिल भेँट भेल तहियासँ आइ धरिक सभ विचारक आदान-प्रदान कऽ ली। फेर लगले भेलैन जे जखन आगू भऽ कऽ महेन्द्र बाजल तखन किए ने ओतैसँ विचार शुरू करी। किछु भेल तँ महेन्द्र डारि भेल। फेर मन बदललैन। बदललैन ई जे शुरू केम्हरसँ करी। अखनुक जे वीर्तमान अछि तेम्हरसँ आकि बच्चामे जइ दिन भेँट भेल तेम्हरसँ। जँ तेम्हरसँ शुरू करब तँ भविस छुटि जाएत। नमहर इतिहास माने नमहर जिनगी अछि। मुदा भूतो-भविसक बीच वर्तमान अछि, यएह ने एकटाकेँ मुँह आ एकटाकेँ नाँगैर पकैड़ गणेशजी जकाँ खेलाओत। रमेश काका बजला–

“बौआ, अपने तँ सुरखीपर जोड़ल घरक देवाल जकाँ रहलौं, ढनमना गेलौं, मुदा तूँ तँ से नइ छह। आजुक समए तोरा संग छह, तँए किछु अपन पहिने कहह।”

महेन्द्रक मनमे उठल जखन दुनू बेक्तिक शेष जिनगीक भार उठबैक शक्ति अपना कन्हामे अछि तखन किए ने श्रवणकुमार जकाँ दुनूकेँ पाँचो धामक दर्शन कराइए दिऐन। महेन्द्र बाजल–

“गुरुदेव, अपने शोक-पीड़ा मनसँ हटा लिअ। मने रोगो आ सोगोक घर छी, जे देहक पीड़ाक अधीन भऽ गेने अधीनस्थ कबूल कऽ लइए, मुदा अछि तँ ओ स्वतंत्र। इजोते-इजोत ऐ दुनियाँमे छइ। ओना ई बात जगह देख उचित-अनुचित सेहो होइए। जे ऐठाम अनुचित भेल, मुदा उठैत जिनगी, खसैत जिनगी आ ठमकैत जिनगीक बुधियो आ विवेको घुसुक-फुसुक करैत ठहकबो तँ करिते अछि। ई सोचि बजलौं, तँए एकरा अनुचित नहि लेल जाए।”

सोग-पीड़ा सुनि रमेश कक्काक मनमे, जहिना शरदक पहिल-

दोसर-तेसर साँझ आ सिंगहारक महमही जेना द्रूत गतिसँ पसरैत भरि राति अपन घर-आँगनकेँ महमहबैत रहैए तहिना महमहा गेलैन। बजला–

“की दिन छल आ की दीन भेल। रामनवमी आकि जन्माष्टमीमे जहिना बच्चा जन्मसँ लऽ कऽ माइक पलना, समाजक सोहरक संग समाजमे पसरल रहैत छल, ओ आइ..?”

‘आइ’ कहि रमेश काका चुप भऽ गेला। रमेश काकाकेँ चुप होइत देख महेन्द्र बाजल–

“काका, जइ समाजमे रहै छी आ जीबै छी, ओ जाल जकाँ पसरल अछि। मनकेँ जेतए फुड़ै छै तेतए रहि जाइ छइ।”

महेन्द्रक बात सुनि सुधनी काकी बजली–

“बौआ, छेलै ते अपनो सबहक, मुदा की भेल, कहाँ भेल, से अखनो कहाँ बुझि पाबि रहल छी।”

सुधनी काकीक बात सुनि महेन्द्र बाजल–

“काका, बड़ीटा दुनियाँ अछि। एते भारी दुनियाँमे वौआएब सोभाविके अछि। तँए जे हूसल से हूसल। आइसँ फेर वएह बुझू। चलू दुनू परिवार संगे रहब।”

महेन्द्रक बात सुनि रमेश कक्काक मेटाइत मन ओहिना फुला गेलैन, जेहेन फूल रोपि, माली बनए चाहै छला।

◌

शब्द संख्या : 2129, तिथि : 20 फरवरी 2015

धुर बुड़ि तोरा बजै ने अबै छौ!

फगुआ पाबैनक दिन। भिनसुरका समए। त्रिकाल भाँग पीयाक सबहक पहिल समए उदित भऽ गेल छल...।

..पाबैनक दिन छी, महावीरजीक स्थानमे भोरेसँ लोक भाँगो पीत आ ढोलक, डम्फा, झालि, मजीराक संग बिरहा-वसन्त गौत आ फगुओ-जोगीरा गेबे करत। सभ दिन तँ लोक खटिते अछि, सरकारी आदमी आकि करखन्नाक आदमीकेँ अठवारे छुट्टी होइ छै, से गाम-घरक परिवारमे माने किसान-परिवारमे थोड़े होइ छइ। ओ तँ छी लूटि लाउ, कुटि खाउ, भिनसर भने फेर जाउ...।

मुदा तँए कि लोक बाप-दादाक लगाएल पाबैन छोड़ि देत सेहो केहेन हएत। गामक आने जकाँ बालगोविन सेहो अपन समैपर सेर भरिक गुड़क गोला नेने महावीरजीक स्थान पहुँच गेल। गामक बारहटा स्थानमे महावीरोजीक स्थान सार्वजनिक स्थल छीहे। तैसंग स्थानकेँ ईहो अधिकार तँ छइहे जे सभ दिनसँ होरी गेबो आ खेबो-पीबोक जगह रहैत आएल अछि, तँए केकरो मनमे शंका रहबे ने करै, तहूमे बालगोविन तँ सहजे मन-मौजी तँ अछिए। कियो अपने मोजेमे ने रहऽ चाहैए।

समैसँ पहिने, माने आनक जुटानसँ पहिने फचाँरि काका भाँग-पत्तीक झोरा लऽ कऽ पहुँच गेल छला। भाँगक पत्तीए ने जड़ि भेल,

मरीच-मसल्ला तँ ओकर मेजन भेल, एहने विचार फचाँरि कक्काक मनमे रहबो करैन। तैसंग ईहो रहैन जे गाममे हमरा सन केते भँगखौके अछि, अखुनका जकाँ कि थोड़े बाढ़ि आबि गेल जे धिया-पुतासँ चेतन धरि खेबे-पीबे करत। तहूमे कि भाँगेटा थोड़े अछि, पुड़िया-पुड़ीसँ लऽ कऽ शीशी-बोतल धरि उपलब्धो तँ भाइए गेल अछि।

मुदा मूल बात फचाँरि कक्काक मनमे ई रहैन जे सभ दिन घरमे त्रिकाल भाँग खाइ-पीबैवला छीहे, खाइक माने गोली पीबैक माने शरबत। ऐसँ सस्ता की भेटत, सार्वजनिक स्थानक मुँहपुरखी छोड़िए देब ने बुड़िपना हएत। से किए छोड़ब। यएह सोचि फचाँइर काका अपना समैसँ तँ नहि, अपने तइसँ पहिने सूर्योदयक समए पहिल खेप भाँग चढ़ा लइ छैथ, मुदा दसगरदा जगह तँ दसगरदा छी, दस गोटेक संगोर छी कनी-मनी आगू-पाछू होइते अछि। तही खियालसँ सात बजेसँ किछु पहिने फचाँरि काका पहुँच धियो-पुतो आ चरो-चेतनकेँ, केकरो ढोलक तँ केकरो झालि, केकरो डम्फा तँ केकरो मजीरा, केकरो सिलौट-लोढ़ी तँ केकरो डोल-गिलासक आदेश बाँटि चुकल छला। सात बजेक करीब बालगोविन गुड़क ढेपा गमछामे बन्हने पहुँचल। गमछा खोलि फचाँरि कक्काक आगूमे ओछाइनपर बालगोविन रखि देलक। भाँग केना बनै, केहेन बनै, केकरा-ले बनै, बालगोविनक मनमे नाचि रहल छल। मुदा अगुरवार बाजब उचित नइ बुझि चुपे रहए। भिनसुरका समए तँए सुर्ज भगवानसँ लऽ कऽ हवा-पानि, गाछ-बिरीछक संग मनुखक मन सेहो ठण्ढ-शीतल छेलैहे। अन्हार कोनो मासक किए ने होउ, मुदा दिनक अपेछा रातिक संग भोरो शीतल रहिते अछि।

गामक लोक थहाथही करए लगल। महावीरजीक मण्डपमे कीर्तन मण्डली बैस ढोलकक औंठी कसऽ लगल। मजीराबला मजीराक डोरी सेरियबए लगल। धिया-पुता बिनु साजे-अबाजे सऽरऽ

रऽ रऽक संग होरी है; होरी है, चिचिआइत...।

..एक दिस बालगोविन ठाढ़ आ दोसर दिस फचाँरि काका बैसल जुति-भाँति लगबैत रहैथ। चँगेरामे गुड़, भाँगक पत्तीक झोराक संग रंग-बिरंगक मसल्ला राखल। अमेनियाँ-पानिसँ सिलौट-लोढ़ीकेँ अमेनियाँ करैत बौका बाजल–

"भाँगक पत्ती केते देबै से काका फुटा दिअ।"

हलहल्ली भरैत फचाँरि काका बजला–

"जे वौस महावीरजी-स्थान पहुँच गेल आब ओ थोड़े घुमि कऽ घर जाएत।"

इशारामे फचाँरि काका बौकाकेँ कहि देलखिन। मुदा सुनि कऽ अनसुनी करैत बौका बात मिलेलक–

"सबटा भाँग पीसि देबइ।"

फचाँरि कक्काक मुहसँ निकललैन–

"हँ।"

'हँ' सुनि बौकाकेँ मनाही करैत बालगोविन मुँह खोललक–

"बौकू भाय, पहिने जेते भाँगक त्रिकाल पीआक छैथ हुनका पुछि लहुन। हुनका सभले फुट कऽ आ जे अनाड़ी आकि बाल-बोध अछि तेकरा सभले वीधे पुरौल जेतइ।"

'वीध' सुनि बौका बाजल–

"हँ, हँ सिलौट-लोढ़ीमे जे लागल-भीड़ल रहत ओ ओकरा सभले रहतै। मीठक लोभे ने ओ सभ शरबत पीअत। थोड़े बुझत जे कोन केहेन अछि। भाँगक रस अखन ओ सभ थोड़े बुझलक हेन। मुदा अपना सभ ते बुझै छी, तँए जानि कऽ एहेन करब नीक नहि।"

फचाँरि कक्काक मन ओइ सीकपर टँगल रहैन जेतए अनाड़ी-

धुनाड़ी निशाँ पीब निसा जाइए आ 'होरी है बलजोरी है', गबैत मुहौं-कान आ देहोमे रंग-अबीरसँ भरैत लूट लूटि कूट कूटि पाबैनक नीक मनोरथ पुरा लइए। अही आवेगमे फचाँरि काका बालगोविनकेँ कहलखिन–

"धुर बुड़ि तोरा बजै ने अबै छौ।"

बालगोविनक नरसिंह मरल नइ छल। नरसिंह तँ ओतए मरै छै जेतए ओकर प्रतिकूल मौसम रहै छइ। बालगोविनक मन तँ ई बात नहि बुझि सकल, मुदा सेवाक जे भाव धार बना बालगोविनक जिनगीक संग प्रवाहित भऽ रहल छै ओइमे किछु खरोंच[5] तँ भाइए गेल रहइ। जइसँ मनमे केतौ ने केतौ चोट लगैत रहइ। मुदा से बालगोविन नइ बुझि पबैत रहए जे खरोंच केतए अछि। ओना चोटो चोटे छी। केतौ विवेकक चोट तँ केतौ बुधिक चोट, केतौ विचारक चोट तँ केतौ मनक चोट, केतौ धनक चोट, तँ केतौ धरमक चोट। जेते चोट तेते चोट्टा, जेते चोट्टा तेते-ले तेते चुट्टा। जेते चुट्टा तेते चुट्टी...। ई सभ बात तँ बालगोविनक मनमे नइ उठल मुदा अपन जिनगीक जे संस्कार- काज करैक ढंग- रहै ओ बालगोविनक मनक आगूमे आबि जाँघ अड़ा घेरि दइ जे जँ लोक अधला काज नइ करत तँ कोन तराजू ओकरा अधला काजक टोकरीमे फेक देत। जँ फेकत तँ ओ अन्याय छी। जँ न्याय-अन्यायक बीच मनुख अपन धार बना नइ चलत तँ ओ जिनगीए की?

ऐ रूपमे बालगोविनक नरसिंह जगल रहइ। मरबो केना कएल रहितै। मरै तँ ओतए छै जेतए अनीति क्रिया पकैड़ कर्ता करैए। ओना बालगोविन फचाँरि काकाकेँ आदरक दृष्टिसँ बेवहार करैत आबि रहल छल, मुदा दुनियाँ तँ दुनियाँ छी, सबहक छी, अपना-अपना लुरिये-

[5] खढ़-पातक समावेश

बुधिये लोक जीबैए। बालगोविनक मनमे ओ बाल अचेतन-देवता मन्दिरमे तेना बैस गेल जे बान्ह-छान्ह तोड़ैले सनसना कऽ आगू आबि गेलइ। मुदा तैयो बालगोविन पएर पकैड़ मनकेँ मनाही करै जे फचाँरि काकाकेँ आन जे बुझौन, मुदा बालगोविन तँ ई बुझिते छैन जे समाजक बीचमे सदिकाल फचाँरि कक्काक बोल खापड़िक लाड़ैनसँ लड़ैत तीसी जकाँ चनचनाइते रहै छैन, जे समाजमे सभसँ नमहर बुड़िबक के तँ फचाँरि काका। जेकरा पाछू दिन-राति लगल रहै छी, सएह सभ नइ मोजर दइए। मुदा तँए कि फचाँरि काका पाछू हटि जेता, सेहो तँ नहियेँ अछि। केतबो लोक किए ने बुझै मुदा अपने तँ बुझिते छी, जे जेकरा-ले चोरि करै छी सहए चोर कहैए, अपन मुँह छै बजैए। मोबाइल जकाँ रिसीभ करबै तखन ने। मुदा चोर लग आबि फचाँरि कक्काक मन अँटैक गेलैन। जेना रस्ता घेरि कोनो बाघ-सिंह बैसल हुअए। फचाँरि काका, जे समाजमे सभसँ मानल-जानल जाइ छैथ ओ बालगोविन सन मौगमेहराक बातक मानिए केते देथिन। थकमकाइत फचाँरि काका आ सकपकाइत बालगोविन।

बालगोविनक मनमे उठल, एक तँ ओ (फचाँरि काका) पहिने दुतकारलैन, तैसंग 'बुड़ि' कहि बेकूफ कहलैन, तैपर सँ 'बजै ने अबै छौ' सेहो कहलैन। की बालगोविन जनकबाबाक दरबारक अष्टावक्र अछि? मन पाछू उनैट तकलकै तँ बुझि पड़लै जे पाछूसँ दौगल अबैत किछु मनमे पइस गेलइ। पैसते मुँह फुटलै–

"काका, हमरा बजै ने अबैए आकि अहाँकेँ बुझै ने अबैए।"

बालगोविनक बात सुनि, जहिना बाघक आँखिपर जाधैर मनुखक आँखि अँटकल रहैए ताधैर ओकरा एको डेग बढ़ैक साहस नइ होइ छै, तहिना फचाँरि काकाकेँ भेलैन। बजैक वेगमे बालगोविन बाजि देलक, एहेन बात नहि, अपन कमख्या देवीक वरदान ओते

मनकेँ सक्कत बनौने रहै, जे किछु ने। जइ दिन बालगोविनक जन्म परिवारमे भेल तइ दिन जहिना पिता जशोदाक ललना बुझैत, तहिना माए पिताकेँ नन्दक पलना बुझैत बालगोविनक सेवा करैत रहली। सात बर्खक बोलगोविन बिआह करै जोकर भऽ भेलैन। बचकानी बिआह तँए बचकानी बर-कन्याँ। जहिना बचकानी बर-कन्याँ तहिना बचकानी बिआहक दिन। अखुनका जकाँ सभ वीध बिआहेक राति होइ तँ भाय बड़-बढ़ियाँ, मुदा मीठगर-नोनगर दुनू एक्के साँझ होइ, से तँ विचारऽ पड़तह। मुदा से सभ बात नइ रहै, बाल-बिआहक चलैन, तँए ढहलेल-बकलेल सभ बर-कन्याँक बिआह होइते आबि रहल अछि। बकलेल-ढहलेल ऐ दुआरे जे बिआहो एकटा संस्कार छिऐ, जे बिआहक पछातिये भेटै छइ। अखुनका जकाँ बर-कन्याँक बिआहमे दॉव-पेँच करब सेहो नहियेँ छल। ओना धुरतैक आड़ि आइए नइ सभ दिनसँ पड़िते आबि रहल अछि।

साते बर्खक अवस्थामे बालगोविनक बिआह करा माए-बाप बेटाक संस्कार बेटाकेँ दऽ देलैन। मुदा बच्चा बालगोविन अखन कमाइ-खटाइ जोकर नइ, तहूले तँ उपाय माता-पिताकेँ छेलन्हिहेँ जे जखन कमाइ-खटाइ जोकर बेटा-बेटी होइ छेलै तखन दुरागमन होइ छेलइ।

बीस बर्खक अवस्थामे बालगोविनक माता-पिता आजीज भऽ गेला जे भरिसक बालगोविनकेँ मोछ-दाढ़ी नइ हएत। ओना सोलहसँ अठारह बर्खक अवस्थामे बरक दुरागमन होइए से बालगोविनकेँ मोछे-दाढ़ी खा गेल। गामो आ समाजो तँ ओहने अछि जे अनेरे साले-साल, मासे-मास, दिने-दिन आकि छने-छन-पले-पलक हिसाब जोड़ै पाछू तवाह रहत, भेल तँ एक बेर जन्म, से तँ सभकेँ बुझले छै, दोसर बेर बिआह-दुरागमन, तेकर ठेकान तँ ऐछे जे सोलह-अठारह बर्खमे लोककेँ मोछ-दाढ़ी भाइए जाइ छइ। अही धोखा-धोखीमे

बालगोविनक दुरागमन दू-तीन बर्ख पछुआ गेल। मुदा तइले बालगोविनकेँ मिसियो भरि मनमे कुवाथ नइ भेल। नि-धन्धी बालगोविन, जेतए धड़ तेतए घर मानि चलनिहार! ने खाइक ठोकान आ ने रहैक ठेकान। तइले माइयो-बापकेँ मनमे कोनो तेहेन कठानि नइ जे किए बालगोविन अढ़ौलासँ जहिना अपनो काज करैए तहिना अनका अढ़ौलासँ अनकरे करैए, मुदा तैसंग ईहो तँ छइहे जे खेबो-पीबो तँ करिते अछि।

ओकरा कमाइके कोन खगता छै जखन दुरागमन हेतइ अपने खगतै, अपन करत, तइले हमरा की। अनेरे तैपर सँ लोको कहत बेटा-कमाइपर फुरफुरी छइ। जखन बापक बेटा हमहूँ छेलिऐ तखन हमरो भेल आब की हमरा अछैत बालगोविनकेँ नइ हेतइ। बालगोविन तँ सहजे बालगोविने बनि गेल अछि, ने पुरुख ने मौगी। तइले बालगोविनकेँ मनमे कुवाथ हेतै किए। अपन शब्दकोषसँ बालगोविन ओमिट कऽ मनसँ हटा नेने रहए। तँए जेहने अपन घर तेहने दोसराक घर बुझि भाए-बहिन, काकी-दादीक सम्बन्धसँ तेना मिलि-जुलि गेल जे अपनासँ उमेरक छोट बलिगोविना भैया कहै तइले बालगोविनकेँ मनमे कोनो बेथा किए हेतइ।

बीस बर्खक अवस्थामे बालगोविन दुरागमन करए सासुर गेल। मोछ-दाढ़ी रहबे ने करै जे माथक केशक आड़ि-कोण बनबैत, तँए नौआक काज भेले ने रहइ। मुदा से बात नइ रहै बालगोविनकेँ ऊपरका ठोरक (मोछबला ठोर) दुनू कोणपर एकहकटा मोछ जनमल। नीचला ठोर (माने दाढ़ीबला) मे तीनटा दाढ़ी जनमल। मुदा किए परिवारमे ओइ मोछ-दाढ़ी-ले कोनो विचार होएत। पुरुख छी सोल्होअना दाढ़ी-मोछ लऽ कऽ सासुर के कहए जे सासुरक अतिरिक्तो गाम जा सकैए। ओ पाँचो दाढ़ी मोछ नेने बालगोविन दुरागमन करए सासुर गेल। भाय सासुर तँ सासुर छी तहूमे बिआह-

दुरागमनक। नान्हि-नान्हिटा सरही आम कलकतिया-कृष्णभोग आकि सबुजा सन-सन बड़का आमक डारिमे जुटि कलमी भऽ जाइए, आ...। जखने बालगोविन ससुरक दुआरपर पालकीमे पहुँचल कि कौछक दीपक इजोतमे सारि सभ पाँचो मोछ-दाढ़ी देख नेने छलि, मुदा दुआरपर आएल अतिथिकेँ समैक संग ने सुआगत हएत। तहूमे भरि रतुका रहैक बात अछि, हमरो सबहक नानी अण्डा नै पाड़त, से बात तँ नहियेँ अछि। तखन सभ सवुर बान्हि चुप रहि गेल, मुदा आन-आन जे बरक रूप-रेखा देखने होथि मुदा सारि सभ वएह पाँचो मोछ-दाढ़ी देखलक।

एक तँ दुरागमन जे बिआहक उनाड़ी भेल, अधिक विधि-बेवहार तँ बिआहेमे भेल रहै छै, आ किनको उपनैनेमे भेल रहै छैन, तँए दुरागमन, काजक दृष्टिए जेते भारी- नमहर- हुअए मुदा विधि-बेवहारक लेखे संस्कारसँ बाहर अछि। काजक दृष्टि भारी ई जे एक समाजक कनियाँ दोसर समाजमे प्रवेश करती, अइले कि सबहक खगता अछि। खेला-पीला पछाइत बालगोविन सारि सबहक बीच आबि गेल। बिआह-दुरागमनमे समाजे आ माइए-बापटा कें नहि बरो-कनियाँक मनमे खुशीक जुआरि ऐबते अछि। सारिक बीच अपनाकेँ देखते बालगोविनकेँ दरबज्जामे टाँगल फोटो मन पड़ि गेलइ। एकटा कृष्ण सइयो रानी! मनक उदगार जगलै रहै जे आरो बढ़ि गेलै, तही बीच एक गोटे, जे साँझसँ हियौने रहै, बाजल–

"पाहुन, एकटा कहू ते, दूटा केहेन चिड़ैकेँ दोस्ती होइ छै?"

बालगोविन तँ बालगोविने, वेचारा चिड़ैक मानैयेँ ने बुझलक। केशमे चलैबला केतौ ककबा कहबैए तँ केतौ चिड़ै-चिरनी। अकबका गेल। बाजल-

"हमरा ते बुझले अछि पहिने अपन बहिन सभसँ पुछि लियनु जे

किनका सभकेँ बुझल छैन आ किनका सभकेँ बुझल नहि छैन।"

बालगोविनक बहटारब गाए-महींस जकाँ दोसर सारि बुझि गेल छलि, बाजल—

"जहिना दूटा ओहन मनुखक दोस्ती होइ छै तहिना दूटा चिड़ैक दोस्ती होइ छइ।"

हँसैत बालगोविन बाजल—

"अपना दुनू गोरेक मुँह-कान की एक रंग नइ अछि।"

अपन दाॅवकेँ सुतारैत तेसर बाजल—

"कोसीकातक कास-पटेर जकाँ जँ मुँहमे पाँचटा झाड़ जे जनमल अछि ओ दुनू गोरेक मुँह-कानकेँ कहियो एकरंग बनए देत?"

हारल पाशा बालगोविनक। बाजल—

"से तँ नहियेँ बनए देत!"

"तखन?"

"अहाँ जे कही।"

"कही नइ! पाँचो गोरे एकहकटा उखाइर फेक देब।"

जेना सुनि कऽ बालगोविनक मन हल्लुक भेल, तहिना बाजल—

"अहाँ ऐठाम छी जेनाके रहए दैक मन हुअए तेना रहऽ दिअ मुदा एकठाम रहू।"

बालगोविन गामक ओहन युवक जे आँगनमे जँ पत्नीकेँ चुल्हि पजारैत देखैत तँ बाल्टीनमे पानि भरि अनैत। जँ लोहियामे आगिक ताव आ धुआँमे पत्नीकेँ तरकारी लाड़ैत-चाड़ैत देखैत तँ सिलौटपर मसल्ला पीसऽ लगैत। जइसँ गामक लोक ने पुरुखे बुझैत आ ने मौगीए। मुदा समाजिक पक्ष ओकर ई छेलै जे बँसबिटीसँ कियो जँ असगरे बाँस काटि अनैत तँ तेकरा देखते पाछूसँ पकैड़ बाँसक छीपकेँ

हिलऽ-डोलऽ नहि दइत। वंशे जकाँ ने बाँसो अछि जेकरा जँ जड़ि पकैड़ उठाएब तँ छीप माटिपर लटैक जाएत, जँ बीचमे पकैड़ उठाएब तँ छीपो आ जड़ियो माटि पकैड़ लेत, जँ छीप पकैड़ उठाएब तँ जड़िये ने उठत! मुदा दू गोरे मिलि उठौलासँ सोझ-साझ बाँसो रहिते अछि।

◌

शब्द संख्या : 1996, तिथि : 23 फरवरी 2015

लेहाज

ठक्कन आ वरस्पैत दुनू एके गौआँ, एके कौलेजसँ बी.ए. पास सेहो केने अछि। हारि-थाकि दुनू गाम आएल। गाम आएल नहि, रहबे करए, मुदा ठौर नइ भेटने माने नोकरी नइ भेने दुनू गाममे रहि किछु करैक विचार केलक। ओना ठक्कनो आ वरस्पैतो दू जातिक सेहो आ दू टोलोक। ओना कहैले दू टोलक अछि, मुदा से प्राकृतिक नहि, एके टोलमे दू जातिक सीमा रहने दू टोल भेल अछि। मुदा तैयो दुनू गौआँ, पढ़ै-लिखैक संगी आ दोसो तँ रहबे करए, एकरा के नकारत।

मुदा सभ किछु रहितो दुनू सदिकाल अपने विचारमे ओझराएल रहए। मुदा तैयो कखनो संगी बनि फगुओ गाबए तँ कखनो दुनू एक-दोसरकेँ देख निमग्न भऽ जाए जे फुटैयो पाएब कठिन भऽ जाइत। जे जनमौटीक समदौन छी कि मरौटीक। मुदा जहिना बकलेलो-ढहलेल बेटा किए ने होउ मुदा बापक तँ सोने छी, तहिना ने दोस्तियो अछि...। ऐठाम आबि दुनू गोरेक मनमे दोस्तीक मर्म बढ़ि जाइ, तँए एक-दोसर छाती-मे-छाती मिला किछु निर्णए कऽ दुनू गोरे ओही रस्ते चलैक कोशिश करऽ लगए। मुदा लाख मिलानक पछाइतो गरमिलान भाइए जाइ, आ जेतेकाल गरमिलानक झोंक मनमे चढ़ल रहै तेतेकाल टोका-टोकी बन्न, मुदा सौंझुका कौआक पनचैती (भरल पेट) आ भोरुका पनचैती जँ एके रंग करत तखन तँ भेल वंश-वृद्धि। सभ काग-

भुसुण्डीए भऽ जाएत। काग भुसुण्डी हुअ कि नइ हुअ मुदा दुनू कि कोनो औझके दोस छी आकि जहिएसँ गामक स्कूलमे नाओं लिखौलक तहिएसँ अछि। धिया-पुतामे जे गुल्ली-डण्टा आकि चीका-चीका खेलाइमे झगड़े भेलै तेकरा पुरनाएल कागज जकाँ फाड़ि कऽ फेक देत आकि अनेरे मनक अलमारीमे भरने रहत। अपने दुनू अपने मने पनचैती कऽ फड़िया लिअए जे जखन झगड़े ने दन भेल, तखन अनेरे जे चुन-तमाकुल बन्न राखब ई बुड़िपना छोड़ि किछु ने भेल। मन मानिते दुनू एकठाम तमाकुलो खाए लगए आ गपो-सप्प करए लगए...।

..तहिना मिलान भेल रहइ। ठक्कनक हाथमे तमाकुल-चुन आ वरस्पैतक हाथो खाली आ मुहोँ खाली, आ तैपर जँ बोलो खाली तखन तँ भेल बराबरीक दोस्ती...। ई बात मनमे ऐबते वरस्पैत बाजल—

"ठक्कन दोस, एकटा बात बुझै छिऐ जे दुनू गोरे जे एकठाम तमाकुल खाइ छी तइसँ केते नीक होइए?"

हाथमे तमाकुल-चुन तैपर औंठासँ तरहत्थीपर मैलब, ठक्कनकेँ जेना आरो झोंक चढि गेल होइ तहिना मुँह फाड़ि बाजल—

"नहि।"

जहिना भनसिया लग बैस मसल्ला सबहक चर्च केलासँ सुआदिष्ट तरकारी भेटै छै तहिना वरस्पैतकेँ भेटल। बाजल—

"दोस, अपना दुनू गोरे गौआँ छी, काजमे घटी-बढ़ी होइते अछि से हेबे करत। तहूमे जे नमहर काज रहल तइमे आरो नमहर होइ छै मुदा अहूकेँ तँ नहियेँ नकारल जाएत जे जैठाम दू गोरेक काज एक गोरे करत आ बीचमे काजक विचारक जे आदान-प्रदान दोसरक हाथे हएत अहीसँ ने समाजक सम्बन्ध सूत्र सेहो सक्कत हएत।"

वरस्पैतक बात जेना ठक्कनकेँ नचा देलक। बाजल—

"दोस! मन पाड़ू अपन ओ दिन जइ दिन दुनू गोरे कौलेजसँ विदा होइत घर अबैत रही आ विचार केने रही जे घूस दऽ कऽ नोकरी नइ करब। तेकरे ने साफल भेल जे पाँच बर्खक जिनगियो गेल, खरचो भेल आ नोकरियोने भेल?"

चारक ओलतीक पानिक धारकेँ अपन अँगनाक पानिक धारमे मिलबैत वरस्पैत बाजल–

"सएह ने! बुझै के अछि, जे तेकरे साफल दुनू गोरे भोगै छी। मुदा साँझे मुइला तँ केते कानब। तहूमे असगरूआ छी। कब्र खुनए जाएब आकि बजारसँ कपड़ा आनए जाएब आकि कानि-कानि लोककेँ बुझाएब...। छोड़ू पैछलाकेँ, आब किछु करैक विचार करू।"

'किछु करब' सुनि ठक्कन सकपका गेल। सकपका ई गेल जे किछु करब। करैले तँ ऐ दुनियाँमे बहुत अछि तखन किछु की करब। सभटा ने किए करब। माथक मोटरी सम्हारैत ठक्कन बाजल–

"भाय, जखन नान्हिटा संकल्प नेने एतेटा जिनगीक नोकरी गेल तखन जँ अपनो किछु ने करब तँ जीब केना? जीबैले तँ किछु करए पड़ै छै किने?"

सोझराएल ठक्कनकेँ देख वरस्पैत बाजल–

"अनेरे केतए वौआइले जाएब दोस, जेतए छी, जेतबे अछि तेकरे अपन बुझि काज शुरू करब।"

धारक चौरस पेट जकाँ सहटि ठक्कन बाजल–

"दोस, एना किए बुझै छिऐ जे गाम हमर नइ छी आकि समाज हमर नइ छी। जहिना गामक भीतर अनेको गाम अछि तहिना समाजोक भीतर अनेको समाज अछि। अपन समाज अपने ने गढ़ि-मढ़ि, जोड़ैत आगू नम्हरो आ नीको बनै छइ।"

सहीटमे सहटैत ठक्कनकेँ देख पाछूसँ ठेलैत वरस्पैत जिगेसु बनैत बाजल–

"दोस, की कहलिऐ समाजोमे समाज छै?"

तैबीच दुनू गोरे तमाकुलक पहिल पीत फेक लेलक। मनो हल्लुक भेलै जइसँ बजैक वीणाक तार मनमे दुनूक झनझनाएल। ठक्कनकेँ जेना ठोँठेमे बैसल रहै तहिना बाजल–

"हँ मीत, एकटा अछि अपन समाज आ दोसर अछि आन समाज।"

बुझनुक वरस्पैत, मुदा अपनाकेँ अनाड़ी बनि जिज्ञासा करैत। जिज्ञासा ई करैत जे केते दूर तक हमर बात ठक्कन पकैड़ रहल अछि। जेतऽ पकड़त तेतऽ बुझि जाएब आ ओतै डेरा दुनू गोरे खसा धरमशाला बनबैत सीता-राम सीता-राम मरैबेर तक करैत रहब। देखनिहार-बुझनिहार बूझत जे राम-राम करै छी कि मरा मरा...। बाजल–

"भाय, एकटा बात हमरा मनमे हूलि-मालि करैए, से कनी फरिछा कऽ बुझा दिअ।"

वरस्पैतक विचारक गुरु-गंभीरत्वकेँ पकैड़ ठक्कन धुर-झार ओ बात बाजल जे कक्काक मुहेँ सुनने छल–

"भाय, अपना दुनू गोरे स्कूलमे विद्यार्थी समाज बनि, जे सक लागल केलौं, तहिना आनो-आन समाज अछि। शिक्षक समाज, प्रोफेसर समाज, डॉक्टर समाज, इंजीनियर समाज, जाइतिक समाज, सम्प्रदायिक समाज ने जानि केते समाज अछि।"

वरस्पैत बुझि गेल जे बहैत कमला धार जहिना अपन बास स्थलसँ जल बोझि अनवरत बैशाख-जेठक रौद बरदास करितो माने रौदचट्टा समए गमबितो चलैत रहैए तहिना जँ ठक्कनकेँ सह देब तँ

आगूए-आगू घोड़ा जकाँ दौड़ऽ लगत। बाजल–

"ठक्कन भाय, तूँ ते तेते नमहर ओझरीक बात कहऽ लगलह जे हमर मने वौआ गेल।"

जहिना कोनो हरेलहा-भुतिएलहा बच्चाकेँ लोक पकैड़, बुझबए लगैए जे बौआ तूँ हरेलह हेन कहाँ, परिवारबलासँ कनी छुटि गेलह हेन, तोरा माए-बाप लग पहुँचा देबह, कानह नहि। तहिना वरस्पैतकेँ बुझि ठक्कन बाजल–

"भाय, अपना दुनू गोरे आब कि ऐ समाजमे छह-पाँच करब, जखन सभ किछु रहितो, समाजमे किछु ने अछि तखन तँ अपन ओझरी केना सोझराएब, सएह ने जरूरी अछि। अनेरे जे उड़ल कौआ गनैत रहब, तइसँ की अपने भेटत आ की समाजकेँ भेटतै।"

जे बात वरस्पैत ठक्कनसँ बजबए चाहै छल तइ बातसँ ठक्कन बहैक गेल छल। मुदा धारक पानि तँ आड़ि बन्हने नइ रोकाएत, ओकर तँ मुँह ओरिया कऽ घुमबए पड़त। बाजल–

"भाय, समाजक चर्च करै छेलिऐ?"

वरस्पैतक इशारा पबिते ठक्कन बाजल–

"अपना दुनू गोरे दोसो छी, संगियो छी, गौओं छी, पड़ोसियो छी आ पुरुखो छीहे। मुदा जतियाक तेहेन पतिया अछि जे अहाँ दोसर जाइतिक समाज भेलौं आ हम दोसर जाइतिक। देखैले एके टोलमे, कनी हटि कऽ दुनू गोरेक घरो अछि, हम तीनियेँ घर अपना जाइतिक छी, टोलक नाउओं दछिनवारिये टोल अछि, मुदा तैबीचमे हमरा तीन टोलिया किए लोक कहैए?"

ठक्कनकेँ जेना मनमे कोनो कचोट जरूर अछि, जँ से नइ अछि तँ किए अपनाकेँ तीनटोलिया परिवार बुझैए? समाजक परिवार छी, एक तँ टोलक टुकड़ी किछु प्राकृतिक बनाबटिक खियालसँ आ किछु

जातिक सेहो तँ बनले अछि। जेना रस्तापर छोटका बच्चा सभ हाथसँ बहारि चिक्कन करैत घर-अँगना बनबैत खेलाइत, अन्तिम रूप दैत-दैत खेलक समैए खेलैत खेलमे बीता हाँइ-हाँइ कऽ उसारि घर-अँगना उजाड़ि-पुजाड़ि आँगन अबैए, तहिना ठक्कनक विचारसँ वरस्पैतकेँ आभास भेल। मुदा आभासो बूझब असान नहि। वरस्पैत बाजल–

"दोस, चारि बजेक समए रहल। दुनू गोरे एकठाम बैस गाममे किछु करैक संकल्प काइए लेब।"

ठक्कन किछु ने बाजल। अवाक बनि वरस्पैतक मुँह देखए लगल...।

चारि बजे वरस्पैत ठक्कन ऐठाम पहुँच बाजल–

"दोसतिनी हाथक चाह अपनेटा पीब आकि दोसो-महिम, गौओं-घरूआकेँ पीआएब?"

ओना बच्चेसँ दुनू गोरे- वरस्पैतो आ ठक्कनो- एकेठाम खेलबो-धुपबो कएल आ एके स्कूलमे नाउओं लिखा पढ़बो-लिखबो केलक, मुदा दिन-तारीख मासक हिसाब दुनूक जन्मक हेरा गेल। जइसँ अखनो तक दुनू नइ बुझि पाबि रहल अछि जे उमेरक हिसाबसँ के जेठ आ के छोट अछि, जेकर चलैत जहिना वरस्पैत ठक्कन-दुनू-बेक्तिसँ गप करैत तहिना ठक्कनो वरस्पैत-दुनू-परानीसँ। ओना लोको दुनूकेँ दुनूसँ गप-सप्प करैत देखैत मुदा दुनूक दू जगह रहने, बिच्चेमे हेरा जाए। ओना हेरा जाएत से नीके हएत, जँ आइयो अहिना हुअए जे भैंसुर मोटर साइकिलमे चुरम-चुर भेल छैथ आ भावो डॉक्टर केना देहमे भीर पट्टी बन्हती। ओना दुनूक खतियान बनैएमे गजपट भऽ गेल रहइ। गजपट ई जे दुनू दू जातिक रहने छठिहारिक राति दुनूक दू विधि विधातो, देवगणो आ दाय-माइक देवीगण सेहो दू दुनियाँक। तँए दू रंगक खतियानी-बोहीमे नाओं दगा गेल। तहिना स्कूलोक खतियान

गजपट भेल। एके दिन दुनू गोरे गामक स्कूलमे नाओं लिखबए गेल, शिक्षक अपन प्रवेश-तिथि देख एके दिन एके तारीख ठीकि देलैन। मुदा तेतबे वरस्पैत आ ठक्कनक संग नहि छल, दुनूक सासुर सेहो एके गाम, तँए दुनूक सम्बन्धोमे बढ़ोत्तरी भाइए गेल छेलइ। बढ़ोत्तरी भेल सढ़ूआरे। नैहरेसँ दुनू सुआसिन बहीना लगौने, तँए समाज बाजियो ने सकैए। बहिनसँ जहिना बहीना, तहिना बहीनासँ बहिनोइयो ने। अखन धरिक जे वरस्पैत आ ठक्कनक बीच गप-सप्प भेल, ओ वातावरणकेँ मोहक बना देलक। चाह पीब दुनू दोस बैस विचारऽ लगल जे आगू की कएल जाए, केना कएल जाए...।

पहिने ठक्कने बाजल—

"भाय वरस्पैत, सभ दिन अहाँ किछु ने किछु नव काज दिस बढ़ैले कहै छी मुदा तेहेन जालमे ओझरा जाइ छी, से केम्हरो तकबो करब से आँखिए जलिया जाइए।"

ठक्कनक बात सुनि वरस्पैत मने-मन विचार करए लगल जे सोल्होअना काजक भार ठक्कन सुमझा रहल अछि, एहेन स्थितिमे अन्ध-भक्तकेँ अन्हरा भगता बनाएब उचित नहि। मुदा लगले मनमे उठलै जे असगरे जे मने-मन चेथारब तइसँ नीक जे मूर्त्त रूपमे काजकेँ निरमौलासँ आगूए-आगू सभ किछु आबए लगत...। वरस्पैत बाजल—

"भाय ठक्कन, जहिना दुनियाँमे काजक कमी नइ अछि तहिना गामो-समाज, परो-परिवार आ बेकतियो-बेकतीक बीच नहियेँ अछि।"

बिच्चेमे ठक्कन बाजल—

"हँ से तँ नहियेँ अछि।"

"तखन?"

"तखन तँ यएह ने जे नीक होइ?"

ठक्कनक विचार पबिते वरस्पैतक मन जेना फुला गेला। बाजल—

"रंग-रंगक काजो समाजमे पसरले अछि। चाहे ओ अर्थ सम्बन्धी होइ कि समाजिक होइ आकि शैक्षणिक। मुदा अखन तँ अपने दुइए गोरे छी, तँए समाजकेँ अँकैत ओहन काजमे हाथ लगबए पड़त जइमे समाज मनसँ संग देत। जखने मनसँ संग देत तखने काजक सफल साफल हेबे करत।"

वरस्पैतक बात ठक्कनकेँ जँचल। समर्थनक भाव जगबैत बाजल—

"भाय, जिनगीमे पहिले काजक नीक-बेजाएपर विचार करब, हमरा ओते नीक नइ बुझि पड़ैए, किए तँ जे सूतल अछि ओ पहिने नीनक भक्क तोड़त तखन ने मन फरीच हेतइ। जखने फरीच हेतइ, तखने नीक-बेजाए बेड़ा लेत। तँए पहिने ओहन काजक जड़ि रोपह जेहेन जगह अछि।"

संगे-संग दुनू गोरे सभ दिन रहल तँए एक-दोसराक बात बुझैमे बेसी तरतम्य नइ होइ। वरस्पैतक विचार जेना ठक्कनक मनकेँ धक्का मारलक। धक्का लगिते बाजल—

"भाय, जखन किछु करैक विचारसँ दुनू गोरे एकठाम भेलौं तखन आइ काजक गोड़ा रोपिए देब।"

ठक्कनक विचारसँ जेना वरस्पैतोक मनमे शक्तिक आभास भेल। शक्तिक आभासो तँ सोभाविक अछि, जखने चारिटा हाथ, चारिटा पएर, चारिटा आँखि आ चारिटा कानक संग दूटा मन एकठाम हएत तखने शक्तिक संचार होइ छइ। बाजल—

"भाय ठक्कन, सभ गाममे सभ रंगक पूजो होइए आ मेलो लगैए, तहिना अपनो दुनू गोरे एकटा मेला करैक विचार करह।"

पूजाक मेला सुनि ठक्कनक मन नाचि उठल। बाजल—

"बढ़ियाँ विचार, मुदा एकरंगाह मेलामे गाम-गामक बीच प्रतियोगिता भऽ जाइ छै जइसँ एक-दोसरकेँ ने देख पबैए आ ने चीन्ह पबैए। तँए किछु नव होइ।"

जेना वरस्पैतक मनमे विचारले छेलै तहिना बाजल—

"नव काजमे नीक हएत जे अपना सभ लछमी पूजो आ चारि दिनक मेलो लगाएब।"

चारि मास आगू लछमी पूजाक समए देख ठक्कन बाजल—

"भाय, लछमी पूजाक समैयक अखन बहू-दिन अछि, लग-पासक दोसर करह।"

ठक्कनक जिज्ञासा देख वरस्पैत बाजल—

"लछमी पूजा सबदिना छी, जहिया गर लागए, तहिये कऽ ली। आसीनमे दुर्गाजीक संग आ कातिकमे कालीजीक संग, तहूमे सालमे चारि बेर दुर्गो पूजा होइते अछि।"

महिनाक अन्तिम पूर्णिमा दिन तँइ करैत विचारकेँ आगू बढ़ौलक। एक तँ गाममे पहिल सार्वजनिक उत्सव तैसंग नव रूपमे लछमीक पूजा, समाजोक नीक सहयोग भेटल। तीस दिनक काजक दौरमे दुनूक विचारो आ बेवहारोमे दूरी बनि गेल। ओना पूजो आ मेलोक प्रशंसा एते भेल जे समाज लछमीजीक स्थायी स्थान बनेबाक विचार सेहो कऽ लेलैन। समाजक सहयोग पाबि वरस्पैत आगूक काज समाजकेँ सुमझा देलकैन, मुदा ठक्कन चन्दाक उगाही देख अपनाकेँ ओइमे साटि लेलक...।

..जहिना वरस्पैत अपन लेहाज बँचा काज केलैन तहिना ठक्कन अपन लेहाज उठा काज केलक, जइसँ समाजमे बदनामियोँ भेलइ।

ऐगला सालक पूजो आ मेलोक सम्बन्धमे अपन विचार दैत

वरस्पैत बाजल—

"समाजक काजक संग छी, जे जेकर छी ओते सहयोग ताधैर दैत रहब, जाधैर अहाँ सभ अपन संकल्पक संग आगू बढ़ैत रहब।"

◌

शब्द संख्या : 1906, तिथि : 26 फरवरी 2015

विचार हेरा गेल

परोपट्टाक सभसँ पैघ प्राइवेट कोचिंग शिक्षण संस्थानमे ज्योतिक नाओं लिखबए देवचन जेता, जे सूचना काल्हिये पुतोहुकेँ दऽ देने छेलखिन। बी.ए. पास सुवोधनी, ससुरक आदेश-बात सुनि चुपेचाप काजक रूप-रेखा मनमे तैयार कऽ लेलैन। एहेन कोनो बीचमे बधो नइ जे प्रश्न रूपमे उठि कऽ ठाढ़ होइतैन। चारिम बर्ख चढ़ि गेल, विद्यालयमे दाखिलाक उचित समए ज्योतिक छी। पाँच बजे भोरेसँ काजमे लगि जाएब। काजो कम नहि, बेटीक संग ससुरकेँ खुऔनाइ-पीऔनाइ, तैसंग बेटीकेँ वस्त्राभूषण सजौनाइक संग साज-श्रृंगार सेहो करब अछि। सात बजे धरि सभ काज सम्पन्न करैत दुनू गोरेकेँ सुढ़िऔनाइ अछि। तइमे जँ एको मिनट बिलम हएत, तँ गहुमन साँप जकाँ ससुरक फुफकार सुनए पड़त। से किए हुअ देब..?

सुवोधनीक मन सुवोधनीकेँ धकलैत कहलक। ज्योति बेटी विद्यालय जाएत। पाँच बजेसँ काजमे लगल सुवोधनी पौने सात बजे काज निपटा साँस छोड़लैन।

ज्योतिकेँ ब्रह्मचारिणीक रूपमे आगूमे ठाढ़ देख सुवोधनीक मन अपन विद्यालयक जिनगी दिस बढ़ि गेलैन। वएह धार ने धारा बनि आगू बढ़त। ओना ज्योतिकेँ घरसँ निकलैमे पनरह मिनट समए बाँकी अछि, सुवोधनीक सिरे कोनो काज पछुआएलो नहियेँ छैन, तइसँ

मनमे खुशी छैन्हे। देवचन अपने कनी पछुआएल छैथ, ओना समैयक हिसाबे ओहो नहियेँ पछुआएल छला, धोती-कुर्ता पहीरि नेने छैथ, चद्दैर आ जूता खाली ऊपर-निच्चाँ ओढ़ब-पहीरब पछुआएल छैन। ज्योतिक ज्योतिमे अपन ज्योति मिलैबते सुवोधनीक मन विहुँसल, विहुँसिते बकार फुटल–

"की महाभारतक अर्जुन जकाँ अपन लक्ष साधि सकलौं। मनमे की रोपि जिनगी जीबैक सोचने छेलौं आ की भोगि रहल छी! आकि विचार हेरा गेल? नइ विचार हारि गेल। हारबो ने कएल, वौआ गेल!"

'विचार हेरा गेल आकि हारि गेल' ऐठाम आबि सुवोधनीक बकार बन्न भऽ गेलैन। बन्न होइक कारण भेलैन एक संग मोती-झाबा फूल जकाँ एकेबेर विचारक घोंदे फुला गेलैन। विचार हेरा गेल, कि हारि गेल, हरण भऽ गेल आकि दहन भऽ वौआ गेल...! सुवोधनी अकवका गेली। तैबीच देवचन दरबज्जेपर सँ चिल्होरि जकाँ टाँहि देलखिन–

"ज्योति ई इ इ!"

ससुरक टाँहि सुनिते सुवोधनी आँगनसँ ज्योतिकेँ अगुएने डेढ़ियापर पहुँच गेली। 'जय गणेश मंगल गणेश' करैत देवचन निकलला मुदा जेना रस्तेपर आगूमे केतौ किछु ठाढ़ रहै तहिना मनमे पइस गेलैन। पैसते उठलैन, आइ गुरु दिन कहाँ छी, माने वृहस्पति। विद्यालय प्रवेशक लेल शुभ दिन मानैक धारणा सभमे बनले अछि। आइ तँ शनि छी। मुदा छी तँ प्रवेशक अन्तिम तारीख। आइ जँ दाखिला नइ हएत तँ साले पछुआ जाएत। साल कि पछुआएत पढ़ैक साल पछुआएत।

ओना परिवारक गारजनी साठि बर्खक देवचन अपने दुनू परानी हाथमे रखने छैथ मुदा अपना सन पत्नी नहि छैन। दुनूक दू गति-मति

तथापि पति-पत्नीक बीच जिनगी। पत्नी- कामिनी- परेखी तँए काजसँ परिवारकेँ अँकैत। अपन दुनू परानीक काज कामिनीक मनकेँ खुशी रखनहि छैन। किए ने रहतैन, गाममे दुइए गोरे प्रोफेसर बनला, तइमे एकटा तँ अपने बेटा छैथ। बेटा- रूपचन- गामसँ हटि पनरह किलो मीटरपर कौलेजक प्रोफेसर छथिन। मोटर साइकिलसँ अबै-जाइ छैथ। ओना दुनू गौंआँ ओही कौलेजमे काज करै छैथ मुदा दुनू दू टोलोक आ दू जातियोक। तँए पारिवारिक जिनगीमे अन्तर सेहो छैन। दुनूक पत्नियोँ बी.ए. पास मुदा सुवोधनी घरेमे घुरियाएल छैथ, जखन कि सरोजनी हाइ स्कूलक शिक्षिका छैथ। नोकरीक पाछू सेहो दू कारण, सरोजनीक परिवार निच्चाँसँ उठैत तँए नोकरीकेँ जीविकोपार्जनक साधन बुझि करैत, मुदा सुवोधनीक सम्पन्न परिवार, तँए महिलाक बीच नोकरी-चाकरीकेँ निकृष्ट नजैरसँ देख निषिध बुझल जाइत अछि। एक तँ ओहुना नोकरी-चाकरी हेय छीहे। एक तँ अपन सम्पन्न परिवार कामिनीक तैपर बेटोकेँ नीक कमाइयो आ प्रतिष्ठो तँ छैन्हे। ओना ज्योतिकेँ विद्यालयमे प्रवेश जहिना सुवोधनीक मनमे नचैत तहिना कामिनियोँक मनमे, मुदा दुनूक दू-दिशाह नाच छेलैन। कामिनीक मनमे नचैत जे अपना बेटी नइ रहने परिवारमे विद्याक प्रवेश तँ पुतोहुए-जनीसँ भेल, मुदा अप्पन परिवारक चमकी ज्योतिमे चमकैत देखबे केलैन। अपने कामिनीकेँ एको अक्षरक बोध नहि। पोतीक संग पतिकेँ विद्यालय गेने दरबज्जा खाली भाइए गेलैन, जे कामिनीकेँ पसिन्न नहि तँए आँगन छोड़ि दरबज्जे पकैड़ लेलैन। असगरे सुवोधनी आँगनक पुबरिया घरक ओसारक चौकीपर देवाल लगल ओंगठल, मने-मन अपन माता-पितापर नजैर देलैन। की जानि माता-पिता पढ़ौलैन, आ की पाबि रहल छी..!

प्रोफेसर माता-पिताक बेटी सुवोधनी, पढ़ै-लिखैक वातावरणमे पलित सुवोधनी। जइसँ हाइए-स्कूलसँ अपन पहिचान निखारऽ लगल

छेली। जेहने पढ़ैमे तेहने लिखैमे आ तेहने बजैमे गुरुत्व रूप सुवोधनीक। अपन आत्मबल शुरूहेसँ एहेन जगल जे कहियो परीक्षाक रिजल्ट अधला नइ भेलैन। हाइयो-स्कूलक वार्षिक पत्रिका आ कौलेजोक पत्रिकादिमे कविता, कहानी, निबन्ध सभ प्रकाशित भऽ चुकल छेलैन। जइसँ मनमे किछु लिखैक जिज्ञासा सदैत रोपाएल रहै छेलैन। मुदा परिवारो तँ परिवार छी। हजारो पहियापर चलित गाड़ी...।

आइ तीन बर्खसँ माने ज्योतिक जन्मसँ लऽ कऽ चारिम बर्ख चढ़ैत विद्यालय जेबासँ पहिने चौबीस घन्टा आठो पहर प्रहरीक रूपमे रहए पड़ल, ने सुतैक ठेकान आ ने खाइक ठेकान, ने नुआँ-विस्तरक सेखी, देहसँ ओछाइन धरि रहल, तैपर ससुरक सोझहा केहेन बनि जाइ, सासुक सोझ केहेन, पतिक सोझ केहेन आ बेटीक बीच केहेन...।

..फेर लगले माता-पितापर नजैर गेलैन, जहिना माए प्रोफेसर तहिना तँ पितो छैथ, की हमर जिनगीकेँ हमरो जन्ममे नहि बुझि सकली जे बेटियोकेँ एहेन जिनगीक टपान अछिए। से जँ बुझल रहैत तँ पहिनेसँ ने क्रियाशील बनल रहितौं। आब छोड़ि कऽ भागियो केना जाएब। सृष्टिक कर्ता-धर्ता हम छिऐहे किने। मुदा लगले मन ठमकलैन, घट-घट घटवारीकेँ घटे-घट काजक आकर्षण-विकर्षण होइ छै, जिनगीक किछु काज एहनो तँ ऐछे जे स्वयं-भोगी बेसी सक्कतो आ बेसी नीको होइ छइ। माता-पिताक बीच सुवोधनी अपने उलैझ गेली। उलैझ ई गेली, हम अपना बुधिये विचारै छी आ विवेके निर्णए करै छी मुदा जँ ऐसँ फड़िको दोसर रस्ते जँ ओ दुनू सोचने-विचारने होथि तखन अनेरे हुनका ऊपर अपन दोख लगाएब उचित नहि। अपन जे काज अछि, चाहै ओ पढ़ै-लिखैक होइ, दिनचर्याक होइ चाहै परिवारिक होइ ओ तँ अपने केने हएत। लगले फेर नजैर

अपन कौलेजक जिनगीपर गेलैन। अखन परिवारक भारक बीच पड़ि गेल छी, तँए किछु लिखि नै पबै छी। मुदा बिआहसँ पहिने, किछु खास गनल-चुनल पत्रिकामे दू-चारिटा कविता आ कहानी छपल। लोक जानलक आ कवि-कहानीकार मानलक मुदा लोकक मानकेँ हम रखि सकलिऐ? निमाहि सकलिऐ..?

..लगले फेर सुवोधनीक मन समैपर गेलैन। समए तँ जहिना अखन चौबीस घन्टाक अछि तहिना तहियो छल। अखन परिवारक केते काज करै छी, भलेँ अपन मन-मुद्रा दबाएले किए ने रहि गेल हुअए, मुदा जे श्रम करै छी, तेकरो नकारल तँ नहियेँ जा सकैए...।

..फेर मन आगू घुसैक देखलकैन तँ बुझि पड़लैन जे अपन पढ़ैक धार तँ नीक रहल, एहेन नीक रहल जे कोशी-कमला जकाँ अपन पेटकेँ के कहए जे आनो आनक चास-बास धरिया गेल छल। जे लिखैक बाट छोड़ि मंचपर बजैक बाट पकड़ा देलक। लिखबो-ले वौस चाही बजबो-ले वौस चाही। सुवोधनीक मन धारक मोनिक पानि जकाँ नचलैन, नचिते मनमे उठलैन, गाँधीजीक शहादत दिवसपर देल गेल भाषण। गाँधीजी एशिया महादेशक भारत, आ अफ्रिका महादेशक बीच गुलामीक विरोधमे महाभारतक कृष्ण जकाँ शंख फुकलैन। की ओ नइ जनै छला जे गुलामीक केहेन-केहेन जाल अछि। गाँधीजीक ओही विचारकेँ बुझै पाछू अपन समए चलि गेल। एशिया महादेशक सउदी अरब, यमन, ओमान, भूटान लाओस जहिना, तहिना अफ्रिकाक माली, वरकिना, नाइजर, टागो, सेनेगल मनकेँ घेरि मुड़ीकेँ गोंति गोंतिया कहा-बधी करा नेने छेलैन जे गाँधीजीक शहादत दिवसपर पोथीक रूपमे लोकार्पण करब, कहाँ भेल! किए ने भेल?

..अनायास सुवोधनीक मन मोनिक पानि जकाँ घुमैत प्रोफेसर

पतिपर एलैन। जीवन संगी। प्रोफेसर गौड़ीनाथक परिवारक एहेन ढर्ड़ा पकैड़ नेने जे भरि दिन मोटर साइकिलपर चढ़ल-चढ़ल चुरम-चूर रहै छैथ। ढर्ड़ा ई जे एक तँ नामी-गामी देवचनक परिवार, तहिना सासुर, गौड़ीनाथक मात्रिक, सर-सम्बन्धी सभसँ झमटगर बनल। तैसंग अपन कौलेजक प्रोफेसरक नव समाजक बीच बास, तँए बिआह-श्राद्ध आ जन्मसँ मृत्यु धरिक, मूड़न, उपनैन इत्यादि सइयो काज सालमे पूरऽ पड़ै छैन, तैसंग पाबैनक न्योता-पिहानी सेहो, तेतबे नइ तैसंग जन्म दिनक हकार सेहो। जे दरमाहा उठबै छैथ ओ नते-हकार आ भोजे-भातक पाछू चलि जाइ छैन, जइसँ पत्नी- सुवोधनी-कँ पतिक मासक दरमाहा देखब खाली सपने रहलैन। पतिक प्रेम भरल सिनेह संवेदनशील सुवोधनीकेँ कहियो पतिसँ प्राप्त नहि भऽ रहल छैन। दिनमे भिनसरे नहा-धो तैयार भऽ गौड़ीनाथ किछु जलखै खा चाहे चाहेटा पीब धड़फड़ाइत बजैथ–

"पहिने फल्लाँठाम मूड़नक असीरवाद दैत कौलेज जाएब, पछाइत चारि बजेमे जखन निकलब तँ फल्लाँठाम श्राद्धक डाली पूरैत आएब।"

एहेन जिनगी गौड़ीनाथक जोड़ीक बीच जे जखन दुनू बेकती- गौड़ीनाथ आ सुवोधनी- एकठाम होइत तखन अपन चुरम-चूर बेथा पत्नीक सोझमे रखि दैत। जे पति अपने बेथे बेथाएल ओइ पतिसँ केते आशा करती। भाग्यकेँ कोसव छोड़ि दोसर कोन उपाए...।

सुवोधनीक मन पुन: घुमैत प्रोफेसर पितापर गेलैन। ओ की बुझि पोसलैन जनमदाता आ पितामे अन्तर होइत। जाधैर हुनका ऐठाम रहलयैन ताधैर कहियो कोनो दुर्वचन नहि कहलैन। ने कहियो पढ़े-लिखैमे कोताही केलैन आ ने कहियो कोनो विचारक दाब देलैन। ओना हुनकर मन हमरा काजसँ सदिखन खुशी रहै छेलैन। जँ से नहि

रहै छेलैन तँ केना लोककेँ कहै छेलखिन–

"सुवोधनी सरोजनी नाइडू जकाँ वक्ता हएत।"

तखन? भरिसक हुनका मनमे ई तँ ने भेलैन जे बेटा जन्मसँ लऽ कऽ पिण्डदान तकक हकदार अछि, गारि पढ़ियो कऽ आकि सुनियोँ कऽ, बेटा सबदिना भेल, जबकि बेटी जनगीक एक कालखण्डक। माने बिआहसँ पूर्ब धरिक मात्र! तहूमे समाजो एहेन बहुरंगी अछि जे कोनो विचारकेँ बुझैए ने चाहैत। कन्याँगत अपना कन्याँकेँ जेते बेसी पढ़ा-लिखा नीक मनुख बना दुनियाँक रंगमंचपर अबै जोकर बना संगबे देथिन तँ संगबैयेक कोनो ठेकान नहि! एक तँ अपन जिनगीकेँ काटि-छाँटि नीक अध्ययनक बेवस्था बेटीकेँ करब पछाइत जखन संगी तकैले जाएब तँ जेते सेवा बेटीक केने छिऐ सभ पानिमे जा कहत जे बाबू अहाँक ई दोख नइ जे हमरा पढ़ेलौं, दोख ई जे समाज बेटी-जातिकेँ विद्यासँ वंचित रखि अपन बुधि-विवेक जगै ने देलकै। जँ जागऽ देल जाइतै तँ रूपक संगी गुणो होइतै, मुदा से कहाँ अछि। केतौ रंग-बेदरंग करैत तँ केतौ अर्थ वेदरंग करैत समाजेकेँ बहुरंगी बेदरंग बना देने अछि। जँ कन्याँकेँ घरसँ निकालि पढ़ऽ देबैन तँ पर्दाक पाठ पढ़ा अनुचित कहल जाइ छै, तँ केतौ संवेदनशीलाकेँ कठोरशीलामे जोति जिनगीक भार कन्हापर लटका देल जाइ छइ।

हमर संवेदनशीलताकेँ पिता जानि कऽ जब्बह केलैन आकि कोनो वाध्यता छेलैन। बीचमे बाजब सुवोधनीकेँ उचितो तँ नहियेँ कहल जा सकै छइ। अभिभावक किछु छैथ तँ हमरासँ बेसी अनुभवी छैथे, मुदा तँए कि ओहो जानि कऽ गरदैनमे छुरी चलौने हेता? केना कहबैन, जनमदाता छैथ। मुदा हमर संवेदनकेँ ओ तखन आँखिक सोझक ताखपर रखि विचार केलैन जखन लेन-देनमे प्रोफेसर पति सुवोधनीक संगी बनि जाइ तँ की हर्ज। समाजोक बीच लोक-लाज तँ

बँचल रहत। प्रोफेसर माए-बापक बेटी, प्रोफेसर पतिक संग रहत तँ कि अपना जिनगी सदृश सुवोधनीकेँ नहि भेटतै, जरूर भेटतै...।

..पिता-बेटीक सम्बन्धक बीच बाटमे सुवोधनीक मन वौआ गेलैन। अपन पितापर सँ नजैर हटि सुवोधनीक राष्ट्र-पिता महात्मा गाँधीपर गेलैन। जहिना सिनेमाक उन्टा रील नचैत तहिना गाँधी बाबा सुवोधनीक मनमे नचला। गाँधी बाबा अपन लीलसा पूरा कऽ लेलैन। हुनक लिलसा रहैन जे शहीद होइ, जे भेलैन। मुदा हुनके मंचपर अपन कएल संकल्प केना राँइ-बाँइ भऽ छिड़िया रहल अछि..? जिनगीक शुरूआती तीस बर्ख बहुत भेल आ किछु ने भेल। जँ कनी-मनी विघ्न-बाधामे अँटैकितो जँ बाट धऽ चलैत चलनिहारक लेखे किछु ने भेल, मुदा विपरीत बाट धऽ चलनिहारक लेखे बहुत भेल। बहुत ई भेल जे ओ तीसे नै तीस बर्ख पुरबैमे साठि बर्ख गमबए पड़तै। सुवोधनीक मनमे सवुर भेल। सवुर होइते गाँधीजीक शहादत दिवसपर लेल संकल्प मनमे उठलैन। मनमे उठिते मुहसँ फुटलैन–

"देशक सटले सीमानक कातक देश भूटान अछि, जैठाम रेलगाड़ी नसीव नइ भेल। छियालीस हजार छह सए वर्ग किलोमीटरमे पसरल देशक पनरह-सोलह लाख देशवासीक भाग्य निर्माण, तहिना सउदी अरब जे भूटान जकाँ सटल नहि मुदा महादेशक दूरियो नहि, सउदी अरब, यमन, ओमान लाओसटा नहि अफ्रिकाक माली जे बारह लाख चालीस हजार एक सए बियालीस वर्ग-किलोमीटरमे पसरल देशक अठहत्तैर लाख लोकक जिनगी, जइमे अदहासँ बेसी जमीन मरूभूमिये अछि, अदहामे सहेल सवाना घास उपजैए, तहिना बरकिना जे दू लाख चौहत्तैर हजार एक सए बाइस वर्ग किलोमीटर जमीनमे पसरल सरसैठ-अरसैठ लाख लोक ओहने ठाम ने अछि जैठाम एक दिस सहारा मरूभूमिसँ गुजरैत सर्द हवा जीवन-मरणकेँ सदिकाल झुलबैत रहैए। मुदा तैयो गिनीक मानसूनी हवा जीवनो तँ दइते छइ।

तहिना नाइजर, टोगो इत्यादि-इत्यादिक अछिए।”

‘इत्यादि-इत्यादि’ सुवोधनीक मनमे उठिते रहैन तखने सासु दरबज्जापर सँ आँगन आबि आदेश दैत कहलखिन–

“कनियाँ, बुड़हाकेँ अबै बेर भऽ गेलैन, तँए पहिनेसँ अपन ओरियान-बात कऽ लिअ।”

सुवोधनियोँकेँ सुतरलैन। सुतरलैन ई जे अखन तँ अँगने नहि दरबज्जोक मालिक साउसे छैथ, बजली–

“अखनो बुड़हे सोहाइ[6] छैन मुदा चारि बर्खक पोती नइ सोहाइ छैन।”

पछड़ैत कामिनी कनी पाछू घुसकैत बजली–

“बुड़हा कि कम सियाखी छैथ अपनो गुप-चुप खेनहि-पीनहि हेता आ पोतियोकेँ खियौनहि हेता की।”

एक संग दुनू- सासु-पुतोहु-क आँखि, कान, विचार आ मुँह सम बनैत ठहाका मारि आत्मसात करए लगल।

◌

शब्द संख्या : 1917, तिथि : 1 मार्च 2015

[6] सोह एनाइ

ओ दिन

फगुआसँ एक दिन पहिने, ओना फगुनेहटि हवा सेहो चलैत रहै मुदा वसन्ती तँ वसन्ती छीहे। चाहे पुरबा बहौ कि पछबा, उत्तराहा बहै कि दछिनाहा, मुदा कहौत तँ वसन्तीए किने, भलेँ दिनेमे कखनो पुरबा आकि पछबा चाहे दोरस-तेरस किए ने बहौ...।

ओना मौसमोक आँखि-मिचौनी खेल सेहो चैले रहल अछि, जइसँ पोखैरक डुमा-डुमी खेल सेहो चलिते अछि। आँखि-मिचौनी ई जे गोटे दिन पूबोसँ आ गोटे दिन पछिमोसँ वादल पहुँच बदरीहन जकाँ समए बनैबते अछि, तहिना गोटे दिन शिशिरक सिरसिरौनीक हवा पच्छिमसँ तेना झोंकि देलक जे शिवरातिक राखल सीरक दोहरा कऽ निकालऽ पड़ल। मुदा गोटे दिन एहनो तँ होइते अछि जे जइ दिन हवो ठमकल आ मेघो ठमकल रहल तइ दिन सुर्जोक तँ अपन बरह-सलिया उखमज रहिते छइ। जइसँ दिने देखार जाड़ जुआरिकेँ जरा-जरा अकासमे भष्मी बभूत सेहो बँटिते छैथ, जइसँ बासन्तीक अनेको रूप पाबैनमे पसरिये जाइए।

काल्हि होली छी, सम्मत सेहो जरत। ओना अखनो सीरके तर राति कटैए मुदा फगुओक तँ अपन गुण-धर्म छइ। केना लोक ऊनी कपड़ा पहीरि हरिअर-लाल-पीअर रंगसँ रँगाएत। तइले तँ सुतीए वस्त्र ने चाही, तहूमे रंगर नहि, रंगर तँ कनी जाड़ो बँचबै छै, मुदा उज्जर तँ

उज्वल छी, जँ से नइ रहत तँ ऊपरसँ रंग केना चढ़तै। तहूमे डोलक ढारल रंगो रहबे करत, जाबे खेलाइत रहब ताबे ओहो देहकेँ सिरसिरैबते रहत।

चँकिआएल गाम राघोपुर। गौआँ-सँ-अनगौआँ सबहक कान ठाढ़। सन-सनी गाममे, तँए एक-दोसरक बात सुनैले सबहक कान ठाढ़। जहिना बाढ़ि एने आकि कोनो सार्वजनिक स्थलपर सार्वजनिक उत्सव भेने लोक गोलियाइत तहिना चौको-चौराहा आ दुआरो-दरबाजापर लोक गोलियाइते रहैए। रंग-रंगक विचारोआ गप्पो गाममे पसैरते छै, जखने लोक बैसारी हएत तखने ओकरा कहै-सुनैले किछु अवसर चाहबे करी। ओही बात-विचारक धारमे नीक-अधला भँसऽ लगैए। एक षड्यंत्रक भीतर सुबल छहटा संगीक संग मुकदमाक धारा ‘तीन सए सात’मे पुलिससँ बँचैले गामक पछबरिया बाधक गाछीमे रातिक एगारह बजे छबो संगीकेँ जाड़सँ देह-हाथ ठरि गेल रहइ। एक तँ नीक जकाँ जाड़ नइ कटल, तैपर सात-आठ दिनसँ पछबा हवा झोंकि कऽ आरो ठण्ढ बना देलक। बुन्दा-बुन्दी बरखा शुरू भेल, ओना काल्हि फगुओ छी, शिवराति भऽ चुकल अछि, बर्खा-पानिक संग हवो अपन रूखि तेज केनहि रहए। ओछाइनसँ चद्दैर धरि छबो गोटेक भीज गेल। लाख परियासक बादो दाँत-पर-दाँत छबोक खटखटाइते रहलै। मुदा उपाए? सुबलकेँ किरण कहलक–

“सुबल भाय, जिनगीक कठोर परीक्षा भऽ रहल अछि।”

गरमाएल मन रहौ कि फड़हाएल, बजैक सभ अंग हल्लुक रहैए तँए बेसी बजलो जाइ छइ। मुदा कठुआएल देहक अंगो तँ ओहिना कठुआ जाइ छै, तखन कठुआएल बाते केते मुहसँ फुटत। किरणक बातकेँ सुबल ने बतंगर बनबए चाहलक आ ने बतकटोबलि करए चाहलक। सोझ-साझ सुरे सुबल बाजल–

“भाय, अपना-ले नइ ऐगला-ले परीक्षा दइ छी।”

समाजमे संक्रमणक स्थिति पनपए लगल। गामक गाड़ीक चक्का केमहर मुहेँ घुमि चलत? जेहेन चलौनिहार रहत तेम्हरे मुहेँ ने चलत। राघोपुर गामक एक दिनक एकटा केसक मुकदमाकेँ के कहए जे सत-सत, अठ-अठटा केस हुअ लगल। भरि दिन थाना राघोपुरक लोकसँ झँपाएल रहैत, गामोमे तहिना दू-चारि-पाँच ठाम पटका-पटकी, थापर-मुक्का आ लाठी-फराठी चलिये जाए। बेवस्थाक यएह धुरी छी। जे बेवस्था घँसाइत-घँसाइत एते घँसा गेल अछि जे डेग भरि आगू मुहेँ ससरब कठिन भऽ गेल छै, तेनामे बदलाव छोड़ि दोसर रस्ते की छइ। एक दर्जन सी.आर.पी.क चौबीस घन्टाक ड्यूटी प्रशासनिक अफसरक संग गाममे भऽ गेल। मुकदमाक धारो दू-दिसिया भऽ गेल। दू ग्रुपक बीचमे एहेन स्थिति बनौल गेल जे एक दिस जँ मच्छरो ने मरैत तेकरो बदला मर्डर केस होइत, तँ दोसर दिस हथियारसँ कपारो कटल रहैत तँ ओकरा लाठीए बना देल जाइ छल, स्थिति भयंकर बनऽ लगल। विस्फोटक बनऽ लगल। न्यायालयक प्रति सुबल सबहक बिसवास बढ़ल। थानाक वहिष्कार ऐ शर्तपर केलक जे आगूक कारवाईमे थनोक स्टाफकेँ लपटौल जाए। जे बेवहारिक रूपमे तँइ भेल। छबो संगीक संग सुबल मनमे ठानि लेलक जे गाम नइ छोड़ब, गाम छोड़ब पाछू हटब भेल, से नइ हटब। दिन भरि तँ दर्जन भरि सिपाहीक आगू हजारो सिपाही मर्द-औरत समाजमे ठाढ़ अछि, मुदा राति तँ राति छी। तँए छबो गोटे गामसँ एक किलोमीटर हटि गामेक गाछीमे बिसवासक संग राति बितबै छल। ओना तीन मासक दौड़मे, जाबे धरि दर्जन भरि सी.आर.पी.क ड्यूटी रहल, समाजकेँ बहुत लाभ भेल। वारन्टीक पकड़-धकड़ तेते नइ भेल, मुदा समाजक दर्जनो उचक्का फँसि गेल। जहिना जालमे घोंघा-सितुआ ओंघराइत फँसि जाइए तहिना भेल। सभकेँ अन्दाजमे आएल जे जाबे गामक उचक्का नइ सोझ हएत, ताबे

समाज केना सोझ डारि पकड़त। मुदा सोचब, करब आ हएबक बीच तँ किछु-ने-किछु दूरी बीचमे अछिए। अही बीचक फाँकमे भेल ई जे रंग-रंगक घटना फँसल। से दुनू दिससँ फँसल। के केकर शासन करत। लड़की संग घटना फोर्सो एकटा परिवारक संग केलक। तहिना गौओंक बीच भेल। तीन मास बीतैत-बीतैत शासन बदैल गेल।

बहरबैया मालिकक सात कट्ठा घराड़ी खेत। एक गोटे खेत खरीदैक गप केलैन। बेना-बट्टा भऽ गेल। दू फरीकक हिस्साक जमीन। दुनू फरीक बिकरीक गप तँइ कऽ नेने छला। रजिष्ट्रीक डेट बनल एक फरीक रजिष्ट्री ऑफिस पहुँचबे ने केला। जइसँ अदहा हिस्सा जमीन बँचल रहि गेल। गामेक दोसर गोरे, जे रेलबेमे नोकरी करैत, दोसर फरीककेँ जिनकर हिस्सा बँचल रहैन, जमीनक बिकरीक बात उठा, डाक करैत दाम चढ़ा देलक। जमीनबला बात पलटि बेसी दाम देनिहारक हाथे जमीन रजिष्ट्री कऽ देलक। ने समाजक कियो बहरबैयासँ पुछनिहार जे एना बात किए पलटि समाजमे झंझट ठाढ़ कऽ देलिऐ। नइ पुछैक कारण गाम अपने दोलि-पत्ता करैत। केकरो बात ने कियो सुनैले तैयार आ ने मानैले। पैछला रजिष्ट्री करौनिहार दुनू फरीकक सोल्होअना जमीन माने सातो कट्ठा जमीन लाठी हाथे हथिया लेलक। मुकदमाबाजी शुरू भेल। तैबीच एकटा षड्यंत्र रचल गेल। षड्यंत्र ई रचल गेल जे जिनकर जमीन छिनाएल रहैन हुनकर बेटा एकटा लिफाफमे गारि लिखि जमीन हथिऔलहाक नामे लिखि पठौलक। मुदा अखनो धरि ओकर सत्यापित नइ भेल अछि। लड़ाइ उग्र भेने बहुत नीको काज दबि जाइ छइ। जइ लड़काक नाओं चिट्ठी लिखिनिहारमे आएल ओकरा पकैड़ चिट्ठी पौनिहार मारलक। की मारलक केते मारलक, ई तँ तेसर वएह बुझि सकै छैथ जे ओइठाम होथि, मुदा मारलक। होइतो अहिना छै जे केतौ कमो मारि बेसीकेँ आँकल जाइए आ केतौ बेसियो कम भऽ जाइए। ओही मारिसँ 307

दफाक मुकदमा गढ़ल गेल जइमे मारनिहारक संग सुबलक संग छबो गोरेकेँ फँसा देलकैन। मुदा तइले छबो गोरेक मनसूबा दबल नहि। एहेन मनसूबा बनि गेल जे मुरदापर जेहने अस्सी मनक लाद तेहने नब्बे मनक। एक तँ पुलिस प्रशासन अपने लोभे परमोशन-ले लोभाएल जे जाधैर जी-जान लगा काज नइ करब ताधैर खरकाह केना बनब। जखने खरकाह बनब तखने ने अवसर हाथ लगत।

न्यायालयमे मुकदमा पहुँचते पुलिसक सिरचढ़ भेल। साते दिनक भीतर मारनिहार कोर्टमे हाजिर भेल। ऐ खियालसँ जे औवेल मुदालह छी जिला न्यायालयसँ जमानत हेबे करतै, पछाइत बाँकी मुदालहक ओही आधारपर जमानत भऽ जाएत। मुदा पुलिसक कारवाइ एते तेज भेल जे सातमे दिन मुदालहक घरमे जब्ती-कुर्की भऽ गेल। सुबलक घरक केबाड़-चौकी आदि जे जब्त भेलैन से तँ भेबे कएल जे खेतीक दमकल, जे सिंचाइक साधन छी, ओहो जब्त भेल। जे दू सालक पछाइत आपस भेल। दू साल लगैक कारण भेल जे मुकदमाक सघनता। एक-ने-एक वारन्ट बारहो मासक रहबे करै, जे से थानाक रस्ता सुबलक बन्न रहल। थानासँ कोनो जब्त वस्तुकेँ छोड़बैमे महीनोक चक्कर लगबए पड़ै छइ।

जिला न्यायालयसँ पहिल मुदालहक जमानत होइत-होइत मास दिन लगि गेल। एकतीसम दिन छबो मुदालहक जमानत नीचले कोर्टसँ भऽ गेल।

ओना राघोपुरमे दू साल पहिनेसँ वैचारिक टकराउ शुरू भऽ गेल छल, जइसँ बाता-बाती, गारा-गारी, मारा-मारी एक तरहक चलैन जकाँ बनि गेल छल। वैचारिक संघर्ष छल तँए थाना-पुलिसकेँ रंग-रंगक मुकदमा अपने गढ़ऽ पड़ै, मुदा वायुमण्डलमे जहिना दोरस हवा एक संग बोहैत, माने धरतीसँ किछु किलोमीटर ऊपर एक हवा चाहे

पूर्बा होउ आकि पछबा तइसँ ऊपर दोसर हवा चलैत जइसँ अकासक शक्तिकेँ रोकाबट होइते छै तहिना हुअ लगल। जहिना थाना-सिपाही गरिखर मुँह-छुट्टू तहिना पीड़ित परिवारक समाजोक लोक। मुदा किछु बदलाउ भेल। बदलाउ ई भेल जे किछु दिन पहिने जेना थाना-सिपाहीक गारि लोक सुनैत आबि रहल छल, ओ कमैत-कमैत रूकल। जहिना धारक धाराकेँ बान्ह-बान्हि बान्हल जाइ छै तहिना बन्हाएल। बन्हेबे नइ कएल थानाक क्रिया-कलापकेँ गामो आ गामसँ बाहरो उजागर कएल गेल जइसँ गौआँ-अनगौआँ सबहक मुहेँ थाना-ऊपर दिन-राति गारि बरिसऽ लगलै। दिनो-दिन लोकक बीच उत्साह बढ़िते गेल।

ओना एक थानाक एक गामक जमीनक झगड़ा राघोपुरमे छल मुदा चौबगली थानाकेँ चेतौनी पड़ि गेल छेलै जइसँ अनेरो आन-आन थानाक सिपाही सबहक दौड़ भाइए गेल रहइ।

जहिना चौबगली गाम सभमे विचारक टकराउ हुअ लगल तहिना थाना-कचहरीमे सेहो हुअ लगल। गामक लोक जखन कोर्ट आकि आन गाम पहुँचै छला तखन गामक हाल-चालमे आबिये जाइ छल। ओना थाना-कचहरीमे स्टाफक अदली-बदलीसँ सेहो विचारपर प्रभाव पड़ल।

307 दफाक मुकदमा निचला कोर्टसँ किछे दिनक पछाइत सी.जी.एम. कोर्टमे चलि गेल। जहिना लोक रोगाएल अछि तहिना परिवार रोगाएल छै, परिवारे किए समाजे रोगा गेल अछि। जखने गाछक जड़िमे गराड़ धरत तखने नसे-नसे डारियो सभकेँ रोगेबे करत किने। कोटो-कचहरी तइसँ किए अबंच रहत। नस-नसमे रोग घुसले अछि, जइसँ जिनगियो बेठेकान भऽ गेल छइ। जैठाम न्यायालयक न्याय अबिसवासू भऽ जाए, तखन तँ लड़ाइ-झंझटक तँ वएह रूप ने

पकड़त जे खाइ-पीबैले शहर-बजारक कचहरी रहऽ दियौ आ रगड़ा-रगड़ी समाजमे करी। जँ से नइ करब तँ समुद्रक अमृत थोड़े भेटत। तइले समुद्र मथै पड़त। यएह सभ सोचि केसकेँ बीस बर्ख तक ऐ आशासँ जे पच्चीस-तीस बर्खमे जँ नीचला कोर्टमे अँटकत तँ ऊपरका जाइत-जाइत साठि-सत्तैर बर्ख भऽ जाएत। जिनगीए केतेटा अछि, तखन तँ भेल लड़ाइ-झगड़ा, एक आइटम काज। बाइस बर्खक पछाइत कोर्टसँ केसक फैसला भेल। रोगाएल जेहेन फैसला हेबा चाही सएह भेल। सभकेँ सजा भेल। सभ जेल गेल।

मास दिन पछाइत हाइ कोर्टसँ जमानत भेल। दस सालक पछाइत हाइ कोर्टसँ सभ छूटल।

तीस साल पछातिक सालक काल्हि होली छी। छबो संगी सभ दिनसँ संगे-संग होली खेलाइत आएल छैथ काल्हि सेहो खेलबे करता।

होली दिनक प्रभात वेला। छबो संगी- सुबल, किरण, अरूण, तरूण, वरूण, करूण सभ कियो एकठाम होइते अरूण तरूणकेँ कहलक–

“तरूण भाय, नइ आशा छल जे समाज एना मरूण भऽ जाएत।”

अरूणक बात सुनि तरूण ताड़ल चुड़ाक धान जकाँ बाजल–

“से की, से की भाय सहाएब।”

तरूणक चुटकुल्लाक माने अरूण बुझि गेल, मुदा पाशा बदलैत बाजल–

“से की गामसँ केतौ परदेश चलि गेल छेलह, जे एना अकचका कऽ बजै छह।”

अरूण-तरूणक बीच रोगाएल बातक रस सुबल, किरण, वरूण

आ करूण ओही रूपे लैत रहए जे रूप रोड़ाएल राहड़िक दालिमे काँच आमक फाँड़ाक होइत, कनी नून मिला दियौ तैयो हलुआ नइ तँ कनी गुड़ मिला दियौ तैयो हलुआ। जिनगीमे जँ हलुआ-पुड़ी भेटैत रहए तँ अनेरे स्वर्ग लोक किए जाएत।

अरूणकें अपना ऊपर खौंझ चढ़ैत देख तरूण बाजल–

“भाय सहाएब, अनेरे तरङे छी, आब कि ओ दिन रहल जे मरद-औरत, धिया-पुता सभ मिलि गेबो करत, खेबो करत आ रंगो-अबीर खेलत।”

तरूणक बात सुनि वरूणकें जेना अपन पहिलुका बात मनमे उठि गेलइ। उठि ई गेलै जे जइ मुकदमाकें पच्चीस-तीस बर्ख कोर्ट-कचहरीमे लड़लौं, जहल गेलौं, अपन शरीरक शक्तिक संग परिवारक आर्थिक छति सेहो भेल, मुदा एते नोकसानक जड़ि कारण की? किछु ने! बाजल–

“बौआ तरूण, जखन वसन्ते नइ, तखन वसन्ती होली केहेन।”

होली सन पाबैनक दिन जँ फुसिये-फटकमे बीति जाएत तखन तँ भेल होली। विचारैत करूण बाजल–

“भाय, केतौ किछु होउ जहिना सब दिनसँ होली मनबैत एलौं, होलिका दाह करैत एलौं, तहिना मनबैत रहब आ होलीका दाह करैत रहब।”

करूणकें रबाड़ दैत वरूण बाजल–

“भूखे भजन ने होइ गोपाला। सोझहे करूणानिधि बनि गेने थोड़े हेतह, एकठाम बैस पुआ-मलपुआ केना चलत, से विचार ने पहिने हेबा चाही।”

वरूणक बात सुनि सुबल बाजल–

“खाइबेर भेलापर ने खाएब, अखन तँ माथमे ललका अबीर लगबैक समए अछि, पहिने से ने हेबा चाही।”

◌

शब्द संख्या : 1782, तिथि : 4 मार्च 2015

उरीन

अदराक अमैया भार साँठिते जहिना बुधना कक्काक मन हल्लुक भेलैन तहिना सुधनियों काकीकें भेलैन। पैछला अखाढ़मे बेटीक बिआह भेने अमैया अन्तिम भार छी, जे पूरि दुनू परानी बुधना कक्काक मन हल्लुक भेलैन। हल्लुक होइते चैनिक नमहर साँस छोड़लैन। नमहर साँस ई जे बेटी बिआहक भार-दौरक प्रकरणक आखिरी वीध-बेवहार छी। ओना भार-दौरक वीध-बेवहारक चलैन बेठेकान अछि, से दुनू परिवारक, माने बरो पक्षक आ कनियों पक्षक मुदा एते तँ ठेकनाएल ऐछे जे कोन पाबैन आकि समैक भार कोन पक्षसँ आएत-जाएत। जहिना पवनौट तहिना समैया, जे दुनू पक्षसँ सालो भरि चलिते अछि।

भार-दौर बेठेकान एना अछि जे जइ मासमे बिआहक वीध-बेवहार पूर होइए तेकर पछाइतसँ भार-दौरक वीध-बेवहार शुरू होइए। ओना कुमार-भारक चलैन सेहो अछि जे बिआहसँ पहिने होइए...।

..जहिना माता-पिताक मृत्युक सराधक पछाइत मासे-मास तीर्थानुकूल छाया होइत बरखी लग पहुँच बिसरजन करैए, तहिना बेटो-बेटीक बिआहक पछाइत सालक आखिरी मास, माने जइ मासक लग्नमे बिआह भेल रहल तइ मासमे पहुँच बिआहक प्रकरण पूर

होइए। तँए जहिना बरखी भेला पछाइत ऐगला बरखीक प्रकरण शुरू होइए तहिना साल बीतला पछाइत दुरागमनक प्रक्रिया शुरू होइए। मृत्युक पछाइत जहिना छायो बेठेकान अछि जे कोन माससँ शुरू हएत। तहिना बिआही भारोक अछि। बेठेकान ई जे जेना अगहनमे मृत्यु भेने पूससँ छाया शुरू होइए तहिना जेठमे बिआह भेने अमैया भारसँ शुरू होइए।

बुधना काका अपन तेसर बेटी, माने अन्तिम बेटीक बिआह पैछला अखाढ़मे केने छला, जइसँ भार पछुआ गेलैन, सएह पाँचटा भार समधियौर, जमाए ऐठाम पठा दुनू परानी- बुधना काका आ सुधनी काकी- नमहर साँस छोड़लैन। बेटीक रीनसँ अपनाकें उरीन पबिते मने-मन दुनूकें खुशी उपकलैन। खुशियो उपकब सोभाविके छेलैन। सोभाविक ई जे जहिना माथपर भरिगर बोझ रहने देहक सभ अंग भार तर दबल रहैए मुदा निच्चाँ रखिते देहक संग अंगो भार मुक्त भऽ जाइए तहिना दुनू बेकती बुधनो काकाकें भेलैन। सालक भार-दौरक हिसाब जोड़ैत सुधनी काकी बजली–

“जेना अपन पहिल भार पुरलौं तेना ओ कहाँ पुरा सकला।”

‘बर-पक्षक पहिल भार दब पड़लैन..!’ पत्नीक बात बुधना काका कानसँ तँ नीक जकाँ सुनलैन मुदा मनकें अनसुन बनबैत बजला–

“जखन दुनू परिवार एक सीमापर सम्बन्ध स्थापित केलौं, तखन एहेन चर्च नीक नहि।”

पतिक बात सुनि सुधनी काकीक मनमे कचोट भेलैन। कचोट ई जे जखन दुनू परिवारक सम्बन्ध बनल तखन जँ सभ वीध-बेवहारपर नजैर खिड़ा मिलानी नइ करैत चलब तखन एकरसता दुनू परिवारमे केना औत। ई बात जरूर जे दू परिवारक बीच उच्च कोटिक सम्बन्ध स्थापित भेल, तँए छोट-छीन काजो आ बातोपर धियान ओही नजैरे

(साधारण बुझि) देबा चाही, मुदा ओही छोट-छीन काज-विचारमे तँ पैघो-पैघो मान-समानक बीआ तँ नुकाएल ऐछे...।

..मुदा मनक कचोट सुधनी काकीकेँ लगले टघैर गेलैन। टघैरते मन घुमलैन। घुमिते बजली–

“आरो जे भेल से भेल मुदा सात गंगा नहेला साफल तँ भाइए गेल।”

पत्नीक मुँहक बहैत गंगा-धारमे जँ बुधना काका नइ भरि देह तँ चिड़ैयो जकाँ एको लोल जँ लूझि नै लेता सेहो केहेन हेतैन। बजला–

“किछु छी तँ अपन गाम अपन गाम छी। कोनो कि टोल-टपराक बास अछि। पाँचटा अमैया भार जोड़ब, ओ थोड़े बुझत जेकरा गाममे बेसी तारे-खजूरक गाछ छइ।”

धारक ऐगला रेतमे पतिकेँ बहैत देख धोतीक पैछला खूट–ऐ दुआरे जे धारमे खढ़ो जखन मददगार होइ छै, तखन पतिक धोतीक खूट तँ सहजे पुरुखक खूट छी– पकैड़ दुनू पएर पाछूसँ पटकैत बजली–

“पाँचो भारक पाँचो रंगक आम पाँच गामक रहितो एके गामक ने भेल। मुदा तैयो अपन गुण-धर्म तँ अछिए।”

‘गुण-धर्म’ सुनि बुधना काका चौंकला। चौंकला ई जे गुण-धर्म तँ मनुखमे होइ छै, आमक नाओं किए कहली? मुदा पति रहैत ईहो कहब नीक हएत जे हमरा नइ बुझल अछि, से कनी फरिछा कऽ बुझा दिअ। मनमे अतस्-वितस् उठलैन। मुदा लगले मन फरीच भऽ गेलैन।

बजला–

“जहिना-जहिना ऐगला-पैछला भरियाक संग आमक भार सँठने छेलौं तहिना-तहिना ने आमो छेलइ।”

पतिक सह पबिते सुधनी काकी बजली–

“फैजली आमक भारमे की केने छेलिऐ से अहाँ बुझलिऐ?”

पत्नीक बात सुनि बुधना कक्काक मन कहलकैन, जँ प्रश्नक उत्तरमे देरी लगाएब तँ ओ सोचल-विचारल भेल, तइमे जँ चुकब तँ गाछक बानर जकाँ डारिक चुकब हएत, आ जँ धड़फड़मे बाजब तँ ओ भेल उतरा-चौड़ी। तहूमे दुनू परानी छी, पत्नी-पति छी जँ उतरा-चोड़ी नइ करैत चलब तँ परिवारक गाड़ी गुड़कबे ठमैक जाएत। मुदा देरी देख सुधनीए काकी बजली–

“फैजली आमक भारक तऽरमे, पेनीमे सापसीन आम पसारि देने छेलऐ!”

‘सापसीन आम’ सुनि बुधना कक्काक मन ठमकलैन। ठमकलैन ई जे बम्बइ, कलकतिया, सपेताक चर्च करबे ने केलैन आ सापसीनक गप किए चालि देलैन। फेर मनमे भेलैन जे जँ अपना नीक लगल एकर माने ईहो तँ नहियेँ हएत जे पत्नियोँकेँ नीक नइ लगैन...।

..भेल तँ जे सा-पसीन कहलैन, से जँ सपसिन कहितैथ तँ बुझितौं जे अपन पसीनक विचार कहलैन। सेहो ‘स’ नै ‘सा’ कहि देलैन! ओना अमैया समए छी आमक लग्न भेल, ऐमे जँ कथा-कुटुमैती जकाँ कूट भाषाक प्रयोग करब तँ ओ अनुचित हएत। तँए सापसीन आम भेल, जे सजमनियेँ आम जकाँ कहियौ आकि फैजलीसँ डेढ़िया-दोबर नमहर कहियौ, से तँ होइते अछि। मुदा शुरूहेसँ जे आम रोगाए लगैए ओकर अन्तो पीलुए भोगसँ होइ छइ। तखन तँ भेल पील्लू भोग। मुदा छी तँ सापसीने। गृहिणीक गृह विद्यालय तँ ओहन गुरुआश्रम होइत जैठाम सिसैकतो आ सिहैकतो पति ज्ञान ग्रहण करैत। पतिक रूपमे बुधना काका बजला–

“सापसीन आम तँ पीलुआहा आम छी, फैजली आमक तरमे

किए घोंसिया देलिऐ?”

पतिक गिरगिराइत, मिरमिरइत बात सुधनी काकीक मनकेँ जेना धक्का मारलकैन। जहिना दारीम, कटहर, नेबो, शरीफा पकि कऽ फटैत-फटैत, अवाज करैत फटि जाइए तहिना फटकैत सुधनी काकी बजली–

“अहाँ बुझै छिऐ जे जमैया भार छी, मुदा हम तँ समधिनियाँ भार बुझै छी, तँए रंगक संग रभस नइ होइ तखन भारे की भेल?”

पत्नीक विचारकेँ बहटारैत बुधना काका बजला–

“सालक लग्नक आखिरी मासो छी आ आखिरी भारो छी। पार लगि गेल।”

‘पार लगि गेल’ बजैक क्रममे तँ बुधना काका बाजि गेला मुदा जेना अपने मन अपना बोलकेँ रोकि देलकैन। रोकि ई देलकैन जे गाम-समाजमे बिआहक जे मान-दण्ड समाजमे चलैत अछि- जे दस वर्षे भवेत कन्या, जँ तइ हिसाबे सही समैपर बेटा-बेटीक बिआह नइ भेल तँ अनेको प्रश्न समाजक बीच उठऽ लगैए। मुदा नइ होइक पाछू की कारण अछि, तइबेरमे गाम-समाज चुप भऽ जाइए..!

..एक दिस प्रश्न अछि बेटीकेँ पढ़ा-लिखा डॉक्टर, इंजीनियर, प्रोफेसर इत्यादि बनाउ, दोसर दिस पनरह-सोलह बर्खक बेटी होइते, रंग-रंगक टीका-टिपणी समाजमे उठऽ लगैए। दुनूक विपरीत परिस्थिति छै, प्रोफेसर वा डॉक्टर बनैमे बीस-पचीस बर्खक उमर भाइए जाइए। दुनूक बीच सामंजस केना हएत..?

मुदा से हेबो केना करत, एक दिस समाजक अधिकार बुझि लोक बाजब उचित बुझैए मुदा जैठाम काजक प्रश्न अछि तैठाम पीठ देखा पाछू ससैर जाइए..! मुदा लगले बुधना कक्काक मन फरीच भऽ गेलैन। समाजसँ परिवार दिस बढ़ला। बढ़िते मनमे उठलैन, एना बेटी

माए-बापकेँ भार किए बनल अछि? ओना पहिलुको दुनू बेटीक बिआहमे तबाही भेले रहए मुदा तेसरमे तँ नाको-दम भऽ गेलौं। असे ने छल जे बेटीक बिआह कऽ सकब। मुदा फेर मन घुमलैन। घुमिते बिआहक खर्चपर नजैर गेलैन। तीन लाख रूपैआक काज भेल..!

बिआहक चौदहम मासमे बैंकक लोनक तगेदाक सूचना बुधना काकाकेँ भेटलैन। जे एजेण्ट गाइक खटालक नाओंपर बैंकसँ लोन दिया देने रहैन सएह पत्रक सूचना बुधना काकाकेँ देलकैन। बिआहक खुशी बुधना कक्काक मनसँ मेटाएलो ने रहैन, दोसर साल बीतते तेसर साल दुरागमन करता, तैबीचक सभ वीध-बेवहार निमाहि बेटी-दुरागनक हीक लगले छैन जे हँसी-खुशीसँ बेटी माए-बापक परिवार छोड़ि सृष्टिक सृजनमे एक नव परिवार बनि जीवनक धारमे बहैत झिलहोरि खेलाइत चलैत रहत।

बैंकक नोटिस नेने बुधना काका पहुँचला। बेरुका समए। एके-दुइए बेरुका चाह केते गोटे पीबियो नेने आ केते गोटे पछुआएलो रहैथ। हमहूँ पछुआएले रही। ओना बुधना कक्काक घर बेसी हटलो नहियेँ छैन, मुदा बेरुका रौदमे आएल रहैथ, उनटा रस्ता तँए सिरचढ़ रौद। जइसँ चेहरामे मलीनता आबिये गेल रहैन। देखते कहलयैन–

“काका, गोड़ लगै छी, एते रौदमे किए..?”

कहि कुरसी आगू दिस बढ़ा, बाँहि पकैड़ बैसौलयैन। थाकल-ठेहियाएल चेहरा देख कहलयैन–

“काका, चाह पीबैक समए अछि। बनि रहल अछि। तैबीच पानियोँ पीब?”

‘चाह-पानि’ सुनि बुधना कक्काक मन सिहरलैन। बजला–

“तोहूँ बैसह ने, घरवारी सब चाह-पानि पीऔत कि तोहीं

पीयेबह। किछु काजे एलौं हेन।"

बदलैत मुहोँ आ बोलोक सुर्खी देख मनमे भरोस भेल। मनमे ई हुअए जे भरिसक कोनो उकडू काजमे काका फँसि गेल छैथ तँए जालमे फँसल चिड़ै जकाँ फड़फड़ा रहल छैथ। दोसर दिस जखन मन बहटतैन तखन अनेरे पैछला सोग-पीड़ा कमतैन। कहलयैन–

"काका, साठि बर्ख तँ पार कऽ गेल हेबै किने?"

हमर बात सुनि बुधना कक्काक मनमे जेना अकासक अस्सी मन बरखा बरिस गेल होन्हि तहिना विहुँसैत बजला–

"निरमल, तोरासँ लाथ की, जिनगीमे कहियो डायरी नइ लिखलौं। डाइरियेक कोन बात जे पढ़ै-लिखैक लाटे टुटि गेल। मुदा गामक तँ नीक परिवारमे माने दस-पनरह बीगहाबला किसानमे सब दिन हिसाब रहल। कहियो ने कोनो तेहेन भार पड़ल आ ने बुझि पेलौं।"

बुधना कक्काक दौड़ैत मन जेना परिवारमे सोन्हि खुनए विदा भेल होन्हि, तहिना बुझि पड़ल। तैबीच माए चाह नेने पहुँचलि। उठि कऽ डिसमे सँ चाह उठा हाथमे दैत कहलयैन–

"चाह नइ पीआबै छी, चाहक भाँज पुरबै छी।"

जेना बुधना काकाकेँ नीक लगलैन, बजला–

"चाह कि भेल आ भाँज कि भेल।"

कक्काक बात सुनि मन मानि गेल जे बुधना काका सोलहन्नी बाटीक पानि जकाँ थीर भऽ गेला। कहलयैन–

"काका, एक गिलास चाहक दूधमे दू गिलास चाह बनल, तँए कहलौं चाह नइ चाहक भाँज पुरेलौं।"

मधुशालामे जँ सबाल-जवाब नइ होइत चलत तँ ओ मधुशले

की? केते कण्ठ फाड़ि-फाड़ि मधुमाछी सभ मधु बनबैए आ...।

..मनमे अपन विचार चलिते रहए कि बुधना काका बजला–

"ई तँ भेल फुसियाही वौस। असल चाह तँ जिनगीक चाह छी।"

कहि चुप्प भऽ गेला। चेहरासँ बुझि पड़ल काजक चिन्ता किछु बेसी छैन, तँए धड़फड़ी जकाँ छैन।

कक्काक डमहाएल बोली सुनि कहलयैन–

"गपमे एते धड़फड़ाएब तँ गप चलत। असथिरसँ पहिने चाह पीबू, पान खाएब तखन आगूक गप हेतइ।"

बुधना कक्काक उधियाइत मन तैयो उधिया जाए। चाह सधलो ने छेलैन कि बिच्चेमे उधैक बजला–

"बौआ निरमल, यएह चाह छी जे लगले पहिने पीने रहैए ओकरा-ले किछु ने भेल, अपनो मन यएह कहतै जे गदे-पर-गद उचित नहि। मुदा थाकल-ठेहियाएलक बीच आकि जाड़-ठाड़मे पड़लाहक बीच अमृतो तँ बनियेँ जाइए।"

चाह सधल, पान खेलौं। मुँहमे पान जाइते जहाँ मुँह उठा बुधना कक्काक मुँहपर देलिऐन कि हुनकर नजैर अपन काजपर अँटकल बुझि पड़ल। जेबीसँ लोन-आपसीक किस्तक कागत देखए देलैन। कागतकेँ देख टेबुलपर रखि कहलयैन–

"काका, अहाँक कन्यादान सभसँ नीक ऐ साल गाममे भेल।"

'सभसँ नीक भेल' सुनि बुधना कक्काक मन मौलाए लगलैन। जिनगीमे चारू भागसँ जेना अपनाकेँ घेराएल बुझि पड़लैन। एक दिस अछैते कमासुत परिवार रहितौ रंग-रंगक बाधा परिवारमे उपस्थिति भऽ गेल अछि। बेटीक बिआह कऽ अपनाकेँ बेटीक रीनसँ उरीन

भेलौं, मुदा बिआहक मोटाक भार तँ ऊपरमे अछिए। दुनू बेटा अपनामे अराड़ि ठाढ़ कऽ आरो फसाद परिवारमे लादि देने अछि। मुदा अपनाकेँ सम्हारैत बुधना काका बजला–

"अपना केने थोड़े भेल, समाजक केने ने भेल। चारू दिससँ सोंगर लगा, सोंगरेपर घर ठाढ़ कऽ देलक, पछाइत...।"

पुछलयैन–

"काका, कर्ज किए लेलौं?"

कर्ज किए लेलौं! एकरा सभ अधला बुझैए। मुदा परिस्थितिक सामना लेल कर्जक खगता लोककेँ भाइए जाइ छइ। सामंजस करैत बुधना काका बजला–

"बौआ, करजे ने रीन छी। मुदा जहिना माए-बापक श्राद्ध-क्रिया तक पार लगा बेटा उरीन होइए तहिना ने बेटियो बिआह रीन छी, ओकरा केला पछातिये ने ओइ रीनसँ उरीन हएब। कोनो कि खाइ-पीबैले लोन लेलौं।"

बुधना कक्काक दु-दिसिया प्रश्नक बीच भोथिया गेलौं। भोथिया ई गेलौं जे परिवारमे ओहन बहुतो रीन अछि, जेकरा चुकताएब कर्तव्यक सीमामे अछि। पाशा बदलैत पुछलयैन–

"काका, दुनू भाँइकेँ[7] नोकरीमे बचत नै छैन जे बहीनक बिआह निमाहितैथ।"

हमर बात जेना काकाकेँ नीक लगलैन। बेटाक बेवहारसँ मन एते खिन्न भेल छेलैन जे बेकाबू भऽ गेला, मुदा अपनाकेँ सम्हारैत बजला–

"की बाजू बौआ, नइ बाजू तैयो गेलौं! बाजू तैयो गेलौं! हाथक

[7] दुनू बेटाकेँ

कोनो ओंगरी कटने घा अपने हएत!"

टोकारा देलिऐन–

"से की काका!"

बुधन काका बजला–

"बौआ, तेसर बेटीक बिआह, अन्तिम कन्याँदान छल। पहिल कन्याँदानमे समए एते नइ कुदल छल तँए बेसी भारी नहियेँ भेल। दोसर कन्याँदानमे दुनू भाँइ, माने दुनू बेटा अपन बहिन बुझि सब काज केलक। नीक खर्चो भेल आ कुटुमैतियो नीक भेल। मुदा..!"

'मुदा' कहि कक्काक बोल रूकि गेलैन। जेना कियो पाछूसँ पकैड़ पाछूए दिस खिंचए लगलैन तहिना। एकाएक बीचमे बोली बन्न होइते मनमे शंका भेल जे किए बिच्चेमे काका रूकि गेला। मुदा रूकैयोक केते कारण होइ छै, जँ किछु बीचक बात बिसैर गेलौं...। चाहे जँ कोनो एहेन बात सोझमे आबि जाए, जइसँ विचारेमे टकराहट आबि गेल...। एहनो भऽ सकैए जे बिच्चेमे पानि पीबैक इच्छा जगि गेल, कण्ठे सुखए लगल...। एहनो भऽ सकैए जे मुँहमे किछु पड़िए गेल...। अनेको कारण अछिए। तँए कनी अपनो बजैसँ परहेज केलौं।

जहिना उफनाएल पानि धरियाइत-धरियाइत असथिर होइत-होइत शान्त भऽ फरीच हुअ लगैए तहिना बुधना कक्काक मन सेहो फरीच भेलैन। फरीच होइते बजला–

"बौआ निरमल, बड़का तीन-तसियामे परिवार फँसि गेल अछि।"

'परिवार' सुनि मन ठमकल। ठमकल ई जे कियो अपने कुचालि चलने फँसि जाइए, जेकरा सुचालि बनबैमे केतौ-केतौ विचारकेँ तोड़ए पड़ै छै आ केतौ-केतौ बदलैयो पड़ै छइ। अपने अही घुरछीमे घुरियाएल रही, कि बिच्चेमे बुधना काका बजला–

"बौआ निरमल, दुनियाँमे कियो केकरो ने!"

कक्काक दार्शनिक बात सुनि अपनो मन जागल। पुछलयैन–

"से की काका?"

जेना कियो ठोहि फाड़ि कनबो करैए आ बजबो करैए तहिना बुधना काका ठोहि फाँड़ि बजला–

"बौआ! बेटी हमर छी, मुदा बहिन तँ ओही दुनू भाँइक छिऐ! जे बहिन अपन बपौती सम्पैत हँसी-खुशीसँ भाए-भौजाइले छोड़ि जाइए..! आ ओही बहिनक बिआहमे अपन मुड़ी छिपैत भाए, हँसी-खुशी घरसँ बहिनकेँ विदा नै कऽ भगबैक भाँज लगा दइए!"

एक संग बुधना काका केते बाजि गेला। जँ सभ बातकेँ पकैड़ आगू बढ़ब तँ सम्भव अछि जे काजेक गप पछुआ जाए वा छुटि जाए आ अकाजेमे समए चलि जाए। तँए प्रश्नक जड़िकेँ पकैड़ पुछलयैन–

"काका, एना सोझरा कऽ कहू जे छोटकी बेटीक बिआहमे दुनू बेटामे सँ कियो मदैत नहि केलैन?"

'मदैत' सुनि जेना बुधना कक्काक दुनू बेटा परहक तम-तमी आरो चढ़ि गेलैन। बजला–

"पाँच भाए-बहिनमे जँ एक रंग-के जमीनक हिस्सा बाँटि दिअए तँ दस बीघामे चारि बीघा दुनू भाँइकेँ हेतइ। बाँकी छह बीघा तँ ओही तीनू बहिनक होइतै जे छोड़ि ओ सभ सवुर केने अछि, मुदा भाए सबहक एहने किरदानी होइ जे अपन रूपैआ बैंकमे रखने अछि आ अपने बैंकक लोनसँ बेटीक बिआह केलौं।"

बुधना कक्काक भँसैत विचार देख, मोड़ैत पुछलयैन–

"काका, छोटकी बहिनक बिआहमे दुनू भाँइमे सँ कियो ने आएल? आ ने किछु उचितो-उपकार केलक?"

अपन हारल जहिना बजैए तहिना काका बजला–

"नहि।"

कक्काक बात सुनि मनमे भेल जे एहेन तँ ने भेल छैन जे दुनू बेटा एक विचार बना हिनके ने तँ धकिया देने छैन। मुदा से बूझब केना। पुछलयैन–

"काका, एना किए दुनू भाँइ एकमुहरी मुँह घुमा लेलैन?"

'एकमुहरी' सुनिते जेना दुनू बेटा-बीचक बुधना कक्काक मनमे पन्ना उनटलैन। निधोख बजला–

"बौआ, दुनू एकमुहरी कहाँ अछि, दू-मुहरी अछि आ दुइए-मुहरी की कहबै, बहुमुहरी अछि!"

एक-मुहरी, दू-मुहरी आ बहु-मुहरीक बीच ओझरा गेलौं। पुछलयैन–

"एना नइ बुझब, कनी सोझ-साझ करि कऽ बजियौ, तखन बुझब।"

हमर बात बुधना काकाकेँ नीक लगलैन। बजला–

"दुनू भाँइमे भैंसा-भैंसीक भिरंत भीतरे-भीतर भीतरघात केने छइ। जेकर फल हमरेटा किए परिवारोकेँ भोगए पड़ि रहल छइ।"

पुछलयैन–

"से की?"

बजला–

"जड़िएसँ कहै छिअ। मैझली बेटीक बिआहमे दुनू भाँइ, बहिनक बिआह बुझि जी-जानसँ यज्ञ सम्हारलक। जे करीब दस बर्ख भऽ गेल हएत। दुनू भैंयाँ आ दुनू दियादिनियोँमे खूब मेल-मिलान रहइ। मुदा..!"

'मुदा' कहि फेर बुधना काका रूकि गेला, जेना हरक नाश कोनो बुट्टीमे लगि गेलापर बरद ठाढ़ भऽ जाइए तहिना बोलती बन्न कऽ लेलैन। हरवाह जहिना बरदक नाङ्गरि पकैड़ बोली दइए तहिना बोली देलिऐन–

"काका, अहूँ केकर दिनक पइर करै छी, पहिरै जोकर धोती जहिना फटऽ लगैए तहिना सुनै जोकर बात जखन मनमे भेल कि चुप्पे भऽ गेलौं।"

हमर बात सुनि काकाकेँ जेना हूबा जगलैन, बजला–

"दुनू भाँइक बीच किए गरमेल अछि आ की भेलै से तँ ओ सभ जानए, मुदा गामक आवा-जाही दुनू बन्न केने अछि। ने कोनो खोज-पुछारि कियो करैए आ ने...।"

कहलयैन–

"तखन तँ अहाँकेँ आरो नीक भेल किने। मारे खेत-पथार अछि, बेच-बेच खूब खाउ-पीबू। जे मन फुरए, जेना मन फुरए से करू।"

ओना उत्साहित होइ दुआरे कहलयैन मुदा काजक घुरछीमे काका तेना ओझरा गेल छैथ जे उत्साहे टुटल छैन। बजला–

"बौआ, दुनू भाँइ भैयारीक झगड़ा तेना कपारपर पटैक देने अछि जे कोनो सशे-वश ने चलैए।"

पुछलयैन–

"से की?"

बजला–

"दुनू भाँइ कोर्टसँ नोटिस करबा देने अछि जे बिना कोर्टक आदेशे सम्पैतकेँ किछु ने कऽ सकै छी। तँए ने, ने तँ दस कट्ठा खेत बेचि कऽ बेटीक बिआह कऽ लइतौं, आ जहिना ओकरा सबहक मुँह-

कान घुमल छै तहिना अपनो घुमा लइतौं।"

मुहसँ तँ किछु ने निकलल मुदा मुड़ी डोलबैत कक्काक विचारकेँ सूहकारि लेलिऐन। ओना कक्को बजैत-बजैत चुप भऽ गेल छला, तैबीच अपनो आगू किछु सुझबे ने करए जे किछु पुछितिऐन। किछु समए दुनू गोरेक बीच गुमा-गुमी रहल। तैबीच माए सेहो दोहरी चाह नेबोबला बनौने आएल। चाह देख बुधना काका बजला–

"नेबो देल चाह तँ चाहे होइ छइ।"

चाहक प्रशंसो आ मनक खुशियो देख पुछलयैन–

"काका, बैंकसँ लोन केना भेटल?"

हमर बात जेना बुधना काकाकेँ नीक नइ लगलैन। बजला–

"से सभ नइ पुछऽ! ई तँ धैनवाद कुमुदेकेँ दिऐ जे वेचारा तीस-चालीस हजार अपन संगसँ खर्चा कऽ तीन लाख रूपैआ गाइक खटालक नाओंसँ लोन दिआ देलक। जइसँ बेटीक बिआह पार लागल।"

ओना हमर पुछैक मतलब रहए जे बेटी-बिआहक दहेजक नामे तँ बैंकसँ लोन नइ भेटै छै, सुधंग लोक बुधना काका छैथे, तखन केना भेटलैन? मुदा अपन सभ बात झँपैत-तोपैत बुधना काका बजल छला। फेर मनमे भेल, हमरा बूते जे मदैत हेतैन सएह ने करबैन। जमीनक बौण्ड बनले हेतैन, तैपर बेटा सभ सेहो सम्पैतकेँ न्यायालयक मुँह देखा देलकैन। दू-दिससँ कानूनी पकड़मे काका आबि रहल छैथ। लौनो चुकताएब हुनके छैन, तैसंग अपन ओहन नगदी आमदनी नइ छैन जइसँ नगदीमे चुकौता। बेटा सभ सहजे अतिक्रमण कऽ देने छैन। अतिक्रमण ई जे जाधैर पिता जीबै छथिन ताधैर वंशगत रूपे हुनकर सम्पैत छिऐन। दियादी-बँटवारा आकि भैयारी-बँटवारा तँ आगूक सीढ़ीक भेल। मुदा एकरो तँ नहियेँ नकारल जा सकैए जे जाबे

लोक अपने नइ जीबए चाहत आ जीबैक लूरि नइ बना लेत, ताबे दोसराक भरोसे केते दिन जीब सकैए। पुछलयैन–

"काका, अपन मन की कहैए जे केना पार-घाट लगत?"

हमर बात जेना कक्काक छातीक ओइ निरजन निरजल स्थानपर पहुँच बेधि देलकैन जैठामसँ मनमे कछमछी उठलैन। चौबगलीसँ घेराएल बुधना कक्काक मन, ओइ अपराधी जकाँ बुझि पड़ैन जेकरा दर्जनो सिपाही दर्जनो हथियारसँ घेरि पकड़ने रहैए। डोलैत मन टुटैत विचारक संग बुधना काका बजला–

"बौआ, आरो जे भेल से भेल, मुदा जहिना माता-पिताक रीनसँ उरीन भेलौं तहिना धियो-पुताक रीनसँ उरीन भाइए गेलौं। तँए बहुत कचोट मनमे नहियेँ अछि, मुदा...।"

कक्काक मनक खुशीसँ अपनो मनमे खुशी जगल, पुछलयैन–

"मुदा की?"

बजला–

"मुदा यएह जे जेतबो औरदा बँचल अछि तेतबो दिन निचेनसँ केना जीब, तेकर उपाय कहह।"

एक संग केतेको उलझन छैन! तैबीच चैनसँ जीबए जाहै छैथ, समस्या छोट नहियेँ अछि। मुदा छोट हुअए कि नमहर, बिनु समाधाने चैनसँ रहबो तँ कठिन छैन्हे। तँए नीक हएत जे एक-एक समस्याकेँ सोझरा दिऐन। जखने समस्या सोझरा जेतैन तखने जिनगी सोझरा जेतैन, आ जखने जिनगी सोझरा जेतैन तखने निचेनी आबि जेतैन। कहलयैन–

"काका, बैंकक लोनक तगेदाक प्रक्रिया सेशन कोर्ट जकाँ लगले-लगले नइ होइ छै, एते चूक तँ भेबे कएल जे ओ वेपारी लोन

छिऐ, जेकर लाभ वेपारे केनिहारकेँ होइ छै, से नइ भेल। मुदा बेटियोक बिआह तँ मान-सम्मान, इज्जत-प्रतिष्ठा बँचा पार लगाएब साधारण नहियेँ अछि। तखन तँ भेल भीख मांगि भीख बाँटब, चाहे देब।"

हमर बातसँ जेना बुधना कक्काक मन फुनगुनेलैन, बजला–

"गाममे देखै छिऐ बैंकक सिपाही अबै छै आ लोककेँ घरसँ पकैड़ लऽ जाइ छै, तेकर डर होइए!"

कहलयैन–

"जहिना बेटा सब तीन-तसिया चालि मारि अहाँकेँ ओझरा देलैन हेन तहिना ओकरो सबहक ऊपरमे भार दिअ पड़त कक्का।"

बिच्चेमे बजला–

"से जँ होइ तँ घीवोसँ चिक्कन।"

बुधना कक्काक चपचपाइत मन देख पुछलयैन–

"काका, आबो कहू जे अपन मन की अछि।"

जेना बुधना कक्काक मनमे विचारले रहैन कि की, तहिना धाँइ-दे बजला–

"बौआ, साँपो मरि जाए आ लाठियो ने टुटए, तेहेन जँ भऽ जाए तँ सभसँ नीक। किछु छी तँ परिवारे छी किने, केना अपना आँखिए ओइ गाछ जकाँ देखब जे या तँ बँझिया गेल अछि या गराड़-पील्लूसँ जकैड़ गेल अछि या जेकर सुखाएल, ठुठियाएल डारि सभ भऽ गेल छइ।"

बजैत-बजैत जेना बुधना कक्काक मन उमैड़ गेलैन। मुँहक बकार बन्न मुदा धारक पलाड़ी जकाँ परिवारक धार हृदैमे बहऽ लगलैन।

कहलयैन–

"काका, सभ किछ ठीक भऽ जेतै! खाली मनकेँ चैन कऽ चेन जकाँ रस्ता बना ऐगला डेग उठबए पड़त, तहीसँ सबटा बेचैनी मनसँ पड़ा जाएत।"

विहुँसैत बुधना काका बजला–

"बौआ, जहिना अबैकाल रस्ता चोन्हिआइ छल से आब फरीच बुझि पड़ैए। अअ जाइ छी, फेर निचेनमे आगूक गप करब।"

कहलयैन–

"बड़बढ़ियाँ।"

◌

शब्द संख्या : 3235, तिथि : 8 मार्च 2015

परिचय

नाओं : जगदीश प्रसाद मण्डल
जन्म : 5 जुलाई 1947 ई.,
माता : स्व. मकोबती देवी।
पिता : स्व. दल्लू मण्डल।
पत्नी : श्रीमती रामसखी देवी।
पता : गाम- बेरमा, भाया- तमुरिया,
प्रखण्ड- लखनौर, अनुमण्डल- झंझारपुर,
जिला- मधुबनी, (बिहार) पिन : 847410, **मो.** 9931654742

मातृक : मनसारा, भाया- घनश्यामपुर, जिला- दरभंगा। **जीविकोपार्जन :** कृषि (मुख्यत: तरकारी खेती) **शिक्षा :** एम.ए. द्वय (हिन्दी, राजनीति शास्त्र) **साहित्य लेखन :** 2001 ईस्वीक पछाइतसँ...। **सम्मान/पुरस्कार :** 'विदेह सम्मान', 'विदेह भाषा सम्मान', 'टैगोर लिटिरेचर एवार्ड', 'वैदेह सम्मान', 'यात्री सम्मान', 'विदेह बाल साहित्य पुरस्कार' तथा 'कौशिकी साहित्य सम्मान'सँ सम्मानित/पुरस्कृत।

मौलिक रचना संसार- 1. गीतांजलि, 2. सुखाएल पोखरिक जाइठ, 3. तीन जेठ एगारहम माघ, 4. सरिता- गीत संग्रह। 5. इन्द्रधनुषी अकास, 6. राति-दिन, 7. सतबेध- कविता संग्रह। 8. पंचवटी- एकांकी संचयन। 9. मिथिलाक बेटी, 10. कम्प्रोमाइज, 11. झमेलिया बिआह, 12. रत्नाकर डकैत, 13. स्वयंवर- नाटक। 14. मौलाइल गाछक फूल, 15. उत्थान-पतन, 16. जिनगीक जीत, 17. जीवन-मरण, 18. जीवन संघर्ष, 19. नै धाड़ैए, 20. बड़की बहिन, 21. भादवक आठ अन्हार, 22. सधबा-विधवा, 23. ठूठ गाछ, 24. इज्जत गमा इज्जत बँचेलौं, 25. लहसन- उपन्यास। 26. कल्याणी, 27. सतमाए, -28. समझौता, 29. तामक तमघैल, 30. बीरांगना- एकांकी। 31. तरेगन, 32. बजन्ता-बुझन्ता- बीहैन कथा संग्रह। 33. शंभुदास, 34. रटनी खढ़- दीर्घ कथा संग्रह। 35. गामक जिनगी, 36. अर्द्धांगिनी, 37. सतभैंया पोखैर, 38. गामक शकल-सूरत, 39. अपन मन अपन धन, 40. समरथाइक भूत, 41. अप्पन-बीरान, 42. बाल गोपाल, 43. भकमोड़, 44. उलबा चाउर, 45. पतझाड़, 46. लजबिजी, 47. उकडू समय, 48. मधुमाछी, 49. पसेनाक धरम, 50. गुड़ा-खुद्दीक रोटी, 51. फलहार, 52. खसैत गाछ, 53. एगच्छा आमक गाछ, 54. शुभचिन्तक, 55. गाछपर सँ खसला, 56. डभियाएल गाम, 57. गुलेती दास, 58. मुड़ियाएल घर, 59. बीरांगना, 60. स्मृति शेष, 61. बेटीक पैरुख, 62. क्रान्तियोग, 63. त्रिकालदर्शी, 64. पैंतीस साल पछुआ गेलौं- लघु कथा संग्रह। ◌ ◌ ◌



पल्लवी प्रकाशन
तुलसी भवन, जे.एल.नेहरू मार्ग, वार्ड न. 06,
निर्मली, सुपौल, बिहार : 847452

₹ 251

ISBN : 978-93-87675-02-5

3rd Edition

खसैत गाछ

जगदीश प्रसाद मण्डल



खसैत गाछ

जगदीश प्रसाद मण्डल



पल्लवी प्रकाशन
निर्मली

समर्पण भाव

एक दिस कोनो काजक मूर्तिरूप अछि
दोसर दिस खढ़-माटिसँ गढ़ल...
तैठाम देखनिहारोकेँ तँ किछु दायित्व बनियेँ जाइ छै..!



ISBN : 978-93-87675-05-6

दाम : ` 251/-

तेसर संस्करण : 2017

प्रकाशक : पल्लवी प्रकाशन
तुलसी भवन, जे.एल.नेहरू मार्ग, वार्ड नं. 06, निर्मली, जिला- सुपौल, बिहार : 847452

वेबसाइट : http://pallavipublication.blogspot.com
ई-मेल : pallavi.publication.nirmali@gmail.com
मोबाइल : 8539043668, 9931654742

प्रिन्ट : मानव आर्ट, निर्मली (सुपौल)
आवरण : दी साहु प्रिन्टिंग प्रेस. निर्मली (सुपौल) पिन : 847452

KHASAIT GACHH
Collection of Short Stories by Sh. Jagdish Prasad Mandal.

कथाक सत्तैर

क्रियाशील

पनचैतीक कौल्हका समए गाममे बनल। घटना तँ काल्हिये पोखैरक घाटपर भेल, मुदा पनचैती तँ गामक पञ्चे ने करता, से तँ पोखैरे घाटपर नै बैसल छला जे घटनाक सोझा-सोझी पनचैती करितैथ।

भेल ई जे जीयालालक बारह-तेरह बर्खक बेटी पोखैर नहाइले गेल छलि। टोलसँ सटले पोखैर तँए असगरो-दुसगर लोक नहाइले जाइते अछि।

जीयालालक बेटी श्याम सुन्नैर बाधसँ घास लऽ कऽ घरपर आबि रखलक आ अबेर होइत जाइत देख अलगनीपर सँ कपड़ा लऽ सोझहे पोखैर नहाइले चलि गेलि।

घाटोक तँ चलती होइ छै, जेहेन दिनक काज तेहेन पोखैर-घाटक चलती। जेठ मास रहने भिनसुरके चलती पोखैरक। ओना जेते गोरेक नहाइक पोखैरक घाट छिऐन, तइमे सभ नै नहेने छला मुदा बेसी लोक नहा नेने छला।

असगरे श्याम सुन्नैर पोखैरक घाटपर पहुँच, ऊपरमे कपड़ा रखि घाटपर बैस पएर माजए लगल। उत्तरे-दछिने घाट। उत्तरसँ दच्छिन मुहेँ बैस पएर माजैत रहए। तही बीच राजकुमार पाछुएसँ आबि आगूमे ठाढ़ भऽ गेल।

राजकुमारपर नजैर पड़िते श्याम सुन्नैर चौंकि गेल। मुदा मनमे कोनो तरहक शंका नइ भेलै। शंको केना होइतै, एके टोलक- चिन्हरबे लोक, भैया सेहो कहिते अछि। ओना साढ़े एगारह बजेक समए, टहाटही रौद, मुदा सुनसान तँ रहबे करइ। ने कियो दोसरे पोखैरक घाटपर आ ने आने-आन महारपर रहइ। श्याम सुन्नैरक मनमे भेल जे भैरसक राजोकुमार नहाइएले एला अछि, सभ नहाइते अछि। तहूमे आन पोखैर जकाँ घाटोक बँटबारा नहियेँ अछि।

घाटोक बँटबारा केते रंगक होइए। केतौ पुरुख-स्त्रीगणक बीच होइए तँ केतौ जातिक बीच तहिना केतौ टोल-टोलक बीच होइए। मुदा से सभ नइ रहने कोनो शंका श्याम सुन्नैरकेँ नहियेँ भेल।

राजकुमार बाजल-

“श्याम...?”

ओना राजकुमारक स्वर कर्कश नै, नरम-कोमल छल, मुदा ‘श्याम’ सुनि श्याम सुन्नैरक मन नाचि उठल। मनमे भय आबए लगलै। मुँह झाड़ि श्याम सुन्नैर राजकुमारसँ कहियो बाजल नै छल, मुदा टोकक उत्तरो केना नइ दैत।

बाजल-

“हूँ।”

एक-टकसँ राजकुमार श्याम सुन्नैरकेँ देख रहल छल। चारूकात नजैर खिड़ा श्याम सुन्नैरक गट्टा पकड़लक। गट्टा पकड़ाइते श्याम सुन्नैरक मनमे आगि पजरए लगल। मुदा आगियो तँ आगि छी, जेकर कोनो सीमा-सरहद नइ छइ। मनक आगि, बुधिक आगि, विचारक आगि, देहक आगि, विवेकक आगि इत्यादि...। मुदा से नइ इज्जतक सीमापर अपन रक्षा करबक आगि छेलइ। छातीमे ओ दम नइ छेलै जे सीना तानि आगूमे ठाढ़ होइत।

जहिना भाँग-गाँजाक निशाँ ऊपरे मुहेँ चढ़ैत रहैए तहिना राजकुमारक पिशाच मन ऊपर बढ़ैत उग्र होइत गेल।

गट्टासँ अपन हाथ ससारैत राजकुमार श्याम सुन्नैरक बाँहि पकैड़ लेलक। बाँहि पकड़ाइते श्याम सुन्नैरक मन तरसए लगल। मनमे उठलै गाममे ईहाए-टा छुतहर नइ अछि, छुतहरेसँ गाम भरल अछि। एहेन छुतहर-गाममे घरहर बनि जीवन-जापन केना करब...?

सोच-विचार करैत श्याम सुन्नैरक मन कलैप-कलैप कानए लगलै। मुदा द्रोपदी जकाँ कियो वस्त्र दइबला नै...!

सातो रंगमे श्याम सुन्नैर चेहरा बदलए लगलै। पिशाच राजकुमार श्याम सुन्नैरक बाँहि पकैड़ घाटपर खसा देलक। आ पोखैरमे धँसि नहाए लगल।

घाटपर सँ उठि श्याम सुन्नैर ने कानल आ ने नहेलक। सोझहे दहिना बाँहि तर कपड़ा नेने आँगन दिस विदा भेल।

आँगनक बाट पकैड़ते श्याम सुन्नैरक मनमे उठल- आँगनसँ हटल छी, बीचक टोलमे दोसराइत सबहक घर छै, जँ मुँह खोलि कानब तँ अपन माता-पिता थोड़े सुनता, ओ तँ सुनत बीचला गामक लोक। लोको तँ लोके छी। कियो दुखक दवाइ थोड़े करत ओ तँ तिलकेँ ताड़ो बनौत आ केना आरो इज्जत लूटा गाममे बसल रहब, सएह ने सोचत। गाममे कि हमरे संग एहेन दुरबेवहार भेल, सेहो तँ नहियेँ अछि। छगड़ा गोत्रक गामे छी।

गामपर सँ नजैर हटि श्याम सुन्नैरकेँ अपनापर आबि अँटकलै। हम केतए छी?

अपना दिस हिया कऽ देखलक तँ बुझि पड़लै जे जहिना सात तह चमड़ाक तरमे हड्डी रहैए तहिना ने हमहूँ छी। एक तँ गरीब घरमे जनम भेल, तैपर गामक वस्तीमे तीन-घरिया टोलक छी, तीने घर

दियादी-परिवार अछि जे स्कूलक मुँह आँखि नै देखलक, अपनो जे उमेर आ जे समए स्कूल जाइबला अछि, तइमे घास छिलै छी...।

मन आगू बढ़लै। मनो तँ मने छी, नारद जकाँ तीनू दुनियाँ टहलान मारैबला। श्याम सुन्नैरक मन परिवारो आ समाजोसँ हटि अपनापर आबि अँटैक गेलै। अँटकिते मनमे उठलै- ओह! अपन इज्जत जँ लोक अपने नै बँचौत तँ बँचि केना सकत। समुद्रक कातक धारे जकाँ ने समाजोक धार बहैए। जखन समुद्रमे जुआरि उठै छै तखन कात-करोटसँ अबैत धारक गति मध्यम होइत मधुआ जाइए, ओहो जुआरि पाबि उनटे दिस बहए लगैए। आ ताधैर बहैए जाधैर धारक पाछूसँ अबैत धारा प्रवल नै बनि जाइए। मुदा जे समुद्र धार सबहक मातृ-तुल्य जेठ भाए-बहिन बनि अछि ओ केना अपन शील-क्रिया बिसैर जाएत।

अनायास श्याम सुन्नैरक मनमे जगल- ओह! हमरोसँ चूक भेल। जिनगीक अमूल्य रत्न जखन लूटाइए गेल तखन जँ ओकरो अमूल्य रत्न-आँखि किए छोड़ि देलौं!

अपसोचमे श्याम सुन्नैर ओइ डूबा घाट जकाँ डुबि गेल जे ऊपरसँ देखा नै पड़ैत। मुदा आगू मुहेँ मन ससैरते परिवारपर एलै, माता-पितापर एलै। अपने परिवार सन भैयन कक्काक परिवार सेहो छैन। हुनको बेटीक संग हमरे जकाँ ने दिने-देखार इज्जत लूटि लेलकैन। हुनकेटा किए। हुनका सन-सन समाजमे केतेको गोरेकेँ लूटबे केलकैन आ अखनो लूटि रहल छैन।

श्याम सुन्नैरक मन थोड़े असथिर भेल, मुदा लगले थिरैक गेल। थिरैक ई गेल जे सभकेँ अपन-अपन शील-गुण होइ छै, जे अपन-अपन किरियासँ अरजित करैए। ई तँ भेल शील अर्जन, मुदा हमरा संग आकि हमरा सन-सन आनोक संग जे बेवहार होइत आबि रहल

अछि, से तँ अपन किरियाक फल नै छी? ओना एहेन वृत्ति खाली जोरे-जबरदस्तीटा सँ नइ, मेलो-मिलानसँ तँ होइते आबि रहल अछि। जेकरा लोक खेल बुझि खेलाइए।

श्याम सुन्नैरक मन उझैक गेल। उझैक ई गेल जे जहिना किनको बेटी आकि बहिन हम छी, जेकरा समाजोक नजैरसँ खसौलक आ धर्म-कर्म शास्त्रो जेकरा अधम वृत्ति बुझि तियागैक विचार दइए, सेहो नष्ट भेल, तहिना ओकरो माए-बहिनक संग किए ने हुअए। मुदा एहेन विचार अनुचित छी, जे अबोध-अज्ञानी श्याम सुन्नैरक मनमे नै उठि पौलक। उठैक चाहै छेलै जे जे वृत्तिकेँ समाज अधला बुझि दुसैए, जँ एहेन वृत्ति समाजमे होइए तइले समाजकेँ समाज बनि चलैले किछु चिक्कन बाट बनबए पड़तै। ओ के करत?

राजकुमार अपनाकेँ घाटपर असगर देख, निसचिन्तो-सँ-निसचिन्त भऽ गेल। जँ कोनो चोरक घर बौसे ने पकड़ाएत तँ ओ चोर भेल केना? तहूमे कानून-कायदासँ चलैबला शासनमे तँ ई मोटा आरो भारी अछि। चोरी केनिहार चोर, वस्तु चोरेलक तँ चोरेलक मुदा जाबे ओकरा चोर साबित नइ कएल जाएत, चाहे साबित नइ हएत, ताबे चोरक रूप केना देल जाएत। मुदा समाज तँ से नइ छी, ओकरामे जीवन्तता छइ।

राजकुमारक मन मिसियो भरि विचलित नइ भेल जे अपराध केने लोक अपराधी बनैए आ अपराधी बनि समाजकेँ मुँह देखब आकि देखाएब केना, दुनू तँ अधला भेबे कएल। राजकुमारक मनमे एहेन विचारे किए उठत जे अधला केलौं जइसँ मुँह देखबैबला नइ रहलौं। सालक-साल, दिनक-दिन चलैबला परम्परा कहियौ आकि बेवहार, ओ तँ समाजमे अछिए। तेकर अनेक कारणो छइ। कारणोक कारण छै जे एक दिस अधला वृत्तिकेँ अधला बुझि कियो थूक फेकैए तँ कियो

एहनो तँ ऐछे जे खेल बुझि खेलौड़ करैए। एहने खेलौड़ करैबला राजकुमारो। राजकुमारेटा किए कहबै अनुलोम-प्रतिलोम पद्धैतक क्रिया किए ने कहबै...।

आँगन आबि श्याम सुन्नैर घरक छप्परपर कपड़ा फेकि, ढेकी-घरक खुट्टामे ओङैठ मन मारि मुड़ी खसा बैस रहल। बाड़ीसँ अबैत श्याम सुन्नैरक माए- सुधीराक नजैर अँगनाक मुहथैरे लगसँ पड़लैन। श्याम सुन्नैरपर नजैर पड़िते सुधीरा बजली-

"बुच्ची, नहा कऽ एलह?"

माइक बात सुनि श्याम सुन्नैरक छाती छहोंछित भऽ गेल। मन तड़ैस उठलै- शील हरण! छाती दरैक गेलै। दरकिते कमला धार जकाँ दुनू आँखि बहऽ लगलै।

नहाइ-खाइ बेर देख सुधीरा सुखाएल ठौहरी चुल्हि लग पटैक ठाढ़े घूमि श्याम सुन्नैरक बहैत दुनू नयन-धार देख बजली-

"बुच्ची, हमरा अछैते तोहर आँखि किए बहै छह?"

माइक बात जेना श्याम सुन्नैरक छातीकेँ छेद देलक। बकार नइ फुटलै, मुदा आँखि उठा माएकेँ पएर लगसँ चाइन धरि खिड़ा कऽ देख नजैर निच्चाँ खसा लेलक। बाजल किछु ने।

माए पुछलकै-

"एना मन खसल किए छह?"

माइक बात सुनि श्याम सुन्नैरक मनमे चुल्हिपर चढ़ल बरतनक पानि जकाँ तरसँ बुमकौला तँ छुटै मुदा ऊपर अबैत-अबैत फुटि-फुटि असथिर भऽ जाइ, जइसँ मुहसँ बाहर निकलबे ने करइ। ओना आँइखेटा नै मुहोँ आ मुँहक सुरखियो अपन बेथा-कथा बाजिये रहल छेलइ।

दोहरबैत सुधीरा बजली-

"बुच्ची, हम माए छिअह, हमरासँ कोनो बात किए छिपबै छह?"

माइक बहैत धारमे श्याम सुन्नैर भँसियाइत बाजल-

"माए, नहाले पोखैर गेल छेलौं। घाट खाली छेलइ। कियो केतौ ने छेलै, तही बीच रजकुमरा आएल। नहाइले आएल कि ओहिना आएल से ते ओ जानए मुदा ओ...!"

'ओ' कहि श्याम सुन्नैरक मुँह बन्न भऽ गेलै। बेटीक बात सुनि माएकेँ कोनो अरथे ने लगलैन। बेटीक मुँहक अधकचरा गप उत्तेजित कऽ देलकैन, बजली-

"एना किए मुड़ी छोपि कऽ बजै छह। जे भेलह से साफ-साफ खोलि कऽ बाजह।"

माइक बात सुनि श्याम सुन्नैरोक हूबा जगल। बाजल-

"माए, घाटपर...!"

'घाट' सुनि सुधीराक मन चौंकलैन। मनमे पैछला एकटा घटना उठि एलैन। छह मास पहिने वएह राजकुमार ओही घाटपर सोनेलालक बेटीक इज्जत-आवरू लूटि नेने रहइ। हो-न-हो एहने किरिया ने तँ हमरो बेटीक संग केलक। मनमे ऐबते विचारक झाँउ उठलैन, बजली-

"बुच्ची, सत्-सत् बाज, जे कियो किछ...?"

माइक बात सुनि श्याम सुन्नैर, छातीकेँ पथ्थर करैत बाजल-

"माए, रजकुमरा घाटपर खसा देलक।"

'घाटपर खसा देलक' सुनि सुधीराक मनमे आगिक जुआर उठि गेलैन। बड़बड़ाए लगली-

"की हमर बेटी ओकर ठकदरूआ छी जे हँसी-मजाक केलक? किए हमरा बेटीक देहमे भीड़ल? जनिपिट्टाकेँ सतबन्हना बाढ़ैनसँ झाँटबै...।"

बरबड़ाइत पति लग पहुँच सुधीरा बजली-

"गाममे अन्हेर होइए। केकरो इज्जत-आवरू बाँचब कठिन अछि।"

खोलि कऽ अपन बात नइ बाजि झँपले-तोपल बजली मुदा गामक बेवहारसँ जीयालाल बुझि गेला जे श्याम सुन्नैरक संग जरूर किछ अन्याय-अनीति भेल...! विस्मित भऽ गेला- न्याय के करत?

...अपना ओतेक शक्ति अछि जे गामक अन्याय-अनीतिक कोन बात जे अपन परिवारोक अन्याय-अनीतिकेँ रोकि सकब।

मुदा लगले जीयालालक मनमे उठलैन- चुपचाप अन्यायकेँ सहियो लेब केहेन हएत?

...आइ जेहेन अन्याय भेल, काल्हियो तँ हेबे करत। जखन दिनो-दिन अहिना हएत तखन मनुख आ पशुमे की अन्तर भेल।

तही बीच सुधीरा दोहरबैत बजली-

"मनक बेथे बेटी नहेबो ने केलक आ अन्नो-पानि गरहन नै करए चाहैए!"

पत्नीक बात सुनि जीयालालक दुनू आँखिसँ नोरक धार निच्चाँ मुहेँ बहऽ लगल। तरसैत, टघरैत, तड़पैत जीयालालक मन अगम पानिमे डुमल डुब्बा जकाँ भऽ गेल। अनायास मुहसँ बहराएल-

"हे भगवान जनिहऽ तूँ।"

मुदा पोखैर हौउ कि इनार आकि धार हौउ कि समुद्र, पानिक ऊपरसँ जे अवाज जेते जोरसँ सुनि पड़ै छै तेते पानिक तरोक अवाज

सुनाइ दइ छइ। हमर बात सुनत के? समाजो तँ समाजे छी। सभ किछु समुद्र जकाँ अपना पेटमे रखने अछि। ओही समाजक बीच ने पञ्च-परमेसर सेहो बास करै छैथ। जरूर हमर न्याय हएत।

मुदा लगले मन हहैर-हहैर निच्चाँ खसए लगलैन। सोनेलालोक बेटी संग तँ अन्याइए भेल छल, गामक लोक मुँह तकैत रहि गेल। केकरो मुहसँ एतबो नै निकललै जे जँ समाजमे अन्याय-अनैतिक बेवहार हएत तँ समाज नष्ट हएत। टुटैत-टुटैत एहेन टुटान टुटि जाएत जे समाजक चीन-पहचीन मेटा जाएत...।

गुन-धुनमे पड़ल जीयालालक मनमे उठल- सोनेलाल भाय एकघरिया छैथ, जहिना जाति तहिना दियादवादमे, जखन कि रजकुमरा सभ तरहेँ बीस अछि। झमटगर दियादोवाद आ जातियो छै, तैपर सेरो-सम्पैत तँ छइहे। समाजक लोक ओकरा किछु थोड़े कहलक। तँए ने सोनेलाल भाय मुँहचुरू भेल गाममे छैथ!

लगले जीयालालक मन अपना दिस बढ़लैन। हमहूँ तँ सएह छी। मुदा जिनगी तँ संघर्षेमे नुकाएल अछि। जँ ओकरा छोड़ि जीबए चाहब तँ एको दिनक कोन बात जे एको क्षण नै जीब सकै छी। मनमे हूबा जगलैन।

हूबा जगिते जीयालाल पत्नीकेँ कहलखिन-

"बुच्चीकेँ कहियो जे अन-पानिक कोन दोख छै जे तियागत। भगवान हमरो जनम पुरुखेक कोखिमे देने छैथ, जाइ छी समाजकेँ कहबैन।"

पतिक विचार सुनि सुधीरोक मन उत्साहित भेलैन। उत्साहित होइत श्याम सुन्नैरकेँ कहलखिन-

"बुच्ची, उगलाहा सभ देखै छथिन, तँए जँ केतौ उगल हेता ते हमरो निसाफ करबे करता। तइले अन्ने-पानि तियाग केने की हेतह।

अहिना जिनगीक गाड़ी गुड़कैत चलै छइ। तहूमे अपने समाजकेँ कहए जा रहल छैथ, कखन घुरि कऽ औता कखन ने, तँए मालो-जाल देखए पड़तह।"

श्याम सुन्नैरक मनक बेथा किछु कमल। ओना समए बीतने घाओक चोट कमैए, मुदा सभठाम कमिते अछि सेहो बात तँ नहियेँ अछि। केतौ कमबो करैए आ केतौ बढ़बो करैए। मुदा से नइ, ऐठाम बेटीक बेथा कनी कमल। ढेकी घरसँ निकैल श्याम सुन्नैर, पोखैर छोड़ि कलेपर नहाइले गेलि।

घरसँ निकलिते जीयालालक मन चोन्हिया गेलैन। चोन्हिया ई गेलैन जे समाज तँ समाज छी, मुदा किछु गनले-गूथल लोक छैथ जे गामक पनचैती करै छैथ। सेहो पनचैती की करै छैथ, किछु राजनीति करै छैथ आ किछु बेपार।

लगले जीयालालक विचार ठमैक गेलैन। ठमैक ई गेलैन जे समाजक लोको तँ लोके छिया। घरसँ भागल सन्यासी जकाँ कोनो मतलबे ने गाम-समाज-दुनियासँ छैन। दुनियाँ झूठ छी। सभ अपने-अपने काजे बेहाल अछि, किए कियो केकरो दिस ताकत। सौनक मेघ जकाँ जँ ठनकत तँ आरो साहोर-साहोर करैत दुनू हाथ माथपर रखि नीति बघारता जे ठनका ठनकै छै ते लोक अपना मत्थापर हाथ लइए।

बढ़ैत डेग जीयालालक फड़फड़ेलैन। जहिना चिड़ै दुनू पाँखि फड़फड़ा उठैए तहिना जीयालालोक मन फड़फड़ाएल रहैन। फड़फड़ाएल ई रहैन जे जिनगीकेँ केतौ-ने-केतौ धरतीपर खुट्टा गाड़ि अपनाकेँ तइमे बान्हि चलए पड़त। जँ से नइ चलत तँ जिनगीक उचित मोल नइ भऽ सकै छइ। जइले जरूरी अछि जे कोनो समस्या उठने ओकरा सोझे ठेल कऽ कतबाहि नइ कऽ नीक-बेजाइक कसौटीपर कैस ओकरा ठेली। जाबे जिनगीकेँ धरतीपर रोपि ठाढ़ नै करब ताबे

जिनगी ठाढ़ केना हएत।

जीयालालक मनमे उत्साह जगलैन। समाज दिस डेग बढ़ौलैन।

जीयालाल मने-मन विचारलैन जे गाम-समाजमे घरे-घर सभकेँ अपन दुखनामा कहबैन, की करता से ओ जनता मुदा समाज होइक नाते जँ अपन बात समाजकेँ नइ कहबैन सेहो नीक नइ बुझि पड़ैए।

पाहि लगा-लगा जहिना खेत जोतल जाइए, धान रोपल जाइए, जइसँ केतौ छुट-छाट नइ होइए तहिना जीयालाल सौंसे गाम कहब शुरू केलैन। घरक बगलक जे घर रहैन तैठाम पहुँच दरबज्जापर सूतल घरवारीकेँ जगबैत बजला-

"जीतू भाय, जीतू भाय, नीन तोड़ू।"

ओना जीतू भाय जगले छला मुदा आँखि बन्न छेलैन। जीयालालक बात सुनि आँखि तकैत बजला-

"एते रौदमे किए एलौं?"

जीतू भाइक विचार सुनि जीयालालक मन, रौदमे पड़ल घी वा गड़ीक तेल जहिना पघिलऽ लगैए तहिना पघिल गेलैन। पघिलल मने बजला-

"भाय, बिपैतमे पड़ि गेल छी तँए एलौं।"

अपने चौकीपर सँ उठैत जीतू भाय जीयालालकेँ बैसबैत पुछलखिन-

"केहेन बिपैत पड़ि गेल अछि?"

जीयालाल-

"भाय, गाममे मुँह देखबै जोकर नइ रहि गेलौं। की कहब, बिआह करै जोकर समरथ बेटीक संग पोखैरक घाटपर रजकुमरा...।"

कहि जीयालाल हवोढकार भऽ कानए लगला। कोसी-कमला

धार जकाँ दुनू आँखिसँ नोर टघरए लगलैन, दुनू आँखि ललियाए लगलैन, छाती दलकए लगलैन। बकार बन्न भऽ गेलैन।

आशुतोष दैत जीतू भाय कहलखिन-

"जीया भाय, आइए नइ, सभ दिनसँ मनुख-मनुखक संग अन्हेर करैत आबि रहल अछि, अखनो करैए आ कहिया तक करैत रहत सेहो ठीक नइ अछि। तखन तँ भेल जे एहेन अन्हा गाममे तँ कन्हा बनि रहै पड़त।"

जीतू भाइक बात सुनि जीयालालक मन थकमकेलैन। दुखक जे धार बहैत रहैन ओ जेना ठमकलैन। बजला-

"सहए भाय।"

'सएह' सुनि जीतूओ भाइक विचारक प्रवाह बदललैन। बजला-

"जीया भाय, अहीं-हमहींटा समाजमे नइ छी, जेकरा संग अनीति-अन्यायक संग अन्हेर नै होइए। जेना अहाँक संग भेल अछि तेना तँ नइ मुदा देखबे करै छी जे तीन बीघा खेत छेलए, लाठी हाथे मनमोहना जोइत लेलक। ने गाममे कियो किछ केलक आ ने कोट-कचहरी, थाना-पुलिस। साँपक मुँह साँप चटै छइ। देखबे करै छी, तहिना थाना-पुलिस कोटक आदेशक नामो लगबैत रहल आ कोट-कचहरी, कागज अपना लग रखि किछु बजबे ने करैए। तीस बरख भऽ गेल, अछैते चीजे अन्न बेतरे दुख कटै छी।"

जीतू भाइक बात सुनि जीयालाल मने-मन विचार करए लगला। जैठाम धन-धर्म सभ लूटिनिहार लूटि रहल अछि आ लुटनी-कुटनी चलि रहल अछि, तैठाम जिनगी जीब असान अछि, मुदा उपए?

चौकीपर सँ उठैत जीयालाल बजला-

"भाय, सौंसे समाजकेँ जँ नइ जना देबैन तँ काल्हि दोखी बनब। दोखी ई बनब जे जिनका नइ कहने रहबैन, ओ ताना मारि कहता जे अहाँ हमरो तँ एको बेर नइ कहलौं।"

जीयालालक विचार जीतूओ भायकेँ जँचलैन। उठि कऽ कनी आगू तक अरियातैत कहलखिन-

"नीक विचार अछि। भगवान भल करैथ।"

टोले-टोल, घरे-घर, राजकुमारक परिवार छोड़ि, जीयालाल भरि दुपहरिया रौदमे घूमि-घूमि सभकेँ अपन दुखनामा सुना निर्णए करैले कहलखिन। संगे ईहो कहलखिन जे काल्हि समाजक बीच पनचैती बैसाएब, जइमे समलित भऽ अपन विचार दी।

ओना समाजो तँ समाजे छी आ लोको तँ लोके छी। कियो घटनोसँ फाजिल विचार देलखिन, तँ कियो घटनाकेँ अनदेखी करैत सेहो विचार देलखिन।

समलित विचार आ छुट्टा विचार सेहो तँ समाजमे अछिए। छुट्टो विचार तँ छुट्टे छी, कखनो एक पक्षक पक्षमे विचार देब तँ कखनो दोसर पक्षमे। आ सभसँ लाजमी बात ई अछि जे देखलोकेँ बिनु-देखलाहा आ सुनलोकेँ बिनु-सुनलाहा कहनिहार बेसी अछि। मुदा जे अछि, छी तँ समाजे। ने एक गोरेक सुधारने सुधरत आ ने एक गोरेक बिगाड़ने बिगड़त। ओइले तँ लोककेँ महजाल बनबए पड़ै छइ।

दियारी पावैनमे जहिना घर-अँगनाक काज सम्हारै दुआरे पोखैर-इनारक काज लोक समैसँ करऽ चाहैए, तहिना भेल।

बेर टगि गेल छल, सुरुजमे लालिमा सेहो पकड़ए लगल छल मुदा रौतुका कोनो सिरखार नइ जगल छल। टोलक कोन बात जे गामेक जनिजाति अपन-अपन खानगी चापाकलकेँ भंगठल कहि सड़कक कातक आ चौक-चौराहा परहक कलपर सबेर-सकाल पानि

भरैले जुटए लगली। जेना अपन सभ काज बिसैर-बिसैर सभ निचेनसँ बाल्टीन नेने पहुँचल छेली तहिना स्थिति बनि गेल। स्त्रीगणक ई टटका जुटान भेल। जुटानो केना ने होइत, कोनो कि छोट-छीन घटना भेल जे नइ हएत।

चौकक कलपर रामपुरवाली आ किसुनपुरवालीक बीच कहा-कही होइत दुनूकेँ पकड़ा-पकड़ी भऽ गेल। पकड़ा-पकड़ीक कारण भेल जे राजकुमारक सासुर रामपुर आ जीयालालक सासुर माने श्याम सुन्नैरक मात्रिक किसुनपुर। कलक चबुतरापर दुनू गोरे अपन-अपन बाल्टीन रखि दुनू-दुनूक बाँहि पकड़ने। ललैक कऽ किसुनपुरवाली बाजल-

"एहेन-एहेन छुतहर पुरुखकेँ माथक केश काटि कारीख-चुन लगा सौंसे गाम टहलौल जाएत तखन छुदरपना छुटतै।"

किसुनपुरवालीक बात जेना रामपुरवालीकेँ करेजमे छुबि देलकै तहिना पाशा पलटैत राजकुमारक पक्ष लैत बाजल-

"केकरो इज्जतकेँ गामक मौगी-मेहैर कोनो इज्जत बुझैए, जे मनमे अबै छै से पोखैर-इनारपर ढकैए!"

अही बीच दुनूकेँ पकड़ा-पकड़ीक संग झोंटा-झोंटौबैल हुअ लगल। ओना नव-पुरान बहुतो जनिजाति कलपर छेली मुदा दोसर-तेसर खाली मुँह तकैत जे फंल्ली किछु बजती तखन ने बाजब। आ बुढ़-पुरान जे रहैथ ओ नव-नौतारि कनियाँ लग अधला बात मुहसँ निकालऽ नइ चाहै छेली तँए चुप। तहिना नव-नौतारि बुढ़-पुरानक धाखे, किछु ने बजैत।

दोसर दिस गामक नवयुवकक बैसार राजकुमार करौलक। खेनाइ-पीनाइक सभ जोगार रहबे करइ। खाइ-पीबैक संग जीयालालेक गप-सप्प चलल। गप-सप्पक क्रममे राजकुमारक

पितियौत भाए बाजल-

"गाममे पनचैती के करत?"

ओना जीयालालकेँ समाजक लोक आँखिक नोर नइ पोछलकैन, से बात नइ भेल। प्राय: बारह-चौदहअना लोक जीयालालक पक्षमे अपन विचार रखि सान्त्वना देलकैन। मुदा ओ तँ भेल परोछा-परोछी, दू-गोरेक बीचक विचार। असंगठित समाजक असंगठित विचार...। जहिना बर्खाक पानि मात्रामे बेसी रहितो पहाड़क झरनाक संग मीलि झहरैत धार बनि जाइए, तहिना असंगठित विचारोक गति अछि।

राति बीतल, भोर भेल। घरक लगमे रहितो जीयालाल, रूपलालकेँ कहबे बिसैर गेला। मुदा बिसरल रहला नइ, भोरे उठि रूपलाल ऐठाम पहुँच जीयालाल कहलखिन-

"रूपलाल बौआ, अपना सबहक एकठाम घरो अछि आ दुआरियो एके छी। सभ बात बुझबे केने हेबह, भरि दिन काल्हि समाजेकेँ कहैमे बीति गेल, तँए तोरा नइ कहि सकलौं।"

ओना रूपलाल जखनेसँ श्याम सुन्नैरक पोखैर घाटक गप सुनलक, तखनेसँ झखऽ लगल। मुदा खाली झखने की हएत, उठऽ पड़त किने जे ओतेक असान नै अछि। तँए गुमे-गुम विचारैत रहए। मुदा केतएसँ विचार उठत तही तरमे रूपलाल दबा गेल। एक दिस आइ पनचैती छी, दोसर दिस कौल्हुके घटना पोखैरक घाट परहक छी, जइ पाछू कलंक छिपल अछि जे चरित्रहीन बेटीक बिआह वर्जित...।

..गामक लोककेँ कोनो ठेकाने ने छै जे करखैन राजा बनत आ करखैन कंगाल। बेटाक बिआहमे राजा बनि बाजत जे इंजीनियर बेटा छी। तँए इंजीनक दाम जोड़ि कऽ लेब। आ लगले बेटी बिआहमे

कंगाल बनि बजता जे घोर कलजुग आबि गेल, आब ऐ धरतीकेँ विनाशे हएब नीक।

मुदा केतौ किछु हौउ, समाजमे जन्म नेने जन्मसिद्ध अधिकारो आ कर्तव्यो तँ आबिये जाइ छइ। लोक बुझह आकि नइ बुझह, मुदा अपन आँट-पेट अपने तँ बुझै छी, तही बीच ने समाजिकता राखि सकै छी...।

यएह सभ सोचि रूपलाल बाजल-

"भैया, हम तँ छोट भाए भेलौं जे आदेश देब से करैले तैयार छी।"

रूपलालक बात सुनि जीयालालकेँ जेना जी-मे-जी एलैन। जीतिया पावैनमे गिरहस्त जहिना धानक जी देख अपन जीहक पानि जुड़बै छैथ तहिना जीयालालोकेँ जुड़ेलैन। जुड़ेलैन ई जे गामक नीक-बेजाइक विचार जँ दू-गोरे मीलि कऽ करब तँ ओ बेसी नीक हएत। यएह सोचि बी.ए. पास रूपलालकेँ पुछलखिन-

"बौआ, उमेरे बेसी हम जरूर छी, मुदा पढ़ल-लिखल समाजक बीच अखन तक तूँ रहलह तँए दुनू गोरे विचारि कऽ कोनो रस्ता निकालह।"

जीयालालक विचार सुनि रूपलालक मनमे उठल- ओना मनुख मनुखे छी, जहिना अरब-खरब दुनियाँमे पसरल अछि तहिना अरब-खरब विचारो छै, जिनगियो छै जइसँ केतौ अखज बनि जीब रहल अछि तँ केतौ अरब-खरब बनि...।

बाजल-

"भैया, अखन दुइए गोरे छी। अहाँकेँ एक परिवार बुझै छी तँए परिवार जकाँ कहै छी।"

आगूक बात रूपलालक पेटेमे रहल कि मुँहक बात छीनैत जीयालाल बजला-

"बौआ, जहिना हमर बेटी तहिना ने तोरो बेटीए भेलह। अपन बेटी-बहिनक रक्षा जँ लोक अपने नइ करत तँ की ओ खाइएले आ गामे-गोबरबैले जनम नेने अछि।"

रूपलाल अपन विचारक लिंक पकैड़ बाजल-

"भैया, लोकक तीन अवस्था होइ छइ। खसल अवस्था, बैसल अवस्था आ ठाढ़ अवस्था। समाजे खसल अछि। समाज खसल अछि एकर माने ई नै जे समाजक बान्ह खसल अछि, ओ तँ लोकमे निहीत अछि। जेहेन जे समाजक लोकक जुटान रहत तेहेन से समाज खुशहाल रहत।"

रूपलालक विचार जेना जीयालालकेँ जँचलैन। ऊपर-निच्चाँ मुड़ी डोलबैत बजला-

"बेस विचारक बात बुझा कऽ बजलह, बौआ। आगू की करबह से ते विचारि लेबह किने?"

रूपलाल-

"भैया, जहिना गाछक भीतर जे शील होइए, माने सारील लकड़ी, तहिना मनुखो आ समाजोक भीतर शील होइ छइ। जेकरा शील-गुण कहल जाइ छइ। शीलक गुण छी किरिया-शीलता। तँए बेकती आकि समाज विकसित दिशामे तखने सुचारू चलि सकैए जखन ओकर 'क्रियाशील' गाछक शील जकाँ सुन्दर, सक्कत आ टिकाउ बनत। तखन तँ आइ भरि देख लियौ जे समाज की करैए।"

❍

शब्द संख्या : 3395, तिथि : 13 सितम्बर 2015

आइ एम शॉरी

तेसर खेप जखन राधाकान्त मास्टर साहैब कहलैन-

“आइ एम शॉरी।”

तखन मनमे सक्कत गिरहक गाँठ बनि गेल।

उनैस साए साढ़े सैंतालीसमे, जहिया देश स्वतंत्र भेल तहिये राधाकान्त मास्टर साहैब अंगरेजी विषयसँ एम.ए. केलैन। मुदा केलैन प्राइवेटसँ। तइसँ पहिने बी.ए. केला पछाइत तीन बरख हाइ स्कूलमे शिक्षको रहैथ, जइसँ लोक मास्टर साहैब कहए लगलैन। ओना हाइ स्कूलसँ आगू मुहेँ ससैर पछाइत कौलेजमे प्रोफेसर होइत प्रोफेसरक इंचार्य बनला, मुदा बेसी लोक तैयो मास्टरे साहैब कहैन। एकर माने ई नइ जे प्रोफेसर साहैब आकि प्रिंसिपल साहैब कियो ने कहैत रहैन।

तीन साल प्रोफेसर इंचार्य रहने कौलेजक आनो स्टाफ आ विद्यार्थियो सभ से कहिते छैन। मुदा हमर सरोकार पड़ोसीपनक रहल तँए हम मास्टरे साहैब कहै छिऐन। अपनो कनी नीक लगिते अछि। मास्टर डिग्री पौनिहार जँ मास्टर साहैब कहबैथ तँ नीके लगतैन किने। मुदा बेसी नीक केना लगतैन? मास्टरो तँ सहरगंजा जकाँ भऽ गेल अछि। जइमे सागे जकाँ केकरो सुआद नइ। कपड़ा सीनिहार दरजी

‘मास्टर’, लोअर प्राइमरी स्कूलमे मैट्रिक पास ‘मास्टर’, तीन चकिया-चरि चकिया गाड़ी चलौनिहार ‘मास्टर’, इत्यादि-इत्यादि अनेक मास्टर...।

सात्विक विचारक रहने राधाकान्त मास्टर साहैबमे अखनो माने नबासियो बर्खक अवस्थामे सात्विकता जीवित छैन, जिनगीक दौड़मे सात्विक विचार फुलकलैन तँ मुदा फलकलैन नै बल्कि धीरे-धीरे सिकुरऽ लगलैन...।

ओना आब साल भरिसँ मास्टर साहैब ओछाइन पकैड़ स्वास्थ-लाभ कऽ रहला अछि, पेटक ऑपरेशनो भेल छैन। पूर्ण स्वास्थ-लाभ लेल डॉक्टर गपो-सप्प करबपर रोक लगा देने छैन, जइसँ मोबाइल तँ छैन, मुदा बिनु चार्ज भेल। बिगड़ै दुआरे बेटा-पुतोहु मोबाइल तँ लगमे रहए देने छैन, मुदा पाइ देब परहेज केने छैन।

अपन जरूरत रहितो स्मृति-समुद्रमे औनाइत मन संगी सभसँ कुशल-छेम करैले तरैसते रहै छैन। मुदा उपाय की?

देहमे अपनो ओ सामर्थ नै जे चारि डेग चलि पौता। बेटा-पुतोहु लगमे रहितो माने परिवारमे रहितो, टोक-टाकसँ परहेज केने छैन, अर्थात् दवाइ बेर आकि खाइ बेर वा जिनगीक नित्य-क्रिया छोड़ि, लगमे कियो कखनो नइ रहै छैन।

स्मृतिक अथाह समुद्रमे राधाकान्त मास्टर साहैबक मन कानि रहल छैन। कानि रहल छैन- जिनगी भरिक अरजित ज्ञान-राशि बँटैले...। कानि रहल छैन- मुँहक मीठ बोल बजैले आ कानकेँ सुनै-सुनबैले...। कानि रहल छैन- साहित्य संसार देखैले...।

मुदा ने आँखिमे ओ ज्योति रहलैन जे देख पौता आ ने वायुमण्डलमे ओ ध्वनि रहल जे कन्हेठ सकता!

जहिना बाल-बोध बच्चा भूख-पियास लगलापर कानि-कानि

माएकेँ सोर पाड़ैए तहिना मास्टर साहैबकेँ हकबाहि लागल रहै छैन मुदा सुनैबला दुनियाँकेँ सोल्हन्नी बहीर पाबि रहल छैथ। कियो सुनैबला नइ...!

सुभ्यस्त परिवारमे राधाकान्त मास्टर साहैबक जन्म भेल। जमीनदारीक फाँरी परिवारमे, जइसँ नीक सेवा पौनिहार बच्चाक श्रेणीमे रहला। जिनगी एक पक्षक बीच बढ़ैत रहलैन। हाइ स्कूलक पढ़ाइ तक कोनो असोकर्ज नइ भेलैन। मुदा समैक गतिमे पड़ि चारि भाँइक भैयारीक पीढ़ीमे अपने जेठ भाइक जेठ सन्तान ठहरला। पैछला पीढ़ी झहरल, ढहैत जमीन्दारीक चपेटमे पड़ने परिवारिक जिनगी टुटलैन। पहिल श्रेणीक उतीर्ण मैट्रिकक विद्यार्थी रहने मनमे रंग-रंग रंगीन दुनियाँक तसवीर नाचए लगलैन। आइ.ए. पास केला पछाइत दम खड़ा गेलैन।

मिथिलांचलक उजरल-उपटल इलाका पुरबी क्षेत्र। हजारो परिवार गाम छोड़ि बाहर जा-जा बसि गेल। अपन नीक क्षेत्र माने नीक इलाकामे कोनो स्कूलमे जगह नै भेटने कोसी क्षेत्रक हाइ स्कूल पकड़लैन। जैठामसँ उठैत प्रिंसिपल तक पहुँचला।

राधाकान्त मास्टर साहैबक अपन सृजित जे अगिला परिवार बनलैन ओ जुगानुकूल बहुत अगुआएल। तीन बेटा, तीन बेटीक सम्पन्न परिवार छैन्हे।

समाजक अगुआएल परिवारमे राधाकान्त मास्टर साहैबक जन्म भेलैन। उच्च कोटिक परिवारिक स्तर रहने खेनाइ-पीनाइ आ रहै-सहैक बेवस्थाक संग लत्तो-कपड़ा अगुआएल छेलैन्हे। ओना परिवारक आमदनी घटने खेत-पथार बेचब शुरू भाइये गेल छेलैन। मुदा तैयो सइयो रंगक खर्च परिवारमे रहने खर्चक मोकर फुटले रहै छेलैन।

माता-पिता आ पित्ती-पितियानिक मृत्युक पछाइत, माने पैछला पीढ़ीक अन्त भेने परिवारमे भिनौज भेलैन जइसँ एक्के बेर परिवारक चौथाइ निच्चाँ चैल आएल। कुटुम-परिवारक संग दोस-महीम, सर-समाजक बीच जे सम्बन्ध अखन धरि रहलैन ओ मेन्टेन करैमे..; तहूमे महगाइ बढ़ि गेने, आरो कठिन भऽ गेलैन। ओना कुटुमक बीच खले-खल बँटबारा भऽ गेल रहैन, मुदा दोस-महीम आ सर-समाजक बीच सम्बन्ध पुरबते छेलैन।

टुटैत परिवार एक सीमापर आबि अँटकलैन। सीमा ई जे अपन चारि भाँइक भैयारीमे राधाकान्त मास्टर साहैब जेठ रहने जाबे हाइ-स्कूल तक पढ़लैन ताबे मतो-पिता जीवित रहथिन, आमदनियों नीक रहैन। मुदा मैट्रिक तक पहुँचैत-पहुँचैत रंग-रंगक समस्या सभ उठए लगलैन। तीन-चारि बर्खक बीच मतो-पिता मरि गेलखिन आ भैयारीमे माने पिताक भैयारीमे बँटबारा सेहो भऽ गेलैन। अपन पाँच भाए-बहिनक संग माइक परिवार बनलैन।

परिवार छोट भेने ई लाभ तँ होइते अछि जे खरचो छोट भऽ जाइए। सएह भेलैन। असथिर होइत परिवारकेँ देख अपनो ऊहि बढ़ौलैन। शिक्षकक रूपमे जिनगी ई सोचि एहेन बनौलैन जे जखन घरसँ बाहर नोकरी करए एलौं, आ सभटा खरचे भऽ जाएत तखन जे चिड़ै जकाँ परिवार चहरो-ले मुँह बौने रहत, तेकरा आगू ठाढ़ केना हएब? ऐ प्रश्नसँ राधाकान्त मास्टर साहैबक मन चकरेलैन माने चाकर भेलैन।

मन चकराइते अपन आमदनीक बीच खर्चपर नजैर पड़लैन। खर्च बान्हल। बान्हल ई जे कोनो व्यसन तँ अछि नै जे तइमे एको पाइ खर्च हएत। खाली चाहेटा अछि। ओना ई तँ पढ़ल-लिखल समाजमे व्यसन रहि नै गेल अछि। हँ तखन एते जँ करी जे अपना हाथे चुल्हि

पकैड़ ली तँ, अदहोसँ बेसीक बँचत हएत, जे परिवारकेँ दैत अपनो काजक हिसाब...।

ओना बी.ए.मे नाओं लिखा नेने रहैथ, मुदा परीक्षा छुटि गेल रहैन। किताबक समस्या रहबे ने करैन। सोझहे साले बी.ए.मे नीक रिजल्ट भेलैन।

नीक रिजल्ट मनक उत्साहकेँ बढ़ाइए देने रहैन। अपने जिनगीक हिसाबसँ परिवारोक बाल-बच्चाक हिसाब सुधारलैन। शिक्षित परिवारक जे आचार-विचार रहैए से परिवारमे धेने रहलैन। समए ससरैत गेल। राधाकान्त मास्टर साहैब एम.ए. केलैन। कौलेजमे प्रोफेसर बनला।

एक तँ साहित्य प्रेमी राधाकान्त मास्टर साहैब, तैपर कौलेजमे पुस्तकालयक जिम्मा भेटलैन। अवसरक लाभ नीक जकाँ उठौलैन। कौलेजक सरकारीकरण भेल, नीक दरमहो हाथ लगलैन, जइसँ तीनू बेटाकेँ नीक शिक्षा देलखिन। दूटा बेटा बैंकक मैनेजर आ एकटा भारत-सरकारक विदेश विभागमे अरबमे नोकरी करै छैन। जेठ बेटाकेँ एकेटा बेटा, जे अमेरिकामे इंजीनियर छैन आ दोसर बेटाकेँ दुटा बेटा, ओहो दुनू इंजीनियर बनि घरसँ बाहरे रहैए। तीनू बेटी-जमाए सेहो राज्यसँ बाहरे छैन।

आइ ओछाइनपर पड़ल राधाकान्त मास्टर साहैबक मन तरैस रहल छैन जे अपन परिवारक बीच मृत्यु हुअए। जइसँ अपना जिनगीक सभ हिसाब सभकेँ सुमझा देथिन। मरबो तँ सएह ने छी जे जिनगीक नीक-अधलाक सभ हिसाब फरिया जाए। किए कियो मुइला पछाइत आँगुर बतौत, अखन सोझहेमे सभ फरिया लेब। मुदा मनक बात के बुझतैन?

जहिना परिवार तहिना सरो-समाज आ कुटुमो परिवार। सभ

एकचलिया चालि धेने यएह सोचैत जे मुइला पछाइत सराधोमे जाइए पड़त, तैबीच अनेरे छुट्टी किए गमाएब। एक्केबेर चलि जाएब।

मास्टर साहैबक मन कानि रहल छैन अप्पन लक्ष्मी देखैले। साहित्यक विद्यार्थी जँ साहित्यक जिनगी जीब जँ साहित्यकार नइ भेल तँ ओ भेल असफलता आ जँ भेल तँ सफलता।

जहिना साहित्य-जीवि वा साहित्यक विद्यार्थी लेल साहित्यकार बनब जिनगीक कृति भेल तहिना ने आनो-आनो काजक होइते अछि।

ओना रंग-रूप, चेहरा-मोहरासँ तीस-पैंतीस बर्खसँ राधाकान्त मास्टर साहैबकेँ चिन्है छेलिऐन, मुदा कहियो-कोनो गप-सप्प नइ भेने दूरी तँ रहबे करए। संयोग भेल गाममे साहित्यिक मञ्च एकाएक उठि कऽ ठाढ़ भेल, जइमे चारि-पाँच गोटे एकठाम भेलौं, जइसँ मुहाँ-मुहीं गपो-सप्प आ सम्बन्धक नव रूपो ठाढ़ भेल।

ओना मनमे ई शंका बनले रहल जे भलें हमहूँ साहित्येसँ एम.ए. केने छी आ ओहो केने छैथ, मुदा साहित्य रहितो दुनूक गति-मतिमे दूरी रहबे करत किने। मुदा संजोग बनल। अपन जुआनीक जुआरिमे जे अंगरेजी भाषासँ हटि मैथिलीमे कथा संग्रह लिखलैन ओ एकटा पोथी हमरो देलैन।

संगोष्ठीमे एकटा बात आरो भेल। भेल ई जे चारि गोरे मुख्य-वक्ता भेला जइमे दूटा प्रोफेसर रहैथ। पहिल अर्थशास्त्रक आ दोसर अंगरेजीक आ तेसर छला आइ.पी.एस. तथा चारिम रहैथ आचार्य जे संस्कृत विषयक शिक्षक छला। ऐ चारू मुख्य वक्ताक बीच पाँचम अपने रही। मुदा रही अधवक्ता। जेतेक बजनिहार रही, तइसँ बेसी सुननिहार रहबे करैथ। समाजक रूपमे अधिकार बनबैले अपन कर्तव्य तँ पुड़बए पड़िते छै, जँ से सुनि अपन समाजक निरमानमे नइ लगाएब तँ अनेरे ने कार्यक्रम भेल।

नीक कार्यक्रम भेल। तेकर अनेक कारणमे प्रमुख कारण ई रहल जे एक आसनपर बैस अपन गामक भाषामे अपन बात बुझा-बुझा सभ कहलैन। ओना अशिक्षित समाजमे किछु हौओ बनल ठाढ़ रहिते अछि। ओइ हौआक संग विवाद शुरू भेल। जइसँ एक-दोसरक बीच दूरी कमल। दूरी कमिते सम्बन्धमे बढ़ोत्तरी हुअ लगल। मुदा सभकेँ अपन-अपन परिवारिक जिनगी, तहूमे परिवारिक स्थिति सेहो एक रंग नइ, कियो घरसँ दूर-दराजमे रहैत, तँ कियो केतौ। एहेन छिड़ियाएल जिनगीमे बितियाएलकेँ तँ बीछै पड़ै छइ।

राधाकान्त मास्टर साहैबक कथा संग्रह, पढ़ि अपनो मनमे भेल जे कथा लिखब असान अछि। तइसँ पहिने मनमे मैथिली साहित्यक संसारक प्रदूषित वातावरण देख शुरूहेसँ एहेन रहल जे हाइ स्कूलक पछाइत मैथिली पढ़बे छोड़ि देलौं। जइसँ डॉ. खुशीलाल झा- प्रोफेसर जनता कौलेज- शिक्षक रहैथ मुदा मैथिलीसँ रूचि नइ रहने, कहियो मुहाँ-मुहीं गप नइ भेल। भेल एतबे जे जँ कहियो सोझामे पड़ैथ तँ प्रणाम करयैन, ओहो असीरवाद दऽ दैथ।

राधाकान्त मास्टर साहैब कौलेजसँ सेवा निवृति भेला। मुदा ताधैर परिवार छिड़िया गेल छेलैन। बेटी सभ सासुर चलि गेल रहैन। तीनू बेटाक परिवार तीन ठाम भऽ घरसँ हटि गेल रहैन। मास्टर साहैबक अपन विचार रहैन जे सेवा निवृत्तिक पछाइत गाममे शान्तसँ रहि किछु साहित्य-साधना करब। मुदा तइमे भारी बेवधात जिनगीमे उतैर एलैन। नोकरिया परिवारमे सेवा-निवृतिक भाड़ बेसिया जाइए जइसँ लगक परिवारकेँ एकटा छुट्टा समांग भेट जाइ छइ।

एक तँ परिवारक संग परिवारक भीतर निमंत्रणक प्रथा अछि। जइ प्रथाक बीच मास्टर साहैब तेना जकैड़ गेला जे अपन इच्छा दबि गेलैन। ओना इच्छा-शक्तियो सबल आ दुर्वल दुनू होइए। दबैक

कारण भेलैन, किछु लिखैसँ पहिने बहुतो वस्तुक जरूरत पड़ै छै, जे सभठाम सम्भव नहि, तैसंग ईहो जे प्रतिष्ठित अंगरेजी-शिक्षक होइक नाते जेतए जाइ छला, तेतए दू-चारि धिया-पुता पढ़ैले आगूमे आबिये जाइ छेलैन। जइसँ मास-मास, दू-दू मास एकठाम रहि अपन ठौर-ठेकान बिसरए पड़ै छेलैन।

सेवा-निवृत्तिक पछाइत जखन राधाकान्त मास्टर साहैबक भेँट केलयैन, तखन ओ अपन मनक बात कहैत कहलैन-

"सभ दिन किताबक बीच रहलौं, किछु लिखनौं छी आ लिखियो रहल छी, मुदा छपा नइ पाबि रहल छी। जइसँ किछ कमी मनमे अखनो ठहकले अछि।"

एक प्रोफेसरक दरमाहाक जिनगी, तैपर बेटा सबहक आमदनीक स्रोत अलगे। तैठाम जे एते मनसूबासँ लिखलैन ओइ मनसूबामे कमी किए भऽ रहल छैन...?

ओना, राधाकान्त मास्टर साहैबकेँ जेते समए भेटै छैन तइमे अन्तो-अन्त किछु-ने-किछु कथा-कविता लिखिये रहल छैथ।

किछु कथा लिखि कऽ राधाकान्त मास्टर साहैबकेँ कथा बनबैले देलिऐन। किछु बनाइयो देलैन। ओना दुनू गोरेक दू गाम छी मुदा पड़ोसी गामक बीच दुनू गोरे रहै छी। पैरक पनरह-बीस मिनटक आ गाड़ीक पाँच मिनटक रस्ताक दूरी दुनू गोरेक बीचमे अछि।

बेटा बिआहक उत्सव परिवारमे जगलैन। उत्सवसँ छह मास पहिने कहने रहैथ-

"सुधीर, अखने अहाँ सुनि लिअ। बिआहमे रहब अनिवार्य अछि।"

तैपर हमहूँ कहलयैन-

"काज जहिया हएत तहिया ने, अखन तँ बहुत आगू अछि।"

नीक जकाँ विवाहोत्सव मनल। मुदा कोनो जानकारी नइ दऽ सकला। काजक मास दिनक पछाइत गेलौं। गामेमे रहैथ। गप-सप्पक क्रममे कहलैन-

"आइ एम शॉरी, सुधीर। धियानेसँ हटि गेल। जइसँ समैपर अहाँकेँ खबैर नइ दऽ सकलौं!"

मास्टर साहैबक बात सुनि अपनो मन मानि गेल जे नमहर काजमे मन चौचंग भेने एना होइते छइ। मनमे कोनो तरहक शंका नै उठल। उठबो किए करैत। तखनेसँ बिसरए लगलौं।

बीच-बीचमे केतेठाम साहित्यिक कार्यक्रममे एकठाम होइत रहलौं। तैबीच एकटा आरो होइत आबि रहल छल। पएरे जाएब हमरा-ले असान अछि मुदा एते सम्पन्न रहितो कहियो टहलैयो-बुलैले हमरा ऐठाम मास्टर साहैब नइ आबि सकला।

अपनो ऐठाम एकटा काज आएल। काज अर्थात् कृति आ कृतिक माने भेल उत्सव। मनमे उठब सोभाविके छल, दू गोटे वा दू परिवारक बीच सम्बन्ध बढ़ैक तँ यएह सभ ने...। जे समान्य जिनगीसँ आगू बढ़ि चलने होइत। मुदा तैबीचक जिनगी हुनकर ओहन रूप पकैड़ लेलकैन जे एकठाम केतौ मास-दू-मास चैनसँ नै रहि पबै छला। जइसँ भेँट-घाँटक समैक दूरी बढ़ैत गेल। केतेक परियासक बादो काजक बीच समए नै भेट सकल जे मुहाँ-मुहीं कैहतिऐन। मुहाँ-मुहींक कहब ओइठाम अनिवार्य होइ छै जैठाम सम्बन्धक नीव पड़ैए। जैठाम सम्बन्ध बनि चलैत रहैए तैठाम चीठियो-पत्री आकि समादो-मोबाइलसँ काज चलि सकैए।

तैबीच फेर एकटा काज मास्टर साहैबक ऐठाम भेलैन। जे एकटा फेरीबला दिआ भेँट करैक समाद पठेलैन। बहुत दिन भेँटो भेना

भऽ गेल छला तँए अपनो बेसी इच्छा जगल। दोसरे दिन भेँट केलयैन। गप-सप्पक क्रम दोसर दिस बढ़ैत गेल, बढ़ैत गेल। तइसँ बुझि पड़ल जे भैरसक पढ़ब-लिखब घटि गेलैन अछि।

सबहक अपन-अपन दुनियाँ छइ। तैठाम साहित्यक दुनियासँ हटि परिवारक सम्पन्नताक चर्च विशेष रूपसँ करए लगला। ओना दोसर परिवारक बीचक चर्च सुनब ओतबे नीक अछि जेते अधलो अछि। मुदा दुइए गोरेक बीचक चर्च छल तँए बेसी शंको नहियेँ भेल। तेसरसँ ने तेकठ रूप पकैड़ सकैए। जखने कोनो गप आकि विचार तीन गोरेक बीच हएत, जइमे दू-गोरे जँ ओकरा झूठलबै चाहत तँ वएह ने बल पेब बलजोरी आगू ससरत। मुदा दू-गोरेमे तँ से नइ होइ छइ। दू सत्-मे जँ एक सत् हटबो करत तैयो तँ अदहासँ बेसी नै हटि सकैए। जखने अदहा-अदही भेल तखने अपन-अपन सीमा बीचमे गड़ा जाएत। मुदा तैयो जहिना अपन रूटिंगक समए अछि, तइ हिसाबसँ गप-सप्प करैत मास्टर साहैबकेँ कहलयैन-

"आब धीरे-धीरे अन्हार पसरत, पएरे छी तँए आब छुट्टी दिअ।"

'छुट्टी' सुनिते जेना किछु मन पड़लैन तहिना चौंकैत बजला-

"एक बेर आरो चाह पीब लिअ।"

गैस चुल्हिक बेवस्था छनिहें, पीबैमे केते समैए लगत। कोनो कि लोमश बाबाक मिनट-घन्टा लगत। बैसले रहलौं।

बिजलीक पंखा जकाँ आस्ते-आस्ते अपन गप उसारैत आड़िपर आबि अँटकला। तैबीच चाहो आबि गेल। चाहक चुस्की लैत बजला-

"अगिला मासमे मुड़न छी, बेटा सबहक विचार छैन जे नीक-जकाँ धुमधामसँ करब।"

सह दैत कहलयैन-

"नीक बात, लोक कमेबे कथीले करै छैथ।"

तैबीच चाहो सठि गेल। उठैत कहलयैन-

"जाइ छी।"

कहलैन-

"दिन-ठेकान तँ अखन नइ भेल अछि, मुदा करब तँ अछिए। अखने कहि दइ छी जे काज दिन अहाँ जरूर रहिऐ।"

कहलयैन-

"अपन परिवारक काज छी, किए ने रहब।"

कहलैन-

"दिन-ठेकानक जानकारी आगू दऽ देब। अखन निसचित नइ भेल अछि।"

कहलयैन-

"बड़बढ़ियाँ।"

रस्तामे जखन अबैत रही तखन मनमे उठल- जहिना साहित्यक मञ्चपर सँ सम्बन्ध उठब शुरू भेल ओ भैरसक तहिना पतझड़ दिस ते ने बढ़ि रहल अछि?

मुदा लगले मनमे आएल- लोकक जिनगियो कि सभ दिन एके रंग रहैए। कहियो हरियेबो करैए, कहियो हहड़बो करैए।

समए बीतल, मुड़न बीतल। पनरह बीस दिनक पछाइत गमैया हाटपर राधाकान्त मास्टर साहैब भेँट भेला। मुदा बुझि पड़ल जे किछु बोझ पड़ल जकाँ मन भरियाएल छैन। ओना हँसमुख चेहराक संग गहींरगर विचारो तँ छैन्हे तँए अपन बोझ आगू किए आबए देता।

पहिने दुनू गोरेक बीच हाल-चाल भेल। किरिण डुमैएपर रहए। हाटसँ जेते दूरपर अपन घर अछि तेते दूरपर हुनको घर छैन्ह। बीचमे

हाटक काज पछुआएले अछि तँए अगुताइ दुनू गोरेकेँ रहबे करए। अपन-अपन काज कऽ अपना-अपना घर एलौं।

आइ पुन: एहीठाम मास्टर साहैब भेँट भेला। बीचमे पता लगि गेल छल जे पनरह-बीस दिन पहिने मुड़न सम्पन्न भेलैन।

कुशल-समाचारक पछाइत राधाकान्त मास्टर साहैब बजला-

"आइ एम शॉरी। देखू जे मुड़न सम्पन्न भऽ गेल, एते उधव-बाधवसँ भेल आ अहाँकेँ सुचितो नइ कऽ सकलौं।"

हमहूँ काजकेँ बहटारैत कहलयैन-

"मास्सैब, अपने नै किछु तँ पचहत्तैर-अस्सी बर्खक बीच पहुँचिये गेल हेबइ। तखन जे जुआनीक यादास्त तकै छिऐ से केना हएत...।"

बजला-

"ठीके अहाँ कहै छी, सएह भेल।"

ओना बेवहारक अनुकूल अपन जिनगीक रस्ता बनबैत चलै छी। जइसँ ईहो बात मनमे ठहैकते अछि जे जिनगीक रस्ता सपाट नइ छै, उबड़-खाबड़क संग काँटो-कुँश छइहे। तखन तँ भेल जे उबड़-खावड़मे केना चली आ काँट-कुँशमे केना...।

तैबीच मास्टर साहैब दोहरा कऽ बजला-

"आइ एम शॉरी। अखन जैठाम जइ काजे छी, से दुनू गोरेक पछुआएल अछि। साँझो पड़ल जाइए।"

बातसँ बुझि पड़ल जे मास्टर साहैब सोझहासँ छीटकए चाहै छैथ।

कहलयैन-

"हँ, से तँ तीमन-तरकारीक हाट छी तेहेन-तेहेन कीटनाशक

दवाइ-दारू तीमनो-तरकारी सभमे आबि गेल अछि जे नीक-अधलाकेँ परखब कठिन भऽ गेल अछि। तँए किछु बेसीए समए लगत।”

दुनू गोरे दुनू दिस बढ़लौं।

किरिण डुमि गेल, मुदा अन्हार नइ पसरल छल। रस्ताक पाँतरमे रही कि मास्टर साहैबक कहल- ‘आइ एम शॉरी’ मनमे नाचि उठल। नचिते मनो नाचि गेल। मुदा घिरनी जकाँ नचैत-नचैत जखन मन असथिर भेल तखन मन जागल। जगिते मनमे उठल- माटि छुबि, कण्ठी छुबि, जनौ छुबि, चाहे ‘जय गंगाजी’ इत्यादि कहि लोक भरि दिन सप्पत खाइते रहैए मुदा सुधार केते अछि, से तँ वएह जानत। मुदा जँ सप्पत खेने सुधार होइत तँ तेते आ तेहेन-तेहेन सप्पत दुनियाँक अग्नेयमे छिड़ियाएल अछि जे एको गोरेकेँ दोहरा कऽ खाइक जरूरते ने पड़ैत...।

फेर मनमे आएल- आइ मास्टर साहैब दुनियाँमे असगरे वौड़ रहला अछि, लगोक लोक दूर भऽ रहल छैन...!

हाटक रस्तासँ हटैत बाधमे एकटा गाछकेँ बहुत दिनसँ देखैत आबि रहल छी। झल-अन्हार पसरले रहए। जेते लग तेते बेसी आ जेते हटल तेते कम देख पड़ि रहल अछि। रस्तासँ हटल गाछक ने एकोटा पात देख पड़ि रहल छल आ ने एकोटा डारि। ठूठ गाछ जकाँ करियाएल देखैमे आबि रहल छल...।

अनायास मनमे फेर उठल- की मास्टर साहैबक विचार कृतिसँ हटि चुकल छैन? जँ से नइ हटल छैन तँ मनक डायरीमे सबहक नाओं भेटलैन आ हमर नाओं केतए हरा गेल?

ओना, अनका हरेने कियो आन थोड़े हेराइए। ओ तँ अपने हेरेने ने हेराएत।

मनमे सवुर भेल। मुदा जखन फेर मास्टर साहैबपर नजैर उनटल

तँ देखा पड़ल- मास्टर साहैबक मन हारि रहल छैन। जरि-जरि खकसियाह भेल जाइ छैन। जइसँ मन-मनतर केना बनत, भैरसक सएह ने देख पाबि रहल छैथ।

जाबे तक लोकमे बोलता पुरुख जीवित रहैए ताबैए तक ने एक-दोसराक बीच सम्बन्ध बनै-मेटैक सम्भावना रहैए, मुदा जखन बोलता पुरुख मरि जाइ छै तखन से थोड़े हएत! से नइ तँ जा कऽ भेँट करबैन।

पहिल साँझक काजसँ निवृति भेला पछाइत चाह पीबते मन फुलाए लगल। सौंझुका बन्धनक गायित्री मनमे उपकए लगल। चाह पीला पछाइत पान खेलौं। जेना-जेना मुँहमे पान फुलाइत गेल तेना-तेना मनो फुलाइत गेल। जेना-जेना मनमे फूलक कोढ़ी फूल बनि फुला-फुला हँसए तेना-तेना महको महकाबए। मनमे राधाकान्त मास्टर साहैबक तरसैत रूप तड़पैत-तड़पैत आबि गेल। ऐबते भूत, वर्तमान आ भविसपर नजैर पड़ल। तीनू कालक बीच मास्टर साहैबकेँ देख वर्तमानपर आबि अँटैक गेल। अँटैक गेल ई जे अपने मास्टर साहैब समझदार-सिरजन कर्ताक रूप-वैभवसँ परिचित छैथ मुदा परिचित छैथ वैचारिक धरतीपर। भैरसक तही बीच ने त्रिशंकु जकाँ केतौ लसैक गेल छैथ। जिनगी भरि नैतिकताक गुणगान करैबला परिवार एते दूर केना हटि गेल? साहित्यकारक अगिला पीढ़ी साहित्यिक वंश जीवित नइ रखत तँ ओइ वंशक जे गति होइ छै, तेकरा तँ बाँटबो असान नहियेँ अछि। साहित्य क्षेत्रसँ बहुत हटि परिवार वर्तमानी हवामे बहि बहुत दूर भऽ गेलैन अछि। एहेन स्थितिमे भेँट करब नीक आकि नइ?

मन ओझरा गेल। मुदा लगले ओझरी छुटल। छुटिते मन परिवार-जनक किरिया-कलापपर पहुँचल। पहुँचते मनमे नाचल- भेँट करए जाइऐन आ जँ कहीं समांग ई कहि भेँट नै करए दैथ जे

‘डाक्टरक चैतौनी अछि जे किनकोसँ गप-सप्प नइ करऽ देबैन।’ तखन?

पएर झन-झना गेल। झनझनाइते तेतेक झुनझुनी लगि गेल जे उठि कऽ ठाढ़ हएब परलय बुझि पड़ए लगल।

❍

शब्द संख्या : 2927, तिथि : 23 सितम्बर 2015

ओऽ होऽ होऽ हूसि गेल

भादो मास, रौदियाह समए। अदरा जे बरिसल तेकर पछाइत एको ठोप पानि मेघसँ नइ चुबल। ओना अदराक बरखा सभ पोखैर-इनार, खेत-पथार, गाछ-बिरीछक जीहमे जान आनि देने छल मुदा पछातिक समए सुदिन नइ भेने दुरदिने जकाँ बनि गेल।

रातिक नअ बजैत रहए, उम्मस, हवाकेँ के कहए जे सिहकियोक केतौ दरस नहि।

चौंसैठ बर्खक गुदरी काका ओछाइनपर एक-करसँ दोसर कर घूमि-घूमि कछ-मछ करै छला। ओना ताड़क पंखा ओछाइनेपर रहैन मुदा देहमे ओते बुत्ता नइ जे झमाड़ि कऽ पंखा हौंकि देह ठंढ़ा लइतैथ।

तेकर कारण रहैन मधुमेह, ब्लड-पेसर आ गैस्टिकक त्रिवेणी घाट बनल देह। दू-चारि बेर जखने पंखा डोलबैथ कि बाँहिये दुखा जाइन। हाथसँ काँख लग तक बिन-बिना उठैन। समैक गतिक दुख, देहक दुखकेँ पछाड़ि छातीपर बैसल गुदरी काकाकेँ...।

देहक संग-संग मनो कछ-मछ करैत रहैन। कछ-मछाएल मने बड़बड़ेला-

“ओऽ होऽ होऽ हूसि गेल!”

ओना चेथरियो काकी घरेमे रहैथ, मुदा ओ दोसर चौकीपर

दोसर दिस घूमि कऽ सूतल रहैथ।

पहिल बेर जे गुदरी काका बजला तँ चेथरी काकी नइ सुनि पौलखिन। नइ सुनैक कारण रहैन गाढ़ नीन आ गाढ़ नीनक कारण रहैन दिनक एकादसी उपास। भरि दिन सहल रहैथ, साँझमे सबेर-सकाल भानस कऽ दुनू परानी खा नेने रहैथ, सएह अन्नक निशाँ चैढ़ गेल रहैन।

कछमछ करैत दोहरा कऽ गुदरी काका फेर बड़बड़ेला-

“ओऽ होऽ होऽ हूसि गेल!”

ऐबेर चेथरी काकी सुनि गेली। काँच टुटल नीन रहैन; पहिने मनमे भेलैन जे पुछिऐन की हूसि गेल। मुदा हाफी होइते भक खुजलैन। भक खुजिते मनमे भेलैन, भैरसक सपनेला-तपनेला अछि। बजली किछु ने, मुदा खोंखी करैत अपन उपस्थिति पतिक डायरीमे दर्ज करा लेलैन। पत्नीक सह पेब गुदरी काका सहटैत विचारकेँ सहटारि बजला-

“ओऽ होऽ होऽ हूसि गेल!”

ऐबेर मुदा चेथरी काकी समधानि बजली-

“कोन गड़लाहा तोड़ा बिला गेल जे हूसि गेल?”

तमुरिया हाइ स्कूलसँ गुदरी काका सकेण्ड डिवीजनसँ मैट्रिक पास केलैन। उनैस साए साठिक लगीच घोघरडीहा ट्रेनिंग कौलेज खुजल जइमे चारि ग्रेडक शिक्षण शुरू भेल। पहिल बैचक विद्यार्थी, गुदरी काका टीचर ट्रेनिंग, गामेसँ आबि-जा कऽ लेलैन।

संयोग नीक बैसलैन, साले भरि ट्रनिंग केला पछाइत लोअर प्राइमरी स्कूलक शिक्षक बनि गेला। अखुनका जकाँ तँ गिनती दरमाहा नइ भेटैन मुदा समयानुकूल जिनगीक अनुकूल दरमाहा भाइये गेलैन।

जइ दिन नोकरी जुआनि केलैन तइ दिन गंजक हाटपर सँ कुटुर-मुटुर आनि चेथरी काकीकेँ हाथमे दैत कहलखिन-

“हमरा परसादे अहाँ गुरुआइन भऽ गेलौं। लिअ मिठाइ खा मनमे बसा लिअ। ऐसँ बेसी हम काइए की सकै छी।”

गुरुआइन सुनिते चेथरी काकीक मन भदवरिया बाढ़ि जकाँ तेते दहला-भँसिया गेलैन जे अपन सीमा-सरहदक ठेकाने ने रहलैन। बजली-

“दुनू बेक्तीकेँ जिनगीमे घटत तँ ने।”

जेहने हूबा तेहने मनसूबा गुदरी काकाकेँ रहबे करैन। दहिना हाथ उठा कऽ बजला-

“अहूँ की बजै छी। जिनगी भरिक खरचा सरकारक हाथ चलि गेल।”

गुदरी काकाकेँ समयानुकूल पहिल सन्तान- बेटा- भेलैन। मुदा तोरमाइर पत्नी रहने दोसर सन्तान नअ बर्खक पछाइत आ तेसर सात बर्खपर भेलैन।

पहिल बेटा, जेहने माइक ननुगर तेहने पिताक। शिक्षकक परिवारमे धिया-पुता मैट्रिको ने पास केलकैन। तेसर बेटी रहैन जे सासुर बसै छैन। दुनू बेटा, पत्नी आ धिया-पुताक संग चेन्नै आ बंगलोरमे रहै छैन।

अखन तक चेथरी काकी चुल्हि तरक कनियाँ अपने बनल रहली अछि। केहेन मने रहे छैथ से तँ ओ जानैथ मुदा नवकीए कनियाँ जकाँ देहमे पानि तँ छैन्हे।

चेथरी काकीक बात सुनि गुदरी काका कहलखिन-

“आब देहमे ओते बुत्ता नइ अछि जे बेसी-काल जोर-जोरसँ

बाजब। तँए लगमे आउ, परसुका बात कहै छी।”

चेथरी काकी अपन चौकीसँ उठि गुदरी काका लग आबि बैसैत बजली-

“परसुका कोन बात कहब, कहू।”

पत्नीक सिनेह भरल जिज्ञासु मन देख गुदरी काका सिहैर गेला। जाड़क मास नहेला पछाइत जहिना देहक संग मनो सिरसिरा लगै छै तहिना गुदरी कक्काक मन सिरसिरेलैन। बजला-

“अपन हारल अहाँ छोड़ि केकरा कहबै।”

गुदरी कक्काक लटारम भरल बात सुनि चेथरी काकीक मनमे खींझ उठलैन, बजली-

“जे भगलपन लधने छी से छोड़ू, परसुका बात पहिने बाजू।”

गुदरी कक्काक शिक्षण जिनगी ओइ क्षितिजपर पहुँच गेलैन जेतऽ पति-पत्नीसँ आ पत्नी-पतिसँ विचारक संग क्रियाशीलताक लेखा-जोखा करैए। जड़ि काटल गाछ जकाँ गुदरी कक्काक मन क्षितिजपर सँ अर्ड़ा कऽ खसलैन। विधुआएल मने बजला-

“जिनगीक संगीक रूपमे तँ अहींकेँ हाथ पकड़लौं, तँए बाढ़ैन मारी कि सूप, मुदा अपन हारल कहबै केकरा।”

चेथरी काकीक मनक भूमि बहुआह माटि जकाँ थलथला गेलैन। ओहने भूमिपर ने लोक गबैए- ‘हाथी पियासल घोड़ा पियासल, दल-दल पानि थल-थल वाणि...।’

बजली-

“अच्छा बुझलौं, बड़ चिक्कन चालि-ढालिक जिनगी अछि। पहिने परसुका बात कहू।”

गुदरी काका बजला-

“ब्रह्म स्थानमे एक पनरहियासँ भागवत-कथा पाठ होइए। बेरू पहर-के व्यासजी अपन मंत्रक रूपमे प्रवचन सेहो करै छैथ।”

परसुका बात सुनैले चेथरी काकीक मन कछमछाइत रहैन। बिच्चेमे टोनि देलखिन-

“बुढ़ाड़ीमे मन बौआइए, पहिने परसुका बात कहू तखैन नीनसँ पलखैत बँचत ते दोसरो-तेसरो बात सुनि लेब।”

ओना गुदरी कक्काकेँ उम्मससँ गुम्साएल मनमे होनि जे कोनो धरानी एहेन समए कटए। मुदा विचारो तँ रसक खाने छी। जागलकेँ सुताइयो सकैए आ सूतलकेँ जगाइयो सकैए। ई तँ भेल अपन हाथक खेल। टोकारा भरैत बजला-

“जाबे कोनो पोखैर-इनारक महार कि जगत नइ नापि लेब, ताबे ओइमे केते पानि छै, से केना बुझब। एना जे अगुताएब तखन काजक गप हएत?”

गुदरी कक्काक विचारक असैर चेथरी काकीक मनपर पड़लैन। बजली-

“अच्छा, एते गलती हमरेसँ भेल।”

सह पेब सहटैत गुदरीकाका बजला-

“ओना व्यासजीक प्रवचन अढ़ाइए बजेसँ होइ छैन मुदा कहियो गेल नइ छेलौं, तँए समए नीक जकाँ नइ बुझि पेलौं, तीन बजे जखन पहुँचलौं...।”

बीचेमे चेथरी काकी बजली-

“एना जे बातकेँ चेथारब तेते सुनैक छुट्टी अछि। भरि दिनक सहल उपास कएल देह अछि, तेकरे फल ने भेल अन्नक रूचि आ नीनक सुख। गाढ़े नीन ने सभकेँ नीक लगै छइ।”

पत्नीक विचार सुनि गुदरी कक्काक मन आरो छान कएल पानि जकाँ नीक बनि गेलैन। बजला-

“जाबे ब्रह्म स्थानक भागवत-कथाक भूमिपर पहुँचलौं, ताबे व्यासजी ज्ञान-धियानक विचार समाप्त कऽ नेने छला। मुदा घर-परिवारक चर्च शुरू केलैन।”

बिच्चेमे चेथरी काकी बजली-

“पच्चीस बेर कहलौं जे एना गपकें नइ चेथारू, जे कहै के अछि से सोझ डारिये कहू।”

‘सोझ डारि’ सुनि गुदरी कक्काक मन विहूस उठलैन। मन मानि लेलकैन जे अपना करतबे हूसलौं। बजला-

“अहाँ पत्नी छी, ई बात जँ ओइ दिन बुझने रहितौं, जइ दिन अहाँ संगी बनलौं। मुदा परसू व्यासजीक मुहें जखन सुनलौं जे सम्बन्ध बनैले सम्बन्ध सूत्र होइ छइ।”

‘सम्बन्ध’ आ ‘सम्बन्ध-सूत्र’ सुनि चेथरी काकीक मन चमकलैन। चमैकते बजली-

“की कहलिऐ सम्बन्ध आ सम्बन्ध-सूत्र?”

पत्नीक पिपाशु रूपी मन देख गुदरी कक्काक मन पपीहा जकाँ टाँहि देलक-

“पिता-पुत्रक सम्बन्ध जिनगीक सम्बन्ध-सूत्र बना जाबे धरि पकैड़ नइ चलत, ताबे धरि अहिना हूसल जिनगी आरो हूसैत जाएत।”

❍

शब्द संख्या : 1025, तिथि : 29 सितम्बर 2015

मीनी भ्रष्टाचार

एकाएक भोरमे समाचार भेटल जे परसू तक फारम भराएत मुदा काल्हि रबिक छुट्टी आ परसू गाँधी जयन्तीक छुट्टी छी तँए आइयेटा समए अछि।

बी.ए. फाइनलक विद्यार्थी छी। तेरह साए रूपैआ फीस लागत। ओना जेकरा जातिक प्रमाण-पत्र रहत ओकरा तीन साए कम लगतै।

तीन सएपर नजैर अँटैक गेल। गरो नीक पकड़ा गेल रहए। गर ई पकड़ाएल रहए जे जहिना मौसमक आगम पकैड़ सचरगर किसान खेतीक हिसाब पकैड़ लइ छैथ तहिना हमहूँ पकैड़ नेने रही। माने ई जे मास दिन पहिने फारम भरैक आगम देख जातिक प्रमाण-पत्र बना नेने रही। नइ तँ तीन साए बेसी हमरो लगबे करैत। ओना समैक धड़फड़ीमे सत्तैरसँ अस्सी प्रतिशत विद्यार्थीकेँ बेसी लगबे करतैन। तेकर कारण अछि जे जातीय आधारपर छूट थोड़े भेटैए ओ तँ जातिक प्रमाण-पत्रपर भेटैए। समैक धड़फड़ी ई जे एक तँ फारम भरैक समाचार अचानक निकलल। दोसर, पनरह दिन पहिनैयेँ चुनाव आचार संहिता लगि गेने सभ कर्मचारी चुनावक तैयारीमे जुटि गेला।

बाबूकेँ कहलयैन-

“फारम भरऽ जाएब?”

‘फरम’ सुनि बाबूक मनमे खुशी भेलैन। खुशीक कारण रहैन जे बेटा स्नातक-परीक्षाक मोड़पर आबि गेल। शुभ हौउ।

बजला-

“केना की लगतह?”

एक तँ फारम भरैक खुशी तैसंग पिताजीक सहियाएल विचारक खुशी, मन उधियाइते रहए।

कहलयैन-

“तेरह साए लागत।”

सत्ताइस सएमे काल्हिये एक बोरा उसना चाउर बेचने रहैथ, दुइये साए खर्च भेल रहैन। घरसँ तेरह साए रूपैआ निकालि हाथमे दैत मुँह दिस देखए लगला, जे नाकरो-नुकर करैए आकि सुहरदेसँ...। ओना अपन मन गवाही दऽ देलक जे तीन साए बँचबे करत।

फारम भरला पछाइत चुनावक घोषणा भऽ गेल जइसँ परीक्षा पनरह दिन पाछू धकला गेल। मुदा पनरह दिन पछुएने मनमे कुवाथ नइ भेल, खुशीए भेल। तेकर कारण रहए जे चुनावमे समए नोकसान हेबे करत, समए नोकसान ऐ दुआरे हएत जे एक तँ पहिल बेर वोटर भेलौं जइसँ मतदाता तँ भाइये गेलौं, दोसर नेतागिरियो तँ अखने उपजत। तँए जे अवसर चुकब...।

चुनावक दिन तँइ होइते, अखड़ुआ घास जकाँ राजनीतिक पार्टियो आ नेतो जनमऽ लगल। एक तँ ओहुना राजनीतिक पार्टीक संग गाम-गामक जतियारे, धरमाले, भाषणाले पार्टी ढेरियाएल ऐछे तैपर सँ आनो-आनो राज्य सबहक पार्टीक सराइर ससैर-ससैर राज्यमे आबि गेल जइसँ जेते सराइर तेते मुँहपर सँ गाछो जनैम गेल।

एक तँ छत्तीसवर्णा गाम तैपर सँ बहरबैया आमदनी तेते भेल जे

गामक लोकक विचारे बरहबट्टु भऽ गेल।

जहिना कोनो परती-पराँत आकि बलुआएल बाधक खेतमे चलैक बाटक ठेकान नइ रहैए, जेमहर सोझ बुझि पड़ल, तेम्हरे सुगरिया चालि पकैड़ बाट बना लोक चलैए। तहिना गामोमे भेल। एके मुँहक बातो आ विचारो दिन-दिन गाड़ीक पहिया जकाँ कहियो वामी घुमऽ लगल तँ कहियो दहिनी। मुदा जे भेल से भेल, एते तँ लाभ भेबे कएल जे जइ-जइ पार्टीमे मन-भेद छल से मन-भेद मेटा गेल। जइसँ ओइ गाछ जकाँ भाइये गेल जे जैड़ेसँ डारि छोड़ैए। माने ई जे गाछकेँ जैड़ेसँ झमटगर डारि निकलल ओइमे एक-गच्छा जकाँ सिरगर डारि आकि धड़े बनब भरिया जाइ छइ। खाएर जे हौउ...।

मुदा ई तँ भेल जे एक-गच्छा पार्टी राजसँ उपैट दू-डरिया, तीन-डरिया, चारि-डरिया, पँच-डरिया, छह-डरिया तक बनि ठाढ़ भेल। एक तँ बिहार ओहन बिहार छी जेतए रंग-बिरंगक यात्री घुमैले एबे करत, तैठाम राजेटाक विचार चलत, से केना हेतइ। आन-आन राजक मकैसँ लऽ कऽ बजरा-बजरीक संग धानो-गहुम तँ चलिये आएल। जइसँ फेर एक-गच्छा सबहक चास लगि गेल।

चुनावक नोमिनेशन शुरू होइसँ पहिने चौक-चौराहापर पटका-पटकी शुरू भेल। जइसँ मेला-ठेला जकाँ आकि सर्कस-सिनेमाक घर जकाँ तेना घोल हुअ लगल जे चिन्हे-पहचीन बिला गेल। सोझहे हल्ला हुअ लगल। हल्लो केनिहार कि अदी-गुदी, सोझहे टिकाशने लगसँ भाषण पकैड़ लिअए। मुदा जे भेल, से नीके भेल, भगवान सभकेँ भल करथुन।

तैबीच एकटा जरूर भेल जे जहिना एस्पर्म लाखो-लाख मिलैत एकटा बनि रहि जाइए तहिना चुनाव छनाइत-छनाइत एकटा बातपर आबि अँटैक गेल। ओ अँटकल भ्रष्टाचारपर। सबहक मुद्दा माने सभ

पार्टीक मुख्य भाषण भ्रष्टाचारपर आबि अँटैक गेल।

जेठ मास जकाँ चारू बाधमे लू नाचए लगल। लू ई नाचए लगल जे जेहने प्रश्न तेहने वोट लेनिहारो आ तेहने देनिहारो। पनचैती हेबे करत।

चुनाव गेल। परीक्षा आएल। मुदा सिलेवशक किताबक संग हेल्पे बुकटा पढ़ने रही। प्रश्नोत्तरी किताबसँ भेँट नइ। तँए अखबारक न्यूज जकाँ पेपरसँ प्रश्नक उत्तर तकैमे कनी-मनी छह पाँच भाइये जाइ छै, से तँ भेबे कएल। मुदा बेसी नम्बर नइ तँ कमो नम्बरसँ पास करबे करब। मुड़ पलटे नाचे साहु...।

जखन पास करैक बिसवास मनमे ऐछे तखन मन किए ने खुशी रहत। सालक परीक्षाक विसर्जन भेल। लटैत-बुड़ैत हमहूँ स्नातक भेलौं।

दोसर साल चढ़िते विश्वविद्यालयमे दीक्षान्त समारोह भेल। हमहूँ स्नातक बनि भाषण सुनलौं। ओ भाषण नइ जे दीक्षा पहिने शिक्षा पछाइत देल जाइ छै बल्कि ओ भाषण जे शिक्षाक पछाइत दीक्षा देल जाइ छइ।

स्नातक बनि गाममे छी। अपन जिनगी दिस नजैर उठेलौं। परिवार बना बसाएब अछि जे कोनो नव काज नहियेँ छी। अदौसँ होइत आबि रहल अछि आगूओ होइत रहत। पिताक परिवारक देखल-भोगल जिनगी ऐछे तँए मनमे बेसी उज-माज नइ भेल। असथिरे रहल। विचार मोड़ लेलक। पैछला चुनावक प्रश्न– भ्रष्टाचार-पर मन दौड़ गेल।

पिताजी जे बजारसँ समान अनैले पाइ दइ छला, तइ पाइक हिसाब कहियो कहाँ सुमझौलिऐन। जइसँ ने ओ वस्तुक उचित मूल्य बुझलैन आ ने अपन डायरीक हिसाब शुद्ध रहल। फजिलाहा पाइक

अँटावेश ओही वस्तुक सूचीमे ने मीनहा करब?

...धक-दे मन फारम भरैपर पहुँचल। तीन साए रूपैआ तँ अखनो मने अछि। मुदा आब उपाइये की?

मनमे उठल- यएह ने मीनी भ्रष्टाचार भेल!

❍

शब्द संख्या : 825, तिथि : 5 अक्टुबर 2015

गजपट खेती

चारि सालक बैसारीक पछाइत माने बी.ए. केलापर शिक्षा-मित्रक नोकरी भेल। नोकरी होइते मन गद्-गदा गेल। गद्-गदा ई गेल जे जखन कोट-कचहरीक चपरासीकेँ चारिअना मोहर दिआइ भेटने चखनाक संग ताड़ी-दारू चलैए, तखन तँ हम कहुना स्कूल शिक्षक भेलौं। खाइ-पीबैक संग स्कूलक मकान बनबैक ठीकेदारी, तैपर सँ केतेको सरकारी कार्यक्रम...।

सरकारी नोकरी छीहे, सेवा निवृत्तिसँ पहिने दरमाहा भेटत पछाइत पेन्शन, जिनगी भरिक ठौर-ठेकान छीहे। मनमे उठबे ने कएल जे डेढ़े हजारक नोकरी भेल आ बी.ए. पास केला पछाइत हाइ स्कूलक विद्यार्थीकेँ पढ़बैक क्षमतो अछि। मुदा जे अछि से रहह, लोअर प्राइमरी-स्कूलक शिक्षक बनि जुआनि कऽ लेलौं।

पहिल मासक दरमाहा उठा, पिताजीकेँ दैत कहलयैन-

“डेढ़ हजार रूपैआ महीनाक दरमाहा छी।”

रूपैआ देख पिताजी नजैर घुसका मने-मन किछु विचारए लगला। की विचारए लगला से तँ ओ जानैथ मुदा बुझि पड़ल जे भैरसक अपना जिनगीक आमदनीसँ तुलना कऽ रहल छैथ। माइक मनमे बेसी चप-चपी बुझि पड़ल, रूपैआ देख मनक अरमान सभ जेना जगि रहल छेलैन। मुदा जे भेल होनि एते तँ जरूरे भेलैन जे पति-

पत्नीक बीचक जे परिवारक घार बहैत आबि रहल अछि ओइमे असिया आस लगबे केलैन। असियो आस केना ने लगितैन, जैठाम लोकक देहे माटिक काँच घैल जकाँ अछि जे कनियोँ खसने-पड़ने आकि धक्का-धुक्की लगने टन-दे फुटि जाइए...।

चपचपाएल माइक मन रहबे करैन। पिताजीकेँ गुम देख बजली-

“बौआक कमाइ छी, भगवान करैथ जे आगूओ अहिना कमाइ देखैत रही।”

माइक बात पिताजी सुनि लेलैन, बजला किछु ने, माइयोक मनमे किए उठितैन जे कमाइक संग खरचोक आमदनी बढ़त। समए घुसकने जिनगियो घुसकै छै, जखने जिनगी आगू मुहेँ घुसकत तखने रंग-रंगक तेकर भरपाइ भऽ जाएत। खरचो बढ़त...।

पितोजीक मनमे किए ने उठितैन जे अखन तक परिवारमे रेडियो, टी.बी., मोबाइल, मोटर साइकिल नइ आएल अछि ओ शिक्षकक घर बनने एबे करत...।

दोहरबैत माए पिताजीकेँ कहलखिन-

“मन किए खसौने छी, उछटगर बनाउ। भगवान सभ मनकमना पुरा करता।”

‘मनकमना’ सुनि पिताजीक संजोगल मनोरथ जेना जगलैन। माए दिस आँखि उठा बजला-

“बहू दिनसँ मनमे उठैत आबि रहल अछि जे किछ तीर्थ-व्रत करी मुदा गिरहस्ती-जिनगीए जंजाल छी। गोसाँइयो बाबा कहने छथिन- गृह कारण नाना जंजाला।”

पिताजीक बात माए जे बुझलैन मुदा हम नइ बुझि पेलौं जे की

कहलखिन। बिनु बुझल बातमे किछु बाजबो उचित नइ बुझि चुपे रहब नीक बुझलौं, तँए मुँह बन्न केने रही।

माइक मुहेँमे जना रंग-रंगक बरी छनाइत रहैन तहिना छनछनाइत बजली-

“भगवान जहिना एक-सँ-दू केलैन तहिना आगूओ तीन-सँ-चारि हेबे करत।”

एक तँ पिताजीक विचार मनमे घुरियाइते रहए तैपर माए आरो घुरछी लगा देलैन। की बजली जे एक-सँ-दू भेलौं आ आगूओ तीन-चारि-पाँच होइत जाएब? मुदा बिच्चेमे जेना पिताजी परिवारक लगाम पकड़लैन। माइक बेलगाम बात सुनि, सेरिया कऽ लगाम पकैड़ माए दिस मुँह उठा बजला-

“देखियौ, देखा-देखी ई दुनियोँ चलै छै आ लोको चलैए। अखन तकक जिनगी जे परिवारक रहल ओ अढ़ाइ-बीघा खेतक उपजापर रहल। ओना रंग-रंगक आफदो-असमानी होइते आबि रहल अछि आ आगूओ होइत रहत। मुदा से नइ। ”

बिच्चेमे माए टपकली-

“राजा-दैव अहिना होइ छइ।”

माइक बात पिताजी सुनि लेलैन, मुदा अपन विचारक कड़ी नइ तोड़लैन। बजला-

“जहिना बरहवर्णा गाम होइए तहिना बरहवर्णा खेतो-पथार अछि, जेकरा चास-बास कहै छिऐ। तहिना बारहो बिरहिनी उपजो होइए आ तहिना बिरहाएल काजो होइए।”

ऐबेर मुदा माए ठमकली। ठमैकते बजली-

“आब बेटो करताइत भेल, दुनू बापूत जेते विचारि-विचारि

काज करब तेते ने परिवारक नीक हएत।”

माइक बात सुनि पिताजी हमरा दिस नजैर उठौलैन। पहिने हियासि कऽ देखला, देखला पछाइत बजला-

“बौआ, अखन तकक जे जिनगी अछि ओ हेराएल-भोथियाएल गिरहस्तीक जिनगी अछि। जइ परिवारमे पाँचटा समांग रहत, खुट्टापर माल-जाल रहत आ खेती-बाड़ी रहतै, ओइ परिवारमे ओहन कारखाना ठाढ़ रहत जे चौबिसो घन्टा चलैए। तँए कहियो कोनो तीर्थ-वर्थ नहि जा पेलौं। से विचार होइए जे स्कूलक छुट्टी आ बँचल समए जँ खेतीमे सहयोग कऽ दैतह ते मास-दू-मासक छुट्टीक समए बीचमे भेटैत रहत आ मनक कलियाएल लिलसाक पुरती होइत रहत।”

पिताक सहगर विचार सुनि मन मानि लेलक जे अखनेसँ किए ने तैयार भऽ जाइ। कहलयैन-

“पिताजी, जे भार ऊपरमे देब, तेकरा निमाहैक...।”

‘निमाहैक’ मुहसँ निकैलते जेना कण्ठ दबाए लगल। बकार बन्न भऽ गेल। पिताजी बुझि गेला जे निमाहब भारी बुझि पड़ि रहल छइ।

सम्हारैत बजला-

“बौआ, खेतीसँ अन्नो-पानि निकलैए, तीमनो-तरकारी आ फलो-फलहरी निकलैए। परिवारमे अही सब-कथुक ने खगता अछि।”

पिताक सोल्हन्नी विचार सुनबो ने केलौं कि बिच्चेमे मन उधैक गेने बजा गेल-

“बाबूजी, परसुका हाटमे कोनो तरकारीक भाउ तीस रूपैये किलोसँ कम नइ रहइ।”

हमर विचार सुनि पिताजी कैं आरो सह भेटलैन। बजला-

“बौआ, पाँच कट्टा चौमास छह। चौमासक माने ई भेल जे जइ

खेतमे बारहो मास तीमनो-तरकारी आ फलो-फलहरी उपजैए, से तँ अपने अछि।”

पिताजीक बात सुनि अपना दिस तकलौं तँ बुझि पड़ल जे खेत तँ देखले अछि खाली खेती करैक लूरि नइ अछि। भीतरे-भीतर मन ठमकऽ लगल। बातो तँ सत्ते अछि, केना ने ठमकत...। जे बात पिताजी बुझि गेला। माएकैं कहलखिन-

“बड़ीकालसँ विचारमे ओझराएल छी, एकबेर आरो चाह पिआउ।”

चाह पीबते पिताजी कहलैन-

“बौआ, दुनियाँ सबहक छी आ केकरो ने छी। जीव-जन्तु अबैत रहत, जाइत रहत मुदा दुनियाँ ठामै रहत। मनुख कर्ता बनि धरतीपर जनम लइए, जेहेन कर्म करत तेहने अपनो पौत आ दुनियोँ देतै।”

पिताक विचार जेना मनकैं तोपि देलक। कहलयैन-

“पिताजी, आइ बुझि पड़ि रहल अछि जे परिवारसँ जेते हटल रहलौं, ओते सटि नइ पेलौं। माने ई जे परिवारक जरूरत नइ बुझि पेलौं।”

हमर बात सुनिते पिताजी बजला-

“पचीस-तीस बर्ख पैछला बात छी। अहिना दरबज्जापर बैसल रही, ब्लौकक भी.एल.डब्लू. पहुँचला। गरमी मास रहै पियास लगल रहैन। ऐबते बजला जे एक लोटा पानि पिआउ। कहलयैन, आउ कनी जिराइयो लिअ। चौकीपर बैसला। छुच्छे पानि पियाएब नीक नइ बुझलौं। घरमे मुरही-लाय रहए। कहलयैन, छुच्छे पानि केना पीब। एको बेर नाकर-नुकर नइ केलैन जे पानियेँटा पीब। कहलैन, सबेरे आठे बजे खा कऽ गामसँ चलल छेलौं, ऑफिसमे हाजरी बनबैत एलौं हेन...।”

बिच्चेमे छीक भेलैन। हम मुड़ी डोला-डोला सुनैत रही। फेर आगू बाजए लगला-

“अखन तक गाममे रसायन खादक चलैन नइ भेल छल। वएह ओइ दिन खादो, बीओ आ खेतीक ओजारो आ नव तकनीकसँ खेती करैक बहुत बातो कहलैन। मुदा कनी-मनी कोनो-कोनो ओजारो, बीओ आ खादोक चलैन गाममे पकड़लक जे सफल-असफल दुनू होइत रहल। वएह बजला जे पूसा कृषि कौलेजसँ खेती-वाड़ीक पत्रिको निकलैए आ सौंसे देश मिला हिन्दी-मैथिलीमे पचासी स्टेशनसँ पनरह-पनरह मिनटक समाचारो रेडियोसँ दइए। ओना आब तँ अनेको पत्रिको निकलिऐ रहल अछि। मुदा ऐठामक किसानक एकटा दुखद पहलू ईहो रहल अछि जे जेतबो पत्र-पत्रिका सिनेमा जगतक परिवारक टेबुलपर रखैए तेकर चौथाइयो अपन जीवनसँ सम्बन्धित कृषि आधारित पत्रिका नइ रखैए।”

पुछलयैन-

“पहिने की कहलिऐ जे सफल-असफल दुनू होइत रहल अछि?”

पिताजी बजला-

“अखन ओते नमगर-चौड़गर विचार करैक समए नइ छह। अखन तूँ एतबे भार उठा लएह जे पाँच कट्ठा चौमाससँ बारहो मासक फल आ बारहो मासक तीमन-तरकारी परिवारक पुरा ली।”

घरसँ थोड़े हटि चौमास खेत अछि, तइसँ थोड़े हटि कऽ एकटा वोरिंग छै, जे दोसर गोरेक छिऐन। ओइसँ खेती-ले पानि भेटत।

कातिक मास, किसानक धर्मक मास। तीमन-तरकारी आ रंग-रंगक फल-फलहरीक लगबैक मास। उत्तरे-दछिने खेत अछि। पानि उत्तरसँ औत।

खेतीक योजना बना, उत्तरसँ पाँच धुर कोबी, तैबीच दस धुर

धनियाँ, दस धुर मुरै-मटर, तइसँ आगू अल्लू आ तइसँ आगू फेर कोबी, बैगन इत्यादि-इत्यादि लगेलौं।

कोबीकेँ बेसी पानिक खगता। ओइ हिसाबे धनियाँ मुरैकेँ कम पानि चाही। दमकल पानि, कहियो सम्हारि नइ पेलौं। सभ दिन सभ किछु पटैत रहल। कोबी तँ नीक भेल मुदा धनियाँ-मुरै नइ भेल!

पछाइत बुझलौं जे खेतीए करब गजपट भऽ गेल।

❍

शब्द संख्या : 1171, तिथि : 8 अक्टुबर 2015

समुद्री विद्या

सात बर्खक पछाइत गामक सीमानपर आबि जुक्तिनाथ जखन गामकेँ हिया कऽ हियासए लगला तँ साँझ-भोर जहिना पहाड़ धुनियाएल बुझाइए तहिना गाम बुझि पड़लैन। मनक विचार उजि-माजि करए लगलैन। मुदा सीमापर आबि अपन घर-परिवारक दर्शन केने बिना दोसर दिस देखब धड़फड़ी हएत। जखन विचारिये कऽ गाम एलौं तखन एना धड़फड़ाएब उचित नइ...।

गामक सीमानकेँ मनक सीमानपर बकरी जकाँ खुटैस जुक्तिनाथ अपना घर दिस डेग उठौलैन...।

हाइये स्कूलमे जखन जुक्तिनाथ पढ़ै छला तहिये पिताक संग पढ़ैए-ले रक्का-टोकी भेलैन। रक्का-टोकीमे मुक्तिनाथ कहलखिन-

“तोरा सनक पढ़ुआसँ हाथ धोलौं।”

जइ मने मुक्तिनाथ कहने हेथिन मुदा जुक्तिनाथकेँ अर्थ लगलैन जे पिता उसरागा जकाँ बुझि रहल छैथ, माने ई जे जहिना आमक गाछीमे उसरागा आमक गाछ होइए जे रहत गाछीएमे मुदा गाछो आ आमो हएत दोसराइतक...।

ई बात जुक्तिनाथक बाल मनमे किए उठितैन जे पिताजी हँसीएमे हँसैबला विचार देलैन। परिवारमे रहि लोककेँ अपन सम्पैत,

परिवार-जनक बीच बहैत धारमे बितबऽ पड़ै छै जइसँ कियो भँसबो करैए, कियो चोरो-नुक्की खेलैए आ कियो पहाड़क नीरसँ निरमौल धारमे अट्हास करैत यात्री बनि धारे-धार समुद्रोमे पहुँचैए...।

ओना पिताक संग जुक्तिनाथकेँ रक्का-टोकी ऐ दुआरे भेलैन जे मुक्तिनाथ कहलखिन-

“बौआ, परिवारमे जेतबे बुधिक काज छह तेतबे बुधियार बनह। अनेरे किए मनकेँ धोर-मट्ठा भरि दिन केने रहबह।”

पिताक विचार जुक्तिनाथकेँ कटकटा कऽ लगलैन। कट-कटा कऽ ई लगलैन जे भैरसक हाइ स्कूलसँ आगू नइ पढ़बए चाहै छैथ। मुदा पिते किए ने होथि, जँ हम पढ़ऽ चाहब तँ हुनका रोकने थोड़े रुकि जाएब। लगले मन घुमलैन जे ईहो तँ घुमा कऽ जँ कहि देने होथि जे परिवारक जिनगी सुसंस्कृत जिनगी होइए, जखने सुसंस्कृत परिवार बनत तखने संस्कारसँ बच्चा निरमए लगत, जखने संस्कारी बच्चा बनत तखने मनुखक परिवार बनत आ तखने ने संस्कारी समाज बनि देशक निरमान करत...।

मुदा लगले फेर जुक्तिनाथक मन उछैट गेलैन, उछैट ई गेलैन जे जखन पितोजी कहिते छैथ जे ‘हाथ धोलौं’ तखन हमहूँ किए ने अही लगला-सूरमे परिवारेसँ हाथ धोइ ली।

जुक्तिनाथक मनमे उमकी जनैम उमकऽ लगलैन। उमकैत-उमकैत कहलकैन, पिताजी जे कहलैन- जेतबे बुधिक जरूरत हुअए ओतबे बुधियार बनी, से तमसा कऽ कहलैन आकि परिवारक अगिला सीढ़ीकेँ देखैत कहलैन?

जुक्तिनाथक मन पोखैर-घाटक सीढ़ीपर गलैन, सहर-जमीनपर सँ उठल घाट जेते ऊपर भेल जाइए ओते समटाइत जाइए आ समटा कऽ सीढ़ीक एक बल्ला जकाँ भऽ जाइए मुदा तँए कि निचला सीढ़ीक

शक्ति पाबि शक्तिमान नइ रहैए सेहो तँ नहियेँ कहल जेतइ, मुदा ओकर शक्ति निचला सीढ़ीकेँ शक्ति नइ दइए सेहो तँ नहियेँ कहल जा सकैए...।

जुक्तिनाथक मनमे तरे-तर चेतुआ उखम उमैख गेलैन। हिया कऽ देखला तँ माता-पिताक उमेर साठिसँ निच्चे बुझि पड़लैन आ अपना जुआन होइमे पान-सात साल पछुआए...। मनमे उठलैन- प्रजातांत्रिक शासन बेवस्थामे छी, सभकेँ जीबैक समान अधिकार छै, से घरसँ बाहर सभतैर। अनेरे कोन मगज-मारीक महामारीमे पड़ि अपन जिनगीकेँ खेलौना बनाएब। जखन जवान हएब, परिवार तँ अपने बना लेब। जँ पिता खिसियाएले रहता तँ बौस लेबैन। जखन मालो-जाल पोस मानैए तखन ओ किए ने मानता। तैसंग ईहो तँ लाभक घड़ी ऐछे जे बेटा रहितो जाबे जुआन नै हएब ताबे जँ कोनो दुखो-बेकल पिताकेँ हेतैन तेकर भागियो तँ कियो नहियेँ ने बना सकै छैथ। पिताकेँ किछु हेतैन तँ माए करतैन आ माएकेँ किछु हेतैन तँ पिता करथीन। अखैन हमर कोनो काजो तँ घरमे नहियेँ अछि...।

मुदा लगले जुक्तिनाथक मनमे मोड़ाएल प्रश्न उठल- अखन जे स्कूलक पढ़ाइ छोड़ि देब से केहेन हएत? जेते संगी साथी अछि ओ तँ कहबे करत जे धुर बुड़ि अपना चालिये दहेज छुटलौ! जेम्हरे जुक्तिनाथ अपन आगूक जिनगी दिस देखैथ तेम्हरे ओझरीमे टाट लागल देखा पड़ैन। मने-मन जखन हाइ स्कूलक शिक्षक दिस तकलैन तँ सभ शिक्षक आने गामक बुझि पड़लैन मुदा एकटा अपन गामोक रहैन। गामक शिक्षक भेटने जुक्तिनाथकेँ एकटा युक्ति सुझलैन। सुझलैन ई जे देवनाथ काका कक्को छैथ जइसँ परिवारी सेहो भेला आ स्कूलक शिक्षको छैथ, से नइ तँ हुनकेसँ स्कूलो छोड़ैक विचार पुछि लेबैन।

आठ बजे भिनसुरका समए, देवनाथ काका स्कूलक गाड़ी पकड़ै दुआरे घरक गाड़ीकेँ कखनो जुआ पकैड़ तँ कखनो पछुआ पकैड़ दबो-उनार करैथ आ आगूओ ठेलैथ। गाइक थैरक ईंटा सेरियबैत, गहे-गह गोबर पीआ ऊपरसँ ओही गोबरसँ नीपैत, पत्नीकेँ कहलखिन-

"थैरक गोबर सठि जाएत, पहिने पूजा-घर नीपैले लऽ जाउ।"

तही बीच जुक्तिनाथ पहुँच पुछलकैन-

"गुरु काका, अहाँ तँ समुद्री पढ़ने छी, पिताजी उसरागा जकाँ बुझै छैथ, आब ऐ गाममे नइ रहब।"

देवनाथ काकाकेँ जेना ठोरेपर बरी छनाइत रहैन तहिना तरगरेमे बजला-

"धुर बुड़ि! अल्हुआ छह मास माटिक तरमे रहैए से चिन्ते ने करैए आ तोरा जे पिता कहलखुन तेकर आइन-पीड़ा छहे नइ।"

धुपदानीक पजरल ताउमे धुमनक झोंक जहिना एक्केबेर विर्डो जकाँ उड़ि जाइए तहिना देवनाथ कक्काक बात सुनि जुक्तिनाथकेँ भेलैन। तरसाइत पपीहा जकाँ जुक्तिनाथ पुछलखिन-

"काका, उपए की?"

'उपए' सुनि देवनाथ काका बजला-

"पिताजी जे उसरगो बुझै छथुन से उचिते ने बुझै छथुन। ब्रह्माजी तोरा गढ़ि कऽ दूटा हाथ, दूटा पैरक संग माथमे बुधि घोंसिया देने छथुन से तोहर साती हमरा केने हएत। जहिना पिताजी कहलखुन तहिना तोहूँ गामकेँ के कहए जे धरतीएकेँ छोड़ि समुद्रमे जा कऽ पढ़ि आ।"

❍

शब्द संख्या : 787, तिथि : 11 अक्टुबर 2015

राकशे रहि गेलौं

जेठक पुर्णिमा भऽ गेल, मुदा संक्रान्ति लेखे चारि दिन बाँकी अछि। मास दिनसँ बरखा नइ भेने मौसमक रूखिये उलटै-पुलटैए। जे हवा मौधोसँ मीठ होइए ओहो भूखे-पियासे तरैस अगिया नोन-छराहोसँ नोन-छराह भऽ गेल...।

दुखक जिनगी बितौनिहारि कोनो बाला जहिना बिआह भेला पछाइत विधिवत् पति-धरम निमाहैले अपनाकेँ संगीक सपना देखैए तहिना गाछीक सिनुरिया सरहीक सिनुराएल मन आ गुलबिया गुलाबखासक ललियाएल मन गाछीक अस्वस्तता निरवहन सेहो करिते अछि...।

पोखैर-इनार हटैक कऽ चटैक गेल, बाधक मटिआर खेतक छाती छहों-छीत भऽ फटि-फटि कऽ अलैग गेल, मुदा मौसमक छाती पघील नइ रहल अछि। समैकेँ जहिना अपन गति-मति छै तहिना लोकोक तँ छइहे।

टहटहौआ रौद रहौ कि झमझमौआ बरखा, आमक मास छी, बगबार मचकी बनेबे करत, मोटगर डारिमे मोटगर झूलाक मचकी लगबे करत, तीन-जने बैस झूलबे करत आ बरहमासाक तेसर मासक आ चौमासाक जुआनी मासक गीत गेबे करत। आ जँ से नइ भेल तँ जेठुआ रंगे-रूप की...।

बौआ भैयाक आ अपनो कलम-गाछी एकेठीम अछि। सझिये मचान-खोपड़ी अछि, फैजली आमक गाछक निच्चाँमे मचान-खोपड़ी बनौने छी।

एगारह बजे दिनमे खा-पी कऽ जहिना गाछी हम पहुँचै छी तहिना बौओ भैया पहुँच जाइ छैथ। नमगर-चौड़गर मचान ऐछे दुनू गोरे एके सिरहाने पड़ल-पड़ल आमक गाछीक ओगरवाहियो करै छी आ रंग-रंगक गपो-सप्प तँ करिते छी।

आइ गाछीक सीमानपर एकेबेर दुनू गोरे पहुँचलौं। ओना घर दुनू गोरेक लगेमे अछि मुदा बीचमे प्रधानमंत्री सड़क योजनाक सड़क बनने, गामक रस्ते दुनू गोरेक बदैल गेल अछि। जहिना गाछी-बिरछीक तहिना गामक टोल-पड़ोसक। जाबे सड़क नइ बनल छल, गाड़ी-सवारीक एते दौड़ नइ छल, दुनू गोरे बेसी काल एकेठाम रहितो छेलौं।

बौआ भैयापर नजैर पड़िते बुझि पड़ल जे कोनो बेथे बौआ भैयाक मन टुटि कऽ जेना केतौ लसैक गेल छैन। मुदा बच्चेसँ दुनू गोरे एकठाम रहलौं, जहिना बौआ भैयाकेँ हम चिन्है छिऐन तहिना ओहो हमरा चिन्है छैथ, तँए मन खसैक माने खाली दुखे-बेथा नइ होइ छै, करमो होइ छइ। संगे दुनू गोरे बी.ए. पास केने रही। संयोग ई रहल जे वेचारा अपन नथिया निकालि लोअर-प्राइमरी स्कूलमे नोकरी केलैन आ हम अपन जिद्द धेने रहलौं जे छमतानुसार काज करी।

बातो विचारैबला अछि जे जे बी.ए. पास अछि ओ हाइ स्कूलक विद्यार्थीकेँ पढ़ा सकैए, तैठाम जँ लोअर प्राइमरी स्कूलमे जा पढ़ाएत तखन मिडिल पास आकि ऐट-नाइन पास की करता? मनमे उठि गेल रहए जे कोनो गम्भीर विचार बौआ भैयाक मनकेँ दबने छैन, तँए खसल बुझि पड़ै छैथ। तहूमे अनका जकाँ ने हुनके मनमे छैन जे आगू

भऽ कऽ केना टोकब आ हमरे मनमे जे कहियो ने उठल से केना उठत। गामक हँसोरमे बौआ भैयाक गिनती छैन, जे बात गामक सभ बुझै छथिन, हमहूँ बुझै छी आ शिक्षक-मण्डली सेहो बुझै छैन आ जात-बरियात पुरनिहार तँ जनिते छैन जे जइ बरियातीमे बौआ भैया पहुँचला, ओइ बरियातीक सए-सबा-सए रसगुल्लाक पाचक बौआ भैयाक गप-सप्प छिऐन। हँसबैत-हँसबैत पचा देता। जहिना घूस उपहारक नाओंपर पचि जाइए।

खसल मनकेँ उठबैत बौआ भैया बजला-

"राकशक राकशे रहि गेलौं!"

बौआ भैया की बजला, से बुझबे ने केलौं- की राकशक राकशे रहि गेलौं? मुदा लगले धिया-पुताक मुँहक एकटा बात मन पड़ि गेल। मन पड़ि गेल जे पहिने गाछी सभमे राकश सभकेँ देखै छेलिऐ। ठाढ़ो हुअए आ चलबो करए, दौगबो करए, भुक-भुको करए। मुदा ओहो तँ ओही दिनसँ समाप्त भऽ गेल जइ दिनसँ लोक अछियामे खोंरनाठी जरबऽ लगल।

मन भेल, बौए भैयासँ पुछि लिऐन मुदा पुरना बात केना...; तँए चुपे रहलौं। मुदा बौआ भैया ओइ शिकारी जकाँ तीर फेंक हमरा पाछूसँ हियाबए लगला जे केते दूरक शिकार पकैड़ पेलिऐन। मने-मन तरतम्य करए लगला जे केहेन उत्तर अबैए। अकबकाएल आगू बढ़ैत मचान लग पहुँच गेलौं।

बौआ भैयाक गम्भीर नजैर देख अपन सेवकाइ अनिवार्य बुझाएल। तहूमे बौआ भैयाक बात बुझबे ने केलौं सेहो तँ हुनकेसँ भेटत तँए आगतो-भागत अनिवार्य तँ अछिए।

बौआ भैया निच्चेमे ठाढ़ रहला, आ अपने आगू बढ़ि मचानक ओछाइन ठीक केलौं। ओछाइनपर पड़ि सिरमापर मुड़ी सेरिऐबते रहैथ

तखने मुहसँ खसलैन-

"एह! केतए गेल ओ दिन?"

बौआ भैयाक बात अनसोंहात जकाँ लगल। बाजि रहल छैथ आकि बकि रहल छैथ? किछु फुरबे ने करए। तखन तँ भेल जे जहिना मूसक नाङ्गैर पकैड़ गणेशजी खेलाइ छला तहिना हमहूँ खेली...।

टोकलयैन-

"भैया, अहाँ बजैत जाइ छी, हम बुझबे ने करै छी।"

बौआ भैयाक मनमे जेना गुरुत्व जगलैन। डेढ़ इंचक हँसी हँसैत कहलैन-

"सुधीर, आगू देख पाछूक सुमार अबैए।"

बौआ भैयाक बात सुनि-सुनि छगुन्तामे पड़ल जाइत रही मुदा किछु भाँजे ने पबैत रही, जे एना किए बजि रहल छैथ...।

...तखन उपए? हँ एकटा उपाय तँ ऐछे जे भुतलग्गु जकाँ बकैले छोड़ि दिऐन। सएह केलौं अपन मुँह सुइया-डोरासँ सीब, दुनू कानकेँ खोलि, टेप जकाँ आगूमे रखि देलिऐन।

पुतोहुक दुतकार बौआ भैयाक मन-मिजाजिकेँ हौड़ देने छेलैन। अपना काने सुनलैन। पाँच बर्खक पोताकेँ पुतोहु ठोकले मुहेँ कहलखिन-

"बाबासँ पढ़ऽ नै जो। ओ पुरना पाठ पढ़ा, पछुआ देथुन।"

पुतोहुक बात सुनि बौआ भैया छगुन्तामे पड़ि मने-मन सोचि रहल छैथ, सत्तैर बर्खक पूर्ण जिनगी जिनीहारक कोनो मोले नै? की हम आमक गाछीक राकश छी?

पुतोहुक विचार बौआ भैयाकेँ छातीमे लगल टहकैत रहैन। मुदा दुख-सुख तँ मनक खेल छी, नइ कि मन। अहिना अबैत-जाइत रहै

छइ। मुदा जेकर जिनगी हँसोरक रहल ओहो तँ लगले नहियेँ मेटाएब। बजला-

"की सासुर छल आ की पत्नी छेली!"

बौआ भैया जे बजला ओइ बीचमे किछु बाजि टाँग नइ अड़ेलौं। तँए एकहरफी बजैत रहैथ। फेर बजला-

"देहा-देही सम्बन्ध होइए। सासुर छल, जहिना सासुकेँ सुरजा दोकानक लालमोहन नीक लगै छेलैन, तहिना बुड़हाकेँ कालापानी पुरना छलिया आ सारि-सरहोजिकेँ अण्डाएल रौह। भऽ तँ गेल एते पुरती भऽ गेल सासुरक मान-दान बढ़ि गेल। आँगन-दरबज्जासँ उठि-उठि रस्ता तकैत रहता जे पहुनमा केतए ढोंरियाएल अछि।"

'मान-दान' मुहसँ खसिते जेना बौआ भैयाक बोलीक पाश बदैल गेलैन। दोहरबैत बजला-

"विद्यालयमे किछु गलती अपनो भेल। सोझे पढ़बै पाछू रहि गेलौं, अपने किछु पढ़ि नै पेलौं। जैठाम सए-पचास बाल-बोधकेँ पढ़ा रहल छेलौं, तैठाम ओकरा पढ़ब छूटि गेल, बालो बोध नइ भेल!"

बौआ भायकेँ अपसोच करैत देख कहलयैन-

"अनेरे बौआ भैया, चिन्ता करै छी?"

हँसैत बौआ भैया बजला-

"राकशो की सदिकाल कनबे करैए आकि हँसबो करैए। क्रन्दन-कोलाहले बीच ने हल बनि हलकबो करैए।"

बजैक सूरमे बौआ भैया बाजि गेला, मुदा बुझि पड़ल जे कोनो नमहर पाथर कलेजाकेँ दबने छैन।

❍

शब्द संख्या : 959, तिथि : 12 अक्टुबर 2015

निनिया देवीक आराधना

आसिन मासक सोल्हम दिनक परीव, आइए नवरात्राक कलश-स्थापनो हएत। ओना सालमे चारि खेप नवरात्रा होइए, जेकरा चतुरमासी कहल जाइए। ओना आसिनक नवरात्राक अपन अलग महत छइ। महत्तो केना नइ रहत जिनगीक आसा-बाट पकड़ैक कलश-स्थापन छी किने।

ओना आसिनसँ लगले सटल मास कातिकक सोल्हम दिनक परीव-परखेबक रूपमे आ गोवरधन पूजाक रूपमे गोबरक बखार बना गोधन-गजधन इत्यादिक पूजो होइते अछि। मुदा ओ परीवक पावैन बीतल अमवसियाक साँझमे लक्ष्मीक पूजा आ रातिमे कालीक पूजा होएत।

सालक चारू नवरात्राक अपन वीध-विधान छै, जे एक-दोसरमे सम्मो अवस्थामे अछि आ बिसम्मो अवस्थामे अछि जे सोभाविको अछि। रहबो केना ने करत, जे बरसाती फूल आसिनमे अपन जुआनी पकैड़ नचैए ओ तँ माघ अबैत पतझाड़क रूपमे फूलझाड़ भाइये जाइए, तखन एक्के पुष्प-दलसँ पूजब कठिन हेबे करत किने।

भक्तमय संसारमे निनिया देवीक पूजामे सभ लीन। दुनियाँ लीन, गाम लीन, परिवार लीन, लोक लीन...। लेनिहारेसँ दुनियाँ भरल अछि। देनिहार मात्र एक- निनिया देवी, शक्तिशालिनी देवी।

अदौसँ जहिना घर-परिवारसँ देस-कोस धरिक लोक लड़ाइ करैत आबि रहल अछि तहिना देवियो-देवी आ देवो-देवता तँ लड़ाइ करिते आबि रहला अछि। तहिना पनचैतियो सभ दिनसँ यएह होइत रहल जे जे जेते शक्तिशालिनी आ शक्तिशाली ओ ओते सिरचढ़ बनि सिर चढ़ल।

ओना गाममे बहुतो देवियो स्थान अछि आ देवो स्थान, मुदा हूबा-मनसूबामे कम-बेसी तँ ऐछे, से गामोक लोको बुझिते छैथ। मुदा केतौ किछु हौउ, निनिया देवी अपन समयानुकूल रूप बदलैत अखनो सभसँ शक्ति-शालिनी देवीक स्थानमे छैथे। रहबो केना ने करती, एहेन आनन्द-दायिनी देवी दुनियाँमे के छैथ जेकरासँ प्राप्त कोनो आनन्दसँ कम आनन्द निनिया देवीक आराधनामे भेटैत हुअए। दुनियोँसँ मुक्त आ जिनगियोक हड़हड़-खटखटसँ मुक्त...।

..तेतबे नै, दिनमे पूजा करी आकि रातिमे, साँझमे करी आकि भोरमे तइले ने केतौ कोनो नियम-आदेशक कोनो झंझट आ ने स्थान-प्रवेश करैमे केतौ कपाट लागल अछि। जेहेन मन तेहेन तँ भेटबे करैए तइमे की निनिया देवी कोनो दूजा-भाव करैत दइ छथिन। ओ तँ मनसा गुण फल सभकेँ दइते छथिन। जेहेन पुरुख रहब तेहेन पुरखौट भेटबे करत...।

काल्हि साँझूए पहर गामक दुर्गा स्थानमे भगवतीकेँ नौत दैत औझुका कलशक स्थापनाक सभ जुति-भाँति पूजा कमिटिक बीच निर्णए भऽ गेल। काजक बन्हुआ श्याम काका, समैसँ सभ काज करैत चारि बजे भोरे उठि परिवारजनकेँ जगबऽ लगला। केकरो फूल तोड़ैले, केकरो आँगन-घर नीपैले, केकरो कलशक ओरियान करैले इत्यादि-इत्यादि काजकेँ नाओंमे बान्हि-बान्हि परिवारमे छिड़ियबऽ लगला। छिड़ियेबो केना ने करितैथ, जहिना अन्न-अन्नमे खेनिहारक नाओं

लिखल अछि तहिना ने काजो आ पूजो-पाठक...। बेटा-पुतोहु, पोता-पोतीसँ भरल श्याम कक्काक नमहर परिवारो छैन्हे।

ओछाइनपर नीन तोड़ि श्यामा काकी श्याम काकापर तीर छोड़ैले मने-मन विचारि रहल छेली। विचारक अनुकूल परिस्थितियो छेलैन। एक तँ आसिन मासक भोर, तैपर पूर्बाक लहकी भरल अमवसियाक रातिक सिहियाएल संसार...।

सुरूजक लाली पूबसँ जगि रहल छल मुदा फरीच नइ भेल रहए। दिनका काज दिनमे हएत आ रौतुका काज रातिमे। अखन तँ रातिये अछि तखन किए श्याम काका ठेलियबै छथिन?

..श्यामा काकीक मनमे उठलैन जे समधानि कऽ कहिऐन, मुदा तरङ्ल मनमे तरेगनक इजोत जकाँ उठलैन- आइ आसिनक नवरात्राक कलश-स्थापन छी, भोरे-भोर कहा-कही करब उचित नइ...।

मुदा लगलै मन लहैस गेलैन। लहैसते उठलैन, कहू जे के एहेन हएत जे परिवारजनकेँ सुखमय, आनन्दमय समए बितबैत नइ देखए चाहत?

एक तँ आसिनक मद-भरल मासक भोर, तैपर उमसाएल मनकेँ पूर्बाक लहकी मोहैन करैए, तेकरा किए श्याम काका अनरोखे नष्ट करए चाहै छथिन। परिवारजनक सम्बन्ध देहा-देही, बेकता-बेकती अछि। ओना सम्बन्धकेँ सभ रंगक विचारक पीठिपोसको सभ परिवारमे होइते अछि। एक दिस पतिक सम्बन्धसँ पत्नी तँ दोसर दिस सन्तानक सम्बन्धसँ माए, दादी, नानी इत्यादि...। सबहक अपन-अपन धरम-करम अछि।

मझधारमे पड़ल श्यामा काकीक मन नाह जकाँ डगमगाए लगलैन। डगमगाइत मन आड़ा लगिते बमैछ गेलैन। बमछैत पतिकेँ

कहलखिन-

"भोरे-भोर एना किए अर्ड़ाइ छी?"

श्यामा काकीक बात श्याम कक्काक मनकेँ बेसी छुलकैन नइ मुदा कानमे पहुँच घुड़घुड़ा देलकैन। कानकेँ घुड़घुड़ाइत देख धड़धड़ाइत मनमे विचार उठलैन- परिवारक तँ सिरजन अपने दुनू बेकती छी, तखन भोरे-भोर लोहैछ कऽ किए जे विचारेसँ किए ने कहिऐन।

तैबीच श्यामो काकी घरसँ निकैल ओसारपर एली। श्याम काका हाथोक इशारा आ मुहोँसँ कहलखिन-

"एम्हर आउ।"

लगमे ऐबते काकीक मन जेना अस्सी मन पानिक बीच पड़ि गेल होनि, तहिना बजली-

"आइ कलस्थापन छी किने?"

श्याम काका-

"तँए ने भोरे-भोरे सभकेँ उठि-उठि संकल्पित हुअ कहै छिऐ।"

"दिन केतौ भागल जाइए?"

"से ते नइ भागल जाइए मुदा रातिक खेहारसँ तँ भागिते अछि किने?"

पतिक बात सुनि श्यामा काकी चुप भऽ गेली।



शब्द संख्या- 679, तिथि : 13 अक्टुबर 2015

बताहे बताह बनौलक

माघ मासक अमवसियाक भोर। आइए माघी नवरात्राक कलश-स्थापन सेहो होएत...।

काल्हि साँझूपहर आर्यवीर बाबा बजार-ऑफिसक काज करैत साढ़े सात बजेमे घरपर एला। ओना माघक साढ़े साते बजे छी, जेकरा जेठुआ हिसाबे पहिल साँझ आ भदवरियामे दोसर साँझ चाहे कतिका हिसाबे तेसर साँझ कहल जाएत मुदा, माघक हिसाबे तँ राति भाइये गेल अछि।

अपन रूटिंगक हिसाबे आर्यवीर बाबा अबैबला काल्हिक ओते ओरियान आइए कऽ लइ छैथ, जतेकसँ अगियासी चलतैन। अपन नित-कर्मक किछु काज पछुआएल रहैन तँए नजैर कौल्हुका दिस नइ बढ़लैन।

एक तँ रस्ताक जराएल दोसर अनिवार्य काज पछुआएल रहने अगियासीक ओरियान परिवारोजन नइ केने रहैन। किए ने केने रहैन तेकर अनेको कारण अछि मुदा से सभ नइ, कनसोह नइ रहने छुटि गेलैन। कनसोह भेल जेकर भार कन्हापर अछि। माने ई जे चारि गोरे चारि रंगक काज करै छी, जइमे कोनो एहेन काज अछि जे परिवारक जिनगी-ले अनिवार्य अछि जे नइ केने कष्ट हएत, परेशानी हएत। ओहन काजपर नजैर नइ दऽ अपन जिम्मेक काज जे अनिवार्य नहियोँ

अछि ओ कऽ लेब आ अनिवार्यकेँ छोड़ि देब...।

एक तँ ओहुना भोरक अगियास[1] नइ पजरल तँ दिनक सृजन बाधित हएत, जखने सृजन बाधित हएत तखने अगियास बिनु पजरनौं निष्काम रहत।

भोर भऽ गेल रहए। ओना भोरो-भोर केते रंगक अछि। कोनो पक्षीक अध-रतिया भोर होइ छै आ कोनोकेँ दिन-उगिया मुदा से सभ नइ, घड़ीक हिसाबे आकि मोबाइलिक हिसाबे चाहे रेडियोक हिसाबे साढ़े पाँच बजि गेल रहए मुदा, लगै राति जकाँ। राति जकाँ लगैक कारण रहै पैछला मास दिनक शीतलहरी, जइसँ ओस पाला बनि सघन भेल। बुझि पड़ै जेना अपनो हाथ-पएर अपन आँखि नइ देख पबैए तैपर सँ हिमांचल जकाँ कनकनी...। आने दिन जकाँ आर्यवीर बाबा घूरक जगह लग पहुँचला। घूरक केतौ पता नइ। सभ दिन बाबा अपने ओहन अगियासीक ओरियान कऽ लइ छैथ जेहेनक खगता रहै छैन। घूर नइ होइक कारण रहैन ओइ दिस सुधिये बुधि ने गेल रहैन। परिवारोजनक सभ अपने काज भरिमे समटा कऽ रहि गेल रहैन।

ओछाइनपर सँ उठि आर्यवीर बाबा सलाइ नेने घूर लग ठाढ़ रहैथ, जाड़े देह सिहरैत रहैन, मन भुटकैत आ ठोर कँपैत रहैन। घूर नइ देख मनमे एक्केबेर जेना आगि पजैर गेलैन। आगि ई पजरलैन जे जइ परिवारजनकेँ आइ-सँ-काल्हि जोड़ैक लूरि नइ अछि, जेकरा ई नइ अछि जे रस्तामे केते बाट-घाट पड़ैए, जेकरा डूमा घाट आ डूमा बाटक होश नइ छै, ओ केना उगा घाट आ उगा बाटक तुलसीपात जकाँ कंचन बनि चलि सकत! बताह जकाँ जोरसँ आर्यवीर बाबा चितकार मारलैन-

"ई घर रहैबला अछि! जँ रहौ चाहब तँ जीब कए दिन?"

[1] आगूक आस

घरे-घर परिवारजन सीरकक तरमे दाबल। किए किछु कियो बाजत। गबदी मारि सभ जाड़क मस्तीमे मस्त। नहेला पछाइत जहिना कियो ठोर पटपटबैत हनुमान चलीसा पढ़ैए- 'महावीर विक्रम बजरंगी... ।' तहिना ठोर पटपटबैत आर्यवीर बाबा दोहरा कऽ बजला-

"ई घर छी आकि बतहाक बोन छी!"

'बताहक बोन' सुनि एगारह बर्खक पोता जे टी.बी.मे रामदेवकेँ व्यायाम करैत देख अपनो मने-मन करैत रहए... । बाबाक बड़बड़ाएब सुनि कोठरीसँ निकैल, लगमे आबि कहलकैन-

"बाबा, अहाँ अनेरे किए चिन्ता करै छी?"

विलासक बात सुनि आर्यवीर बाबाकेँ हनुमानजी जकाँ रूइयाँ-रूइयाँ ठाढ़ भऽ गेलैन। तरे-तर मन बमछऽ लगलैन। बमछैत बजला-

"तेहेन ने घरक लोक भंगबताह अछि जे बताह बनौने बिना नइ रहत।"

ओना विलास कौलेजमे पढ़ैए मुदा बच्चेसँ सभ दिन प्रिंसिपलेक बीच शिक्षा पौलक, अखनो पबैए। माने ई जे जखने नर्सरीमे नाओं लिखौलक तहूठाम प्रिंसिपले रहथिन आ कौलेजमे तँ सहजे सभ दिने रहला अछि। प्रिंसिपलक बीच रहने विलास कहियो हेडमास्टर आकि आचार्यजी आकि पण्डीजीसँ पढ़ने नइ। ओना विलास पढ़ैमे चञ्सगर तेहेन अछि जे केहनो गणितकेँ कैलकुलेटरमे मिनटो नइ सेकेण्डेमे सोझरा लइए। विलास कहलकैन-

"अहाँकेँ कथीक एते दुख होइए, अनेरे चिन्तासँ बताह भेल छी।"

❍

शब्द संख्या : 574, तिथि : 15 अक्टुबर 2015

धोखा

पच्छिम दिस सुर्ज लटैक गेला मुदा डुमल नइ छला। ओना सुर्जक डुम्बोक बेर सभ मास आ सभ मौसममे अलग-अलग होइए। कोनो मासमे डुमैसँ पहिने थरथरी-कँपकपी अपनो आबि जाइ छैन आ लोकोकेँ ऐबते छइ। मुदा एकर माने ईहो तँ नहियेँ हएत जे सभ दिन आ सभ मास आकि सभ मौसममे अहिना होइए। एहनो तँ समए आकि मौसम ऐछे जइमे डुमैयोकाल ओहन उष्मा आकि प्रखरता रहिते छैन जेहेन बालपन-सँ-जुआनपन धरि रहलैन... ।

..से नइ, शरदक मास रहने सुर्जमे केतौ ने वादल घोंसियाएल आ ने रंग-रूपमे कोनो कमी आएल। मुदा तँए कि ओसक आगमन आकि जाड़क आगमन नइ भेल सहो तँ नहियेँ कहल जा सकैए... ।

दिन अछैते बाध दिससँ आएले रही कि मनीष भाय पहुँचला।

पत्नी चाह नेने आबि गेल रहैथ मुदा एके कप चाह, पत्नीक हाथसँ कप लैत मनीष भाइक हाथमे पकड़बैत पत्नीकेँ कहलयैन-

"आरो एक कप चाह नेने आउ।"

पत्नी चाह आनए आँगन गेली, मुदा मनीष भाय हाथमे कप रखने ने किछु बाजैथ आ ने चाह मुँहमे लगबैथ। जे सोभाविको अछि। गाम-घरमे लोकक चूल्हिपर चाहे केते बनैए। कोलकाताक

ग्रेण्ड होटल नइ ने छिऐ जे सदिखन खदकैते रहैए। मुदा सम्बन्धो तँ कपे भरिमे ने निमाहऽ पड़ै छैन... ।

..दोसर कपमे चाह नेने पत्नी पहुँचली। हाथमे चाह लैत मनीष भायकेँ कहलयैन-

"किए चाह बागने छी, हमरो तँ आबिये गेल।"

पत्नी चोटे घूमि आँगन चलि गेली। एक घोंट चाह पीब मनीष भाय कहलैन-

"श्याम, गुरु काका ऐठाम चलह।"

मनीष भाय खोलबे ने केलैन जे कोन काजे आकि किए चलह। ओना मनीष भायपर सभसँ बेसी बिसवास- गामक लोकक अपेक्षा- अछि। एहेन लोक जँ बारह बजे दिन आकि बारह बजे रातियो जँ केतौ चलैले कहता तँ मिसियो भरि अन्देशा नै हएत। तहूमे गुरु काका ऐठामक बात छी। मुदा समैयोक तँ अपन गतिविधि छइ। एकरो तँ नहियेँ नकारल जा सकैए जे कोनो बहन्ने लोक लोककेँ ठकि पैघ-पैघ अपराधमे ओझरा दइ छै... ।

सामंजस्य करैत मनीष भायकेँ कहलयैन-

"अहूँ बड़ औगताह छी, पहिने चाह पीबू तखन पान खाएब, पछाइत जेतए जाइक मन हएत तेतए चलब।"

दुनू गोरे चाह पीलौं। पान खेलौं। नवका डिब्बाक पान साए नम्बर जरदा-पत्ती, मुँहमे दइते पानकेँ फुला देलक। मुँहक पान फुलाइते मनो फुला गेल। फुलल मने मनीष भाय बजला-

"गुरु काका अखन कष्टमे पड़ि गेल छैथ।"

पनरह दिनसँ ओम्हर नइ गेल रही तँए गुरु काकासँ भेँट नइ भेल छल। कष्ट सुनि मन हहैर-हहैर खसऽ लगल। मुदा सम्हरैत पुछलयैन-

"केहेन कष्टमे पड़ि गेल छैथ?"

ओना मनीषो भाय झँपले-तोपल बजला। किएक तँ कष्टो तँ केते रंगक अछि, एहनो कष्ट तँ ऐछे जे खेबाकाल जँ तरकारी अनोन कि मधनोन रहल, तहूसँ कष्ट होइए। जखन कि केते लोक एहनो तँ छैथे जे नोन खाइते ने छैथ।

कुरसीपर सँ उठैत मनीष भाय बजला-

"चलह रस्ते-रस्ते गपो करैत चलब आ भेँटो कऽ लेबैन।"

दुनू गोरे गप-सप्प करैत गुरु काका ऐठाम पहुँचलौं।

ओछाइनपर पड़ल गुरुआइन काकी चद्दैर ओढ़ने रहैथ आ गुरु काका सिरमा लग बैसल रहथिन। हमरा दुनू गोरेकेँ देखते गुरु काका सोर पाड़ैत कहलैन-

"ऐम्हरे आबह।"

लगमे पहुँचते काकीकेँ कहलयैन-

"काकी, गोड़ लगै छी।"

गोड़ लगाब सुनि गुरुआइन काकी चद्दैर समेट ओढ़ि बैसैत असीरवाद दैत बजली-

"भगवान हमरो ओरुदा तोरे देथुन जइसँ दनदनाइत चलैत रहबह।"

मनमे भेल जे आब हिनका औरुदे केते छैन जे अखनो बाँटि रहली अछि। मुदा लगले धक् दऽ मन पड़ल जे आइए नइ सभ दिने एहने असिरवाद गुरुआइन काकी दैत एली अछि। दुनू गोरे- माने हमहूँ आ मनीषो भाय- बैसलौं। बैसते गुरु काकाकेँ मनीष भाय पुछलखिन-

"काका, केहेन समए-साल अछि?"

गुरु काका मनीष भाइक मुँह दिस देखैत कहलखिन-

"की समए-साल रहत...!

पत्नी दिस आँखि घुमबैत-

..देखहुन ने, कहै छैथ जे हमरा कोनो दवाइ-बीड़ो नइ करू। अहाँ अछैत जँ मरि जाएब तखन ने अहाँक मन निसकलुष रहत, जइसँ साए बरख नहियों पुरने शतीक पात्र हएब।"

गुरु कक्काक बात मनीष भाइक मनमे धुरियाए लगलैन, मुदा हमरा हँसी लगि गेल। कहू जे आन बुढ़ानुसकें मरैक डर होइ छै, जइसँ पतियो आ बेटो-पुतोहुकें गरियबैत रहै छैथ जे दवाइ-बीड़ो छोड़ि सभ गरगोटिया दऽ कऽ मारऽ चाहैए आ ऐठाम उनटे देखै छी! मुदा हँसी कम करैत मुस्की भरैत रही, बाजी किछु ने।

ओना मनीष भायकें देखिऐन जे कखनो मुँह विदैक जाइ छैन आ कखनो सोझ-साझ भऽ जाइ छैन। मुदा हमरा केटली आ कि कोनो बरतनमे खौलैत पानि जकाँ जे ऊपरका उधियाइत रहैए मुदा निचला जरैत ऊपरकाक दाबसँ तेते दबल रहैए जे सगबगाइयो ने पबैए, तहिना कण्ठसँ ऊपर तेते खुशी नचैत रहए जे हृदयक बातकें दाबि देने रहए। हुअए जे भैरसक हमरे सन लोक-ले ने लोक बजैए 'केदैन हँसल किदैन देख...।'

मुदा फेर मन कहलक होशियार लग बैसब वएह होशियारी भेल जे सुनि-सुनि बुझैक परियास करी। एक दिस कोनो काजक मूर्तिरूप अछि आ दोसर दिस खढ़-माटिसँ गढ़ल, तैठाम देखनिहारोकें तँ किछु दायित्व बैने जाइ छै, तँए रही तँ चुपचाप बैसल मुदा मकैक लाबा जकाँ कखनो-कखनो मन फुटि-फुटि लाबा बनि खापैड़सँ उड़िये जाइत रहए। जे निच्चाँ खसि पड़ै तेकरा उठाएबो तँ कठिन अछिए। एक दिस अपने गरम रहने आँगुर पकैक डर रहैए तँ दोसर दिस लगले सरेने जाबे घानी-बनत ताबे ओ गरमेबे करत...।

हमरा दुनू गोरेकें सोझहामे देख गुरुआइन काकीक नरसिंह जगि गेलैन। तहूमे ओछाइनपर सँ उठि कऽ बैस गेल छेली। झपटैत गुरु काकाकें झपैट बजली-

"आइए नै सभ दिनसँ पुरुख नारीपर अनबिसवास करैत आएल अछि आ अखनो करैए।"

गुरुआइन काकीक असल बात पेटेमे रहैन मुदा झपट्टे देख गुरु काका सहैम गेला। सहमबो केना ने करितैथ, पुरुखक पुरुखत्वक प्रश्न अछि किने। लगक संगी अपन पत्नियों जँ दोसर पुरुखक संग ठैठ कऽ हँसै छैथ, ऐ नारीत्वकें नइ मानि, शंकालु नजरिये देखै छैथ। की पुरुखक किरदानी नारी नै देख रहली अछि जे ओ सौतीनक जिनगी जीबह आ पुरुख छुट्टा खेलाइत रहह। ओना गुरुकाका आ गुरुआइन काकीक रमझौआ नीक लगल। मुदा मन तँ गुरुआइन काकी आ गुरु कक्काक उमेर दिस देखैत रहए। ओना अखनो दुनूक मनमे आत्म बिसवास छैन्हे जे गैल-पैच नइ मरब। मुदा झखड़ल जिनगी देख मन कलैप कऽ कलैश गेल। पुछलयैन-

"काका, केते उमेर भेल हएत?"

उमेर सुनि गुरु काका बजला-

"पनचानबे बरख चलि रहल अछि।"

'पनचानबे' सुनि मनमे हरियरका धुरा उड़ऽ लगल। मुदा केना पुछितिऐन जे आब केते दिन जीब। तैबीच गुरुआइनो काकीक मन लुसफुसाइत देखलयैन। बुझि पड़ल जेना किछु बजऽ चाहै छैथ। मुदा प्रतीक्षा करैत रहैथ जे हमरो पूछ हएत तखने ने...।

गुरुआइन काकीक लुसफुसाइत मुँह देख पुछलयैन-

"काकी, अहाँक उमेर केते भेल हएत?"

ले बलैया! पुछलयैन असथिरसँ आ ओ बाझ जकाँ झपाटा मारि बजली-

"स्त्रीगणक कोनो मोल छइ। दू बरख जँ पुरुखसँ बेसियो रहत तैयो दू बरख घटाइए कऽ लोक बजैए।"

दोहरा कऽ की पुछितिऐन। अपन पशे बदैल लेलौं। गुरु काकाकें पुछलयैन-

"काकी जँ मरऽ चाहै छैथ तँ छोड़ि दियौन।"

काकीक बात सुनि काका सहैम गेला। जेना पाछू उनैट अपन जिनगीक सर्वे करए लगला। बीचमे मनीष भाइक मुँह सेहो किछु बजैले चटपटाइत रहैन, मुदा ओ अगिया प्रश्नोत्तरक प्रतिक्षामे मुँह बन्न केने रहला। सोचैत विचारैत गुरु काका बड़ीखानपर बजला-

"बौआ, दुनू गोरे बेटे-भातीज भेलह। जइ दिन बेटा-पुतोहु परदेशक रस्ता पकैड़ कहलक जे अहूँ दुनू गोरे (माने माता-पिता) संगे चलू। मुदा गामक माटि-पानिपर कएल गेल सेवाक जे फल देखैत एलौं ओ सिनेह बेटा-पुतोहुक सिनेहसँ बेसी बुझि पड़ल। अपन जिनगीक कोनो शंके ने अछि, तखन किए केतौ जैतौं। मुदा किछु आवश्यक काज धोखा-धोखीमे छुटि गेल। ओतबे चिन्ता अछि!"

गुरु कक्काक बात सुनि मनीष भाय कहलखिन-

"काका, अखन जाए दिअ। काल्हि फेर आएब।"

गुरु काका कहलखिन-

"भरोसे-भरोसी ने दुनियाँ चलैए।"

❍

शब्द संख्या : 1172, तिथि : 17 अक्टुबर 2015

खसैत गाछ

जिनगीक अन्तिम सीढ़ीपर पहुँच पुरन ठाकुर ओइ गाछ सदृस भऽ गेल छैथ जे ने अकास दिस मुँह उठौने ठाढ़ अछि आ ने धरतीपर बिछाइन भेल पड़ल अछि।

सौन मास, बादलसँ छाड़ल मेघ, सुर्जक केतौ पता नइ, उमड़ैत-घुमड़ैत ओहन हूंकार भरैत जे बरिस कऽ धरतीकें जलमग्न कऽ देत, रहि-रहि बिजलोका सेहो दिशा बदैल-बदैल कखनो अपन पीरौंछ रंगें तँ कखनो हल्लुक लाली नेने तँ कखनो आल लाल रंगें तड़तड़ेबो करैत आ गोटे-गोटे बेर ठनैक-ठनैक ठनका बनि खसबो करैत। ओना अदरे नक्षत्रसँ बर्खा अपन रूप पकैड़ नेने छल जइसँ पोखैर-झाँखैरक संग धारो-धुर फुला अपन तेज गति पकैड़ लेलक। चर-चाँचरक संग ऊँचरस-नीचरस खेतो जल-प्लावित भेल। अस्सी-बिरासी बर्खक पुरन ठाकुर आबि दरबज्जाक मुहथैरपर ठाढ़ भऽ थर-थर कँपैत ने किछु बाजैथ आ ने कोनो चाले-चुल...।

दरबज्जाक दछिनबरिया खिड़की टुटि गेल अछि, जइ होइत हवो आ झटको घरमे अबैए, ओकरे बन्न करैले प्लास्टिकक बोराकें बाँसक फट्ठीमे काँटीसँ ठोकि-ठोकि ठीक करैत रही।

कखन पुरन ठाकुर दरबज्जापर आबि गेल रहैथ से तँ ठीक-ठीक नै बुझि पेलौं मुदा पनरह-बीस मिनट पहिने दरबज्जाक खिड़कीक

काजमे लगल रही, तइसँ पहिने नइ आएल रहैथ। तइसँ अनुमान केलौं जे दस-पनरह मिनटक भीतरे आएल छैथ।

थरथर कँपैत स्वरमे पुरन ठाकुर बजला-

“बौआ!”

ओना एकबेरक अवाजकेँ जहिना लोक अवाज नै मानैए तहिना हमरो भेल जे भरिसक अन्तुका अवाज छी। तँए कानक बातपर मन नइ उठल। जहिना अपन-काजमे लगल रही, तहिना लगले रहलौं। दोहरा कऽ पुरन ठाकुर बजला-

“बौआ, बौआ राधेश्याम!”

नाओं सुनिते घरेसँ कहलयैन-

“के छिआ! अबै छी।”

अवाज तँ सुनि नेने छेलौं, मुदा बोलीक अकान नइ भेल छल। जँ बोलीक आकन होइत तँ आरो किछु कैहतिऐन। मुदा से नइ भेल। जहिना खिड़कीक काज पसरल छल तहिना छोड़ि घरसँ निकललौं तँ पुरन काकाकेँ देखलयैन। नाट कद, गाढ कारी रंग, गोल मुँह पचकल, आँखि धँसल, धोती, गोलगला आ कान्हपर तौनी नेने ठाढ़।

देखते पुछलयैन-

“पुरन काका, एहेन समैमे घरसँ किए निकललौं?”

देहक वस्त्र भीजल, जइसँ टप-टप पानि धरतीपर खसैत। बजला-

“बौआ, आइ हम मरि जाएब!”

ओना मनमे भेल जे पहिने सुखल कपड़ा दिऐन मुदा पुरन कक्काक बात ‘आइ हम मरि जाएब’ मनकेँ ठनका देलक। ठनका ई देलक जे कोन थर्मामीटरसँ पुरन काका नापि लेलैन जे आइ मरि जेता?

मरणक पीड़ा आ जन्मक पीड़ा तँ जिनगीमे लोककेँ एकेबेर होइ छै, ओ केना अनुमान कऽ लेलैन? फेर भेल जे भरिसक जाड़सँ देह ठिठुर गेल छैन तँए एहेन बात मुहसँ निकैल गेलैन। मुदा लगले भेल जे सौनक पानिमे ओहन ठिठुरन होइ कहाँ छै जेहेन माघक पानिमे होइ छइ। तही बीच पुरन कक्काक परिवार दिस नजैर उठि गेल। उठिते भेल जे भरिसक घर ने खसि पड़लैन अछि, जइसँ एहेन बात बजला।

घरपर नजैर पड़िते मन पड़ल- पुरन काकाकेँ परिवारे कहाँ छैन, घर ते खसले छैन। हाथ पकैड़ पुरन काकाकेँ घर लऽ जा चौकीपर सँ एकटा धोती दैत कहलयैन-

“पहिने सुखल कपड़ा देहमे लगा लिअ। हमरो काज लगिचाएले अछि, पछाइत दुनू गोरे चाहो पीब आ गपो-सप्प करब...।”

मन बहटारै दुआरे कहलयैन-

“ऐ बेर इन्द्र भगवान खुशी छैथ!”

धोती पहिरैत पुरन काका बजला-

“धु: कोन भाँजक बात बजै छह। अन्हराकेँ जेहने जगने तेहने सूतने।”

पुरन कक्काक बातक कोनो अरथे ने लगल। अपना मनमे भेल जे भरिसक देहक वस्त्र ने सुखल पहिर लेलैन मुदा मन सिमसले छैन।

पुछलयैन-

“काका, अहाँक बात नइ बुझलौं?”

पूछ होइते जेना पुरन कक्काक मनमे पुछड़ी लगि गेलैन तहिना मन कलैश उठलैन, बजला-

“बौआ! जागब आ सूतब भेल, जरूरतसँ कम-बेसी।”

पुरन कक्काक बात फेर नै बुझलौं। ऐठाम इन्द्र भगवानक गप

अछि तखन बीचमे ‘जागब आ सूतब’ केतएसँ आबि गेल?

पुछलयैन-

“की जागब आ सूतल कहलिऐ, काका?”

विहुँसैत आसिन मासक सिंगहारक फूल जहिना साँझ पड़िते भकराड़ भऽ जाइए तहिना पुरन कक्काक मन फुला कऽ भकराड़ भऽ गेलैन। बजला-

“जैबेर इन्द्र भगवान बरिसला तैबेर बाढ़ि चाटि-पोछि लैत आ जैबेर सूतला तैबेर रौदी सुखा-टटा दैत तैबीच मारल जाइए खेत आ खेतक बले जीवैबला लोक। मुदा खेतपर जीनिहार लोको की भगवानकेँ गुदानै छैन, मन खुशी रहलैन तँ कोहवरक गीत सुनबै छैन आ जँ खिशियाएल रहलैन तँ मरजादियो बेर मुहेँ-काने गारिसँ एकबाहि कऽ दइ छैन। भाय! घरबैयाकेँ सुननौं ओ गारि किए लागत, हुनके बहिन-माए ने बरियातीकेँ सोझा-सोझी गरियबै छैन। सएह छैथ खेतपर जीनिहार भगवान, जे अपने शक्तिये जीबै छैथ, समुद्रक डपौरे-शंख किए ने अनघोल करौ मुदा अनठौआ बहीर जकाँ कानमे या तँ आँगुर लऽ साहोर-साहोर करत आ नइ तँ तूर-तेल लऽ असुआ कऽ सुइत रहत।”

हाँइ-हाँइ कऽ खिड़की लगा, हथौरी-काँटी, बैशला सभकेँ कातमे रखैत, बाहरब छोड़ि, जखन पुरन कक्काक आँखि-पर-आँखि देलिऐन तँ बुझि पड़ल जे चाह सुनि पुरन कक्काक मनमे तृप्ति नइ एलैन। जँ तृप्ति आबि गेल रहितैन तँ मन जरूर तिरपित जकाँ बुझाइत। मुदा से नइ, भरिसक पुरन काका अन्नक भूखल छैथ, तँए चाह सुनि तृप्ति नइ जगलैन। सोभाविको छै, अन्न आ पानि तत्काल भरि सम्हारि सकैए मुदा अन्नक सोलहन्नी भार पानि तँ नहियेँ सम्हारि सकैए। एहनो तँ भाइये सकैए जे तबधल वायुकेँ आरो तबधा मनकेँ

बेपीड़ित कऽ दिऐ। मुदा पुरन कक्काक मन जहिना तन-मन भग्न भेल छैन, तइसँ कनियेँ नीक ने अपनो छी। एहेन समैमे चाहोक निवेदन कम नइ भेल। जैठाम बिजलीक चुल्हि वा गैसक चुल्हि नइए तैठाम भानसक चुल्हि माने गोड़हा-चेड़ा जरैबलापर चाह केना बनत। चाह तँ जेहने पीबैमे रसगर लगैए तइसँ की ओ कम रसिक अछि, गाछक सुखल ठौरही, सुखाएल कड़चीक टुकड़ी आकि सुखाएल बत्तीक टुकड़ीक चुल्हि छी। एहेन समैमे[2] ओहो चाहक चुल्हि नरमाएले रहैए। एतबो आग्रह कम नइ भेल।

फेर भेल जे किए ने एकबेर पुरने काकाकेँ पुछि लिऐन। मुदा मनमे ईहो उठल जे बूढ़-पुरान लोक छैथ, जँ कहीं एहेन व्रती जिनगी रहल होनि जे की खाएबकेँ अधला बुझैत होथि आ कहि दैथ जे तूँ हमरा बड़ धड़खनाह बुझै छह! तखन तँ आरो पहपैट हएत। समए भिनसुरके रहै, जलखै नइ केने रही। मुदा चुल्हि पजैर गेल रहै से धुइयाँ-धुकुरसँ आगम भऽ गेल रहए। लगले मनमे बिचैड़ गेल। जखन चाहक आग्रह पुरन काकाकेँ केने छिऐन, ओना रोटीक संग चाहक चलैन तँ नइ अछि आ ऐछो तँ गाम-घरमे अखन नइ अछि मुदा शहर-बजारमे कम पाइ कमेनिहार चाहक संग चाहकेँ तीमन बना खाइते अछि। गाममे चाहक तीमन तीमनक मान्यता नइ पौलक अछि। सभ जिनगीक सब रंग भोजन होइए, ओइ भोजनक संग ओकर जिनगी चलै छै आ जिनगीक संग रहन-सहन सेहो चलै छइ। तँए भोजन संस्कृत प्रभावित भाइये जाइए जेना चाहक आगमनक संग बिस्कुटो आबि गेल...।

मन पड़ल, घरमे बिस्कुट ऐछे कनी अहगरसँ बिस्कुटो जँ आगूमे देबैन तँ जरूर मनमे तृप्ति औतैन। जखन मनमे तृप्ति औतैन तखन ने

[2] बरसातक समैमे

आइए जे मरैले तैयार भेल एला हेन, हुनको दस बर्ख जीबैक इच्छा जगतैन। लगले देहक भुलकल रूप आ जाड़सँ सिरसिराइतपर नजैर पड़ल। मन ठमैक गेल।

तीन सालसँ जेते कपड़ा बदलने रही, ओ सभ अछिए। किए ने मोटरीए सुमझा दिऐन जे जेतेसँ देह झँपाएत तेते लऽ लिअ। सएह केलौं।

गंजी, अंगा आ चद्दैर देख पुरन कक्काक मनमे तृप्तिक संचार भेलैन। जिनगीक मूल आवश्यकता जे अछि ओइमे वस्त्रो तँ अछिए। जँ मनसँ भोजन, रहैक घर, पहिरैक वस्त्र, बेर-बेगरतामे दवाइ-बिड़ो भऽ जाए तँ के चाहत जे लगले अछियापर चलि जाइ। दुनियाँ तँ नन्दन कानन छी, जइमे के नइ बास करए चाहैए। सभ तँ चाहिते अछि।

ओना मोटरीमे बहुत कपड़ा तँ नइ मुदा तीनटा गमछा, चारिटा लूँगी, दूटा धोती आ एकटा चद्दैर तँ छेलैहे। कपड़ा देख पुरन काका अपन जिनगीकेँ दरजी-नप्पासँ अपन जिनगी नपला तँ बुझि पड़लैन जे आब अपन औरुदे केते दिनक बाँकी अछि, तहूमे तेहेन जिनगीमे जीब रहल छी जे होइए आइए मरि जाऊँ। मुदा जँ दसो बरिस आरो जीब तैयो वस्त्रक दुख नइ हएत। द्रोपदी जकाँ भगवान तेहेन वस्त्रक ढेरी आगूमे रखि देलैन जे जिनगीक कोन बात असमसानक अछियो धरि नइ घटत।

लगले मन घुमि गेलैन। घुमिते उठि बैसला। बैसते मनमे एलैन राधेश्यामकेँ जे रखलाहा छल से सभटा आगूमे दऽ देलक। एकर माने ई नइ ने भेल जे मोटरीए दऽ देलक। जेतबे अखन खगता अछि तेतबे ने लेब, मुदा तइसँ ते साले दू साल ससरब...।

पछाइत फेर मनमे उपकलैन, राधेश्याम ईहो तँ नहियेँ बाजल जे

ऐमे सँ एकटा निकालि लिअ आ बाँकी हमर मोटरियेमे छोड़ि दिऔ।

आगू-पाछू नजैर दौड़बैत पुरन काका गर अँटकारि कऽ बजला-

"बौआ, अपने हाथे दाए।"

'अपने हाथे दाए' सुनि मन तड़ैप गेल। मन तड़ैप ई गेल जे जखन वेचारेकेँ मोटरीए सुमझा देलिऐन, तखन अपने हाथे दैक माने भेल जे किछु दिऐन आ किछु रखि ली। रखैक माने भेल- झिंगुर काटत चाहे पानिक चुवाठसँ भीज कऽ सड़त आकि मूस-मुसरी खाएत तेकर कोनो ठीक थोड़े अछि, तइसँ नीक ने जे एकटा वस्त्र-विहीनकेँ वस्त्र भेटत...।

कहलयैन-

"काका, अहाँ जड़ाएल छी, जेतेसँ देह गरमाए तेते पहीरि लिअ आ जे रहि जाएत ओहो लऽ लिअ।"

हमर बात सुनि पुरन कक्काक मन ओहन इनार जकाँ भरि गेलैन जेकरा खुनैयेकाल खुननिहार कहि दैत जे ऐमे पाँच हाथ आकि सात हाथ पानि रहत। तहिना ने अपनो जिनगीक हिसाबे सभ वस्त्र भाइये गेल। तइमे लूँगी तँ तेहेन अछि जे मुँह फाड़ि देबै कि एकटासँ तीनटा भऽ जाएत। ओइढ़ो लेब, बिछाइयो लेब आ पहीरो लेब।

वस्त्र विहीन खसल पुरन कक्काक मन जेना बेपीड़ितसँ पीरित दिस बढ़लैन। पिरौंछक आगमन होइते मन मुस्कियेलैन। कहि कऽ चाह आनए आँगन गेलौं। अँगना-दरबज्जाक दू आँगन अछि, तँए आँगन टपैमे कनी देरी लागल। तैबीच पुरन काका देहमे गंजी, कुरता पहीरि माथमे तौनीक मुरेठा बान्हि चद्दैर ओढ़ि लेलैन।

कागजेक टुकड़ीपर दूटा डिब्बा ट्वेन्टी-ट्वेन्टी बिस्कुट उझैल देलिऐन। बिस्कुट देख पुरन काका बजला-

"बौआ, हमरा कोनो बेसी भूख नइ लागल अछि, तहूमे भिनसुरका उखड़ाहा छी, हम कि कोनो करखन्नाक रौतुका ड्यूटी करि कऽ आएल छी जे नीनाएल-भुखाएल रहब। मुदा हम केना...।"

पुरन कक्काक अधबोलिया बात सुनि मनमे भेल जखन पुरन कक्काक मुहसँ एहेन विचार खसल तँ मानि लइ छिऐन। मानैत कहलयैन-

"काका, बीचमे रहऽ दियौ आ दुनू दिससँ दुनू गोरे उठा-उठा खाएब।"

ओना मनमे रहए जे अपन खाएबकेँ सरकारी करमचारी जकाँ हाजरी पुड़ाएब आ भुखाएल पुरन काका छैथे तँए भूखक लहैरमे बेसी खेता।

चाह-बिस्कुट खेला पछाइत बुझि पड़ल पुरन काका आब पतालसँ ऊपर उठि धरतीपर आबि गेला। यएह तँ तीनू दुनियाँक खेल छी, कियो अकासमे उड़ैए तँ कियो पतालक सात सीढ़ी-निच्चाँमे दबाएल अछि। एकर माने ईहो नइ ने जे बीच बसल धरतीपर कियो ने अछि। सेहो तँ ऐछे, से कोनो आइए अछि सेहो बात नहियेँ अछि, अदौसँ रहल आ ताधैर रहत जाधैर अकास-पताल एकबट्ट भऽ धरतीपर आबि ठाढ़ नइ हएत। विचारोक दुनियाँ एहने अछि। खसल मन, टुटल जिनगीक विचार आ ऊपर उड़ैत जिनगी जाबे एकठाम आबि एक दिस नइ चलत ताबे एकरस भऽ केना सकैए।

मुदा से नइ, चाह बिस्कुट खाइते-पीबते पुरन काका, चौमासी खेत जकाँ जोतल-चौकियाएल एक रसमे बुझि पड़ला।

कहलयैन-

"काका, एना किए टाँहि देने छेलौं जे बौआ आइ हम मरि जाएब। अहीं कहू जे आइ धरि जे सुख-दुख गमेलौं ओ अपना घरमे

आ मरैले चलि एलौं हमरा दरबाजापर?"

जहिना विचार विचारकेँ छुबैत, प्रेम प्रेमकेँ छुबैत तहिना पुरन कक्काक मनकेँ छुलकैन। छुबाइते बजला-

"बौआ, तोरे सबहक- माने समाजेक- मुँह देख अहू अवस्थामे ठाढ़ छी, नइ तँ अपन कहि के रहल। तखन तँ जइ समाजक मुँह देख जीबै छी, सेवा करै छिऐ, वएह समाज ने मुँहक चहरो अखैन तक दैत आएल अछि।"

पुछलयैन-

"से की?"

'से की' सुनि पुरन कक्काक मनमे मौलाएल गाछ जकाँ नव कलश जगलैन। जगिते मुँहक रंग बदललैन। रंग बदलैक कारण भेलैन जे भरिसक हमरो सन लोकक बेथा-कथा सुननिहार समाजमे कियो छैथ। मुस्की दैत बजला-

"बौआ, शुरूमे जहिया ऐ गाममे आबि बसलौं, तहिया अखुनका जकाँ ने एते नमहर गाम छल आ ने एते लोके छल। पिताजीक संग दुनू भाइयो आ माइयो आबि बसल रही। अपन तँ ने खेत-पथार रहए आ ने घरे-घराड़ी, मुदा समाज मीलि रस्ते-कातमे घराड़ियो देलैन, खढ़-बाँसक घरो बना-देलैन आ रोजगारक रूपमे केश-दाढ़ी कटैक काजो देलैन।"

जिज्ञासा करैत पुछलयैन-

"तइसँ पहिने गाममे नौआ नइ छला?"

कहलैन-

"नइ। पड़ोसी गामक नौआ आबि दाढ़ियो-केश आ बिआहो, मुड़नो आ सराधोक काज सम्हारै छल। मुदा संख्यामे कम रहने बेर-

बेगरतामे काज खगिये जाइ छेलइ। ओना गामो-समाजकेँ नौआक जरूरत छेलैन आ अपनो उजरल-उपटल जिनगीकेँ ठौर भेटल।"

पुछलयैन-

"जेकर रोजगार लेलिऐ ओ सभ किछु कहलक नइ?"

बजला-

"की कहितए। वेचारा सबहक अपने जान हल्लुक भेलै, तहूमे ओहो सभ की आन छला, बाबूक मसियौत भाइये छला।"

"काजक बोइन केना भेटै छल?"

'बोइन' सुनि पुरन कक्काक मन विहुँसलैन। मुस्की दैत बजला-

"दू रंगक कमाइल दइ छला। जिनका केश-दाढ़ी कटै छेलिऐन ओ एक धाड़ा माने एक पसेरी दाढ़ीक आ एक पसेरी केशक कमाइल दइ छला आ जिनका खाली केशेटा कटै छेलिऐन ओ एक पसेरी कमाइल दइ छला।"

पुछलयैन-

"एक धाड़ा केते भेल?"

कहलैन-

"बौआ, पहिने कच्ची सेर चलै छल। ओना पक्की सेहो छल मुदा कमाइल कच्ची सेरसँ दइ छला। पक्की पान सेरक पसेरी छल आ कच्ची छह सेरक।"

पुछलयैन-

"तैसंग आरो किछु दइ छला?"

'आरो' सुनि पुरन कक्काक मुहसँ हँसी निकललैन। हँसिते बजला-

"समांगे जकाँ सभ बुझै छला। ओना कमाइल दइ छला अगहनमे। मुदा मुड़न-उपनैन, बिआह-सराधमे खैयोले दइ छला आ कमाइलक अतिरिक्त लतो-कपड़ा आ सिदहो भेटै छल। जइसँ कहियो गुजर-बातमे दिक्कत नइ हुअए।"

पुछलयैन-

"दुनू भाँइक परिवार केते दिन शामिल रहल?"

कहलैन-

"जाबे बाबू-माए जीबै छला, ताबे सभ शामिले छेलौं। शामिलेमे दुनू भाँइक बिआहो-दान भेल। हम भैयारीमे छोट रही आ भैया जेठ छला। हुनका चारिटा बेटा आ दूटा बेटी भेलैन। हमरा दूटा बेटेटा भेल।"

पुछलयैन-

"अखन के सभ छैथ?"

कहलैन-

"भैयाक परिवार तँ दिनो-दिन बढ़िते गेलैन मुदा हमर एकटा बेटा दस-बारह बर्खमे मरि गेल आ दोसर तहेन चालि-चलैनक भऽ गेल- माने गांजा पीअ लगल- जे भरि-भरि दिन ओही पाछू तेना वौराएल रहै छल जे किछ कहि नै। एक दिन खिसिएलिऐ। दुनू परानी पड़ा कऽ सासुरेमे बसि गेल। तेकर किछु दिनक बाद घरोवाली मरि गेल। मुदा तैयो जाबे देहमे हूबा छल ताबे तँ केकरो ने गुदानलिऐ मुदा जेना-जेना हूबा घटैत गेल तेना-तेना सभ किछु बिलटैत गेल! सोल्होअना जजमैनको भातिजे सभकेँ दऽ देलिऐ। दऽ देलिऐ बड़बढ़ियाँ, मुदा तेहेन-तेहेन जनीजाति सभ घरमे आबि गेल जे कियो देखैबला नइ रहल।"

पुछलयैन-

"आब की सोचै-विचारै छी?"

कहलैन-

"आब की सोचब-विचारब। तखन तँ...।"

मनमे भेल, एक आदमीकेँ खुऔनाइ-पीऔनाइ कोन बड़ भारी काज भेल...।

कहलयैन-

"अहीठाम रहि जाउ।"

'अहीठाम रहि जाउ' सुनि पुरन कक्काकेँ जेना जान-मे-जान एलैन। मुदा बजला किछु ने, मुस्कियाए लगला। बुझि पड़ल जेना नव जिनगी भेट गेलैन तहिना खुशीसँ मुस्कियाइते रहला।

❍

शब्द संख्या : 2234, तिथि : 22 अक्टुबर 2015

वैष्णवी भगवती

बहुत दिनेटा नै बहुत बर्खक बाद गाम एलौं। आब तँ सहजे दिल्लीए-वासी भेलौं। घरो-दुआर दिल्लीए भेल। बाल-बच्चाकेँ पढ़ाएब-लिखाएबसँ लऽ कऽ बिआहो-दान ओम्हरे करै छी। मुदा पहिने से नै, पहिने ई कहै छी जे गामसँ पड़ेलौं किए।

गाममे पहिने एकठाम दुर्गा-पूजा शुरू भेल। सौंसे गौआँक सहयोगो रहैन। जिनका पूजा-पाठ करैक लूरि रहैन ओ अपन भार पूजा-पाठक लेलैन। नवतुरिया सभ नाच-तमाशाक भार उठा लेलैन आ बाँकी गोरे खर्चा-बर्चाक। समाजोक रंग-रूप आ मुँह-कान एकरंगाहे रहैन तँए सबहक विचारेसँ बलि-प्रदानक प्रथा शुरू भेल।

किछु दिनक पछाइत पुजेगरी सबहक बीच फुला-फुली भेलैन। दोसरोठाम दुर्गापूजा प्रारम्भ भेल। ओना फुला-फुली दुर्गे-पूजाटा मे नइ आनो-आनो पावैनमे होइए जे एकदिनो पावैन दू-दिना भाइये जाइए।

किछु सालक पछाइत गाममे एकटा निर्गुण महंथ भेला, गामक वैष्णवजनकेँ खर्ड़ासँ खड़ैर एकठाम कऽ लेलैन। माने ई जे एकसूत्री कार्यक्रम बना बलि-प्रदानक विरोधमे पुक्की दऽ सौंसे गामक निर्गुणियाँक संग सगुणियोँ सभ एकजुट भेला। ओना जीवपर दया करी...; ओकर हत्या नइ होइ...; सभ जीव जीवे छी इत्यादि...। एहेन विचारक संस्कार तँ सबहक मनमे रहबे करैन।

ओ महंथजी जे अपना सम्प्रदायक मञ्च परहक वक्ता छैथ। एक घन्टाक भाषण कण्ठस्थ केने छैथ। जहिना सत्य नारायण भगवानक कथा एके साँसमे कथा-वाचक सुरैर कऽ बाचि लइ छैथ तहिना महंथोजीकेँ छैन्हे। इलाकामे तेतेक सेवकान रहैन जे महंथजीक छाती जमीन्दार जकाँ फुलले रहै छेलैन। मुदा गाम-समाज की छी, तइसँ ने कहियो भेँट भेलैन आ ने ओकर तरी-घटी बुझलैथ।

बीचमे किछु दिन पहिने सुनने छेलौं जे एकटा एहेन थाना प्रभारी थानामे आबि गेल रहैथ जे महंथजीकेँ जहल पठा देने रहैन। कहाँदन महंथजी सेवक संग सेवकाइमे फँसि गेला। जे मामला थाना पहुँच गेल। साल भरि जहलक हवा खेला पछाइत महंथजी निकलला। तैबीच गुण रहल जे ओ थानो प्रभारी चलि गेल रहैथ। मुदा महंथजीक चला-चलती फेर ओहिना छैन। जहिना सौनमे साँप केचुआ छोड़ि नव-जौवनक संग जिनगी पाबि लइए, तहिना महंथोजी कनियेँ एकभगाह भऽ दोसर डारि लग पहुँचला कि होटलक चम्मच जकाँ पानि छुबिते शुद्ध भऽ गेल छैथ। मुदा जे से...।

तइ दिनमे हम कौलेजमे पढैत रही, वैष्णव परिवारमे जन्म भेने वैष्णवी जिनगी तँ रहबे करए।

गामक गुन-गुनी आ गप-सप्पक क्रमक संग बैसार- अपन विचारक बैसार- हुअ लगल रहए। कौलेजक जिनगी कारणे पीपाशु मन समाजिक भाइये गेल रहए। गामक तरी-घटी तँ किछु बुझैत ने रही, मनमे हरल-ने-फुरल, महंथजी ऐठाम पहुँचलौं। महंथजीक चपचपी देख बुझि पड़ल जे भरिसक विचारी सभ संग पकड़लकैन अछि। एक तँ महंथ, तैपर लोक महत्मो कहिते छैन। उमेरगरो छैथे। देखे-देखी ने दुनियाँ चलै छै, ओही देखा-देखीमे हमहूँ कहलयैन-

"महात्माजी, गाममे अखन...?"

जहिना जेठुआ बर्खाक बूनकेँ धरती ऊपरे लोकि पीब लइए तहिना 'गाम' सुनिते महात्माजी ऊपरे लोकैत पुछि देलैन-

"गाम तँ समाज छी किने?"

कहलयैन-

"हँ।"

फेर पुछलैन-

"समाजकेँ एक रस्ते ने चलक चाही?"

कहलयैन-

"चलक्के चाही।"

'चलक्के चाही' सुनि जेना महंथजीकेँ हूबा जगलैन। हूबा पैबते मनसूबा जगलैन आ मनसूबा जगिते बुलबुला छोड़ैत बजला-

"गाममे दूठाम दुर्गा-भगवती बनै छैथ, मुदा हमरा सबहक परिवारक ने कियो पूजा करए जाइए आ ने कुमारि भोजन करैए...!"

महंथजीक बात सुनि किछु फुड़बे ने कएल। नइ फुड़ैक कारण भेल जे किछु बुझले ने रहए। एतबे देखिऐ जे गाममे दूठाम दुर्गा भगवतीक स्थान अछि। साले-साल आसिनमे दस दिनक पूजो होइए आ ओइ संग हाटो-बजार लगैए आ नाचो-तमाशा होइए, जइसँ दसो दिन के केम्हर मुहेँ ससैर जाइए से लोक बुझबे ने करए। बुझबो केना करत पूजा-पाठ करैबला पूजा-पाठमे लीन, बनियाँ-बेपारी अपन कारोबारमे लीन, गायक-वादक मनोरंजनक पाछू लीन। केकरो केकरोसँ गप करैक फुरसैतो तँ नहियेँ रहै जे एक क्षण एकठाम बैस आने समए जकाँ ताश भँजैत। मुदा लगले मनमे उठि गेल जे महंथजी बाहरोमे जखन मञ्च परहक महात्मा छैथ तखन ऐठाम तँ गामक सहजे जवाबदेह समाजो भेला। जहिना ओ समाजक छथिन तहिना ने हुनको

समाज छिऐन। परिवारक लोक पूजा करए नइ जाइ छैन, जखन कि सौंसे समाजक स्थान छी। किए ने जाइ छैन आकि कियो नै जाए दइ छैन से तँ ओ ने बुझता-विचारता। हमरा ऐसँ कोन मतलब। मुदा समाजक बीच ओते मतलब तँ रखै पड़त ने जइसँ समाजक एकसूत्रतामे कमी नइ आबइ।

कहलयैन-

"परिवारक जे समस्या अछि ओ ते अपना परिवारमे ने मीलि कऽ समाधान करब।"

एका-एकी लोकक आवाही बढ़ल। लोकक अवाहीसँ बुझि पड़ल जे गामक लोक भरिसक कनखैर गेल अछि। दुनू गोरे- हमरा आ महंथजी-क बीच गप-सप्प पाँचो-सात मिनट नै भेल छल कि जहिना साँझ आकि भोरमे गोटे नढ़ियाक पुक्की सुनिते आनो-आन केतेको नढ़िया कात-करोटसँ आबि-आबि ओइ पुक्कीकेँ पुपुअबैत आगूमे आबि झौं-झौं करए लगैए, तहिना भेल जाइत रहए। जे जेम्हरसँ अबैत ओ अपने ताले-बेताल भेल आबि बाजए लगए-

"महंथजी, मञ्चपर अहाँ बजै छिऐ, कुमारि सभ जातिक बेटी कुमारिये भेली, अखन तँ अपना समाजमे छी, जैठामक सार्वजनिक दुर्गा स्थानमे हमरा बेटीकेँ साँझक दिआरी आ भोरक फुलडाली पहुँचबैक जगह नइ अछि!"

महंथजी चुप-चाप भेल हाथक इशारासँ, नव-नव एनिहारकेँ बैसबैत रहैथ। मुदा सुनै तँ हमहूँ छेलौं। मन नाचए लगल। अखन धरि माने कौलेजक जिनगी तक ई बात बुझबे ने केने रही जे गामक बेवहारमे की सभ अछि। जे बात बुझले ने छल तइमे किछु बाजबकेँ नीक नइ बुझि बजबे ने करी। मुदा बुझैक जिज्ञासा तँ मनमे रहबे करए। ओना अपना बीच- माने नव-नव लोकक बीच- सेहो खूब

घौचाल हुअ लगल मुदा एक मुँहक बात नीक जकाँ सुनबो ने करी आकि दोसर मुँहक बात चलि आबए-

"जखन हमरा-सबहक पानियेँ छुबा जाइए तखन स्थानक नीपिया-पोतिया केना करब?"

लोकक मुँहक बात सुनि मने-मन खौंझो उठए, मुदा फेर कही जे अखन जे ऐ खौंझक पाछू पड़ब तँ कौलेजक पढ़ाइयो छुटि जाएत। तँए मनकेँ गरगोटिया दऽ दऽ दाबी जे बोल बन्न केने रह। फेर तेसर अवाज आएल-

"जखन हम सभ वैष्णव धर्म अपना नेने छी, तखन दसगरदा स्थानमे बलि प्रदान किए होइए?"

रंग-रंगक लोकक बात सुनि दुनू कानमे ठेकी लगा लेलौं। ठेकियो लगाएब जरूरिये छल किने।

समाजक समस्या जालेमे नइ महजालमे फँसल अछि। अखन तँ पोठियाहियो जाल चलबैक लूरि नइए।

अखन धरि महंथजी ऐ ताकमे रहैथ जे हम की उत्तर दइ छिऐन। मुदा ओ बुझि गेला। दुनू हाथे हल्लाकेँ शान्त करैत बजला-

"दुर्गास्थानक बलि-प्रदानक प्रभाव समाजोपर नै पड़ि रहल अछि से बात नै। जइ समाजमे वैष्णव सम्प्रदायक लोक रहता तैठाम विपरीत प्रभाव पड़बे करत। ओना, जइ गाममे आकि जइ धरतीपर माँ-जगदम्बाक आराधना होइ छैन, ओ नीके नइ बहुत नीक होइए मुदा ओ जगदम्बा ते धरती रूपमे धरतिये ने छैथ। गाममे देवस्थान रहने ते गामे ने देवालय बनि जाइए, तखन अपन अँगनोमे तँ काइए सकै छी।"

महंथजीक विचार सुनि हमरो विचार महंथजीक विचारमे मीलि गेल। जहिना कात-करोटक बर्खा-बुन्नीक पानि धरियाइत धार बनि

धड़धड़ाइत धारा बनैत धारक धारामे मीलि जाइए तहिना भेल।

कहलयैन-

"महंथजी, हम अपनेक विचारसँ सहमत छी, संग देब। मुदा करबै की सभ से तँ हमरो जना देब किने?"

हमर बात महंथजी कैं उकठाह नइ लगलैन। ओना बहुत महंथकेँ उकठाहो केना ने बुझि पड़तैन जे पहिने दीक्षे बाँटि दइ छथिन आ शिक्षा-ले अनेर छोड़ि दइ छथिन...।

बजला-

"देखियौ बौआ, गामक समाज वैष्णव-साँकठ रूपमे बँटि गेल अछि, जखने दू दिशामे लोक चलत, तखने काजो सभ दू रंगाह हुअ लगत किने।"

महंथजीक विचार जँचल। मुदा दू दिशामे चलितो समाज एक बनि केना चलत ई तँ मनमे खुटियाइते रहए। दोहरी रूपमे मनुखक जिनगी छै, एक वैचारिक दोसर शारीरिक। मुदा किछु थाहे ने पेब रहल छेलौं। जेमहर देखी तेमहर अथाहे बुझि पड़ए...।

बजलौं-

"महंथजी, एहेन काज नइ हुअए जे होत-सँ-होतांग भऽ जाए।"

महंथजी बजला-

"होतकेँ होतो आ होतांगो तँ लोके ने बनबैए। जेहेन लोक रहत तेहेन हएत!"

महंथजीक विचार मनमे नीको लगए मुदा डरो हुअए जे लोको तँ लोके छी, कखनो अमरीत उगलैए आ कखनो बीख। फेर हुअए जे एहनो तँ लोक छैथ जे अमरीते टा उगलै छैथ। मुदा सभसँ गजपट ई अछि जे मौका देख दुनू उगलैए...!

..एहेन बोन-झाड़क पहाड़मे सिर-सजमैन केना भेटत आ सुखेन वैदकेँ केना चिन्हबैन?

तरे-तर जेना दम फूलए लगल। किछु फुड़बे ने करए जे की बाजी। फेर हुअए जे अनेरे कोन चक्करमे पड़ि गेलौं। भने गामक लोकसँ हटि कौलेजमे संगी-सबहक बीच रहै छी। मुदा फेर भेल जे साल-दू-साल बादो तँ अही गाम-समाजमे ने आबि रहब। पड़ेने काजो तँ नहियेँ चलत। अग-दीगमे पड़ि गेलौं। अक्-बक् दुनू बन्न भऽ गेल। नजैर उठा कऽ देखी तँ एको गोरे हाइ-स्कूलसँ आगू बढ़ल नइ बुझि पड़ए, तैठाम हुअए जे कौलेजमे पढ़ै छी केना पाछू हटि किछु बाजब। लोकक बीच- माने जेते गोरे ओइठाम रही- घौंचाल कमबे ने करए। मुदा ओ घौंचाल बदलैत समस्याक नइ समाधानक...।

एके समस्या लोको-लोकक बीच आ परिवारो-परिवारमे बदैल जाइए। अपन जिनगीक रस्ता हम अपने ताकि लेब, बेसी मुहसँ सुनिऐ। लोको राक्षसे जकाँ जे बड़ छोट से उनचास हाथ...।

मनमे कनी चैन आएल। चैन अबैक कारण ई भेल जे हम तँ छौड़ा-मारेड़ ऐ गामक अखन छी, जइ गामक साहित्यमे छै जे छौड़ा-मारेड़क कएल खेती आ नै उपजल तँ...।

चलू जे हेतै से हेतै महंथजीकेँ गामक गाछ मानि लइ छिऐन। घौचाल दिस दमैस कऽ कहलिऐ-

"अहाँ सभ महंथजीकेँ निर्णए किए ने सुनबऽ दइ छिऐन जे अनेरे अपनामे घोल-फचक्का करै छी।"

मुदा हमरो बात जेना नीक लगलै। राम दरबारमे जहिना बानरक दल चुक्की-माली बैस दुनू हाथ दुनू कानपर नेने धियानसँ रामाज्ञा सुनै छल तहिना महंथजीक निर्णयक विचार सुनैले सभ कान ठाढ़ केलक।

महंथजी अपन निर्णए सुनबैसँ पहिने समूहकेँ पुछलखिन-

"किनको जँ कोनो प्रश्न मनमे घुरियाइत हुअए ओ पहिने बाजि जाउ। पाछू जे घंघौज करब से नीक नइ।"

कियो कोनो प्रश्न नइ उठौलक। चुपा-चुपी देख हूथकारैत कहलिऐ-

"अनेरे सभ मुँह बन्न किए केने छी?"

एकटा हमरे सन नवछबड़िये छौड़ा जे रौदी भेने अही साल कण्ठी बान्हि बबाजी बनल, ओ कड़ैक उठल-

"जीवन को मैंने सोंप दिया भगवान तुम्हारे हाथो में।"

धरमागती पूछी तँ हम ओइ गीतक अरथे ने बुझलिऐ। मुदा आब बुझै छी जे सत-पथ चलैले लोक सभ दिन जीवन-दान दैत आएल अछि। ओकरा डपटैत कहलिऐ-

"ऐठाम समाजक समस्याक समाधानक विचार भऽ रहल अछि आ तूँ बीचमे नाच ठाढ़ करै छह..;

..महंथजी अपन विचार सभकेँ सुनबयौन।"

हमर चरियाएब महंथजीकेँ अधला नइ लगलैन। मने-मन किछु विचारए लगला। की विचारए लगला से तँ ओ जानैथ। थोड़ेकालक पछाइत बजला-

"दस मिलि करी काज, हारने-जीतने कोनो ने लाज। समाजक बीचक काज छी तँए समाधान तँ एकर समाजे ने करत।"

एकटा कनफूका बबाजी जे कण्ठी तँ नइ बन्हने रहै मुदा गुरुमंत्र कानमे लऽ नेने रहए। बिच्चेमे टभैक गेल-

"चलै छै मलिनियाँ बेटी, धरती धमकबै छइ।"

मने-मन खीजो उठल आ हँसियो लगल। खीज ई उठए जे समाजक समस्याकेँ हँसी बुझि गीत गबैए आ हँसी ऐ दुआरे लगल जे

हाइ रे कोसी पेटक लोक, भँसैत घरक छप्पड़पर बैस बंशियो खेलैए आ गीतो गबैए!

मुदा महंथजी सम्हारैत बजला-

"दस गोरेमे तँ अहिना रंग-रभस चलै छइ। अगुतेलासँ काज नै...।"

मन शान्त भेल। बजलौं-

"महंथजी जे विचार रखता से हम मानि लेब।"

मनमे रहए जे अपन कहि दोसरोक विचार बुझि ली मुदा से भेल नइ बिच्चेमे एक गोरे बाजल-

"हम सभ मानने छी।"

कोनो अरथे ने लगए जे की मानने छी, ने कानसँ सुनने रही आ ने कोनो तेहेन काजे देखिऐ। फेर भेल जे अनेरे मगज-झिक्कीमे लगल छी। जहिना सभ हरे-हरे हरिबोल कहि देलक तहिना किए ने हरिहरे कहि दिऐ।

बजलौं-

"महंथजी, अपना ऐठामक विचार रहल अछि जे साँपो मरि जाए आ लाठिओ ने टुटए।"

महंथजी बजला-

"एकरा अहाँ सभ सोझ डारिये ने देखै छी। जखने साँपपर लाठी लगतै तँ लाठियोकेँ तँ ओते चोट लगबे करतै, जइसँ टुटैक सम्भावना रहिये जाइ छइ। मुदा ऐठाम रोग रूपी साँपक ओहन इलाज होइ जे दुनू होइ।"

महंथजीक विचार जेना तरे-तर मन तक घोंसिया गेल। नजैर उठा कऽ लोक दिस देखी तँ बुझि पड़ए जे सभ झूमि रहल अछि। मन

उबियए लगल...।

बजलौं-

“महंथजी एहेन विचार दियौ जे अखनेसँ समाजक बीच बीआ-बान भऽ जाए जइसँ जरूर समाज सोचि-विचारि उत्थान दिस बढ़त।”

जेना हमर बात महंथोजी कें जँचलैन। बजला-

“जरूर!”

बैसल-बैसल मनो उबियए लगल। निरर्थक बैसब बुझि पड़ए लगल। चरियबैत महंथजीकें फेर कहलयैन-

“केतेकाल धरि मुँहक मूंगबा नुकेने रहब। काल्हि हमहूँ दरभंगा चलि जाएब। पछाइत अहीं दोख लगबैत कहब जे ओ छौड़ा सभ पोखरी-घाटक छबड़ा सभ छी, आगूएमे लप-लप करत मुदा एकोटा पकड़ए नइ देत।”

हमर बात जेना महंथजीक मनमे मेघ जकाँ गुम्हड़लैन। नजैर हमरापर तेना देलैन जेना हमर चाइन देख अपनोकें चैन महसूस केलैन। दुनू हाथक इशारा दैत महंथजी बजला-

“दस गोरे जखन एकठाम बैसब तँ अहिना सासुरक रस्ते साइर-सरहोजिक गाम होइत मसिया-पिसिया होइत ददिया-ननिया तक पहुँच जाएब आ दोसर दिस...।

तँए गामक एक-एक जनकें जीबैक बाट चाही।”

ओना महंथजीक संग समाजक बीच तेसर भगवतीक स्थापनामे संगे-संग काज केने रही, जेकरा आइ तीस बर्खसँ ऊपर भेल हएत। बीचमे मोबाइलसँ पता लगल जे महंथजी एकटा झमेलमे फँसि साल भरि जहल खटि एला। मुदा जखन हुनकर विचार मन पड़ैए तँ सोझड़ाएल महंथजी रहैथ से मन पड़ि जाइए। आइयो ओहिना मन अछि...।

महंथजीकें जखन चरियबैत कहलयैन तँ बजला-

“जँ पूजाक स्थान भगवतीक बनबै छी तँ ओइमे सभकें पूजा करैक रास्ता खुजल रहइ। जँ से नइ तँ लोक घरे-घरे भगवतीक पूजा तँ करिते अछि।”

तेसर वैष्णव भगवतीक स्थान बनि गेल। महंथेजी अगुआ भेला। सभकें समटैत बढ़ला।

किछुए दिनक पछाइत बुझि पड़ल जे जहिना भागवत कथा भेने भूतो-प्रेत आ राक्षसोक आवाही हुअ लगैए। तहिना रमलीला भेने रावणक वंश सेहो उपैक कऽ चलिये अबैए। आमक गाछीक बगवारि, बटाइ खेत छीनब, बाध-बोनमे परती-पराँतपर गाए-महींसकें चरबैसँ रोकब शुरू भेल। बुझि पड़ल जे सौंसे गामे डोलि गेल। पचीसो बेर पचीसो रंगक बात कानमे पड़ए लगल। अन्तमे, चौराएल धान जकाँ रहितो डरे गामसँ पड़ा गेलौं।

❍

शब्द संख्या : 2099, तिथि : 01 नवम्वर 2015

परिचय

नाओं : जगदीश प्रसाद मण्डल
जन्म : 5 जुलाई 1947 ई.,
माता : स्व. मकोबती देवी।
पिता : स्व. दल्लू मण्डल।
पत्नी : श्रीमती रामसखी देवी।
पता : गाम- बेरमा, भाया- तमुरिया,
प्रखण्ड- लखनौर, अनुमण्डल- झंझारपुर,
जिला- मधुबनी, (बिहार) पिन : 847410, **मो.** 9931654742

मातृक : मनसारा, भाया- घनश्यामपुर, जिला- दरभंगा। **जीविकोपार्जन :** कृषि (मुख्यत: तरकारी खेती) **शिक्षा :** एम.ए. द्वय (हिन्दी, राजनीति शास्त्र) **साहित्य लेखन :** 2001 ईस्वीक पछाइतसँ...। **सम्मान/पुरस्कार :** ‘विदेह सम्मान’, ‘विदेह भाषा सम्मान’, ‘टैगोर लिटिरेचर एवार्ड’, ‘वैदेह सम्मान’, ‘यात्री सम्मान’, ‘विदेह बाल साहित्य पुरस्कार’ तथा ‘कौशिकी साहित्य सम्मान’सँ सम्मानित/पुरस्कृत।

मौलिक रचना संसार- 1. गीतांजलि, 2. सुखाएल पोखरिक जाइठ, 3. तीन जेठ एगारहम माघ, 4. सरिता- गीत संग्रह। 5. इन्द्रधनुषी अकास, 6. राति-दिन, 7. सतबेध- कविता संग्रह। 8. पंचवटी- एकांकी संचयन। 9. मिथिलाक बेटी, 10. कम्प्रोमाइज, 11. झमेलिया बिआह, 12. रत्नाकर डकैत, 13. स्वयंवर- नाटक। 14. मौलाइल गाछक फूल, 15. उत्थान-पतन, 16. जिनगीक जीत, 17. जीवन-मरण, 18. जीवन संघर्ष, 19. नै धाड़ैए, 20. बड़की बहिन, 21. भादवक आठ अन्हार, 22. सधबा-विधवा, 23. ठूठ गाछ, 24. इज्जत गमा इज्जत बँचेलौं, 25. लहसन- उपन्यास। 26. कल्याणी, 27. सतमाए, -28. समझौता, 29. तामक तमघैल, 30. बीरांगना- एकांकी। 31. तरेगन, 32. बजन्ता-बुझन्ता- बीहैन कथा संग्रह। 33. शंभुदास, 34. रटनी खढ़- दीर्घ कथा संग्रह। 35. गामक जिनगी, 36. अर्द्धांगिनी, 37. सतभैंया पोखैर, 38. गामक शकल-सूरत, 39. अपन मन अपन धन, 40. समरथाइक भूत, 41. अप्पन-बीरान, 42. बाल गोपाल, 43. भकमोड़, 44. उलबा चाउर, 45. पतझाड़, 46. लजबिजी, 47. उकड़ू समय, 48. मधुमाछी, 49. पसेनाक धरम, 50. गुड़ा-खुद्दीक रोटी, 51. फलहार, 52. खसैत गाछ, 53. एगच्छा आमक गाछ, 54. शुभचिन्तक, 55. गाछपर सँ खसला, 56. डभियाएल गाम, 57. गुलेती दास, 58. मुड़ियाएल घर, 59. बीरांगना, 60. स्मृति शेष, 61. बेटीक पैरुख, 62. क्रान्तियोग, 63. त्रिकालदर्शी, 64. पैंतीस साल पछुआ गेलौं- लघु कथा संग्रह। ○ ○ ○


पल्लवी प्रकाशन
तुलसी भवन, जे.एल.नेहरू मार्ग, वार्ड न. 06,
निर्मली, सुपौल, बिहार : 847452

`251

ISBN : 978-93-87675-05-6